



ازافارات

مجبونب العُلما وَالصُّلحار

<u> حضرت مُولاً البرزُوالفقارا حَدِنْقِتْ بَنْدَى</u> مُدِى اللهُم

مولا نامحر حنيف نقشبندي



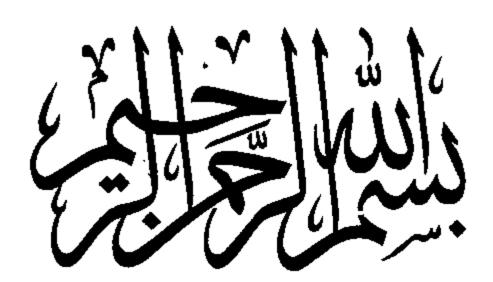


مكت نُرالفقتيت 223 سنت پُوره فَصِلاَ دِ



# جمله حقوق محقوظ ہیں

| خطبات فيتروني                              | نام کتاب               |
|--|------------------------|
| حضرت ملانا پيزوالفقارا مُنقشبندي يَلِ      | ازافادات               |
| مولا نامحمه حنیف نقشبندی                   | مرتب                   |
| مىئىت بۇلىققىسىسىر<br>223سنىت پۇرەنقىيل كى | ناشر                   |
| جون 2009ء                                  | اشاعت اوّل             |
| نومبر 2009ء<br>مئی <b>2,01</b> 0ء          | اشاعت دوم<br>اشاعت سوم |
| 1100                                       | تعداد                  |
| الكرشار محسور المستواط                     | کمپیوٹر کمپوزنگ        |



# 

| مفتانبر | عنوان   | صفعهنمبر | عنوان   |
|---------|---|----------|---|
| 31      | ماز   | 11       | عرض نا شر   |
|         | رب نے بتایا جب اس کوخود آپ کہا:                     | 13       | <del>ف</del> یش لفظ                                 |
| 32      | سبحان الله!   | 17       | 🛈 ولادت النبي سَيْنَةِ مِنْمُ                       |
| 34      | مال کی دعاؤل کے ثمرات                               | 17       | انعام سے بہلے آزمائش کامرطد                         |
| 35      | نى اكرم خفيقًا كامقام معدارت                        | 19       | ننن عظیم محفیات کی آز مائش                          |
| 36      | دن بدل محية   | 19       | (۱) حفرت عبدالمطلب كي آزمائش                        |
|         | دوسرے پہتان سے دودھ نہینے کی                        | 21       | (۴) حضرت عبدالله کی آزمائش                          |
| 37      | وچہ اس کی کھ  | 23       | (٣) پي بي آمنه کي آزمائش                            |
| 38      | حسن و جمال میں کشش اور جاذبیت<br>میں میں میں        | 24       | احوال عجيبه كاظهور                                  |
| 39      | شیما کی محبت مجوزی لوری<br>در د میں سے ریسے         | 25       | يبود بول كااضطراب                                   |
| 40      | نی بی آمنہ کے پاس والیسی<br>میں ارامہ نے میں چک میں | 23       | خصائص ولادت   |
| 41      | بسمارا مونے پس حکمت<br>آیت الم یجدل یونیما فاوی     | [        | سریٰ کا خواب اوراس کی تعبیر                         |
| 41      | ایت الم یجدد بینها فاوی<br>کےمعارف                  | 20       | چودہ باوشاہتوں کے خاتمے کا اشارہ<br>م               |
| 43      | اسلام میں یتیم کامقام                               | 26       | ستارے محکتے میں آسرار                               |
| 44      | شیما کی عزت افزائی کا داقعه                         | <b>1</b> | ا ایک صاحب ول کاعاشقانه کلام<br>بیچه به بیچه به مرم |
| 49      | ( <sup>©</sup> عقل کا نور                           | 28       | الميتيم ورِّيتيم بن محيير<br>الآدور ويتيا           |
| 49      | عقل سليمايك نعمت غير مترقبه                         |          | جب سراتوال دن آیا تو                                |
| 50      | ب المستهیل ملی میرسرجه<br>«عقل بدی <u>المی</u> نس"  | 29       | نے وور من ہے سے ورون ن<br>آر                        |
| 50      | انیانی معن کے کرھیے                                 | 1        | ہ ہم<br>یرورش کے لیے حلیمہ کے انتخاب میں            |
| L       |   |          | J   |

| 71   | حسر مرورى كى علامت ب                          | 51    | موشع كى فلف وشر                    |
|------|---|-------|------------------------------------|
| ž 73 | باب بين كاسوق كاعداد                          |       | بيونى موئى بيدى كاسة               |
| 74   | كامياب دعد كى كاراز                           | 52    | سنرى مين موشت كااستعال             |
| 75   | كينسر كے مريض كى قوت ارادى                    | 52    | عربوں کی مزے دار مندی              |
| 76   | آثو مینک سلائی مشین کی ایجاد                  | 52    | ہاتھی کا تماشا                     |
| 77   | مثبت سوچ پُرامیدر کھتی ہے                     | 55    | ہاتھیوں کا نٹ بال بھج              |
| 78   | مثبت سوچ سے دشمن پر فتح                       | 55    | ہاتھی کی پینٹنگ                    |
| 79   | نقصان کونفع میں بدلنے کی صلاحیت               | 55    | پروندوں اور جانوروں کے کارنا ہے    |
| 79   | دلوں کی و نیامیں انقلاب                       | 40.00 | ایک بندرکا کرائے کامقابلہ          |
| 79   | نی ءِرحت ما طیا کی رحت بحری سوچ               | 56    | ایک عجیب وغریب کبیل فارم           |
| 87   | المستنب بوى الفلا بهترين طريقة وزندكى         | 57    | و الفن مجھلی کا جیران کن کرتب      |
| 87   | شاخوانوں میں نا م <sup>ر</sup> کھوانے کی تمنا | 58    | انسان کی مادی پرواز                |
| 88   | مشاہیرِ عالم کی ناکھل زندگیاں                 | 59    | فروث فلائى سے نجات كاانو كھاطريقنه |
| 89   | تاریخ انسانیت میں کامل وکمل زندگی             | 60    | نظريدءاضافت كى بنياد               |
|      | ایک نے زاویے سے سیرت نبوی کا                  | 61    | انساني عقل كاكمال                  |
| 90   | مطالعه  | 62    | سوچ کے دوانداز                     |
| 91   | سنت نبوی کے دو پہلو                           | 62    | انسانی شخصیت پرسوچ کے اثرات        |
| 93   | سونے کی جار مکنه صور تنیں                     | 63    | شوگر فری تر بوز                    |
| 93   | (۱)ميدهاسونا                                  | 64    | متبادل راسته                       |
| 94   | (٢)الٹاسونا                                   | 65    | جيسي سوچ و کيي با تيس              |
| 96   | (٣) بائيس كروث پرسونا                         | 66    | انسانی رویه میں سوچ کااڑ           |
| 97   | (۴)دائين كروٺ سونا                            | 68    | از دواجی زندگی میں سوچ کا کردار    |
| 97   | سونے کی سب سے بہتر صورت                       | 71    | استاد کی فکست                      |
|      | 19  |       |                                    |

| صفدسر | عنوان                                | منفداندير | عنوان                               |
|-------|--------------------------------------|-----------|-------------------------------------|
| 116   | چوه مجور میں راز کی بات              | 98        | من باتحداد رجد يدمائنس تحقيقات      |
|       | نی رحت الله کے نام سے رجنرو          | 100       | مونا پاکم کرنے میں سائنسی ترجیحات   |
| 118   | ا يک لا جواب دوائی                   | 101       | مید مجرنے کا فیملہ و ماغ کرتا ہے    |
| 119   | تیز ملنے کے جسمانی فائدے             | 103       | معدے کوڈیل ڈیوٹی نہدیں              |
| 121   | بلكى پيملكى ورزش اورجد يدسائنس محتيق | 105       | حليم كي بغيرسديد بوي والمنافية برعل |
|       | رويب بلال ادرجديد سائنسي             | 105       | موتنا كاعلاج وضويه                  |
| 123   | ار جیمات<br>-                        | 105       | مسواك اورجد يدسائنسي جحقيقات        |
|       | نمازول کی رکعتیں اور سائمنسی         | 106       | منده وي اورامراض هم                 |
| 129   | توجيهات                              |           | مردن کام کرنے میں جسمانی            |
| 135   | 🕝 رسوخ في العلم نسيه؟                | 107       | فاكدت                               |
| 135   | كمآب البي كے محافظ                   |           | احضائے وضود حونے میں ہمارے          |
| 136   | نیت کی اہمیت                         | 108       | فانک                                |
| 139   | حسول علم شرنيت كالهيلو               | -         | و ضور نے میں شوکر کے مریضوں کا      |
| 139   | نىت كى فوقىت مل پر                   | 109       | فاكمه                               |
| 140   | نیت کی خرابی ، اعمال کی بر بادی      | 110       | ایک نویل پرائز وزکی النی سوچ        |
| 141   | عمل صالح کی ضرورت دا ہمیت            |           | صلحاء کے چروں پرتوری ایک سائنسی     |
| 143   | رسوخ فی العلم کی معاون تمن چیزیں     | 111       | آوچير<br>م                          |
| 143   | (۱)توی                               |           | سرکے کے استعال میں سائنسی           |
| 144   | دل کی گوا بی                         | 112       | گر چھات<br>سرد میراند در            |
| 144   | تغوى كى اېميت                        |           | ر جون کے تیل سے ہائی کولیسٹرول کا   |
| 145   | حصول بركمت اورتقوي                   | 114       | طلح                                 |
| 147   | ز من کی زینت اور تعوی                |           | ر بسری ورک کرنے جس ہماری            |
| 147   | معاملات اورتغوى                      | 115       | مخزوری                              |
|       |                                      | - 1       |                                     |

| مشدةنمبر | عنوان                                | مفدانس | عنوان                           |
|----------|--------------------------------------|--------|---------------------------------|
| 165      | (۲)انتشاص                            | 148    | احتیاط بی تقویٰ ہے              |
| 166      | طلباك استعداد بنانے كاطريقه          | 148    | (r)تواشع                        |
| 166      | فيخ البنداورا ختسام علم              | 148    | بزاينے کا لمريقہ                |
| 167      | مولانا يجيٰ ﷺ اوراختساص علم          | 150    | فغيرانه شان بيس اسلام كى وكالت  |
|          | مولانا نورمحمه بوننؤى عالا ادرا خضاص | 152    | وارالعلوم ويوبند كيطلباكي تواضع |
| 167      | علم                                  | 153    | (۳)ژېړ                          |
| 169      | علمی کامول کی کلن                    | 153    | زېدكا مطلب                      |
| 169      | خدمت اسلام کا جذب                    | 154    | تناعت کی نضیات                  |
| 170      | لحده فكريه                           | 154    | تمام پرائیوں کی چڑ              |
| 175      | 🙆 ورع وتقوی                          | 154    | علائے كرام كردق كى ترتيب        |
| 175      | ولا بہت کاحصول کیے؟                  | 156    | خدار سی کوئی اور چیز ہے         |
| 177      | ورع كالنوى فختين                     | 156    | ا مجمعهم كردواوصاف              |
| 177      | نیکی کی پیچان                        | 157    | (۱)اخلاص                        |
| 179      | تبين انمول باتيس                     | 157    | سيدناعلى كرم الندوجه كااخلاص    |
| 180      | تدبير، پر بيز اور حسن علن كي انهيت   | 157    | شخ البندي كااخلاص               |
| 181      | وولفتلول ميس بات                     | 158    | اخلاص کی اہمیت                  |
| 182      | د-بن اسلام کانچوژ                    | 158    | للاوث واليقمل اللدكو يستدنين    |
| 182      | تمن حران کن با تیں                   | 159    | ہیرےاوراخلاص کی قیت میں فرق     |
| 183      | ورع کے در جات                        | 159    | مفتى محدحسن على كااخلاص         |
| 183      | احتياط يمل كرنے كامطلب               | 161    | مولا ناحسين احمدتي 🍇 كااخلاص    |
| 184      | بیداری کی زعد کی کیے؟                | 163    | وا فی عملوں کے بدلے جنت         |
| 185      | افراط وتغريط سيحين                   | 163    | خسارے کا سووا                   |
| 186      | تغوى كالفوى مخفيق                    | 165    | ریائے با عشاقواب سے محروی       |
|          |                                      |        |                                 |

|     | ·                                  |      |  |
|-----|------------------------------------|------|--|
| 213 | عاطون کی کا ژی کیے چلتی ہے؟        | 187  | معاملات شريفه في كالبيلو                       |
| 214 | معينين س منازايان كانو             | 189  | عُمَناه چيوڙن کي فنديانت                       |
| 215 | ہروفت استغفار کریں                 | 191  | علوم ومعارف کی بارش                            |
| 215 | بغير خلطى كيجمى استغفار كري        | 192  | تغوى كى بدولت اجر من اضافه                     |
| 216 | نعتول يرالله كالشكراداكرنا         | 193  | ا حاصل کلام<br>ا                               |
| 217 | تنمن آ دمیوں کی آ زمائش کا واقعہ   | 197  | 🕥 کامیابی کے پانچ اصول                         |
| 220 | المعتين بيشارين                    | 197  | وعدة خداوندي                                   |
| 221 | ایک دوسرے کی قدر کریں              | 198  | زندگی کا نجوز                                  |
| 222 | انگریز ول کاایک دستور              | 198  | علم پڑھل کرنا                                  |
| 222 | مرنے والول سے عبرت حاصل کرنا       | 199  | علم کے ہوتے ہوئے بےمبری                        |
| 223 | ال کی موت ہے بھی عبرت ندملی!!!     | 200  | علم کے باوجود ڈسپلن میں کمزوری                 |
| 223 | مرے کی مال کب تک خیر منائے گی      | 200  | جانے کے باوجود ہوس مجری نظریں                  |
| 227 | 🕒 دورنگی جھوڑ و ہے                 | 201  | ماں باپ کی ناقدری                              |
| 227 | لفظ'' امِنُوا''اہلِ علم کی نظر میں | 201  | پانی کی ناقدری                                 |
| 228 | مشكلات لااله                       | 202  | جانة بوئ بمي جموث                              |
| 229 | حقائق کے آئینے میں ہماری کیفیت     | 203  | ا کیک سبق آموز واقعہ                           |
| 234 | سب سے بری بیاری                    | 205  | علم پڑھل نہ کرنے کی وجہ                        |
| 235 | دین سراسرخیرخواجی ہے               | ľ    | اگر گندگی فائده پہنچا سکتی ہے تو               |
| 235 | ایگار کے انمٹ نفوش<br>م            |      | بڑوں کے تجربات سے فائد واٹھانا<br>انعماد سیاست |
| 236 | جب ہم می معنوں میں مسلمان تنے      | H    | الفيحتول كاحقيقت                               |
| 237 | یک نو جوان کی دیا شقداری کا واقعه  | NI . | نو جوانو ں کی رعونت<br>م                       |
| Ï   | سلمان معاشرے میں خیرخوابی کا       | 211  | منا ہوں پر استغفار                             |
| 239 | بالم                               | 212  | استغفارسب مسأئل كاعل                           |

|             | عبرأي   | مفدي | عنوان                                 |
|-------------|---|------|---------------------------------------|
| -258        | خاص پيشام   | 241  | اسلام کا بول بالا                     |
| 260         | كمترجز ليربهترها بسلوثانا                                     | 242  | ہم ہے تو ہمرو پیاا مجما!!!            |
| 261         | خزال کےموسم میں درختوں کا پیغام                               | 244  | نسيب محرى الكالم كالكر                |
| 261         | ہر پھل کی قیت میں پوشیدہ اسرار                                | 246  | معافی ما تکنے سے پہلے معاف کردیا      |
| 262         | ور دنت کے جلنے میں خاموش پیغام                                | 247  | ر ہے سلامت تہاری نبست                 |
|             | بارش برہے ہے درخت کی شاوانی                                   | 251  | 🕭 درخت میں پوشیدہ اسرار               |
| 263         | میں حکمت  | 251  | بندؤ حرکے لیے نہیں ہے فراغ            |
|             | سیلوں اور گنا ہوں کے وزن میں<br>۔                             | 252  | ورسٍ فطرت                             |
| 264         | مماثكت  | 252  | درخت میں پوشیدہ اسرار ورموز           |
| 264         | خودرودر دنت کی طرح مت بنے                                     | 252  | ورخت کاز مین کے اندرا محتے میں راز    |
| 265         | ورخت کے ساتھ ایک مکالمہ                                       | 253  | ج زمین کے اندر بونے میں حکمت          |
| 266         | شریعت وسنت پر کار بندر ہے                                     |      | ایک ج کی قربانی میں انسانیت کے        |
| 267         | مندل کی خوشبودار لکڑی کا پیغام<br>مندل میں میں میں میں        |      | ليے پيغام                             |
|             | پھول کی پتیوں کے مسل جانے میں                                 | 254  | ورخت کی مانندینے ند که بتل کی مانند   |
| 267         | ا پیغام<br>ایر برویر  | 255  | ج یں درخت کے بفقد کمری کیوں؟          |
| 268         | ایک دوسرے کی قدر کریں   |      | ون اوررات ش درخت کی بردهوتری          |
| 1<br>1<br>1 | مچ <b>ول کے ساتھ کا نئے ہونے کا شکوہ</b><br>س                 | 255  | مير سيق                               |
| 269<br> ⊩   | ا کیوں؟<br>اسر معرب عداد                                      | 256  | فرش تو ژ کرا مینے والے در خت کا پیغام |
| 269         | ایک گرال قدر ملفوظ<br>سرور مرور مرور مرور مرور مرور مرور مرور | 257  | مناه آ کاش بیل کی مانند میں           |
|             | ور خسته کے مجالوں میں خوش اخلاقی کا                           |      | جزوں کی تبجد کے اعمال کے ساتھ         |
| 270         | פניט  | 257  | مماثمت                                |
|             | ***   | 257  | ور فت پرسانب لٹکنے میں سبق            |
|             |   | <br> | ورخت می توجوانوں کے لیے ایک           |
| <u> </u>    |   |      |                                       |





محبوب العلماء والصلحاء حضرت مولانا پیر ذوالفقار احمد نقشبندی مجددی وامت برکاتیم کے علوم ومعارف پربینی بیانات کو شائع کرنے کا بیسلسله خطبات فقیر کے عنوان سے 1996ء بمطابق کا ۱۹۱ ھیں شروع کیا تھا اور اب بیس سولہویں جلد آپ کے ہاتھوں میں ہے۔ جس طرح شابین کی پرواز برآن بلند سے بلند تر اور فزوں سے فزوں تر ہوتی چلی جاتی ہے کچھ بھی حال حضرت دامت برکاتیم کے بیانات حکمت ومعرفت کا ہے۔ ان کے جس بیان کو بھی سنتے ہیں ایک نئی پرواز قرآ مکینہ دار ہوتا ہے۔ بیکوئی پیشہ ورانہ خطابت یا یاد کی ہوئی تقریریں نہیں بیل بھی جاتی ہوئی عربی بین بھیل کرتا ہے جو الفاظ کے سانتے میں ڈھل بین بلکہ حضرت کے دل کا سوز اور روح کا گداز ہے جو الفاظ کے سانتے میں ڈھل بین بلکہ حضرت کے دل کا سوز اور روح کا گداز ہے جو الفاظ کے سانتے میں ڈھل کرتا ہے تھی جس نے میں بلکہ حضرت کے دل کا سوز اور روح کا گداز ہے جو الفاظ کے سانتے میں ڈھل کرتا ہے تک بہنچ رہا ہوتا ہے۔ بقول شاعر

میری نوائے پریثال کو شاعری نه سمجھ که میں ہوں محرم راز درونِ خانه

''خطبات نقیر'' کی اشاعت کا بیکام ہم نے اس نیت سے شروع کررکھا ہے کہ حضرت اقدس دامت برکاتہم کی فکر سے سب کوفکر مند کیا جائے اورانہوں نے اپنے مشائخ سے علم و حکمت کے جو موتی اسٹھے کر کے ہم تک پہنچائے ہیں ، انہیں موتوں کی ملا بنا کر حوام تک پہنچایا جائے۔ یہ جارے اوارے کا ایک مشن ہے جوان شاء اللہ سلسلہ وار جاری رہے گا۔ قار تین کرام کی خدمت میں بھی گزارش ہے کہ اس مجموعہ وخطیات کوا یک عام کتاب سمجھ کرنہ پڑھا جائے کیونکہ یہ بحر معرفت کے ایسے موتوں کی مالا ہے جن کی قدر و قیمت اہل ول ہی جانے ہیں۔ یہی نہیں بلکہ یہ صاحب خطیات کی بے مثال فصاحت و بلاغت ، ذہانت و فیل نت اور حلاوت و ذکاوت کا فقید المثال اظہار ہے جس سے اہل و وق حضرات کو خطوظ ہونے کا بہترین موقع ملتا ہے۔

قارئین کرام سے گزارش ہے کہ اشاعت کے اس کام میں کہیں کوئی کی یا کوتا ہی محسوں ہو یااس کی بہتری کے لئے تجاویز رکھتے ہوں تومطلع فر ما کرعنداللہ ماجور ہوں ۔ اللہ تعالیٰ ہے دعا ہے کہ ہمیں تا زیست اپنی رضا کیلئے بیہ خدمت سر انجام دینے کی توفیق عطا فرما کیں اور اے آخرت کے لئے صدقہ ، جاریہ بنا نمیں ۔ آمین بحرمت سیدالمرسلین سکھی گئے ہے

**دُاكِرُ شَامِجُ سِمُودُ نَقَتْ بَنَدَى دُاكِرُ شَامِجُ سِمُودُ نَقَتْ بَنَدَى** خادم مكتبة الفقير فيصل آباد



ٱلْحَمَٰدُ لِلَّهِ وَكَفِي وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِيْنَ الصَّطَفِيٰ آمَّا بَعُدُ! فقیر کو جب عاجز کے شیخ مرشد عالم حضرت مولانا پیرغلام صبیب نقشبندی مجد دی نورالله مرقده نے اشاعت سلسلہ کے کام کی ذمہ داری سونی تو ابتدامیں چند دن اپنی بے بضاعتی کے احساس کے تحت اس کام کے کرنے میں متذبذب رہا،لیکن حضرت مرشد عالم رحمة الله عليه نے بھانڀ ليا، چنانجه فرمایا که بھئی تم نے اپنی طرف ہے اس کام کونہیں کرنا بلکہ اپنے بڑوں کا تھم یورا کرنا ہے ، کیوں نہیں کرتے ؟ مزید فرمایا کہ جب مجس میں بیان کے لیے بیٹھوتو اللہ کی طرف متوجہ ہو جایا کرو، بڑوں کی نسبت تمہاری پشت پناہی کرے گی۔ چنانچہ حضرت کے حکم اور نفیحت کو پیش نظرر کھتے ہوئے بندہ نے وعظ ونصیحت اور بیانات کا سلسلہ شروع کیا۔اللہ تعالیٰ کی مدد شامل حال ہوئی، حلقہ بڑھتار ہااور الحمد للدشر کا ، کو کا فی فائدہ بھی ہوتا کیونکہ ان کی زند گیوں میں تبدیلی عاجز خودبھی دیکھتا تھا۔تھوڑ ہے ہی عرصے بعد جہاراطراف ہے بیا ٹات کے لیے دعو تیں آنے شروع ہو گئیں۔ شخ کا حکم تھا،سرتا بی کی مجال کہاں؟ جب بھی دعوت ملی رخت سفر باندھا اور عازم سفر ہوئے۔ اس کثرت سے اسفار ہوئے کہ بعض اوقات صبح ایک ملک، دو پہر دوسرے ملک اور رات تیسرے ملک میں ہو گی،اللہ تعالیٰ نے اپنی رحمت سے ملکوں کومحلّہ بنا دیا۔ اِس نا تو اِس میں پیے ہمت کہاں؟ .....گر و ہ جس ہے جا ہیں کام لے لیتے ہیں۔ بقول شخصے '' قدم اٹھتے نہیں اٹھوائے جاتے ہیں''

حقیقت یہ ہے کہ بیمبرے شیخ کی دعاہے اور اکا برکا فیض ہے جو کام کررہاہے، و اما بنعمة ربك فحدث \_

بیانات کی افادیت کو و کیھتے ہوئے کچھ عرصے بعد جماعت کے کچھ دوستوں نے ان کو کتا بی شکل میں مرتب کرنے کا سلسلہ شروع کیا ، مکتبۃ الفقیر نے اس کی اشاعت کی ذمہ داری اٹھائی ، یوں خطبات فقیر کے عنوان سے نمبر واربیا یک سلسلہ چل پڑا۔ یہ عاجز کئی ایسی جگہوں پر بھی گیا جہاں یہ خطبات پہلے پہنچے ہوئے تھے اور وہاں علاطلبا نے کافی پہند یدگی کا اظہار کیا تھا۔

ان خطبات کے مطالعے میں ایک بات رہ بھی پیش نظر رکھیں کہ رہ کوئی با قاعدہ تھنیف نہیں ہے بلکہ بیانات کا مجموعہ ہے ، ان میں علمی غلطی یا بھول کا امکان موجود ہوتا ہے۔ اس لیے معزز علائے کرام سے گزارش ہے کہ جہاں کہیں کوئی غلطی دیکھیں تو اصلاح فرما کرعند اللّٰد ما جور ہوں۔ دعا ہے کہ جو حضرات بھی ان بیانات کی ترتیب و اشاعت میں کوشاں ہیں اللّٰد تعالیٰ ان سب کی کوششوں کوشرف قبولیت عطا فرما کیں اور انہیں ای رضا اپنی لقا اور اپنا مشاہدہ نصیب فرما کیں اور عاجز کو بھی مرتے دم تک اور انہیں اپنی رضا اپنی لقا اور اپنا مشاہدہ نصیب فرما کیں اور عاجز کو بھی مرتے دم تک این دین کی خدمت کے لیے قبول فرما کیں۔ آمین شم آمین

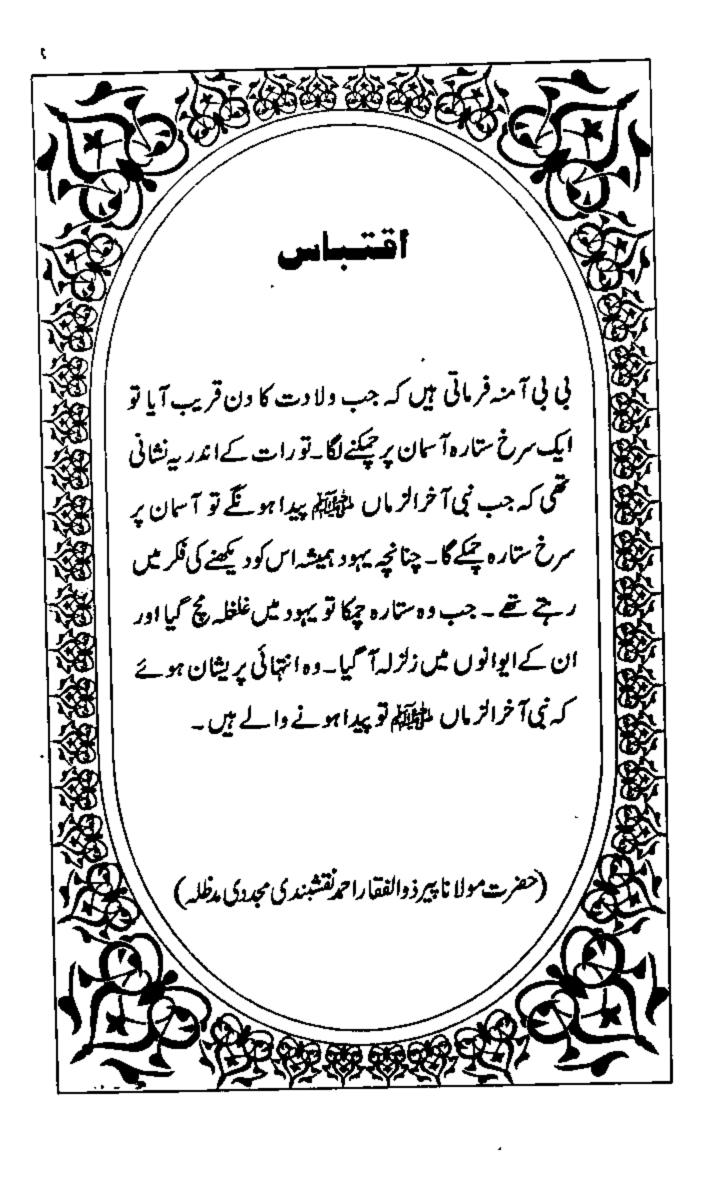
دعا گوودعا جو فقیر ذ والفقارا حمرنقشبندی مجد دی کان الله له عو ضا عن کل شیء



﴿ أَلُّمْ يَجِدُكَ يَتِيمًا فَالرَىٰ ٥ ﴾



بیان: پیرِ طریقت حضرت مولانا حافظ ذوالفقارا حمد نقشبندی مجدی دامت برکاتهم



# ولا دڪ النبي سٿايٽييم

اَلْحَمْدُ لِلَّهِ وَكَفَىٰ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفَىٰ اَمَّا بَعُدُ! فَاعُودُ فَ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْظِنِ الرَّحِيْمِ ٥ بِسُمِ اللَّهِ الرَّحْطِنِ الرَّحِيْمِ٥ ﴿ اَلَمْ يَجَدُكَ يَتِيْمًا فَاوِىٰ٥ ﴾

سُبُحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّتِ عَمَّا يَصِفُونَ٥وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيُنَ٥ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ٥

ٱللَّهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ سَيِّدِناً مُحَمَّدٍ وَّعَلَىٰ آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكُ وَسَلِّمُ

انعام سے پہلے آ ز مائش کا مرحلہ: دوائیوں کی بوتکوں پراکٹراوقات بیہ بات کھی ہوتی ہے۔

Shake well before use.

#### (استعال سے بہلے اچھی طرح ہلائیں)

یہ بات اکثر ذہن میں آتی ہے کہ اللہ رب العزت اپنے بندے کو جب کوئی خاص نعمت دینا چاہتے ہیں تو اس سے پہلے اس کو بھی جمجھوڑتے ہیں ،اسے اچھی طرح آز ماتے ہیں۔ پھراس کے بعدا سے اس خاص نعمت سے نوازتے ہیں۔اس کی دلیل قرآن مجید میں ہے۔

الله رب العزت نے سیدنا ابراہیم میں کونعتوں سے نواز ناتھا تو اس سے پہلے ان کوبھی آز مایا۔ارشادفر مایا:

﴿ وَ إِذِا بُتَلَى إِبُرَاهِيْمَ رَبُّهُ بِكُلِمَاتٍ فَأَتَمَّهُنَّ ﴾ (البقرة: ١٣٨)

''اور یاد کرواس وقت کو جب آز مایا حضرت ابراہیم میلام کوان کے رب نے کچھ باتوں میں اوروہ اس میں سینٹ پرسینٹ (سوفیصد) کا میاب ہو گئے'' پھر کیا نتیجہ نکلا؟ .....فر مایا:

﴿ قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلْنَّاسِ إِمَامًا ﴾ (ايضاً)

''فرمایا (اے میرے پیارے ابراہیم) میں آپ کوانسانوں کا امام بنا تا ہوں'' تو امامت ملنے سے پہلے آزمائے سکئے۔ ۔۔۔۔۔ اللہ نے اپنے مقبول بندوں کو آزمایا۔اتن آزمائشیں آئیں کہ قرآن مجیدنے گواہی دی:

﴿ مَسَّنَهُمُ الْبَاسَاءُ وَ الطَّرَّاءُ وَ زُلْزِلُوا ﴾ (الِقرة: ٣١٣) "ان پراس قدرآ زمائشِ آئمِ ، يَكَى آئى ، تَنَى اوران طرح ان كوجنجوز ا "يا"

﴿ حَتَّى يَقُولُ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ امَنُوا مَعَهُ مَتَى نَصْرُ اللَّهِ ﴾ (البقرة: ٣١٣)

''حتی کهرسول اوران کے ساتھ جوایمان لائے وہ پکارا شھے۔اللہ کی مدد کب آئی گی؟''

> ، جباس تکتے پر پنچے تو اللہ تعالی فرمائے ہیں۔ ﴿ اَلَا إِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ قَرِیْبُ ﴾ ''جان لو کہ اللہ تعالیٰ کی مدو قریب ہے''

صحابہ کرام ﷺ اللہ رب العزت کے چنے ہوئے بند ہے تھے۔اللہ تعالیٰ نے ان کوبھی آنر مایا اور قرآن مجید میں ارشاوفر مایا:

﴿ وَ زُلُزِ لُوا زِلْزَ الَّا شَدِیْدًا ﴾ ''اوران کواچی طرح جنجوژ اگیا''

اور بات بھی تی ہے۔ کیونکہ ہم نے مٹی کا ایک برتن لینا ہوتا ہے تو اس کو بھی کھونک بجا کرو کیھتے ہیں کہ یہ کیا ہے یا پکا۔اگر ہم دورو پے کے برتن کو کچا پکا و کیھتے ہیں اور تمین روپے کے برتن کو کچا پکا و کیھتے ہیں اور تمین روپے کے تر بوز کو ٹھونک بجا کرو کیھتے ہیں کہ یہ کچا ہے یا پکا ، تو اللہ رب العزت نے بھی انسان کو اپنا بنانا ہوتا ہے اس کو بھی ٹھونک بجا کرد کیھتے ہیں کہ یہ کچا ہے یا پکا۔ چنا نچے آز مایا جا تا ہے اور جواس میں کامیاب ہوجا تا ہے اس کو انعام ملتا ہے۔

# تنين عظيم شخصيات كي آزمائش:

سیدنارسول الله مراینه کی دنیامین تشریف آوری تمی رالله تعالی نے آپ مراینها اوقریش کے قبیلہ میں پیدا فرمانا تھا تو آپ مراینها کی تین قریبی شخصیات کو مشقتوں میں ڈالا ممیا۔

## (۱) حضرت عبدالمطلب كي آزمائش:

ایک آپ طافی کے دادا عبدالمطلب کو۔ انہیں آپ عقی کا دادا ہونے کی سعادت حاصل ہونی تھی عبدالمطلب بہت خوبصورت تنے۔ جب وہ پیدا ہوئے تو ان کے کچھ بال پیدائش طور پرسفید تنے ،ای نسبت سے اس کا نام شیبدر کھا گیا۔اللہ کی شان کہ کچھ بال پیدائش طور پرسفید تنے ،ای نسبت سے اس کا نام شیبدر کھا گیا۔اللہ کی شان کہ کچھ عرصے کے بعدان کے دالد و فات پا گئے۔ان کی والد و کا نام سلمی تھا، وہ مدید منورہ آگئیں۔ بچدا پی دالدہ کے پاس پرورش پاتار ہائتی کے ابتدائی جوانی کی عمر کو پہنیا۔

مکہ کرمہ کارہنے والا ایک حارثی مخص کسی کام کے لیے مدینہ کمیا تو اس نے چند لڑکوں کو تیرا ندازی کا مقابلہ کرتے ویکھا۔ان میں سے ایک نوجوان جو ویکھنے میں بھی خوبصورت تھا اور جس کی شخصیت میں جاذبیت بھی تھی وہ جب بھی نشانہ لگا تا ٹھیک نشانہ پر تیرلگتا۔ پھروہ خوش ہے اشعار پڑھتا: لوگو! میں مکہ کے رہنے والے قبیلہ قریش کا فرزند ہوں ،میرے نشانے ٹھیک گئتے ہیں۔ حارثی کواس پر بڑا پیار آیا۔ چنانچہاس نے پوچھا: بیدکون ہے؟ بتایا گیا کہ بید کمہ میں پیدا ہوا تھا کچھ عرصہ بعداس کا والدفوت ہوگیا اور بیا پی والدہ کے ساتھ یہاں اپنے نھیال آیا ہوا ہے۔ وہ ان کے سارے قبیلے والوں کوجانتا تھا۔

واپسی پراس نے آکران کے پچا (جن کا نام مطلب تھا) سے کہا کہ م است مہمان نواز ہو،استے تی اوراستے اچھے اخلاق والے ہو، کیا تہمیں پر نہیں کہ تہمارا بھتجا کئی مشکل میں وقت گزار رہا ہے!؟ اسے اپنے پاس لا دُاوراس کی اچھی تربیت کرو۔ اس مختل میں وقت گزار ہا ہے!؟ اسے اپنے پاس لا دُاوراس کی اچھی تربیت کو کہ اس مختل نے انہیں اتنا پرا ھیختہ کیا کہ اس نے تنم کھائی کہ جب تک میں اپنے بھتے کو کہ نہیں لا دُن گا اس وقت تک چین سے نہیں بیٹھوں گا۔ چنا چہ مطلب مدینہ آئے ان کی والدہ سے بات کی خاندان والوں نے بھی ماں کو سمجھایا کہ بچہ بڑا ہو گیا ہے۔ اگر یہ تہمارے پاس رہے گا تو ان کا بڑا قبیلہ ہے اور وہ اشراف بیں اس لیے وہاں اس کا در ممال میں چلا جائے گا تو ان کا بڑا قبیلہ ہے اور وہ اشراف بیں اس لیے وہاں اس کا مقام ہوگا۔ چنا نچہ انہوں نے شیہ کوان کے ساتھ بھیجے ویا۔

اب بیخ بصورت نوجوان پیچے بیٹھا ہے اور اس کے پیچا آ سے بیٹھے ہیں۔ جب
وہ مکہ کرمہ میں داخل ہوئے اور کسی بندے نے دیکھا تو وہ مجما کہ مطلب اپنے لیے
غلام لائے ہیں ، تو اس نے ان کوعبدالمطلب کہہ دیا۔ اس کے بعد بینام ایسا معروف
ہوا کہان کوشیبہ کی بجائے عبدالمطلب کہا جائے لگا۔

اس نوجوان کواللہ رب العزت نے بیٹی کے دن تو دکھائے مشقتوں کے دن تو دکھائے مشقتوں کے دن تو دکھائے مشقتوں کے دن تو دکھائے مگران کے بعدان کوانعام ملنا تھا۔ ۔۔۔۔۔انعام کیا ملا؟ ۔۔۔۔ان کوخواب آیا کہ فلاں جگہ پرزم زم ہے آگر وہاں سے زمین کو کھود وتو بندچشہ نکل آئے گا۔ان ونوں مکہ مکرمہ جس یانی نہیں تھا، لوگوں کے لیے وہاں رہنا مشکل تھا، نہ جمینے کو پانی نہ چینے کو

پانی ۔ چنانچ عبدالمطلب نے زمین کی کھودائی شروع کر دی۔ وہ اکیلے ہی زمین کھودتے رہے، بالآخر وہ دن بھی آیا جب انہوں نے زم زم کے چشے کے دہانے پر بڑی چٹان کوتو ڑا اور نیچ سے پانی نکل آیا۔اس کے بعداللہ تعالی نے عبدالمطلب کو بیت اللہ کا متولی بنا دیا۔ چونکہ اللہ تعالی نے ان کو بیت اللہ کا متولی بنا نا تھا اس لیے اس سے پہلے اللہ تعالی نے ان کومشکل اور تنگی کے حالات دکھائے ..... بیتر بیت ہوتی ہے اللہ کی طرف ہے۔

آج ہم لوگ اس بات کو سمجھ نہیں پاتے اگر کسی پر ذراسی مشقت کے دن آنے
گئیں تو وہ سمجھتا ہے کہ بس میں اللہ سے دور ہو گیا ہوں اور اللہ مجھ سے ناراض ہے۔
اس کو یہ تنی بڑی غلط نہی لگ جاتی ہے کہ پیبہ ملنے کو اللہ تعالیٰ کی خوشی سمجھتے ہیں اور پیسے
کے کم ہونے کو اللہ کی ناراضگی سمجھتے ہیں ۔ یا در کھیں کہ اللہ تعالیٰ کی ناراضگی یا اس کے
راضی ہونے کا تعلق احکام شریعت کے ساتھ ہے۔ اگر زندگی شریعت کے مطابق ہوگی
اللہ رب العزت راضی ہوں میے اور اگر زندگی شریعت کے خلاف ہوگی تو کروڑوں پی
اللہ رب العزت راضی ہوں میے اور اگر زندگی شریعت کے خلاف ہوگی تو کروڑوں پی
نہیں ار بوں پی ہی میوں نے ہو اللہ تعالیٰ اس سے ناراض ہونگے ۔ یہ کھی وحلی بات

# (۲) حضرت عبدالله کی آزمائش:

عبدالمطلب نے منت مانی کہ اگر میر ہے دیں بیٹے ہوئے تو میں ان میں سے ایک کواللہ کے نام پر قربان کروں گا۔اللہ کی شان کہ دیں بیٹے بھی الیہ گئے۔اب انہوں نے سوچا کہ میں اپنی قتم کو پورا کروں ۔لیکن بیٹوں میں ہے کس کوذرج کروں؟ اس کے لیے قرعہ ڈالا ۔ قرعہ ان کے جیٹوں میں ہے ایسے بیٹے کے نام آیا جو بہت ہی خوبصورت تھا۔اس کا نام عبداللہ تھا۔لوگوں نے کہا: بھی اینچے کوذرج نہ کرو۔ بلکہ بچے اوراونٹوں کے درمیان تم قرعہ ڈال لو چنانچہ انہوں نے بیچے کے نام اور دی اونٹوں اوراونٹوں کے درمیان تم قرعہ ڈال لو چنانچہ انہوں نے بیچے کے نام اور دی اونٹوں

کے نام قرعہ ڈالا مگر قرعہ عبداللہ کے نام نکلا ..... پھر دس اونٹ اور بڑھا ویے، بیس اونٹ اور عبداللہ .....قرعہ اونٹ اور عبداللہ .....قرعہ عبداللہ کے نام ..... پھر تمیں اونٹ اور عبداللہ .....قرعہ عبداللہ کے نام .....اونٹ بڑھتے گئے، بڑھتے گئے، حتیٰ کہ جب سواونٹوں کی تعداد رکھی گئی تو اب قرعہ اونٹوں کے نام آ نکلا۔ چنا نچہ عبدالمطلب نے عبداللہ کے بدلے میں سواونٹوں کو قربان کیا ،اس لیے عبداللہ کو ذبیح اللہ بھی کہا جا تا تھا کہ ان کوان کے والد نے اللہ بھی کہا جا تا تھا کہ ان کوان کے والد نے اللہ کے نام یر ذریح کرنے کی نیت کی تھی۔

ایک مرتبدایک بدوآیا۔اسنے نبی طُنْ اَللہ سے کہا: یسا ابن ذبیہ حین .....اتو نبی طُنْ اَللہ مسکرائے اور فرمایا ، ہاں! میں اساعیل مینم کی اولا دمیں سے ہوں اور وہ ذنج اللہ تھے اور میں عبداللہ کا بیٹا ہوں اور عبداللہ بھی ذبح اللہ تھے۔

حضرت عبداللہ جب جوان ہوئے تو ان کی جوانی اور پنوبصورتی کو دیکھ کرلوگوں کو رشک آتا تھا۔ یہود ہے بہبود نے اپنی کتابوں میں نشانیاں پائی تھیں۔ چنانچہان کو پیتہ تھا جو شخص نبی آخرالز ماں کا والد ہنے گا ، اس کی پیشانی پر نور چیکے گا۔ چنانچہ ان یہود یوں کی عور تیں بھی ایسے نو جوان کو تلاش کرتی تھیں۔

ایک مرتبہ حضرت عبداللہ مکہ سے مدینہ جانے گئے۔ توراستے میں ایک فاطمہ نامی عورت نے حضرت عبداللہ کے سامنے اپ آپ کو پیش کیا۔ فرمایا: میں تو اس طرح نکاح نہیں کرسکتے تو ویسے ہی میرے ساتھ ملاقات کاح نہیں کرسکتے تو ویسے ہی میرے ساتھ ملاقات کرلو۔ حضرت عبداللہ نے فرمایا کہ میں کوئی ایسا کام نہیں کرنا چا ہتا جوانسان کے لیے ذلت اور رسوائی کا سبب ہے ۔۔۔۔۔اور واقعی جن پشتوں میں نبوت کا نور آ مے منتقل ہوتا ہو وہ بھی زنا جیسے جرم کا ارتکاب نہیں کیا کرتمیں ۔۔۔۔ چنانچہ حضرت عبداللہ مدینہ پہنچے

مدینه میں بنوز ہرہ کے نام ہے ایک قبیلہ تھا،ان کی ایک جوان العمر لڑکی تھی جس

کانام آمند تھا۔ وہ بہت اجھے اظاق والی ، بہت ہی نیک تربیت والی اور نیک فطرت والی بچی تھی۔ شکل بھی تھی ، عقل بھی تھی ، نیک بھی تھی ، اور ہر نعمت اس کے پاس تھی۔ چنا نچرا سے حضرت عبداللہ کے لیے پسند کیا گیا اور پھراس کے ساتھ ان کا فکاح ہوا۔ فکاح کے بعد جب حضرت عبداللہ والیس آئے تو یہی فاطمہ نامی عورت نے پھر حضرت عبداللہ کو دیکھی کر کہنے گئی: اب آپ کے چہرے پر وہ نور نظر نہیں آرہا جو مجھے مسلم نظر آتا تھا۔ حقیقت میں نبیء رحمت میں نیا تھی والد سے اپنی والدہ کی اللہ میں مشقل ہو چکے تھے ۔۔۔۔۔اب دیکھیے! کہ عبدالمطلب پر بھی امتحان آیا ، پھر حضرت عبداللہ پر بھی امتحان آیا ۔ اب تیسری شخصیت بی بی آمند کی تھی جس نے والدہ بنا تھا ان پر بھی امتحان آیا۔

# (۳) بي بي آمنه کي آزمائش:

شادی کے چند مہینوں کے بعد مکہ مکر مہ کا ایک قافلہ تجارت کے لیے بلدشام کی طرف گیا، حضرت عبداللہ بھی اس قافلے کے ساتھ گئے۔ اب شادی کے ابتدائی دنوں میں میاں بیوی میں جدائی دل کو بڑا اداس کرتی ہے۔ تو بی بی آ منہ بھی بہت اداس ہوئیں۔ حضرت عبداللہ نے وعدہ کیا کہ اداس نہ ہو، میں جلدی آ جاؤں گا۔ اور ساتھ بیہ بھی کہا کہ جب قافلے کے آنے کی گھنٹی بجے تو اس وقت تم دروازے پر آنا، میرا استقبال کرنا، میں بھی تمہیں محبت سے ملوں گا۔ یہ وعدہ کر کے حضرت عبداللہ چلے استقبال کرنا، میں بھی تمہیں محبت سے ملوں گا۔ یہ وعدہ کر کے حضرت عبداللہ جلے

کے وقت بلادِشام میں تجارت کے لیے گزارا، جب وہاں سے واپس تشریف لانے گئے تو مدیند منورہ میں حضرت عبداللّٰہ کو بخار ہو گیا۔اورا یسے بہار ہوئے کہ ان کے لیے سفر کرناممکن نہ تھا۔ چنا نچہ مدینہ میں سسرال کے ہاں قیام کرلیا۔ جب وہ قافلہ مکہ مکرمہ پہنچا اور تھنٹی بجی تو بی بی آ منہ بہت خوش ہو کمیں کہ میرے

شوہرآ گئے۔ چنانچہ دروازے پرآئیں، قافلے کے لوگ اپنا اپنے گھروں کو چلے گئے۔ گرحفزت عبداللہ نہ آئے۔ بی بی آمنہ اور زیادہ پریشان ہوئیں، پتہ چلا کہ وہ بیار ہیں اور بدینہ طیبہ میں ہیں۔ لہذا ان کے قریبی رشتہ دار مدینہ کی طرف روانہ ہوئے۔ اللہٰ کی شان کہ رشتہ دار ابھی مدینہ پہنچ بھی نہیں سے کہ حضرت عبداللہ اٹھارہ سال کی جوانی کی عمر میں اللہ کے پاس چلے گئے۔ بی بی آمنہ کی عمر تو اٹھارہ سال سے مال کی جوانی کی عمر میں اللہ کے پاس چلے گئے۔ بی بی آمنہ کی عمر تو اٹھارہ سال سے بھی کم ہوگئیں۔اب سوچے کہ بی بی آمنہ پر کیا ہمتہ پر کیا ہوگئیں۔اب سوچے کہ بی بی آمنہ پر کیا ہی ہوگا۔

## احوال عجيبه كاظهور:

نی بی آ مندفر ماتی ہیں کہ مجھے بہت دیر کے بعد پنۃ چلا کہ میں عاملہ ہوں۔ گریہ حمل عجیب تھا کہ بنچ ماں کے پیٹ میں ہوتے ہیں تو اسے نکلیف محسوس ہوتی ہے۔ حمل عجیب تھا کہ بنچ ماں کے پیٹ میں ہوتے ہیں تو اسے نکلیف محسوس ہوتی تھی ۔ البتہ مجھے حالات کچھ بدلے بدلے نظر آتے جھے۔۔۔۔۔۔ وہ کیسے ؟

ہے۔۔۔۔۔ جب میں کہیں جانے گئی تو میں دیکھتی کہ ایک جھونکا آتا ہے اور درخت
میرے آگے جھک جاتے ۔ اس طرح میں اپنے سامنے درختوں کو جھکٹا دیکھتی تھی۔
ہیں۔۔۔۔ جب میں پانی بھرنے کے لیے زم زم کے جشنے پر پہنچتی تو دیکھتی کہ زم زم کا پانی اوپر کنارے کے بالکل قریب ہوتا تھا اور جب میں پانی بھر کر واپس آنے لگتی تو پانی نینی اور کہتیں: '' آمنہ! تم پانی نینی جانا ہم کھڑی رہوہ تمہاری وجہ ہے ہمیں زم زم آسانی ہے ملتا ہے'۔

ﷺ جس میں میں میکھتی کہ اگر مجھے دھوپ میں کوئی کام کرنا ہوتا تو بادل کا مکڑا آکر میر سااوپر سامیہ کردیتا تھا مید درختوں کا جھک جآنا، پانی کا قریب آجا نا اور بادل کا سامیہ میر سے اوپر سامیہ کردیتا تھا مید درختوں کا جھک جآنا، پانی کا قریب آجا نا اور بادل کا سامیہ کرنا ایک با تیں تھی جو مجھے انوکھی انوکھی گئی تھیں ۔ اسی دوران بی بی آمنہ نے خواب کرنا ایک باتیں باتیں تھی جو مجھے انوکھی انوکھی گئی تھیں ۔ اسی دوران بی بی آمنہ نے خواب

#### (الاست المحافظة ) 3 (25) (25) (3 (10) الاست المحافظة ) 3 (10) المحافظة ) 3 (10) المحافظة ) 3 (10) المحافظة ) 3

د يکھااس خواب کی تعبیر پیھی کہتم ایک بہت بڑی مقدس ہستی کی والدہ بننے والی ہو۔

#### يېود يول كااضطراب:

بی بی آ مندفر ماتی ہیں کہ جب ولا دت کا دن قریب آیا تو ایک سرخ ستارہ آسان پر جیکنے لگا۔ تورات کے اندر بینشانی تھی کہ جب نبی آخرالز مال میں ہیں ہو گئے تو آسان پر سرخ ستارہ جیکے گا۔ چنانچہ یہود ہمیشہ اس کو دیکھنے کی فکر میں رہتے تھے۔ جب وہ ستارہ چیکا تو یہود میں غلغلہ کچے گیا اور ان کے ایوانوں میں زلزلہ آگیا۔ وہ انتہاکی پر بیشان ہوئے کہ نبی آخرالز مال میں ہوئے ہو والے ہیں۔ چنانچہ وہ یہود کی عورتوں میں سے معلوم کرتے کہ کوئی ایسی عورت ہے جو حاملہ ہاور اس کے وضاحمل کی مدت قریب ہے مگرانہیں کوئی ایسی عورت نظر ند آئی۔

بالآخرایک یہودی مکہ مکرمہ آیا، جب اس نے قریش کے خاندان سے پتہ کیا تو اسے معلوم ہوا کہ بی بی آمنہ کے ہاں ولا دت کا وفت قریب ہے چنانچہ اس نے شور مچایا،''لوگو! مجھے لگتا ہے کہ نبوت بنواسحات سے تبدیل ہو کر بنواسا عیل میں آگئی ہے۔ ہم سے بینعمت چلی گئی ہے''

## خصائصِ ولا دت:

اللہ کی شان کہ جس رات نبی مٹھی آئی کی ولا دت مبار کہ ہوئی ، نبی بی آ مندفر ماتی ہیں کہ ہمار کہ ہوئی ، نبی بی آ مندفر ماتی ہیں کہ ہمارے گھر میں جلانے کے لیے چراغ کے اندر تیل بھی نہیں تھا۔لیکن جب نبی مٹھی آئی ولا دت مبار کہ ہوئی تو بچھ عجیب سے واقعات رونما ہوئے۔مثال کے طور

• ..... جب نی اکرم مٹر آلی نے کوولا دت کے بعد میں لٹانے لگی تو آپ مٹر آلی ہے اس وقت اللہ رب العزت کے حضور سجدہ کیا۔ایسے ہو گئے جیسے سجدہ کرر ہے ہیں۔

- اس تان کے ستازے جھک گئے جیسے قریب آرہے ہیں۔
  - ⊙ .....کسریٰ با دشاہ کے کل کے چودہ کنگرے گر گئے۔
- اندرآتش پرستوں کی ایک آگئی جوڈیڑھ ہزارسال ہے جل رہی تھی۔ تھی۔ بہمی بجھی نہیں تھی وہ اچا تک بجھ گئی۔

## كسرى كاخواب اوراس كى تعبير:

اس دوران کسریٰ نے خواب دیکھا کہ عربی اونٹ ہیں اور ان کے آگے پچھ گھوڑے ہیں اور وہ عربی اونٹ ان گھوڑوں کو دھکیل کر دریاسے پار بھگارہے ہیں۔ اس نے تعبیر کرنے والے کو بلایا ۔ تعبیر کرنے والے نے بتایا کہ جھے لگتا ہے کہ عرب میں کوئی ایسی شخصیت پیدا ہوگی کہ جس کی وجہ سے عرب کے لوگ باتی لوگوں کو جزیرہ عرب سے باہر نکال دیں گے۔

#### چودہ بادشاہتوں کے خاتمے کا اشارہ:

اس نے کہا: میرے کل کے چودہ کنگرے گرے ہیں ،اس نے تعبیر دی: جناب!
آپ سے کیکر چودہ بادشاہتیں آپ کے خاندان میں رہیں گی اور اس کے بعدیہ
بادشاہت ان کے پاس چلی جائے گی۔ کسری مطمئن ہوگیا کہ چودہ بادشاہتیں توختم
ہونے میں بڑا وقت گے گا گراس کو پیتنہیں تھا کہ اس کے بعد تھوڑ ہے تھوڑ ہے وہ ہیں جو بھی بادشاہ بنتا رہا وہ مرتا رہا۔ اور عثمان غنی رفظ نے کے زیانے میں وہ چودہ
بادشاہتیں کمل ہوگئیں۔ اور اللہ نے کسری کا وہ تخت وتاج مسلمانوں کوعطافر مادیا۔

## ستارے جھکنے میں اُسرار:

ستارے بھکے ....اس میں کیا حکمت تھی؟ ..... بتا نا یہ مقصود تھا کہ!

● ..... لوگو! بيه وه څخصيت ہے جس كے سامنے آسان كى مخلوق بھى جھك رہى ہے۔ دنيا

والو! تم بھی اس کے سامنے سرتشلیم ٹم کرو گے تب فلاح پاؤ گے۔

⊙ .....وقت کے بادشاہوں کو پیغام تھا کہ دیکھو! آسان پر جپکنے والے ستار ہے بھی اگر جھک گئے ہیں تو تم زمین پر جپکنے والے لوگ ہوتمہیں بھی ان کے سامنے گر دنوں کو جھکا نا پڑے گا۔

○ .....ادرایک نکته اس میں بیرتھا کہ یہ بیدا ہونے والی الیی ہستی ہے کہ ان کی صحبت میں جوآئے گا، ان کی تعلیمات کو جو اپنائے گا، جس میں جوآئے گا، ان کی تعلیمات کو جو اپنائے گا، جس طرح آسان کے ستارے ہیں اس طرح ان کی صحبت میں آنے والے زمین کے ستارے بیں اس طرح ان کی صحبت میں آنے والے زمین کے ستارے بنی مُنْ اَنْ اِلْمَ نَا فِر مایا:

اَصْحَابِی کَالنَّجُومِ بِایِّهِمُ اَفْتَدَیْتُمْ اِهْتَدَیْتُمْ اِهْتَدَیْتُمْ اِهْتَدَیْتُمْ اِهْتَدَیْتُمْ ا "میرے صحابہ ستاروں کی مثل ہیں ان میں سے جس کی بھی افتدا کرو گے ہدایت یا جاؤ مے"

أيك صاحب ول كاعاشقانه كلام:

نبی طرفی آن کی ولا دت مبارکہ کے بارے میں کسی صاحب ول بندے نے کیا ہی اچھی بات کہی ،فرماتے ہیں:

نی علیہ الصلوق والسلام کے پتیم پیدا ہونے سے بیہ بتا نامقصود تھا کہ دیکھو! ظاہراً

یہ ستی ہے سہارا ہے، گرجس کا کوئی اور سہارانہیں ہوتا، اس کا سہارااللہ ہوتا ہے۔
والدکوابا بھی کہتے ہیں، عربی میں ابو بھی کہتے ہیں ....و گان ابو هما صالحا
....ابوکو مخفف کر کے اب بھی کہ دیتے ہیں ۔ تو اب ذراغور کیجیے؟ اللہ تعالیٰ نے بیتم
پیدا کر کے یہ پیغام دیا کہ لوگو! جس کا دنیا میں اب نہیں ہوتا اس کا رب ہوتا ہے اور
جس کا رب ہوتا ہے اس کا سب ہوتا ہے ۔

أمى و دقیقه دانِ عالم به سائبان عالم بیتیم ایسے ہی دریتیم بنتے ہیں ....اللہ اکبر:

وہ جس کے نام سے داؤد نے نغمہ سرائی کی وہ جس کی یاد میں شاہ سلیماں نے گدائی کی دل یکی میں ارمال رہ گئے جس کی زیارت کے لب عیسیٰ پہ آئے وعظ جس کی شان رحمت کے وہ دن آیا کہ پورے ہوگئے تورات کے وعدے مہارک ہو کہ ختم المرسلیں تشریف نے آئے جناب رحمۃ للعالمین تشریف لے آئے جناب رحمۃ للعالمین تشریف لے آئے جناب رحمۃ للعالمین تشریف لے آئے

ينتم درِّيتم بن گئے:

الله کی شان دیکھیے کہ آپ مٹائی آئیم کی ولا دت مبار کہ سے تمن ماہ پہلے آپ مٹائی آئیم کے والد ماجد کی وفات ہوگئی، جس کی وجہ سے آپ یہتیم پیدا ہوئے ۔۔۔۔ بہتیم اسے کہتے ہیں جس کے والد کی وفات اس کے بالغ ہونے سے پہلے ہوجائے ، بلوغ کی عمر کے بین جس کے والد کی وفات اس کے بالغ ہونے سے پہلے ہوجائے ، بلوغ کی عمر کے بعد کوئی یہتیم نہیں رہتا۔ چاہے ولا وت سے پہلے فوت ہوجا کیں چاہے بلوغ سے پہلے فوت ہوجا کیں جاہے بلوغ سے پہلے فوت ہوجا کیں تشریف لائے اس وقت فوت ہوجا کیں تشریف لائے اس وقت

والدكاسابيسرے اٹھ چکا تھا۔

ولا دت کے بعد آپ مٹائی آئی کے دادا آپ مٹائی آئی کو بیت اللہ کی طرف لے کر گئے ۔ مگر دادا کومعلوم نہیں تھا کہ بیروہ شخصیت ہے جس کی وجہ سے اللہ کی طرف سے رحمتیں اور برکتیں نازل ہوں گی ۔

> قدم قدم پہ رحمتیں قدم قدم پہ برکتیں جہاں جہاں سے وہ شفیع عاصیاں گزر گیا

#### جب ساتوال دن آیا تو .....:

جس نے بھی بچے کو دیکھا، اس نے اسے بہت پیار کیا اور تعریف کی ، چنا نچہ جب
ساتویں دن نام رکھنے کا وقت آیا تو عبدالمطلب نے کہا کہ میرے اس بیٹے کی ہر
بندے نے تعریف کی ہے لہٰذا ہیں اس کا نام ''محمد''رکھوں گا ۔۔۔۔۔محمد کا مطلب ہو و
ذات جس کی کا کتات میں سب سے زیادہ تعریفیں کی گئی ہوں ۔۔۔۔۔ نبی مٹھ آئی محمد بھی
شخے اور احمد بھی تھے۔۔۔۔۔۔احمد کا مطلب ہو وہ ذات جو اللہ کی اتنی تعریفیں کرے کہ اللہ
کی اتنی تعریف کسی اور نے نہ کی ہوں ۔۔۔۔۔ یہ دونوں نام اس سے بہلے بھی نہیں رکھے
گئے تھے۔۔۔۔ان اللہ !اتنا خوبصورت نام رکھا گیا!

# بے کو گود میں لینے کے لیے عورتوں کی آمد:

طیمہ اوراس کے خاوند تھے۔ طیمہ کے پاس دود در پینے والا ایک اور بچہ بھی تھا۔ ان کی اونٹنی بہت ہی لاغر اور کمز ورتھی جب دس عور تیں چلیں تو نوعور تیں آ گے نکل گئیں اور حلیمہ بیچھے رہ گئیں۔ دو تین مرتبہ تو ان عور توں نے رک کر حلیمہ کے آ نے کا انظار کیا بعد میں انہوں نے کہا تمہاری وجہ ہے تو سفر میں بہت دیر ہور ہی ہے۔ ہمارا تو سارا سفر کھوٹا ہوگا۔ اس لیے ہم تو چلتی ہیں چنانچے تو عور تیں آ گے چلیں اور حلیمہ سعد یہ سے پہلے مکہ مکر مہ پہنچ گئیں۔

ان بین سے ہر عورت چاہتی تھی کہ میں امیر باپ کے بینے کواپئی گود میں لوں

تا کہ جھے میری محنت کا زیادہ پھل ملے۔ چنا نچہ سب عورتوں نے امیر لوگوں کے بیٹوں

وگود میں لے لیا عورتیں آئیں اور نبی علیہ العملو قاوالسلام کے والد کے بارے میں

پوچھتیں کہ اس کے والد کہاں ہیں؟ جب پہتہ چلا کہ وہ تو فوت ہو چکے ہیں اور سہ پچہتیم

ہنو وہ سوچتیں کہ پھر ہمیں تو پچھٹیں ملے گا۔ چنا نچہوہ واپس چلی جا تیں۔ جب

آنے والی عورت واپس چلی جاتی تو وہ بی بی آمنہ کے دل پر ایک زخم لگا جاتی، بی بی

آمنہ کاغم بڑھ جاتا، انہیں حضرت عبداللہ کی یاو آجاتی ۔ اواس اور ممکن تو پہلے ہی تھیں

اورا داس بندے کوایک لفظ ہی سنتا پڑے تو وہ پھوٹ پڑتا ہے۔ تو ان عورتوں کا آنا اور

نبی علیہ العملو قاوالسلام کو چھوڑ کرویسے ہی چلے جاتا بی بی آمنہ کے دل پر ایک بھاری

ضرب لگاتا۔ وہ سوچتی ہوں گی ، کاش! آج عبداللہ ہوتے وہ اس کے لیے اچھالباس

فرب لگاتا۔ وہ سوچتی ہوں گی ، کاش! آج عبداللہ ہوتے وہ اس کے لیے اچھالباس

بی بی آ منها پنے تم میں یہ باتیں سوچ رہی تھیں اور ان کو کیا پیتہ تھا کہ بیہ وہ <sup>ہستی</sup> ہے کہ .....

⊙ .....جن کے لیے اللہ تعالیٰ آسان کے جاند کو کھلوتا بنادیں گے۔

⊙ .....جن کوسیر کروانے کے لیے اللہ تعالیٰ انہیں عرش پر بلالیں گے۔

#### ● .....جن کواللہ رب العزت دنیا کے اندر بھی شاہی عطافر مادیں گے۔

#### یرورش کے لیے حلیمہ کے انتخاب میں راز:

جب طیمہ مکہ مرمہ میں آئیں تو انہیں اور تو کوئی بجہ نہ طا۔ پتہ چلا کہ صرف ایک بچہ ہے جو باقی رہ گیا ہے .....واہ میر ہمولا! جس ہے ایک کی عبادت کرنی تھی وہ ایک بی رہ گیا۔ جس نے ایک بی رہ گیا۔ جس نے ایک بی رہ گیا۔ جس نے ایک تر آن کی طرف بلانا تھا وہ ایک بی رہ گیا۔ جس نے ایک شریعت کی طرف بلانا تھا، وہ ایک اللہ کو مانے والا ، ایک بی رہ گیا۔ اب بی بی طیمہ کے یاس کوئی آپٹن بی نہ تھا۔

اس کے دل میں یہ بات آئی کہ میں دیکھوں تو سہی کہ یہ بچہ کیسا ہے؟ چنانچہ روایات میں آیا ہے کہ نبی علیہ الصلوۃ والسلام سوئے ہوئے تضاوراو پرچا دراوڑھائی گئی ہیں۔ نبی بی جلیمہ نے جیسے ہی چا درا تاری تو بچے نے آئی میں کھول لیس۔اور وہ اس کو دیکھ کرمسکرایا .....اس کی مسکرا ہث میں ایس جاذبیت تھی، ایسی کشش تھی، ایسا انجذ اب تھا کہ نبی بی حلیمہ اپنا دل ہی دے بیٹھی ..... چنانچہ وہ اپنے خاوند سے پوچھنے گئی، اگر چہ ہمیں اس بچے کا انعام زیادہ تو نہیں ملے گاکیوں کہ یہ بیتم ہے۔ محراس بچے کی مسکراہیں میرے دل کو تو تسلی دے دیا کریں گی۔ان کے خاوند نے ان کو یہ مشورہ کی مسکراہیں میرے دل کو تو تسلی دے دیا کریں گی۔ان کے خاوند نے ان کو یہ مشورہ دیا: باس بے کو لے لو پھر ہی کہا:

عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ لَنَا فِيهِ بَرَكَةً

'' موسکتا ہے کہ اللہ تعالیٰ ہمارے لیے اس میں برکت عطافر مائے'' ان یہاں علمانے ایک نکتہ لکھا۔ دس عورتوں میں سے نوآ کمیں ان کی نظر اسباب پڑھی ، ان کی نظر لوگوں پڑھی۔ کہ ان کے والدین ہمیں انعام دیں گے۔ ایک حلیمہ ہی ایسی ہی تھیں جس کے خاوند کی نظر اللہ کی بھیجی ہوئی برکت پڑھی ، کیونکہ اس نے کہا: عَسَی اللّٰہُ اَنْ یَنْجُعَلَ لَنَا فِیْہِ بَرَ کَنْهُ

#### '' ہوسکتا ہے کہ اللہ تعالیٰ جارے لیے اس میں برکت عطافر مائے''

انہوں نے لکھاہے کہ اللہ تعالیٰ نے حلیمہ کا انتخاب اس لیے کیا کہ

(۱) ایک تو وہ حکم والی تھیں ان کی طبیعت میں حکم تھا۔ کی دفعہ ماں کی طبیعت میں حکم نہیں ہوتا تو وہ بیچے کی ذرای بات پر غصے میں آ کر تھیٹر لگا دیتی ہے۔ وہ بیچے کوڈانٹ ڈپٹ کرنے لگ جاتی ہے اور بیتو اللہ کے محبوب مٹھ آئیز ہم کی پرورش ہونی تھی۔ لہذا اللہ رب العزت نے الیں عورت کو پہند کیا جس کا ظرف بڑا تھا، جس کا حوصلہ بڑا تھا۔ جلدی غصے میں نہیں آتی تھیں ، وہ حکم والی تھی جس کی وجہ سے اس کا نام ہی حلیمہ پڑتھا۔ تھا۔

(۲) اور دوسری بات بیر که اس کی نظر مخلوق پرنہیں تھی بلکه اس کی نظر الله رب العزت کی ذات پڑتھی۔

''لوگو!اس میں ہمارے لیے ایک برواسبق ہے۔جومخلوق کی جیب پرنظرر کھتا ہے وہ عام بچوں کو لے کر گھرد آتا ہے اور جواللّٰدرب العزت کی ذات پرنظر رکھتا ہے وہ حسن بے مثال کو لے کرا ہے گھروا پس آتا ہے۔

#### رب نے بنایا جب اس کوخود آپ کہا: سبحان اللد!:

علیم سعد یہ نے بچے کو اٹھا کر سینے سے لگالیا۔ علیمہ اتی خوش ہوئی کہ میں نے تو اتنا خوبصورت بچے بھی نہیں و مکھا۔ وہ بار باراس کی تعریف کرنے لگیں کہ میں نے تو اتنا خوبصورت بچے بھی نہیں و مکھا۔ لی بی آ منہ نے جواب دیا: علیمہ! تم گاؤں کی رہنے والی ہو، تم نے کیا ہے و کیھے ہوں گے، میں مدینہ میں بھی رہی اور مکہ میں بھی رہی میں شہروں کی رہنے والی ہوں، میں نے ایسا خوبصورت بچے بھی نہیں و بھا۔ عبدالمطلب باس کھڑے تھے وہ کہنے لگے: تم شہروں کی بات کرتی ہو میں ملکوں میں ہو کے آیا ہوں۔ بلادِشام کاسفر کرکے آیا ہوں میں نے ملکوں میں ایسا بچے نہیں و بکھا۔

حلیمہ کہتی ہیں کہ میں سنے گاؤں چیں ایسا بچہبیں ویکھا۔ بی بی آ منہ فرماتی ہیں کہ میں نے شہروں میں ایسا بچہبیں ویکھا۔عبدالمطلب فرماتے ہیں کہ میں سنے ملکوں میں ایسا بچہ نہ ویکھا۔ اور اگر میں چشم تخیل سے ویکھوں کہ اگر جرائیل امین عظم پاس ہوتے تو جواب میں کہتے: حلیمہ تم نے گاؤں میں ایسا بچہبیں ویکھا ۔۔۔۔ بی بی آ منہ! تم نے شہروں میں نہ ویکھا ۔۔۔۔ بی بی آ منہ بیری کا نئات میں کہیں کوئی ایسا چرہ نہیں ویکھا ۔۔۔ کا نئات میں کہیں کوئی ایسا چرہ نہیں ویکھا ۔۔۔

اے چہرہ زیبائے تو رسک بتانِ آزری ہر چند آفاق ہا بسیار خوباں دیدہ ام

اگر جرائیل علیہ السلام ہے کہتے ، تو میر انصور بھی یوں کہتا ہے: حلیمہ تو نے کہا میں نے گاؤں میں نہ دیکھا ، بی بی آ منہ نے فرمایا میں نے شہروں میں نہ دیکھا ، عبالمطلب نے فرمایا: میں نے دیکھا اور جرائیل میلام نے فرمایا: میں نے پوری کا تنات میں نہ دیکھا تو اللہ رب العزت اس وقت یوں فرماتے ہیں میں خود مخلوق کو پیدا کرنے والا ہوں ، میں نے پوری مخلوق میں کوئی ایسا چرانہیں دیکھا۔ والیل سیائی زلفوں کی چرہ والفی اس کا مارے جہاں کے پیارا ہے آپ محب ہے خدااس کا رب نے بنایا جب اس کو خود آپ کہا سجان اللہ

نی علیہالصلو ۃ والسلام بھی پناچہرہ آسان کی طرف اٹھاتے تھےاللہ تعالیٰ فرماتے ہیں میرے حبیب!

قَدُّ نَرِیْ تَقَلَّبَ وَجُهَكَ فِی السَّمَاءِ آپآسان کی طرف دیکھتے تنے اور ہم آپ کے محبوب چبرے کی طرف ویکھتے

### مال کی دعاؤں کے ثمرات:

جب بچہ مال سے رخصت ہونے لگتا ہے تو وہ اسے دعا کمیں دیتی ہے، مال کے دل سے دل پر بیچے کی جدائی کی خاص کیفیت ہوتی ہے۔ چنانچہ بی بی آ منہ کے دل سے دعا کمیں نگلیں ۔ بیہ مال کی دعا کمیں بڑی نعمت ہوتی ہیں ۔ آ ہیۓ! تاریخ پر نظر ڈالیے پہلے بھی ایسا ہوا کہ ماؤں نے اپنے بچول کو دعاؤں سے رخصت کیا ۔۔۔۔۔نتیجہ کیا نکلا؟ ۔۔۔۔۔ذراقر آن سے پوچھیے!

لی بی ہا جرہ کوسیدنا ابراہیم میلاہ نے فرمایا کہ بچے کو تیار کر دو ،کسی بڑے سے ملنا ہے۔ بی بی ہا جرہ بچے کو نہلا تی ہیں کپڑے پہناتی ہیں اور اپنے خاوند کے ساتھ ان کو روانہ کرتی ہیں۔ دوانہ کررہی ہے۔ جب بچہ چلا تو اسلمیل تھا۔ اور جب لوٹ کرواپس آیا تو ذریح اللہ بن چکا تھا یہ مال کی وعا کمیں ہوتی ہیں۔ جب لوٹ کرواپس آیا تو ذریح اللہ بن چکا تھا یہ مال کی وعا کمیں ہوتی ہیں۔ ﷺ کے والدہ اپنے بچے کوایک چھوٹے سے بہتے میں ڈال کر پانی میں مہادئی ہوتی ہیں۔ والدہ اپنے بچے کوایک چھوٹے سے بہتے میں ڈال کر پانی ہوتی ہیں۔ میں ہوتی ہیں دعا کمیں دے رہی ہو

میں بہا دیتی ہیں۔ ماں کے دل پر کیا گزررہی ہوگی؟ ماں کتنی دعا نمیں دے رہی ہو گی!!لیکن ماں نہیں جانتی بیدمیرا بیٹا آج مجھ سے رخصت ہور ہا ہے تو بیدمویٰ ہے اور جب لوٹ کرآئے گا تو اللہ وہ مقام دے گا کہ بیکیم اللہ بن چکا ہوگا۔

☆ …. عبدالمطلب جب اپنی ماں سلمی کے پاس رہتے تھے تو اس وقت ان کا نام شیبہ تھا، جب ان کے چپا لینے گئے توسلمی نے روکرا ور دعا ئیں دے کرا پنے بیٹے کورخصت کیا۔ اللہ کی شان دیکھیں کہ جب بیٹا ماں کے پاس سے چلا تو شیبہ تھا اور جب مکہ مکرمہ پہنچا تو اللہ نے وہ مقام دیا کہ بیدوالی بیت اللہ بن گیا۔

اب ذراغور سیجیے کہ ایک بچہ مال کے پاس ہے چلتا ہے تو اسلیل ہوتا ہے اور واپس آتا ہے تو ذبح اللہ بن چکا : وتا ہے۔ ایک بچہ مال کی د عاؤں سے چلتا ہے تو موکٰ : وتا ہے ، واپس آتا ہے تو کلیم اللہ کا رتبہ ل چکا ہوتا ہے۔ ایک بچہ چلتا ہے تو شیبہ نام ہوتا ہے اور جب مکہ پہنچتا ہے تو والی بیت اللہ بن جاتا ہے۔ آج بی بی آ مندا پے بچے کو دعاؤں سے رخصت کررہی ہے۔ نہیں جانتی تھیں کہ آج یہ بیٹا محمد ہے، جب لوٹ کے آئے گا تو اللہ وہ مقام دیں گے کہ محمد رسول اللہ بن جائے گا۔

عزیز طلبا! ماں کی دعاؤں سے اپنے آپ کومحروم نہ کیا کرو۔ کیھونو جوان ضد
کرتے ہیں۔ بے جا ہٹ دھرمی کا مظاہرہ کرتے ہیں اور ماں کا دل دکھاتے ہیں ،
نتیجہ بیڈکلٹا ہے کہ اللہ تعالی کی طرف سے ملنے والے انعام سے محروم ہوجاتے ہیں۔
ماں کی دعا کیں لے کرچلو پھرو کیھو کہ اللہ رب العزت کی کیار حمتیں ملتی ہیں۔ کیا برکتیں
ملتی ہیں۔

نى اكرم ما الله الله كامقام صدارت:

بہر حال بی بی آ منہ نے آپ فرزند ارجند کورخصت کیا اور حلیمہ ان کو لے کر واپس ہونے لگیں۔ اللہ کی شان دیکھیے کہ جب اونٹنی پرسوار ہونے لگے تو حلیمہ کے خاوند نے ان کو پہلے بٹھا دیا اور بعد میں پھر آ گے خود سوار ہوا کہ میں اونٹنی کو چلاؤں جب وہ خود سوار ہوا تہ میں اونٹنی کو چلاؤں جب وہ خود سوار ہوا تو انٹنی نہ چلی۔ جیران ہوکر نیچا تر اجیسے ہی وہ نیچا تر ااونٹنی چلنے کے لئے تیار ہوگئی۔ پھر آ گے بیٹھا تو اونٹنی پھر نہیں چلتی تھی اسے سمجھ نہیں آ رہی تھی کہ اصل مسئلہ کیا ہے اس نے کہا کہ حلیمہ! تم آ گے بیٹھو میں پیچھے بیٹھتا ہوں۔ حلیمہ اس پیارے بیچ کو سینے سے لگا کر آ گے بیٹھ گئی اور اس کا خاوند پیچھے بیٹھا۔ سواری اس وقت حلنے کے لئے تیار ہوگئی۔ سواری اس وقت حلنے کے لئے تیار ہوگئی۔ سواری اس وقت

''اے حلیمہ کے خاوند! بیہ وہ مقد س ہستی ہے کہ اگرتم اسے اپنی پشت کی طرف بٹھاؤ گے تو میں بھی تمہیں لے کرنہیں جاؤں گی ،میرے قدم پہ چلنا حرام ہے۔ اگر چلانا چاہتے ہوتو بیکا گنات کا صدرنشیں ہے اس کو آ گے صدر مقام پر بٹھاؤ'' چنانچہ اومٹنی نے بھاگنا شروع کر دیا ،اللہ کی شان کہ اومٹنی ایسی تیز رفتاری کے چنانچہ اومٹنی ایسی تیز رفتاری کے الاوت المحافظ الفاق 136 138 136 والوت المحافظ الفاق الفاق

ساتھ بھاگی کہ حلیمہ ان عور توں سے جاملیں جو بہت پہلے سے اپنا سفر شروع کر چکی تھیں۔ انہوں نے دیکھا کہ حلیمہ کی سواری تو قدم آ گے بڑھار ہی ہے۔ جیران ہوکر پوچھتی ہیں: سیطیمہ! تم نے سواری بدل کی ہے؟ سیطیمہ نے جواب دیا۔ پوچھتی ہیں: سیطیمہ! تم نے سواری تونہیں بدلی'' البتہ سواری کا سوار بدل گیا ہے۔''

### دن بدل گئے:

علیمہ فرماتی ہیں کہ میں نے اپنے سینے میں دورہ محسوں کیا، جبکہ کھانے پینے کی کوئی چیز بھی نہیں تھی۔ مجھے محسوں ہونے لگا کہ میر ے فاوند نے جو کہا تھا .....عسسی الله ان یجعل لنا فید ہو گئے ...... مجھے وہ ہر کت نظرا آنے گئی ۔ فرماتی ہیں کہ جب ہم محمر پنچ تو دیکھا کہ بکر یول کے تقنول میں دورہ بھرا ہوا تھا۔ گھر میں جتنے برتن تھے وہ سب انہول نے دورہ سے بھر لیے۔ علیم سعد بیانے بیا کہاں بیچ کی وجہ سے آج سب انہول نے دورہ سے بھر لیے۔ علیم سعد بیانے بیا کہاں بیچ کی وجہ سے آج ہمارے دن بدل گئے ، آج ہمارے گھر کے اندر بر کمیں آگئیں ، شاہی محل میں کیوں نہ بالا؟

طالب علم کے ذہن میں ایک تکتہ پیدا ہوتا ہے کہ اللہ رب العزت نے اپنے مجعض انبیائے کرام کوشاہی محلات میں یا لا ذراغور سیجیے!

کی سے در سے موسی علیہ السلام فرعون کے کل میں پلے جب فرعون کی ہوی نے ان کو در کی کھا تو کہ کی ہوی نے ان کو در کی کھا تو کہنے گئی :

﴿ لَا تَقْتُلُوهُ عَسلِي أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْنَتَّخِذَهُ وَلَدًا ﴾

چنانچه حضرت موی میشوشای محل میں بل رہے ہیں۔

الله ..... حغرت بوسف علیه السلام کو دیکھو۔ عزیز مصر نے خرید ااور اپنی ہوی ہے کہا: ۱ سیسی سر میں سر میں سر میں سرور میں میں مر

﴿ عَسلَى أَنْ يَنْفَعَنَا إِوْنِتَا خِذَهُ وَلَدًا ﴾

چتانچیروه بھی محل میں ہیا ہیں۔۔۔۔ تو اللہ تعالیٰ نے اپنے بعض انبیائے کرام کومحلات

میں پالانیکن نبی علیہ الصلے قو والسلام کو حلیمہ کے غربت کدے میں پالا۔اس کی وجہ کیا تھی؟

اس میں حکمت بیتھی کہ اگر کل کی آسائش ہوتی تو بنی طیہ الصلوق والسلام کی وجہ سے جو برکتیں آتیں لوگوں کو سیجھتے میں مشکل ہو جاتی ۔ اللہ تعالیٰ نے آپ مراہی ہے اقد عربیں ۔۔۔ ہاں کی چھاتی میں فررہ خور بین ۔۔۔ ہاں کی چھاتی میں دودھ نہیں ۔۔۔ ہاں کی چھاتی میں دودھ نہیں ۔۔۔۔ ہاں کی چھاتی میں دودھ نہیں ۔۔۔۔ ہیں ہی چھاتی میں دودھ نہیں ۔۔۔۔ پریشان حال ہیں ۔۔۔۔ اس اگر نبی علیہ الصلوق والسلام کی تشریف آوری سے حالات بدلے تو دنیا نے شلیم کرلیا کہ دیکھو! جو کھ بھی نہیں رکھتے تھے، آج اللہ نے ان کولا کھوالا بنادیا ۔۔۔۔ ہیں کی رہے ہیں؟ ۔۔۔۔ یہ سیاس بیکی وجہ سے ہیں؟ ۔۔۔۔ یہ سیاس بیکی وجہ سے ہیں۔ جتی کہ حلیمہ کے خاوند نے ان سے کہا: حلیمہ!

لَقَدُ آخَذُتِ مُبَارَكَةً

''یقیناً تو کوئی مبارک بچہ لے کر آئی ہے''

نی ءرحمت مٹھی کے حلیمہ سعدیہ کے غربت کدے میں تشریف آوری کی وجہ سے اتن برکتیں طاہر ہوئیں کہ قریب کی عورتیں آتی اور کہتیں حلیمہ! تم اپنی بکریاں کہاں چراتی ہو؟ وہ کہتی فلال پہاڑی پر تو وہ عورتیں بھی اپنی بکریاں وہاں جیجتیں لیکن ان کی بکریوں میں پیرا ہوتا تھا۔ دووھ بکریوں میں پیرا ہوتا تھا۔ دووھ انتازیادہ تھا!!

## دوسرے بیتان سے دود صنہ پینے کی وجہ:

حلیمہ نے ایک عجیب بات دیکھی وہ نبی علیہ الصلوۃ والسلام کوا ہے وائیں بہتان سے دودھ پلاتی تھیں ایک مرتبہ ان کا جی چاہا کہ بیں دوسری طرف سے بھی دودھ پلاؤں تھیں ایک مرتبہ ان کا جی چاہا کہ بیں دوسری طرف سے بھی دودھ پلاؤں تگر بچہدودھ بی نہیں پیتا تھا۔ حلیمہ نے اس چیز کونوٹ کیا کہ یہ بچہ ایک بہتان سے دودھ بیتا ہے ۔۔۔۔۔اس میں کیا تھمت تھی؟ ۔۔۔۔۔تھی کہ اگر بالفرض آپ

من البنان سے بھی دودھ پی لینے تو بعد میں آنے والی دنیا کہتی کہ خودتو بھین میں بھائی کے حق کا دودھ پیتے رہے اور آج دنیا کوعدل وانصاف کا درس دینے کے لیے کھڑے ہو گئے ہیں۔ اس سے بہتہ جلا کہ جب نبی علیہ الصلاۃ والسلام دنیا میں تشریف لاتے ہیں تو نبوت کا فطری مزاج لیکر دنیا میں آتے ہیں ۔ بھین میں ہی التدرب العزت نے آپ من اللہ کو وہ فطرت سلیمہ دے دی تھی کہا کے حق کی طرف منہ ہی نبیل کیا کرتے تھے ۔۔۔۔اللہ البرکیرا!!

## حسن و جمال میں کشش اور جاذبیت:

حلیمہ کی بیٹی کا نام شیما تھا۔ ایک دن ایک تجیب بات ہوئی۔ حلیمہ نے بیٹی سے کہا: شیما! در ہورہی ہے بکر یوں کو چرانے کے لیے لے کر جاؤ۔ شیما کہنے گی: ای ! بر یاں زیادہ ہیں میں اکبلی ہوں۔ میں ان کے پیچھے بھاگ بھاگ کر تھک جاتی ہوں۔ میں ان کے پیچھے بھاگ بھاگ کر تھک جاتی ہوں۔ میص اور کو میر سے ساتھ بھیجو تب میں جاؤں گی۔ حلیمہ نے کہا: بیٹی! گھر میں تو کوئی اور ہے نہیں ، تیرا باپ بھی بوڑھا ہے اور میں بھی بوڑھی ہوں۔ لہندااب تیر سے ساتھ اور تو کوئی نہیں جا سکتا ، تمہیں اسلیم بھیج و پیچے۔ حلیمہ نے گا۔ شیما کہنے گی: اماں! میر سے بھائی محمد ملے گئے ہم کو میر سے ساتھ بھیج و پیچے۔ حلیمہ نے کہا! میں! آگر آپ مجھے اکیلا بھیجیں گی تو بحریاں مجھے سے نہیں سنجلیں گی اور اگر بھائی کوساتھ بھیج و یں گی تو میں بحریوں کو بھی سنجال لوں گی اور بھائی کو بھی سنجال لوں گی اور بھائی کو بھی سنجال لوں گی اور بھائی کو بھی سنجال لوں گی۔ حلیمہ یہ جواب سنکر جران ہوگئی۔ یو چھا: بیٹی! کھل کر بتاؤ اصل بات کیا ہے؟ گی۔ حلیمہ یہ جواب سنکر جران ہوگئی۔ یو چھا: بیٹی! کھل کر بتاؤ اصل بات کیا ہے؟

امال میں ایک دومرتبہ بھائی کو لے کر گئی ۔ایک تو میں نے دیکھا کہ پورا دن بادل نے مجھ پرسایہ کیے رکھا ، مجھے دھوپ میں جانا ہی نہیں پڑا اور دوسری بات میں الله رب العزت نے اپنے حبیب مٹائیاتی کو کیاحسن و جمال عطافر مایا تھا.....!!! وَ ٱخْسَنُ مِنْكَ لَمْ تَرَقَطَ عَیْنِیْ

اے محبوب! آپ سے بہتر خوب صورت چہرہ بھی کسی آنکھنے نہیں ویکھا ہے۔ وَ اَجْمَلُ مِنْكَ لَمْ تَلِدِ النِّسَاءِ

اور آپ سے زیادہ حسن و جمال والا بھی کسی عورت نے کوئی بچہ جنانہیں ہے خُلِفْتَ مُبوءً مِینْ کُلِّ عَیْبٍ

آپاس طرح عیبول سے پاک اس دنیا میں پیدا ہوئے گانگ قلد خیلفت حکما تشاء

جبیها کهالله نے آپ کو آپ کی مرضی کاحسن و جمال دے کرپیدا فرمادیا ہو۔ الله کے محبوب مٹھ کینے اس و جمال میں وہ کشش اور جاذبیت تھی کہ جو بھی د مجمتا تھااہینے دل کا سودا کرلیا کرتا تھا۔

## شیما کی محبت بھری لوری:

آپ ما این این شیما آپ کو گود میں لے کرلوری وین تھی ..... ہمارے ہاں مجھی عور تیں لوریاں ویتی ہیں۔ وہ اپنی اپنی زبان میں ویتی ہیں۔ ہماری والدہ جب

تى بىچ كوگودىي لىتى تو يول كېتى تقى:

حَسْبِيْ رَبِّيْ جَلَّ الله مَا فِيْ قَلْبِيْ غَيْرُ اللهِ

یہ پڑھ کر بیچے کولوری دیتی تھی۔ ہمارے ہی گھر میں بعض عور تیں بچوں کو گود میں لے کے اپنی زبان میں یوں لوری دیتی تھیں:

الله الله لورى دوده كبرى كثورى كشورى كشورى كشورى كشورى كشورى كشورى كشورى كشورى كشيفى دوده ييه كالشيك بن كر جيه كال

لینی جب عورتیں بچے کو گود میں لیتی ہیں تو دعائیہ کلمات کہدرہی ہوتی ہیں ،اس
میں اللہ کی یا دہھی ہوتی ہے اور دعا بھی ہوتی ہے ....شیما بھی اپنے بھائی کو گود میں لے
کر بیٹھتی تو وہ بھی لوری دیت تھیں ۔ بعض سیرت نگاروں نے لوری کے وہ الفاظ اپنی
کتابوں میں برکت کے لیے لکھے ہیں ۔اس لوری میں ایک فقرہ یہ بھی تھا:
د بہتا آبق گنا محکماً ا

''اے ہمارے پرور دگار! ہمارے اس بھائی محمد کو ہمیشہ سلامت رکھنا''

## بی بی آ منہ کے پاس والیسی:

تین یا چارسال کی عمر میں صلیمہ سعد سے نیا میں کیا کہ اب بچہ بڑا ہو گیا ہے۔ ایسانہ ہو کہ اس کے ساتھ کوئی انہونا واقعہ پیش آجائے۔لہٰذا بہتر سے کہ میں اسے اس کی والدہ کے سپر دکر کے آؤں۔ چنانچہ انہوں نے آکر بی بی آمنہ کوان کالختِ جگر سپر د کردیا۔ فللمَا فِي اللهِ اللهِ اللهُ ا

#### بے سہارا ہونے میں حکمت:

الله کی شان دیکھیے کہ ولا دت سے پہلے نبی علیہ الصلوۃ والسلام کے والد فوت ہوگئے۔ پھر جب چھسال کی عمر ہوئی تو والدہ بھی فوت ہوگئیں۔اس کے بعدا پنے دا دا عبدالمطلب کی کفالت میں آگئے، پچھ عرصہ بعد دا دا بھی فوت ہو گئے۔ پھرا پنے چپا کی کفالت میں آگئے وائی کے پچھ عرصہ بعد جب دعوائے نبوت فر مایا تو چپا بھی فوت ہو گئے۔

ایسا کیوں ہوا؟ .....سب سہارے ہٹتے گئے گئتے گئے ....اس میں حکمت بیتی کہ اگراس طرح کسی کے سائے میں پرورش پاتے تو دنیا کہتی کہ سہاروں میں پلنے والے ،سہاروں کی نفی کر کے اللہ کو سہارا میں بنانے کی تعلیم ویتے ہیں۔اللہ تعالیٰ نے اپنے محبوب ملٹ اللہ کے ساتھ شروع ہی سے یہ معالمہ کردیا .... باپ سے بھی بے سہارا ..... ماں سے بھی بے سہارا ..... وادا سے بھی بے سہارا ..... وادا سے بھی میں ہوتا ،اس کا سہارا اس کا پروردگار ہوتا ہے۔اور جس کا دنیا میں کوئی سہارا نہیں ہوتا ،اس کا سہارا اللہ بن جاتا ہے کھرانلہ دب العزت دنیا میں اس کے قدموں کو جمادیا کرتا ہے۔

آيت 'اَلَمْ يَجِدُكَ يَتِيمًا فَالُوى' كَمِعارف: الله تعالى ارشاد فرمات بين:

اَلَمْ يَجِعُدُكَ بَرِّينَمًا فَالُولى ''كياہم نے آپ کوينتَم نہ پايا كہ ہم نے آپ کوٹھكاندديا؟ بيلفظ تو تھوڑے سے ہيں ليكن ان ميں حقيقت بہت بردى ہے۔حقيقت كيا ہے؟ 🚓 ..... آپ ينتيم تھے، ہم نے ٹھ کا نہ ديا۔

🚓 ..... آپ بے سہارا تھے، ہم نے آپ کوسہارا دیا۔

ﷺ نو بت کدے میں پیدا ہوئے ،ہم نے آپ کو فاتح مکہ بنا دیا۔
 ﷺ نے جب آپ پیدا ہوئے تھے اس وقت گھر میں چراغ جلانے کے لیے تیل بھی نہ تھا اور ہم نے آپ کو ایسا بنا دیا کہ آپ کی برکت کی وجہ سے پوری دنیا میں مدایت کا نور پھیل گیا۔

اُواى كالفظى مطلب ہے ٹھكاند دينا۔ چنانچاں للہ تعالى صحابہ كرام كوفر ماتے ہيں: وَاذْكُو وُا إِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ ''اور يادكر واس وقت كو جب تم تھوڑے ہے' مُسْتَضَعَفُوْنَ فِي الْآرْضِ ''زمين پر ہڑے كمزور ہے' تَخَافُوْنَ ''تم دُرتے ہے' اَنْ يَتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ '' كہلوگ تہ ہيں كہيں اچك ندليں'' فَاوَاكِم ''اس اللہ نے تہ ہيں ٹھكاند يا''

یہاں ٹھکانے سے مرادیہ ہے کہ صحابہ کو مکہ سے مدینہ بلایا اور مدینہ بیل لا کران کے قدموں کو جمادیا، اللہ تعالی فرماتے ہیں ...... آگئم یہ جد ڈکئے یکوٹیٹ فالوی (کیا ہم نے آپ کوٹھکا نہ دیا؟) .....یعنی ہم نے آپ کے قدم جما دیے۔ ہم نے آپ کو دنیا و آخرت کی سرخروئی عطافر مادی۔ ہم نے آپ کے ذکر کو بلند کردیا۔ سیکیماذ کر بلند ہوا؟ ..... بیان اللہ!

وہ ہیں بے شک بشرائیکن تشہد میں آذانوں میں جہاں دیکھو خدا کے نام کے بعد ان کا نام آئے

اس میں ایک پیغام پوشیدہ ہے کہ اے دنیا کے غریرو! دنیا کے بے سہار الوگو! دنیا کے محروم لوگو! دنیا کے محروم لوگو! دنیا میں اپنے آپ کو بیٹیم کہلانے والے لوگو! تمہارے سر پر شفقت کا ہاتھ رکھنے والا کوئی نہیں ،میرے محبوب ماٹائیا ہم کی زندگی کو دیکھو! اگرتم ان کے نقش

قدم پرچلو گے تو میں پرور د گارتمہار ہے سر پراپی رحمت کا تاج ر کھ دوں گا۔

## اسلام ميں ينتيم كامقام:

آپ الہ اللہ کو تیموں کے ساتھ بڑی محبت تھی، صدیث پاک میں آیا ہے۔ عید کا دن ہے نبی علیہ الصلوۃ والسلام عید پڑھنے کے لیے اپنے گھر ہے چل پڑے۔ گی میں کچھ بچے کھیل رہے تھے، انہوں نے نہا دھو کے اقتھے کپڑے پہنے ہوئے تھے۔ ان بچوں کی آنکھوں میں سرمہ بھی ڈالا ہوا تھا، تیل بھی لگا ہوا تھا۔ ان ہے ذرا آگا یک بچہ اکیلا میٹا تھا، وہ بڑا غم زدہ ساتھا۔ اس کے چہرے پرادای تھی۔ نبی علیہ الصلوۃ بچہ اکیلا میٹا تھا، وہ بڑا غم زدہ ساتھا۔ اس کے چہرے پرادای تھی۔ نبی علیہ الصلوۃ السلام نے بچے کو و یکھا تو آپ رک گئے۔ پوچھا: بچے! کیا ہوا؟ استے غم زدہ کیوں بیٹے ہو؟ ۔۔۔۔ بچے نے جواب دیا: اے اللہ کے بیار ہے صبیب شریقی ہا ہیں بیٹی مدینہ ہوں، میرے والدہ مجھے نہلا کہ ہوں، میرے والدہ مجھے نہلا کر وہ کی اور میری والدہ مجھے نہلا کر وہ کی رہوں ہور ہے ہیں اور میں ہیٹھا اپنے والد کویا دکر رہا ہوں۔۔

اب وہ خوشی خوش نبی علیہ الصلوۃ والسلام کے ساتھ جانے کے لیے تیار ہے۔

اللہ کے نبی مٹری آباز مین پر بیٹھ گئے اور بچے کو اشارہ کیا کہ تو اپنے آپ کو بیٹم کہتا ہے۔
آج تو میر سے ساتھ پیدل چل کرنہیں جائے گا بلکہ میر سے کند سے پرسوار ہو کر جائے گا۔ چنا نچہ اللہ کے گا۔ چنا نچہ اللہ کے مجبوب مٹری آباز اس بچے کو کند سے پرسوار کر لیتے ہیں۔ جب اللہ ک نبی مٹری آباز اسے لے کر باہر گلی میں تشریف لائے تو جو بچے کھیل رہے ہتے وہ جیران ہوئے کہ یہ بچہ تو چل کے جارہا تھا اور اب اللہ کے حبیب مٹری آباز کے کندھوں پر بیٹے کر آرہا ہے۔ جب وہ بچہ ان کے قریب ہوا تو اس نے خوشی سے بتایا کہ مجھ نبی علیہ الصلو ق والسلام نے اپنا بیٹا بنالیا ہے اور عاکشہ کے میری ماں بن گئیں۔ اس بچ کی الصلو ق والسلام نے اپنا بیٹا بنالیا ہے اور عاکشہ کے میری ماں بن گئیں۔ اس بچ کی بات س کر ان کھیلنے والے بچوں میں سے ایک نے ٹھنڈی سائس کی اور یوں کہنے لگا۔ بات س کر ان کھیلنے والے بچوں میں سے ایک نے ٹھنڈی سائس کی اور یوں کہنے لگا۔

نی علیہ الصلوق والسلام اس بچے کولیکراس جگہ پرتشریف لاتے ہیں۔ جہاں عید
کی نماز پڑھی جاتی تھی۔ نبی علیہ الصلوق والسلام ممبر کے اوپر ہیٹھے، وہ بچہ بیٹھنے لگا۔
اللّٰہ کے حبیب ملٹ اللّٰہ ہے فرمایا نہیں ، تو آج بیجے ہیں ہیٹھے گا بلکہ میر ہے ساتھ اس ممبر کے اوپر ہیٹھے گا۔ چنانچہ نبی علیہ الصلوق والسلام اس بچے کوا پنے پاس بٹھا لیتے ہیں اور پھراس بچے کے سریر ہاتھ رکھ کرفرماتے ہیں۔

''لوگو! جو يتيم كے سر پرشفقت كا ہاتھ ركھے گا اس كے ہاتھ كے بنچ جتنے بال ہوں گے اللہ اتن نيكياں اس كے نامہ اعمال ميں لكھوا ديگا۔''

آج بتیموں کاحق مارا جاتا ہے، ان کا گلا گھونٹ دیا جاتا ہے اور ان کو دنیا میں جینے کاحق ہی نہیں جینے کاحق ہوا تا ۔ اللہ تعالیٰ ہمیں بھی نبی علیہ الصلوق والسلام کا وہ خلق عطا فرماد ہے۔ ہمیں بھی بتیموں کاسر پرست اور دالی بناد ہے۔ (آمین)

شیما کی عزت افزائی کاواقعه:

فتح كمه ہونے كے پچھ ہى عرصه كے بعد نبى عليه الصلوة والسلام حنين كى طرف

جاتے ہیں اور وہاں پرغز وہ حنین پیش آتا ہے۔ کمی تفصیل ہے البتہ اپنی بات کو مختر کرنے کے لیے اتناعرض کرتا ہوں کہ غز وہ حنین میں نبی علیہ الصلوۃ والسلام کو چھ ہزار قیدی سے لیے اتناعرض کرتا ہوں کہ غز وہ حنین میں نبی علیہ الصلوۃ والسلام کو چھ ہزار قیدی سے اور بارہ ہزار بکریاں ملیں جب اتنے قیدی آئے تو نبی علیہ الصلو السلام نے ارادہ فرمایا کہ ان کو صحابہ میں تقسیم کردیا جائے۔

جب نی علیہ الصلوۃ والسلام نے بیسنا تو اللہ کے مجبوب ﷺ نے اپنی چا در بچھا دی اور فر مایا شیما ! تم میری بہن ہوآ و ! نبوت کی اس چا در کے اوپر بیٹے جاؤ۔ و نیا نے دیکھا کہ اللہ کے مجبوب ملے آئے ہے ۔ اپنی بہن کی کیا عزت افزائی کی ! پھر نبی علیہ الصلوۃ والسلام نے بیارشاد فر مایا: شیما! اگرتم میرے پاس رہنا چا ہوتو میں تمہار اکفیل بنوں گا اور اگر واپس رشتہ داروں میں جانا چا ہوتو تمہیں جانے کی اجازت ہے۔ انہوں نے اور اگر واپس رشتہ داروں میں جانا چا ہوتو تمہیں جانے کی اجازت ہے۔ انہوں نے کہا: میں واپس جاؤں گی۔ نبی علیہ الصلاۃ والسلام نے کی سو بکریاں بھی دیں اور پچھ

كالمنافية المنافية ال

غلام بھی دیے۔ پھر دوصحابہ کرام کوفر مایا: جاؤ میری بہن کواپنے گھر پہنچا کرآؤ۔
شیما جانے کے لیے کھڑی تو ہوگئ گرچلتی نہیں تھی۔ نبی علیہ الصلوٰۃ والسلام نے
فر مایا: شیما! آپ جانہیں رہیں؟ بہن کہنے گئی، آپ نے مجھے تو آزاد کر دیالیکن یہ چھ
ہزار بندے بھی ہیں اگر میں اکیلی چلی گئی تولوگ کہیں گے کہ خودوا پس آگئ اور باقیوں
کا خیال نہ رکھا۔ نبی علیہ الصلوۃ والسلام نے بہن کی اس بات کو قبول کر کے صحابہ کے
مشورے سے سب قیدیوں کوآزاوفر مادیا .....اللّٰدا کبر .....

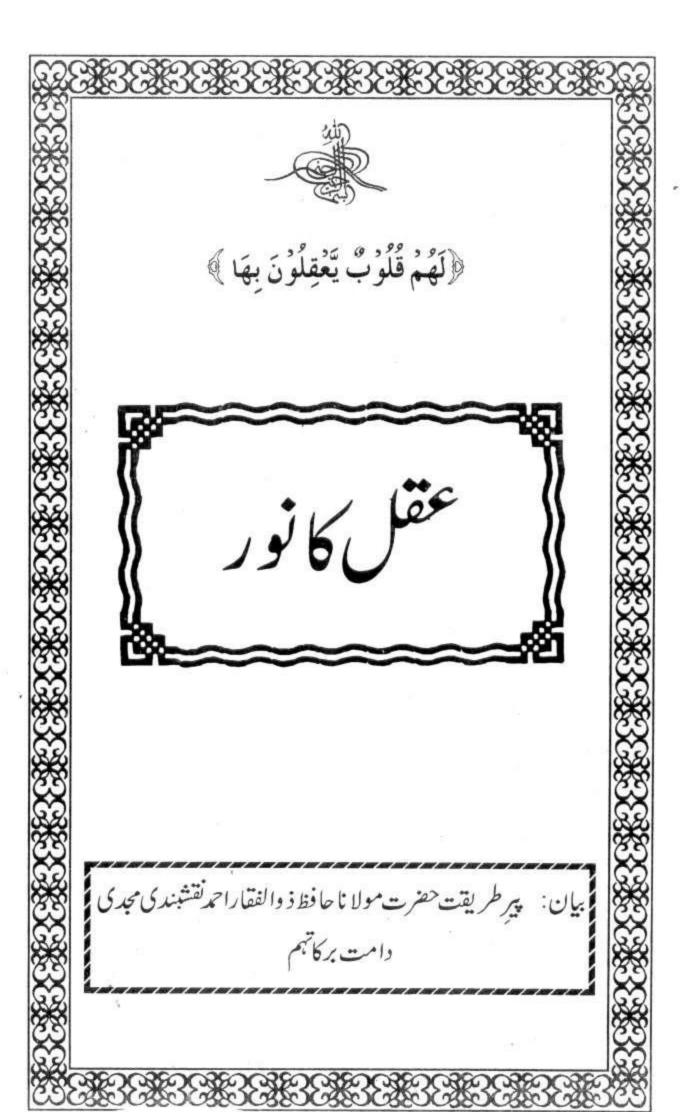
آلَمْ يَجِدُكَ يَتِيْمًا فَاوَىٰ

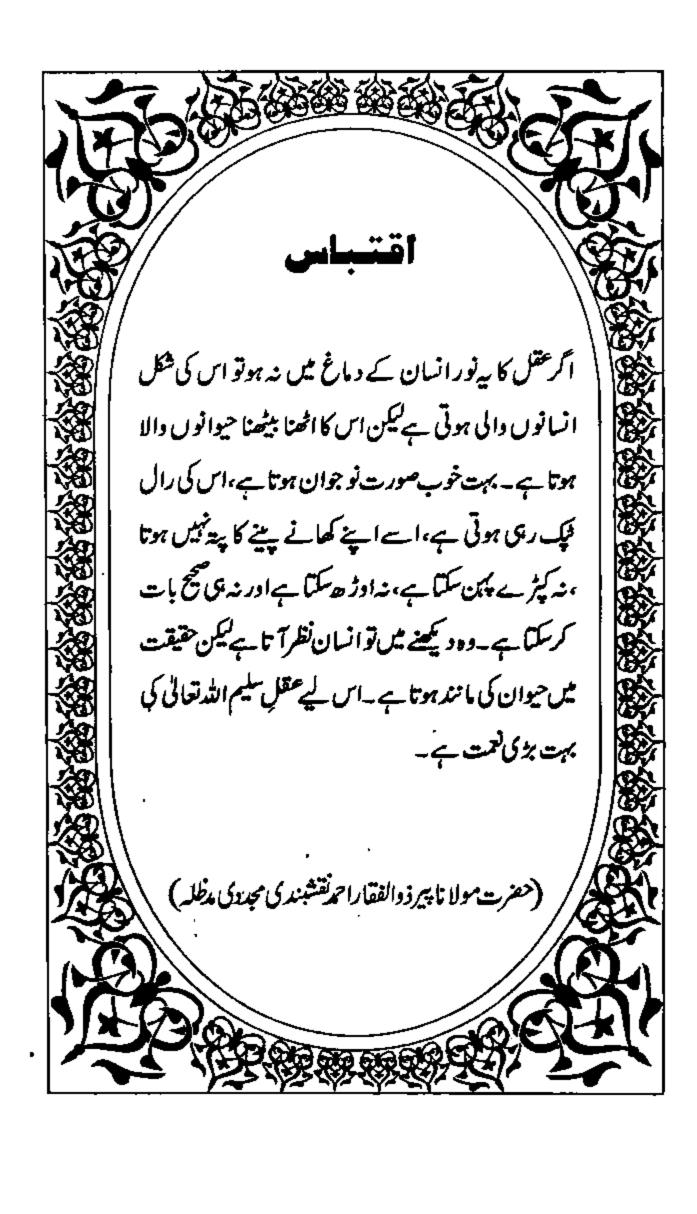
اور میرے محبوب ملی آئی آئیم نے آپ کو میٹیم پایا اور پھر آپ کے قدم جما دیے، ہم نے آپ کو فاتح مکہ بنا دیا۔ اور ہم نے ہزار وں لوگوں کو آپ کے قدموں میں غلام بنا دیا۔ای کو کہنے والے نے کہا:

اے رسول امین، خاتم المرسلین، تجھ ساکوئی نہیں ، تجھ ساکوئی نہیں ہے عقیدہ یہ اپنا بصدق ویقیں ، تجھ ساکوئی نہیں ، تجھ ساکوئی نہیں ، تجھ ساکوئی نہیں ، تجھ ساکوئی نہیں ، تیرا سکہ رواں کل جہاں میں ہوا ، اس زمیں میں ہوا ، آساں میں ہوا کی نہیں ، تجھ ساکوئی نہیں اس بیارے حبیب مائوئی نہیں ، تجھ ساکوئی نہیں کی تو فیق عطاقر مائے۔

و وستو! ایسے بن جاؤ کہ جب موت کا وقت آئے اور فر نہتے آکر ہمارے دلول کو شولیں تو وہ اسے عشق نبی مٹائیلٹی سے بھرا ہوا یا کیں۔ ہمارے و ماغ کو ٹنولیس تو علم نبوی مٹائیلٹی سے بھرا ہوا یا کیں۔ ہمارے و ماغ کو ٹنولیس تو علم نبوی مٹائیلٹی سے بھرا ہوا یا کیں ۔ ہمارے اعضاء کو ٹٹولیس تو سنت نبوی مٹائیلٹی سے بھرا ہو یا کیں ۔ اوراسی طرح ہم اپنے اللہ رب العزت کے حضور پیش ہوجا کیں۔

یا کیں ۔ اوراسی طرح ہم اپنے اللہ رب العزت کے حضور پیش ہوجا کیں۔
وَ الْحِرُ دَعُولْنَا آنِ الْمُحَمَّدُ لِلَّهِ دَبِّ الْعُلَمِیْن





عقل کا نور

اَلْحَمُدُ لِلَّهِ وَكَفَىٰ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفَىٰ امَّا بَعُدُ! فَاعُودُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيُظِنِ الرَّحِيْمِ ٥ بِسُمِ اللَّهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيْمِ٥ ﴿ لَهُمُ قُلُوبٌ يَعْقِلُونَ بِهَا اَوْ آذَانٌ يَّسْمَعُونَ بِهَا فَاتَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبُصَارُ وَ لَكِنُ تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصَّدُورِ٥﴾ (الحَجَرِه) سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّتِ عَمَّا يَصِفُونَ٥ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ٥ سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّتِ عَمَّا يَصِفُونَ٥ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ٥ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ٥

ٱللُّهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ سَيِّدِناً مُحَمَّدٍ وَّعَلَىٰ آلِ سَيِّدِناً مُحَمَّدٍ وَّبَارِكُ وَسَلِّمُ

عقلِ سليم ....اك نعمتِ غيرمترقبه:

الله رب العزت نے انسان کوان گنت نعمتوں ہے نواز اہے۔ہم اگر ان نعمتوں کوشار کرنا چاہیں تو شار بھی نہیں کر سکتے ۔اللہ تعالیٰ نے ارشاد فر مایا:

﴿ وَإِن تَعُدُّوا نِعمَةَ اللّٰهِ لاَ تُحْصُو ۚ هَا ﴾ (ابراہیم:۳۳) ''اوراگرتم اللّٰدتعالیٰ کی نعمتوں کو گنتا بھی چا ہوتو تم سن بھی نہیں کتے''

اور اُن ان گنت نعمتوں میں سے ایک بہت نمایاں نعمت انسان کی عقل ہے۔ انسان کواللہ نعالی نے عقل سے نواز اہے۔ بیوہ نعمت ہے جواس کو جانور دں سے ممتاز کرتی ہے۔ چنانچے عقل کی وجہ ہے انسان

🖈 ..... د وست اور دشمن میں تمیز کر لیتا ہے۔

☆ ..... جائزاور ناجائز کو پیچان لیتا ہے۔

اگر عقل کا بینورانسان کے د ماغ میں نہ ہوتو اس کی شکل انسانوں والی ہوتی ہے لیکن اس کا اٹھنا بیٹھنا حیوانوں والا ہوتا ہے۔ بہت خوب صورت نوجوان ہوتا ہے، اس کی رال فیک رہی ہوتی ہے، اسے اپنے کھانے پینے کا پیتے ہیں ہوتا، نہ کپڑے پہن سکتا ہے، نہ اوڑ ھسکتا ہے اور نہ ہی سجے بات کرسکتا ہے۔ وہ د کیھنے میں تو انسان نظر آتا سکتا ہے، نہ اوڑ ھسکتا ہے اور نہ ہی سجے بات کرسکتا ہے۔ وہ د کیھنے میں تو انسان نظر آتا ہے۔ کی حقیقت میں حیوان کی مانند ہوتا ہے۔ اس لیے عقل سلیم اللہ تعالیٰ کی بہت بڑی سے کین حقیقت میں حیوان کی مانند ہوتا ہے۔ اس لیے عقل سلیم اللہ تعالیٰ کی بہت بڑی

## « عقل برسی یا بھینس' :

ایک مرتبہ میرا چھوٹا بیٹا سیف اللہ میر سے ساتھ تھا۔ ایک جگہ ہم نے ایک بھینس گزرتے رکبھی میں نے بچے سے پوچھا: بیٹا!عقل بزی کہ جینس؟ کہنے لگا: ابو جی ابھینس میں نے پوچھا، وہ کیے؟ کہنے لگا،عقل اتی چھوٹی می ہے اور بھینس اتی بڑی ہوئی ہے ، اس لئے بھینس بڑی ہوتی ہے۔ میں نے پوچھا: بھینس کے گلے میں پٹہ کون ڈالٹا ہے، اس لئے بھینس بڑی ہوتی ہے۔ اس نے کہا: اس لیے کہ اللہ تعالیٰ نے اسے عقل دی ہے۔ پھر میں نے اسے سمجھایا کہ بھینس انسان کے گلے میں پٹہیں ڈال عقل دی ہے۔ پھر میں نے اسے سمجھایا کہ بھینس انسان کے گلے میں پٹہیں ڈال سے بڑی ہوتی ہے۔ اس لئے عقل بھینس سے بڑی ہوتی ہے۔

## انسانی عقل کے کر شمے:

ہ ہے۔ وہ ساری عمر کیا گوشت کھا تا ہے۔ وہ بغیر نمک مرچ کے کھا تا ہے۔ اس کے پاس میں بھیجھ بیں کہ گوشت کو کھانے کے ہے۔ وہ بغیر نمک مرچ کے کھا تا ہے۔ اس کے پاس میں بھیجھ بیں کہ گوشت کو کھانے کے سیجھ مختلف انداز بھی ہو سکتے ہیں۔ HAT ESSESSESS OF THE

#### سكوشت كى مختلف د شز:

جبکہ اس کے بالمقابل انسان کو دیکھیں۔ بیمی موشت کھاتا ہے۔لیکن کیا اس میں بارہ مصالحے استعمال ہوتے ہیں اور کیا اس کی ڈشنز تیار ہوتی ہیں!ان کا تام من سن کرانسان حیران ہوتا ہے۔ بیرکیا ہے جی؟

> ..... پیچکن جلفریزی ہے، ..... بیدڈ ھاکہ چکن ہے،

> > ..... بيفرائيدُ چکن ہے،

..... سينيم روست ہے،

..... بية رم استك بني بهو كى ب

..... پيچاپس بني موئي ميس،

..... په چپلی کباب بین،

..... ہے جی اہم آپ کی دعوت کریں مے اور گھر میں بار بی کیوکریں ہے۔

## بھونی ہوئی بوری گائے:

ایک مرتبہ شوگر نیکنالوجسٹ کی کانفرنس فرانس میں ہوئی۔ جب کھانے کا وقت
آیا تو میں نے دیکھا کہ انہوں نے ایک پوری گائے کو ذیح کر کے ،اس کی کھال اتار
کے ،اس کے پیٹ کے اندر سے سب پچھ صاف کر کے ، اسے ایک اوون کے اندر
انہوں نے روسٹ کیااوراس کو ایک سربے کے اندر پرو کے انہوں نے ایک جگہ لٹکا
دیا۔اب پانچ سو بندوں میں سے ہر بندہ جا رہا تھا اور گائے کی جس جگہ کا گوشت وہ
پند کرتا تھا وہ کا نے کھارہا تھا۔ہم جیران نے کہ ایک گائے کو انہوں نے مرفے کی
طرح روسٹ کر کے ساسنے رکھ دیا۔ مزے کی بات یہ کہ جہاں سے بھی اس کا گوشت

كا ثا جاتا تقا، وه گلا بوا بوتا تقااور اس ميں مرج مصاّله صحح بوتا تقابه بينتمت انسان كو کیسے کمی ؟عقل کی بنا پر ملی ۔

سنری میں گوشت کا استعال:

صرف یہی نہیں ، بلکہ وہ گوشت کوسبزی کے ساتھ بھی استعال کرتا ہے۔ چنانچہ

..... بيرجي قيمه مررب،

..... بيە قىمەكرىلاپ،

پھراس کے سوپس بنالیتا ہے۔ کہتا ہے:

..... يه چائنيز سوپ ہے،

..... بيكارن سوپ ہے۔

يول لكتاب كه يدلسك بى ختم نبيس موتى\_

عربول کی مزے دارمندی:

انسان گوشت کو جا ولوں کے ساتھ بھی استعال کرتا ہے۔ کہتا ہے:

..... يد حي برياني ب، اور

..... بی<sup>عر</sup> بول کی بنی ہوئی مندی ہے۔

ایک صاحب ہمیں سعودی عرب میں کہنے لگے: جی آج میں آپ کو مندی کھلاؤں گا۔وہ چاول پکوا کے لائے جو تنور میں بنائے ہوئے تھے۔گر اتنے لذیذ، اتنے لذیذ کہ کھانے والوں میں سے ہر بندے نے بہت ہی زیادہ جی بھر کے کھایا۔ میں نے اس سے کہا: بھئ ابینام کی مندی ہے،حقیقت میں بڑی چنگی ہے۔ مائقى كاتماشا:

انسان جانوروں کوسدها بھی لیتا ہے۔ حالا نکہ جانور طافت اور سائز میں انسان

سے زیادہ بڑے ہوتے ہیں۔ ہاتھی کو قابو کر لینا کوئی معمولی بات نہیں۔اس کا وزن شول میں ہوتا ہےاوراس کی طاقت بھی بہت ہوتی ہے۔

ایک مرتبہ ہمیں امریکہ میں سفر کرنے کے دوران، ڈرائیورنے کہا: حضرت! ہم
اس دفت ایک ایسے ایگزٹ پر پہنچ چکے ہیں کہ ہم دومنٹ کے اندراندرایک چڑیا گھر
کے در دازے پر پہنچ جا کیں گے اوراس دفت چڑیا گھر بند ہونے دالا ہے۔ آخر میں وہ
ابناایک فائنل پر دگرام پیش کرتے ہیں جو بہت ہی دلچسپ ہوتا ہے۔ آپ اگر اجازت
دیں تو وہ دیکھنے چلیں ، کیونکہ ہمارے پاس ٹائم بھی ہے۔ میں نے جواب میں کہا:۔
مرغ دل را گلشن بہتر نے کوئے یار نیست
مرغ دل را گلشن بہتر نے کوئے یار نیست
طالب دیدار را ذوق گل و گلزار نیست
در لے مرغ کو باغ دوست کی گل سے زیادہ اچھانہیں ، دیدار کے طالب کو

گردونوں بچے ساتھ تھے۔ابو جی! جانور کاشو ہے،اگر ہم دیکھیں گے تو ہماری معلومات میں بھی اضافہ ہو گااور اچھا بھی لگے گا۔خیر، بچوں کاشوق دیکھے کرمیں نے کہا: چلوچلتے ہیں۔ چنانچہ دومنٹ کے اندر ہم درواز ہے پرپہنچے گئے۔

ہم نے ویکھا کہ ایک بہت بڑے گراؤنڈ کے اندر ایک ہاتھی کھڑا تھا۔انہوں نے اس کے گلے میں ایک بیلٹ با ندھ رکھا تھا اور اس بیلٹ کے ساتھ کم از کم نین انچ وٹا اور کئی فرلائلوں کے حساب سے لمبارسہ باندھا ہوا تھا۔ہم لوگ کار کے اندر ہی بھر کریدسب کچھ دیکھ رہے تھے۔

آئیٹم بینقا کہ جتنے لوگوں نے آج کے دن اس چڑیا گھر کو دیکھا وہ آخری وفت ساس ہاتھی کے ساتھ رسہ کثی کریں۔ چنانچہ ہم نے دیکھا کہ وہاں ہزاروں کی تعداد ساس ہاتھی کے ساتھ رسہ کیڑا ہوا ہے اور رسہ کثی کے لیے بالکل تیار کھڑے یہ مردوں اور عورتوں نے رسہ پکڑا ہوا ہے اور رسہ کثی کے لیے بالکل تیار کھڑے

ين-

۔ جوآ دمی ان کو یہ ٹیم کروار ہا تھا، اس نے اعلان کیا: بی ! آج تک ہسٹری میں جوآ دمی ان کو یہ ٹیم کروار ہا تھا، اس نے اعلان کیا: بی ! آج تک ہسٹری میں جنتے بھی لوگ یہاں پرآئے وہ ہاتھی سے جیت نہیں سکے، آج اگر آپ لوگ ہمت کر کے جیت جا کمیں تو

You will be going to make a record.

(آپایک ریکارڈ قائم کرلیں سے)۔

بعد میں پتہ چلا کہ انہوں نے ہاتھی کو سکھایا ہوا تھا کہ تو نے بارہ قدم پیچھے آتا ہے۔
اور آخر قدم پر جب بیخوب زور لگا ئیں تو تم نے سب کو تھینچ کر آگے کر دیتا ہے۔ یہ
د کھے کرہم بہت جیران ہوئے کہ پانچ سات ہزار بندوں کی طاقت ایک طرف اورا یک
ہاتھی کی طاقت ایک طرف۔ ہاتھی پھر بھی طاقت ور ثابت ہوا۔ لیکن انسان کی عقل کو
دیکھیے کہ وہ اس عمم کے بل ہوتے پر اس ہاتھی کو بھی قابو میں لے کر سدھالیتا ہے۔
دیکھیے کہ وہ اس عمم کے بل ہوتے پر اس ہاتھی کو بھی قابو میں لے کر سدھالیتا ہے۔

## ماتھيوں كافٹ بال ميج:

ہم نے ایک جگہ ہاتھیوں کا فٹ بال میچ دیکھا۔ ہاتھیوں کی ایک فیم ادھر ہے اور
ایک فیم ادھر ہے۔ گیند بھی کوئی چھوٹا سانہیں تھا۔ یوں مجھیں کہ تقریباً آٹھ فٹ ڈایا
میٹر کا ہوگا۔ وہ ہاتھی سونڈ ھ سے اس کو کک لگار ہے تھے۔ اور ایک ہاتھی ادھر گول پہ
کھڑا ہے اور ایک ہاتھی ادھر گول پہ کھڑا ہے۔ با قاعدہ گیم ہوئی اور ہم نے ہاتھی کو گول
کرتے ہوئے دیکھا۔ ہم جیران تھے کہ یا اللہ! اس انسان کو آپ نے عقل والی کیا
نعمت دی کہ جس کے ذریعے اس نے جانور کو بھی یہ پچھ سکھاڈ الا!

## ماتھی کی پیٹنگ:

ایک جگہ ہم نے ویکھا کہ انہوں نے ہاتھی کو پینٹنگ سکھائی ہوئی تھی۔انہوں نے نو دس کلر رکھے ہوئے تھے۔میٹر ہائی میٹر کی شیٹس بھی رکھی ہوئی تھیں۔وس ڈالر کی ایک شیٹ ملتی تھی۔وہ اس شیٹ پر ہاتھی سے پینٹ کروا کے دیتے تھے۔

جب کوئی آ دمی آ کر کہنا کہ مجھے اس کلر کی بینٹنگ جا ہیے، تو اس کو کنٹرول کرنے والا آ دمی برش کورنگ میں ڈبوکر سونڈ ھیں پکڑا دیتا۔ ہاتھی سونڈ میں برش پکڑکراتی صفائی ہے اس کا شیڈ دیتا کہ لگتا تھا اس نے فائن آ رٹس میں ماسٹر ڈگری لی ہوئی ہے۔ چند مرتبہ شیڈ دیتے ہے اتنی خوبصورت پینٹنگ تیار ہوتی تھی کہ لوگ خرید کر لے جاتے تھے اور ہاتھی کی پینٹنگ اپنے گھروں میں سجاتے تھے۔

## یرندوں اور جانوروں کے کارناہے:

ہ بیسلسلہ بہت پہلے شروع ہوا تھا۔ پہلے وقتوں میں لوگ طوطے کو بولنا سکھایا کرتے تھے۔اللّٰہ کا نام سکھایا کرتے تھے۔ہم ایک صاحب کے گھر گئے۔ جیسے ہی ہم داخل ہوئے توکسی نے کہا: ہیلو.....ہم حیران کہ یہاں کون آگیا؟ بعد میں پتہ جلا کہ ان کا ایک طوطا ہے جوآنے والے ہر بندے کوہیلوبھی کہتا ہے اور جاتے ہوئے اس کو بائے بائے بھی کہتا ہے۔بعض لوگ مینا کوبھی سکھاتے تھے، و ہجمی بولتی ہے۔

پہلے وقتوں میں کبوتر کوبھی تیار کیا جاتا تھا جوا یک بندے کارقعہ دوسرے بندے کو پہنچا تا تھاا دراس وقت کا و ہ ہی ٹی سی ایس کاسسٹم تھا۔

محوڑوں کو ڈانس شکھانا ، ایک نارال می چیزتھی۔لیکن آج کے سائنسی دور میں انسان نے اس میں بھی جدت پیدا کر لی ہے۔سرکس کے اندرشیر کے تماشے تو بہت دنیاد یکھتی ہے۔

## . ایک بندرکا کرائے کامقابلہ:

ہم نے ایک جگہ پر ایک بندر کا کرائے کا مقابلہ دیکھا۔ اس کے سامنے مقابلے کے لیے ایک بلیک بیلٹ آ دمی تھا۔ اب دونوں آپس میں کرائے کا مقابلہ کر رہے تھے۔ ہم نے دیکھا کہ بندراس کو باقاعدہ کک لگاتا ہے اور اگروہ آ دمی کک لگاتا تویہ اس کو بلاک کرتا۔ لگاتا تھا کہ بندراس کو وبلیک بیلٹ لوگوں کا آپس میں مقابلہ ہور ہاہے۔ اس کو بلاک کرتا۔ لگتا تھا کہ بالکل دوبلیک بیلٹ لوگوں کا آپس میں مقابلہ ہور ہاہے۔

## ايك عجيب وغريب كبيلل فارم:

ہمیں ایک مرتبہ لائیو شاک ویکھنے کا موقع ملا۔ وہاں تین سوگا ئیاں تھیں۔ان تین سوگائے کی کیئر منیکنگ (حفاظت) کے لیے صرف تین بندے تھے۔……آج ہمارے ہاں اگر تین سوگا نمیں ہوں تو ان کی حفاظت کے لیے کم از کم تین درجن بندوں کی ضرورت پڑے گی ۔۔۔۔۔وہاں صرف تین بندے تھے۔ وہاں چند با تیں ہم نے بڑی عجیب دیکھیں۔

 ™ہرگائے کے گلے میں ایک رول نمبر فیگ لگا دیا گیا ہے۔ ہرگائے کی جگہ مخصوص ہے۔اس کے گلے میں ری نہیں ہے۔ وہ اپنی ہی جگہ پر کھڑی ہوتی ہے، بیٹھتی ہے اور

آرام کرتی ہے۔

• ---- جب اس گائے کا نہانے کو جی جا ہتا ہے تو وہ ایک جگہ، جہاں شاور لگا ہوا ہے، وہاں آگروہ اپنا فیگ کیمرے کو پڑھاتی ہے۔ کیمرہ پڑھنے کے بعد کمپیوٹر کو بتا تا ہے یہ گائے شاور لینا چا ہتی ہے۔ پھر کمپیوٹر ویکھتا ہے کہ کیا یہ آج شاور لے چکی ہے یا نہیں ؟ اگرنہیں لیا تو او پر سے یانی کھل جا تا ہے اور گائے خود اس کے نیچ نہاتی ہے اور اپن جلی جا تی ہے اور گائے گود اس کے نیچ نہاتی ہے اور اپن جلی جاتی ہے۔

⊙ …اس کا چارہ ایک پائپ کے ذریعے اس کی اپنی جگہ پر ڈال دیاجا تا ہے۔

ہم جیران ہوئے کہ آج کئی جگہوں پرانسانوں کولائن بناناسکھا ٹامشکل کام ہوتا ہے اور جہال کوئی محنت کرتا ہے تو دیکھیے کہ جانور بھی لائن بنا کرآتے ہیں اور ملکنگ کے بعدا پنے راستے برخود داپس چلے جاتے ہیں۔

دُ الفن مجھل کا حیران کن کرتب:

ہمیں ایک مرتبہ بالٹی مور جانے کا موقع ملا۔وہاں پر ایک بہت برا

A quarium (مجھلی گھر) ہے۔اس میں انہوں نے بہت ہی عجیب وغریب فتم کی محیولیاں پالی ہوئی ہیں۔ وہ چونکہ ایک ایجو کیشنل ٹرپ تھا اس لیے ہم نے سب پچھ برے شوق ہے دیکھا اور ہمیں محجولیوں کے بارے میں بہت معلومات ملیں۔ بھر آخر میں وہ کہنے گئے کہ جانے ہے پہلے ہم آپ کوڈ الفن شود کھا کیں گے۔ چنانچہ سب لوگ بیٹھے گئے۔

ہم نے دیکھا کہ سوئمنگ پول کی طرح ایک بڑی ساری جگہ بنی ہوئی ہے اور اس میں ڈالفن تیرر ہی ہے۔انہوں نے اس کے کئی کرتب دکھائے۔اس میں سے ایک کرتب واقعی عجیب تھا۔

یانی کی سطح ہے تقریباً 5 کے 0 قٹ اونچا ایک بال تھا، جو انہوں نے اوپر سے پنچے افکایا اور ڈالفن کو اشارہ کیا کہتم اس بال کو لک لگاؤ۔ ڈالفن اس وقت سوئمنگ پول کے ایک کو نے میں تھی۔ جیسے ہی اس نے کمانڈ دی، ڈالفن نے پانی کے اندر تیرنا شروع کیا اور عین وسط میں آکر اتنی اونچی چھلا مگ لگائی کہ اس نے اپنے منہ سے اس بال کو کک لگا دی۔ سال ہو تھی اللہ! ایک حیوان کو بھی اتنا پھھ کھا یا جا سکتا ہے۔ اس وقت ڈالفن بہت خوش تھی۔ پھر اس نے اس خوشی کا اظہار اس طرح کیا کہ وہ کنارے کے قریب تیر نے لگی اور اس نے اپنی اتن بڑی دم کے اندر پانی لے کر سب وزیٹرز پراس طرح پچینکا کہ سب کے کپڑے تر ہو گئے۔ تو دیکھیے کہ انسان کو اللہ تعالی نے عقل کے نور سے نواز ااور انسان نے اس عقل کے ذریعے جانوروں کو بھی سدھالیا۔

## انسان کی مادی پرواز:

انسان آج ایسے کا م بھی کرسکتا ہے جن کے بارے میں پہلے زمانے میں کہا جاتا تھا کہ صرف جانوراور پرندے ہی کر سکتے ہیں۔مثال کے طور پر:

## E 38 3 (59) E 38 3 (0) ALL W

- ™ اونٹ کولدا ہواد کھے کر انسان حیران ہوتا تھا۔ آج ماشا اللہ NLC کے ٹریلر
   چالیس اور پچاس فٹ تک لمبے ہوتے ہیں۔ حیران ہوتے ہیں کہا ہے وزن کو لے کر
   انجن سڑک پر آسانی سے چل رہا ہوتا ہے۔
   انجن سڑک پر آسانی سے چل رہا ہوتا ہے۔
- ….. پہلے زمانے میں شاہین کی پرواز دیکھ کرلوگ جبران ہوتے تھے۔ آج انسان
   نے جہاز بتالیا ہے۔ چنانچی آج شاہین کی پرواز نیچی نظر آتی ہے اور جہاز کی پرواز اونچی
   نظر آتی ہے۔

## فروب فلائي ہے نجات کا انو کھا طریقہ:

انسان نے جانوروں کوخوب قابو کیا ہے۔اس قابو کرنے کی ایک چھوٹی سی مثال میں آپ کے سامنے عرض کرتا ہوں:

ہمارے ملک میں جب امرود کے پھل کا موسم ہوتا ہے تو ایک کھی ، جے فروٹ فلائی کہتے ہیں ، وہ لاکھوں کی تعداد میں پیدا ہو جاتی ہے ، جیسے مجھر پھرتے ہیں ، اور اس کا کام یہ ہے کہ وہ فروٹ کواپنے سونڈ کے ذریعے سے پیک کرتی ہے اور اس کے اندرالی چیز ڈال دیتی ہے کہ جس سے وہ فروٹ خراب ہو جاتا ہے ۔ چنانچہ باغبان بہت پریشان ہوتے ہیں کیونکہ اس کھی کو کمل طور پرختم کرنا بھی ممکن نہیں ہے ۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ وہ لاکھوں کی تعداد میں ہوتی ہے اور ہوتی بھی بہت چھوٹی ہے ۔ ماریں تو وجہ یہ ہے کہ وہ لاکھوں کی تعداد میں ہوتی ہے اور ہوتی بھی بہت چھوٹی ہے ۔ ماریں تو کیے ماریں تا تھا۔

۔ اس پرسائنس دانوں نے کا م کرنا شروع کیااوراس کا ایک عجیب حل نکالا! وہ ہ NJ DEBERS (60) ENERGY (1) JULIU DE

کے فروٹ فلائی جب اپنے میل (نر) کے ساتھ میٹ (طاپ) کرنے گئی ہے تواس کے جسم سے ایک خاص قسم کیا 8 mel (بو) نگلتی ہے۔ میل (نر) جب اس بوکو محبوں کرتا ہے تو وہ فیمیل (مادہ) کی طرف آتا ہے۔ ان سائنس دانوں نے اس بوکو پیچان کراس طرح کی بو بنا دی اور اس بو کے لیے خاص ٹریپ بنا دیے ۔ یعنی ایک ٹریپ میں کہاں رکھ دی جس میں وہ بو ہوتی ہے۔ جیسے ہی وہ بو آتی ہے توایک دو کلومیٹر سے جسنے بھی میل (نر) ہوتے ہیں وہ اس بو کی طرف بھا گئے ہیں، کیونکہ اس کی کشش ہی اتنی ہوتی ہے۔ وہاں جو بھی نرآتا ہے وہ زہر کی وجہ سے مرجاتا ہے۔ جب نر ہی مرگئے تو مادہ حالمہ کیسے ہو؟ چنا نچہ اب نہ ان میں اضافہ کیسے ہو؟ چنا نچہ اب نہ ان میں اضافہ کیسے ہو؟ چنا نچہ اب نہ ان میں اضافہ ہو سکتا ہے اور نہ ہی وہ پھل کو خراب کر سکتے ہیں۔ ہم جیران ہوئے کہ کیا ٹیکنیکل اضافہ ہو سکتا ہے اور نہ ہی وہ پھل کو خراب کر سکتے ہیں۔ ہم جیران ہوئے کہ کیا ٹیکنیکل کو جہ سے ایک مسئلہ می طل کر کے دکھ دیا۔ یہ کیسے ہوا؟ بیانسان نے عقل کی وجہ سے ایک مسئلہ طل کر لیا۔

## نظرىيەءاضافت كى بنياد:

عقل کے اندراللہ تعالیٰ نے بڑی قوت پیدا کی ہے۔ چنانچہ دنیا میں انسان نے کچھ کام انسان نے کہ کام فقط عقل کی وجہ سے کیے۔ کچھ کام انسان دیکھ کر کرتا ہے، کچھ ن کے کرتا ہے، کچھ کن کے کرتا ہے، کچھ کن کے کرتا ہے، کچھ چیز وں کو چکھ کے محسوس کرتا ہے۔ ، کچھ کو ہاتھ لگا کرمحسوس کرتا ہے، مگر پچھ کاموں کو فقط عقل کی وجہ سے کرتا ہے۔ مثال کے طوریر:

آئن سٹائن ایک ایساسائنس دان ہے جس نے تھیوری آف ریڈیویٹی (نظریہ ء شافت ) کا تصور پیش کیا۔ ۔۔۔۔۔ تی سائنس کی دنیا میں اس کا ایسے احترام کیا جاتا ہے سے دین دالوں کے ہال پیغیروں کا احترام کیا جاتا ہے۔۔۔۔۔اس بندے نے سوچا کہ ٹن کردکہ ایک فریم آف ریفرنس ہے۔تو بات ایک فرضی خیال سے شروع ک۔اسے پچے نظر نہیں آیا۔اس نے فقط اپنی سوچ سے کام لیا۔ اس نظریے کی بنیاد سوچ سے آگے چل رہی ہے کہ فرض کرو کہ ایک فریم آف ریفرنس ہے۔ پھر اس نے وہاں سے ایک فریم آف ریفرنس ہے۔ پھر اس نے جتنا سے ایک فریم آف ریفرنس لیا، پھر دوسرالیا، پھر کیلکولیشن شروع کر دی۔اس نے جتنا بھی کام کیا اس کا تعلق نہ آنکھ سے تھا، نہ کان سے تھا اور نہ ہی کسی اور چیز سے تھا۔ اس کا تعلق فقط عقل کے دریعے ہی کیلکولیشن کرتے کا تعلق فقط عقل کے ساتھ تھا۔ چنا نچہ اس نے عقل کے ذریعے ہی کیلکولیشن کرتے کے ایک نتیجہ نکالا کہ:

#### E = mc2

یہ ایک الیں مساوات تھی جس نے سائنس کی دنیا میں ایک انقلاب ہرپا کر ویا۔ لہذا آج اس کواستعال کر کے انسان معلوم نہیں کیا کیا عجیب وغریب چیزیں بنار ہا ہے۔ توبیکس کی طاقت تھی؟ یہ عقل کی طاقت تھی۔ اس نے بیعقل کے ذریعے ہی سمجھا کہ ٹائم Dialate ( تبدیل ) بھی ہوسکتا ہے ، لمبائی Constaction ( کم ) بھی ہوسکتا ہے ، لمبائی ویکتی ہے اور اسی طرح مختلف تبدیلیاں آسکتی ہیں۔ گویاعقل کے ذریعے انسان دنیا میں رہتے ہوئے مادی فائدے حاصل کرسکتا ہے۔

## انسانى عقل كاكمال:

انسان کے دماغ کی مثال ایسے ہی ہے جیسے کمپیوٹر کے اندرایک میس کو پروسیسر ہوتا ہے۔ کمپیوٹر کے اندر پروگرام میں اگر کوئی بھی ایکوایشن (مساوات) آجائے تو وہ ایکوایشن میس کو پروسیسر کی طرف منتقل کردیتے ہیں اور وہ اس ایکوایشن کوحل کر کے اس کا جواب واپس دے دیتا ہے۔ بالکل اس طرح آپ انسان کوایک خیال دے دیتجے .....فوڈ فارتھا ہے۔ ....اور پھراس کے اوپر خیالی پلاؤپکاتے انسان پوری مماتے ہو ھاتے ہو ھات

#### سوچ کے دوانداز:

انمان کی سوچ کے دوانداز ہوتے ہیں۔ ایک کو کہتے ہیں '' شبت انداز' اور دوسرے کو کہتے ہیں '' شبت انداز' ۔اس کوایک مثال سے بچھ لیجے۔ میرے ہاتھ میں پانی کا ایک گلاس ہے۔ اس گلاس کو دکھے کرلوگ دوطریقے کے نتیج نکال سکتے ہیں۔ایک بندہ اس کود کھے کر اہرا ہے : جی آ دھا فالی ہے۔ ہاں تھیک کہدر ہا ہے کہ آ دھا فالی ہے۔ اب اس کہنے والے نے منہ بھی بنایا اور کہا کہ آ دھا فالی ہے۔ اور ایک اور بندے نے اس کود کھے کرخوش ہوکر کہا: دکھوجی آ دھا بحرا ہوا ہے۔ جس نے کہا کہ آ دھا فالی ہے، وہ بھی ٹھیک کہدر ہا ہے اور جس نے کہا کہ آ دھا بھرا ہوا ہے وہ بھی ٹھیک کہدر ہا ہے اور جس نے کہا کہ آ دھا بھرا ہوا ہے وہ بھی ٹھیک کہدر ہا ہے اور دوسرا اسوچ کا منفی انداز ہے۔

## انسانی شخصیت برسوچ کے اثرات:

یا در تھیں جیسی انسان کی سوچ ہوتی ہے اس کی شخصیت پرویسے ہی اثرات ہوتے ہیں ۔ مثبت سوچ کے مثبت اثرات اور منفی سوچ کے منفی اثرات ہوتے ہیں۔ مثال کے طوریر:

⊙ ……ایک آومی بات کرر ہاتھا کہ میں گلاب کے پودے سے پھول تو ٹرنے لگاتو مجھے کا نئے چبھے گئے، یہ کیا بات ہے جی اجہاں پھول ہوتے ہیں وہیں کا نئے ہوتے ہیں۔ دوسرے بندے نے اس سے کہا: اللہ کے بندے! یہ کیوں نہیں سوچتا کہ جہاں کا نئے ہوتے ہیں وہاں پھول بھی ہوتے ہیں۔اباگر وہ بات کواس طرح سوچے کہ جہاں پھول ہوتے ہیں وہیں کا نئے ہوتے ہیں تو اس منفی سوچ کی وجہ سے اس کہ جہاں پھول ہوتے ہیں وہیں کا نئے ہوتے ہیں تو اس منفی سوچ کی وجہ سے اس کے اندر فرسٹریشن پیدا ہوگی۔اور اگر وہ یوں کے کہاگر دنیا میں کا نئے ہوتے ہیں تو بی کو بیا میں کا نئے ہوتے ہیں تو بی کھرساتھ پھول بھی ہوتے ہیں ،اس سے اس کے دل میں اللہ کاشکر کرنے کا احساس کے ول میں اللہ کاشکر کرنے کا احساس کے ول میں اللہ کاشکر کرنے کا احساس کے ول میں اللہ کاشکر کرنے کا احساس کے دل میں اللہ کاشکر کے کا احساس کے دل میں اللہ کاشکر کرنے کا احساس کے دل میں اللہ کاشکر کرنے کا احساس کے دل میں اللہ کاشکر کو کیا ہے کہا کہ کو کی میں اللہ کاشکر کے کہا کہ کی کھوں کی میں کا خوب کی کا کھوں کی میں ان کی کی کھوں کی کی کھوں کے کھوں کی کھوں کھوں کی کھوں کو کھوں کی کھوں کی کھوں کی کھوں کی کھوں کی کھوں کی

يدابوكار

…. دوقیدی تھے۔ان کوجیل میں ڈالا گیا تھا۔ان کوتھوڑے سے وقت کے لیے نکالا گیا تا کہ وہ تازہ ہوا کے اندر چل پھر لیں۔ پھردس پندرہ منٹ کے بعدان کو دوبارہ قید کردیا گیا۔ جب دوبارہ جیل میں بند ہو گئے تو ایک نے کہا: یار! لگتا ہے کہ باہر بارش ہوئی ہے۔ دوسرے نے کہا: ہاں مجھے بھی لگتا ہے کہ باہر بارش ہوئی ہے۔ایک نے پوچھا: تنہیں کسے پیتہ چلا؟ اس نے کہا: میں نے زمین پردیکھا کہ بہت کیچڑ تھا اور ہر طرف گند پھیلا ہوا تھا۔ پھراس نے دوہرے سے پوچھا: تنہیں کسے پتہ چلا؟ وہ کہنے مطرف گند پھیلا ہوا تھا۔ پھراس نے دوہرے سے پوچھا: تنہیں کسے پتہ چلا؟ وہ کہنے لگا کہ میں نے درختوں کودیکھا کہ ان کے بیتے و ھلے ہوئے تھے اور پودوں کے پھول لگا کہ میں نے درختوں کودیکھا کہ ان کے بیتے و ھلے ہوئے تھے اور پودوں کے پھول بہت ہی مہک رہے تھے اور تر وتازہ نظر آ رہے تھے، مجھے اس سنرے کود کھے کرمسوں ہوا کہ شاید بارش ہوئی ہے۔ یہی مثبت اور منفی سوچ کا فرق ہے کہ دیکھیں! دو بندے ہیں۔ ایک کی نظر نیچولوں اور پتوں پر پڑی۔

ہیں۔ایک کی نظر نیچ کیچڑ پر پڑی اور دوسرے کی نظر پھولوں اور پتوں پر پڑی۔

ہیں۔ایک کی نظر نیچ کیچڑ پر پڑی اور دوسرے کی نظر پھولوں اور پتوں پر پڑی۔

ہیں۔ایک کی نظر نیچ کیچڑ پر پڑی اور دوسرے کی نظر پھولوں اور پتوں پر پڑی۔

ہیں۔ایک کی نظر نیچ کیچڑ پر پڑی کی اور دوسرے کی نظر پھولوں اور پتوں پر پڑی۔

ہیں۔ایک کی نظر نیچ کیچڑ پر پڑی کی اور دوسرے کی نظر پھولوں اور پتوں پر پڑی۔

ہیں۔ایک کی نظر نیچ کیچڑ پر پڑی کی اور دوسرے کی نظر پھولوں اور پتوں پر پڑی۔

ہیں۔ایک کی نظر نیچ کیچڑ پر پڑی کی اور دوسرے کی نظر پھولوں اور پتوں پر پڑی۔

### شوگر فری تر بوز:

اگر کوئی مثبت سوچ رکھنے والا ہوتو اپنی مشکل کاحل نکال لیتا ہے اور اگر منفی سوچ والا ہوتو وہ ہمت ہار کے نقصان کر بیٹھتا ہے۔

ایک مرتبہ لا ہور میں ایک کسان سیزن کے شروع شروع میں اپنے تر بوز تو ٹرکر
لا یا کہ دین اچھا ملے گا۔اللہ کی شان کہ جب اس نے تر بوز کھو لے تو وہ اندر سے تھے
تو سرخ ،گر چھکے تھے۔ایک بندے نے خریدا تو اس نے کہا کہ بیتو میٹھا ہی نہیں۔
دوسرے نے خریدا تو اس نے بھی کہا کہ بیتو میٹھا ہی نہیں۔ وہ بڑا پر بیٹان ہوا گروہ بندہ
ہمت والا تھا۔اس نے سوچا کہ اب جو پچھ ہے، وہ تو ہی، مجھے پر بیٹان ہونے کی کیا
ضرورت ہے، مجھے اس کا کوئی حل نکا لنا چا ہے۔
ضرورت ہے، مجھے اس کا کوئی حل نکا لنا چا ہے۔
چنا نچہ اس نے سوچنا شروع کر دیا۔ بالآخروہ ایک پینٹر کے پاس گیا اور اس سے

جا کر کہا: مجھے ایک بڑا سا سائن بنا کر دو۔اس نے پوچھا: اس پر کیالکھوا نا ہے؟ کہنے لگا:اس کےاوپرلکھو۔

''لا ہور میں پہلی مرتبہ شوگر فری تر بوز''

اب جب اس نے شوگر فری کا لفظ لکھ دیا تو کس نے کہا: میں امی کے لیے لے کر جاتا ہوں۔ اس طرح اس کے پھیکے تربوز ڈبل ریٹ پرسارے کے سارے بک گئے۔ تو معلوم ہوا کہ انسان کو کوئی چیز دیکھ کر فور آ فرسٹریشن میں نہیں آنا چاہیے، بلکہ اس کا وے آؤٹ نکا لنا چاہیے۔ ہمارے بزرگ جو نوجوانوں سے یہ کہتے تھے کہ بھائی! ذرا ٹھنڈے دماغ سے سوچو، وہ اس لیے کہتے تھے کہ بھائی! ذرا ٹھنڈے دماغ سے سوچو، وہ اس لیے کہتے تھے کہ دنیا کے ہرمسئلے کا کوئی نہ کوئی صل ہوتا ہے، لہذا بیٹھ کر سوچواللہ تعالی کوئی اچھی تدبیر ذہن میں ڈال دیں گے۔

## متبادل راسته:

بالفرض آپ کسی روڈ پر چل رہے ہیں۔ چلتے چلتے سامنے دیکھتے ہیں کہ روڈ بالکل بلاک کردیا گیا ہے۔ چارفٹ اونجی اینٹوں کی دیوار بنادی گئی ہے۔ اب آپ وہاں کار کھڑی کر کے بیٹھ تو نہیں جاتے ۔ آپ بجھتے ہیں کہ روڈ بلاک کر دیا گیا ہے، لگتا ہے کہ کنسٹرکشن (تقیر) کا کام ہور ہا ہے۔ چنا نچہ انہوں نے دائیں یا بائیں جانب کوئی متباول راستہ بھی بنایا ہوگا۔ تو جب آپ دائیں بائیں ویکھتے ہیں تو آپ کوایک راستہ جا تا نظر آتا ہے۔ آپ اس کچراستے پر تھوڑی دیر کے لیے چلتے ہیں۔ وہ راستہ آپ کو وہاں سے نکال کر پھر سڑک پر ڈال ویتا ہے۔ انسان کی مثال بھی بالکل اس طرح کو وہاں سے نکال کر پھر سڑک پر ڈال ویتا ہے۔ انسان کی مثال بھی بالکل اس طرح ہے۔ اگر زندگی میں کسی وقت بھی کوئی کرائسز کنڈیشن محسوس ہور ہی ہوتو بھی! اب جے۔ اگر زندگی میں کسی وقت بھی کوئی کرائسز کنڈیشن محسوس ہور ہی ہوتو بھی! اب جھڑڑا کر کے نہیں بیٹھ جانا بلکہ اس کا کوئی وے آؤٹ (حل) نکالنا ہے۔ اس کاحل

نکالنے کا بہی طریقہ ہے کہ دیکھا جائے کہ کیا کیا جاسکتا ہے اور بہترین حل کیا ہے؟ اللہ تعالیٰ عقل کے استان کوکوئی نہ کوئی حل ضرور بتا دیں گے۔

### جيسي سوچ و ليي باتيں:

جیسی سوچ ہوتی ہے انسان اسی طرح سے بات کرتا ہے۔اور بات کرنے سے بڑافرق پڑجا تا ہے۔

⊙ .....ایک بی بات اُگرآپ ذراغیر مہذب طریقے ہے کریں تو اگلا بندہ آگلا بندہ تھیٹرلگادے گا اور اگر اسی بات کو مہذب طریقے ہے کریں تو اگلا بندہ آپ کا احسان مند ہو گا .....مثال تو ذرا عجیب ہی ہے .....اگرآپ کسی ہے کہیں کہ آپ کے ابوجان آر ہے ہیں تو وہ شکریدادا کرے گا اور اگر آپ اس ہے کہیں کہ تمہاری مال کا یار آر ہا ہے تو وہ جو تا اتار کے سر پر مارے گا۔ حالا نکہ حقیقت تو دونوں با توں کی ایک جیسی ہے ، مگر بات کرنے کا ایک طریقہ ہوتا ہے۔

⊙ ……ایک بادشاہ نے خواب دیکھا کہ اس کے کئی دانت گر گئے۔ وہ بڑا پر بیٹان ہوا کہ خواب میں میں نے دانت گرتے ہوئے دیکھے۔ اس نے صح تعبیر کرنے والے کو بتایا۔ اب وہ تعبیر بتانے والا ذرارف شم کا بندہ تھا۔ اس نے خواب من کر کہا: بادشاہ سلامت! آپ کے دانت گرے ہیں ، اس کا مطلب بیہ ہے کہ آپ اپ سامنے اپنے کئی رشتہ داروں کو مرتے ویکھیں گے۔ اب جیسے ہی اس نے تعبیر بتائی تو بادشاہ کو اتنا غصر آیا کہ اس نے کہا: اسے دو چارجوتے لگا دواور یہاں سے بھگا دو، بیالی بری تعبیر بتائی تو بادشاہ ہوئے۔ بتار ہا۔۔۔

اس کے بعدوہ پھر بھی خواب کی وجہ سے پریشان تھا کہ آخراس کی کوئی نہ کوئی تعبیر تو ہوگی۔ چنانچے ایک اور بندے کو بلایا گیا۔ وہ بندہ ذراسمجھ دارتھا۔ اس کو بات کرنے کا سلیقہ آتا تھا۔ لہٰذا جب اس نے خواب سنا تو اس نے کہا: بادشاہ سلامت! بیتو بہت

اجھاخواب ہے، آپ کومبارک ہو۔ بادشاہ نے پوچھا: کیے؟ اس نے کہا: آپ اپ تمام رشتہ داروں سے زیادہ لمبی عمریا کیں گے۔ بادشاہ اس تعبیر سے بہت خوش ہوااور کہا کہاس کوانعام دے کرروانہ کردو۔

اب دیکھیے باتیں تو دونوں کی ایک جیسی ہیں لیکن ان کو پیش کرنے کا انداز مختلف ہے۔ ایک انداز محتلف ہوجا تا ہے۔ ایک انداز سے بندہ خوش ہوجا تا ہے۔ انسانی روبیہ میں سوچ کا انر:

جس طرح سوچ کا انسان کی شخصیت پر گہرا اثر ہوتا ہے ای طرح انسان اپنی شخصیت کے مطابق آ گے روبیہ ختیار کرتا ہے۔ آپ نے دیکھا ہوگا کہ تکھیاں دوطرح کی ہیں۔ایک کو گندی تکھی کہتے ہیں،اس گندی تکھی کی سوچ بھی گندی ہوتی ہے۔اس کو ہر وفت گندگی کی تلاش ہوتی ہے۔ جہاں بھی دیکھو، بیصاف سھری جگہ کوچھوڑ کر گندی جگہ پر بیٹھی ہوگی۔مثال کے طور پر:اننے خوبصورت جسم کوچھوڑ کر بیا تھی زخم اور پیپ کے اوپر جا کر بیٹھے گی۔اننے خوبصورت گھر کوچھوڑ کر کوڑے کے ڈھیر پر بیٹھے گی۔ چونکہ اس کی سوچ گندی ہوتی ہے اس لیے اسے گندگی کی ہی کی تلاش رہتی ہے اور گندی جگہوں پر پائی جاتی ہے۔

ایک شہد کی مکھی بھی ہوتی ہے۔ اس مگھی کی سوچ اچھی ہوتی ہے، اس کو ہر وقت اچھائی کی تلاش ہوتی ہے، یہ نیکٹر زوھونڈتی پھرتی ہے۔ اس لیے آپ دیکھیں گے کہ اکثر و بیشتر پھولوں کے باغ میں اور پھلوں کے باغ میں پائی جاتی ہے۔ کہیں سے پھل کا رس لے رہی ہوتی ہے اور کہیں سے پھول کے اندر سے پولن لے رہی ہوتی ہے۔ یہ موتی ہے۔ یہ موتی ہے۔ یہ ماف سھری اور خوشبو دار جگہوں پر پائی جاتی ہے اور جب یہ وہاں سے نیکٹر پولن لے کر آتی ہے تو اپنے چھتے کے اندر آگر شہد بناتی ہے۔ یہ نی (شہد) اتنالذیذ ہوتا ہے کہ آج کل کے تعلیم یافتہ نوجوان اظہارِ محبت کے لیے اپنی بیوی کو مہنی 'کہتے ہے۔ کہ آج کل کے تعلیم یافتہ نوجوان اظہارِ محبت کے لیے اپنی بیوی کو مہنی 'کہتے

ہیں ہنی اتنالذیذ تو ہو تا ہے نا کہ اظہار محبت کے لیے علامت بن گیا ہے۔ تو معلوم ہوا کہ اس مکھی کی سوچ اچھی تھی تو اللہ تعالیٰ نے اس کو بروڈ کٹ بھی اچھا دے دیا۔ جس طرح مکھی کی دومثالیں ہیں اسی طرح انسان بھی دوطرح کے ہوتے ہیں۔ کچھلوگ بالکل گندی کمھی کی ما نند ہوتے ہیں ۔ان کی سوچ بھی گندی ہوتی ہے،انہیں ہر وقت گندگی کی تلاش رہتی ہے۔وہ کسی کی احپھائیوں کونہیں دیکھتے ،ان کی نظر ہمیشہ برائی کے اوپر پڑے گی۔ان کواچھی مجالس بھی اچھی نہیں لگتیں۔جس مجلس میں غیبت ہو، الزام تراشی ہو، تنقید ہواور نکتہ چینی ہوتو ان کو وہ مجالس بڑی اچھی لگتی ہیں۔وہ اتنے بے زار ہوتے ہیں کہ نہ بڑوں سے خوش ہوتے ہیں اور نہ اپنوں سے راضی رہتے ہیں۔نہ بیوی سے خوش، نہ بچوں سے خوش، نہ دین والوں سے خوش،حتی کہ ہم نے و یکھا ہے کہ وہ اپنے آپ سے بھی خوش نہیں ہوتے۔وہ اپنے آپ سے بھی بے زار ہوتے ہیں۔گندی سوچ رکھنے والوں کی آنکھ میں چشمہاییا لگ چکا ہوتا ہے کہان کو ہر ا یک میں عیب نظر آتے ہیں ۔ بھئ! دوسروں کی غلطیوں کوتم اتنا ڈھونڈ کر کیوں دیکھے رہے ہو؟ تمہیں دوسرے کی آنکھ کا بال تو نظر آر ہاہے، اپنی آنکھ کا ہمتیر کیوں نظر نہیں آر ہا؟ اپنے آپ کونہیں و یکھتے کہ میرے اندر کیا ہے؟ ان کو دوسروں کی برائیاں نظر آ رہی ہوتی ہیں ۔اس قتم کےلوگ دین بیزاراورخدا بیزار بن جاتے ہیں۔

کے کے لوگوں کی سوچ اچھی ہوتی ہے۔ جیسے شہد کی مکھی کی سوچ ہوتی ہے۔ اس کے دماغ میں نیکی ہوتی ہے۔ وہ نیکی کی تلاش میں رہتے ہیں۔ ان کا دل نیک مجالس میں بیٹھنے کو کرتا ہے۔ نیکوں کے ساتھ ان کا تعلق جڑار ہتا ہے۔ ان کو دوسروں کے اندر نیکی نظر آتی ہے۔ ان کے سامنے دنیا کا برابندہ بھی پیش کر دوتو وہ اس میں بھی کوئی نہ کوئی اچھائی ڈھونڈ لیس کے کہ اس میں بیا چھائی بھی پائی جاتی ہے۔ اس لیے کہ وہ مثبت سوچ رکھنے والے لوگ ہیں۔ لہٰذا ان کو ہرایک میں اچھائی نظر آتی ہے۔ اس لیے کہ وہ مثبت سوچ رکھنے والے لوگ ہیں۔ لہٰذا ان کو ہرایک میں اچھائی نظر آتی ہے۔ ایسا بندہ بیزی

E 1147 E 3E 3E 3E 3E 3E 00 244 B

بی (شہدی معروف مکھی) کی طرح زندگی گزار رہا ہوتا ہے۔ نیکی کے کاموں میں لگا ہوتا ہے۔ اس کے پاس کسی کا تذکرہ کرنے کی فرصت ہی نہیں ہوتی۔....کام سے کام ....اس کی زندگی پروڈ کٹو (تغییری) گزررہی ہوتی ہے۔ بیمعاشرے کے اندر ایک مقصد بھری زندگی گزار رہا ہوتا ہے۔

# از دواجی زندگی میں سوچ کا کر دار:

از دواجی زندگی کی کامیابی کے لیے انسان کی سوچ کا اچھا ہونا انتہائی ضروری ہے۔کوئی بھی میاں بیوی جن کی سوچ منفی ہوگی وہ بھی بھی خوشیوں بھری زندگی نہیں مرزار سکتے۔ بلکہ ہم نے دیکھا کہ نفی سوج رکھنے دالا خاونداین بیوی سے جھگڑر ہاہے، ار الب- جب بوجها كر بعني إات غصم بس كيول آئے؟ تو كہنے لگا: اس نے اپنے سکے بھائی کی طرف مسکرا کے کیوں دیکھا؟ اب بتاؤ کہ بہن اگر اپنے سکے بھائی کومسکرا كرد كيمے تو خاوند كواس سے بھى شك پر جاتا ہے۔اس كى سوج منفى ہے۔لہذاا سے اب ہر وفت الی ہی چیزیں محسوں ہوتی ہیں۔اور اگر انسان کی سوچ اچھی ہوتو پھر اسے دوسرے کی اندر بہت ی اچھائیاں نظر آتی ہیں۔اگرسوچ اچھی نہ ہوتو انسان جب اپنی بیوی سے ذرای بات پر بھی ناراض ہوگا تو کے گا کہ دس سال ہو گئے ،شادی کو، میں تو ذلیل ہی ہو گیا ہوں۔وہ اس بات کو بھول گیا کہ اس نے مجھے بیٹے بھی ویے، بیٹیاں بھی دیں،اللہ تعالیٰ نے مجھے اچھی جاب (ملازمت) دی،رزق دیا اور میں نے زندگی میں کتنے خوشیوں بھرے کھات گزارے ہیں، وہ ساری بانوں یہ یانی پھیرکےبس ایک بات کہہ دیتا ہے کہ دس سال سے میراسکون ختم ہو چکا ہے۔ اور مجمی مجمی یمی بات ہیوی کی طرف سے بھی ہوجاتی ہے کہ خاونداس پرخرچ کرتا ہے، اس کے ساتھ پیار محبت سے پیش آتا ہے، اس کی حفاظت کرتا ہے اور ذراس بات پر بیوی ناراض ہوکر کہتی ہے کہ آپ میرے لیے کیا کرتے ہیں؟ جوکرتے ہیں اپنے بچوں کے لیے کرتے ہیں میرے لیے پچونہیں کرتے ۔ یوں سارے کے دھرے پر پانی پھیرد بی ہے۔ بیاناشکرا پن اللہ تعالی کوا تنا نا پہند ہے کہ نبی علیہ السلام نے فرمایا کہ میں نے عورتوں کو کثرت سے جہنم میں جلتے و یکھا۔ ام المومنین آنے بوچھا: اے اللہ کے نبی ملی المؤینین آخر اس کی وجہ کیا ہے؟ فرمایا: وہ چیزوں پرلعن طعن بہت کرتی ہیں، تقید بہت کرتی ہیں اور اپنے خاوند کی ناشکری بہت کرتی ہیں۔ سب کی دھرے پر پانی پھیر کرر کھو تی ہیں۔ اللہ تعالی کو یہ بات اتنی نا پہند ہے کہ وہ ایسے بندوں کو جہنم کا ایندھن بنا دیتا ہے۔

نی علیہ السلام نے ارشاد فرمایا کہ ' اگر تمہیں اپنی ہوی کے اندر کوئی بات بری کے قور کرنا ، تمہیں اس کے اندر کتی ہی با تیں پندیدہ نظر آئیں گئی'۔ اگر اس سے اندر اتنی پندیدہ با تیں ہیں تو تھوڑ اساخل اور کلیئر نس تو تمہارے اندر بھی ہونا چاہیے۔
آج انڈسٹریل (صنعتی) زمانہ ہے۔ مشینیں بن رہی ہیں۔ ان مشینوں کے بخنے کا ایک طور طریقہ ہے کہ اگر شافٹ کا بیسائز ہوتو بیرنگ کا سائز اتنا ہونا چاہیے۔ اب اس کے اندر اسے ہزار کلیئر نس ہوتی ہے۔ اگر ان اصولوں کے مطابق مشین بنادیں تو پارٹس بھی بڑے آرام سے فٹ ہوتے ہیں اور مشین بھی بڑے مزے مزے چلتی پارٹس بھی بڑے آرام سے فٹ ہوتے ہیں اور مشین بھی بڑے مزے مزے جاتی اور نہیں ہوگا۔ بالکل اس طرح جس گھر کے ہے۔ اور اگر کلیئر نس کو گر ہے والے سرخ ہوں گے ، نہ شین اسمبل ہوگی اور نہ ہی کوئی پرڈکشن ہوگی۔ بچھ بھی فائدہ حاصل نہیں ہوگا۔ بالکل اسی طرح جس گھر کے خاوند میں یا ہوی میں ٹالرنس کلیئرنس زیرو ہوگئی آپ بھے لینا کہ اس نگھر کی گاڑی اب خاوند میں یا ہوی میں ٹالرنس کلیئرنس زیرو ہوگئی آپ سبھے لینا کہ اس نگھر کی گاڑی اب

چنانچہ انسان تھوڑا ساسمجھداری سے کام لے اور دل بڑا رکھے۔خوش گوار از دواجی زندگی گزار نااس بندے کا کام ہے جس کا دل ذرابڑا ہوتا ہے۔ کہنے والوں

نے کہا:

To run a big slow, one should have a big heart.

'' بردی اچھی زندگی گز ارنی ہوتو پھر دل بھی بڑا کرنا پڑتا ہے''

پریشانیاں تو آتی ہیں۔آج کون سابندہ ہے جو پریشانیوں سے بچا ہوا ہے؟ یہ
دنیا تو ہے ہی '' مسائلہ تان'۔ جس گھر میں دیکھوکوئی نہ کوئی مسئلہ ہوتا ہے۔ البتہ نوعیت جدا ہوتی ہے۔ جس کاروبار میں دیکھو، اس میں بھی مسئلے ہیں، مگر نوعیت جدا ہوتی ہے۔ تو جب ہم مسائل میں ہی زندگی گزارر ہے ہیں تو یہ بھی ذہن میں رکھیں کہروز ہی مسئلے ہوں گے۔ اور ہم نے ہی ان کومل کرنا ہے۔ پھران کومل کرنے کے لیے صبرو تحل کی ضرورت ہوتی ہے۔ اس لیے اچھی از دواجی زندگی وہی گزارتے ہیں جن کے اندر صبر وتحل ہوتا ہے۔ اگر بیصبر وتحل ختم ہوجائے اورانسان بے صبرابن جائے تو بس آپ سمجھ لیں کہ اب اس کی زندگی کے مسائل میں اضافہ ہوتا چلا جائے گا۔ اس لیے ہمیں عبوب کے ایوروں کے لیے رحمت بن کرر ہیں، عبوب کے ہم اپنی سوچ کو اتنا اچھا بنالیس کہ ہم دوسروں کے لیے رحمت بن کرر ہیں، دوسروں کے لیے رحمت بن کرر ہیں، دوسروں کے لیے رحمت بن کرر ہیں، دوسروں کے لیے رحمت بن کر دہیں۔

اگرکوئی بندہ آپ کی بات نہیں سمجھ رہا تو آپ ذراغور کریں اور سوچیں کہ آخریہ سمجھ کیوں نہیں رہا؟ اگر آپ اس کے انداز سے سوچنے کی کوشش کریں گے تو فوراً پتا چل جائے گا کہ اس کویہ بات کیوں سمجھ نہیں آ رہی۔

Put yourself in other's shoes.

اور پھرآپ کو پہتہ چل جائے گا کہ وہ بندہ آخراس طرح کیوں سوج رہاہے۔ عام طور پرمیاں بیوی کے درمیان جھڑنے کیا ہوتے ہیں؟ یہ کہ خاوندنے کہا کہ بیٹے کا رشتہ بھائی کے گھر کرنا ہے، بیوی نے کہا: بیٹے کا رشتہ میں نے بہن کے گھر کرنا ہے۔ پھریہ بات جھگڑے کی شکل اختیار کرجاتی ہے۔ بھائی! یہ کوئی اتنا بڑا مسئلہ نہیں، یا توصلح صفائی ہے ایک دوسرے کی سمجھ لیں یا سمجھا دیں۔ غصے میں آنے کی کیا ضرورت ہے؟ اس لیے شریعت نے اختلاف رائے کو جرم نہیں کہا۔ جبکہ آج ذرا ساکوئی اختلاف رائے کردیت نے انہا ف سرائے کردیت نے ایسا کوئی اختلاف رائے کردیت وہ ہمیشہ کے لیے دشمن سمجھا جاتا ہے۔ شریعت نے ایسا نہیں کہا۔ شریعت کہتی ہے کہتم ذرا سوچو کہ آخر وہ بندہ اس طرح کیوں سوچ رہا ہے۔ جب آپ سوچیں گے تو آپ کو بات سمجھ میں آجائے گی۔

#### استاد کی شکست:

کئی پرائمرمی سکولوں میں پڑھانے والے استاد جب بچے سے کوئی چیز سنتے ہیں اور وہ آگے سے سانہیں سکتا تو وہ اسے تھیٹرلگا دیتے ہیں۔ بیمارنا ،اس بات کی علامت ہے کہ اس بندے نے شکست تسلیم کرلی کہ میرے اندرا تنی صلاحیت نہیں کہ میں زبان سے اس بچے کو سمجھا سکوں۔ گویا مارنا تو اپنی شکست تسلیم کرنے کے مترادف ہوتا ہے۔ جولوگ اس بات کو سمجھتے ہیں وہ پیار سے اپ بچوں کو سمجھا لیتے ہیں۔ ان کو مارنے کی ضرورت ہی پیش نہیں آتی۔ جبکہ کئی لوگ ذراسی بات پر ایسے جذباتی ہو جاتے ہیں کہ جیسے ان کے وماغ میں آگ بھری ہوئی ہے۔ وہ گھر والوں کے لیے میں اس کے وماغ میں آگ بھری ہوئی ہے۔ وہ گھر والوں کے لیے مصیبت بے ہوتے ہیں۔ اور وہ اس کی وجہ سے بہت پریشان ہوتے ہیں۔ اس لیے مصیبت بے ہوتے ہیں۔ اس لیے مصیبت بے ہوتے ہیں۔ اور وہ اس کی وجہ سے بہت پریشان ہوتے ہیں۔ اس لیے مصیبت بے ہوتے ہیں۔ اور وہ اس کی وجہ سے بہت پریشان ہوتے ہیں۔ اس لیے مصیبت بے ہوتے ہیں۔ اس سے بچانا چاہے۔

### غصه كمزوري كي علامت ہے:

آکٹر و بیشتر غصہ کمزوری کی علامت ہوتا ہے۔ مثال کے طور پر جوان کو غصہ کم آتا ہے اور بوڑھے کو زیادہ۔ اس لیے کہ بوڑھے کے اندر اس کو برداشت کرنے کی صلاحیت کم ہو جاتی ہے۔ اسے ذرا ذراس بات پر غصہ آتا ہے۔ اس لیے بندہ بردھا ہے میں جاکر چڑ چڑا بن جاتا ہے۔ عمر جتنی بردھتی جاتی ہے، چڑ چڑا بن بھی اتنا ہی

بڑھتا چلا جاتا ہے۔

ایک بڑے میاں ڈاکٹر کے پاس گئے۔ اس نے کہا: ڈاکٹر صاحب! نظر کمزور ہوگئی ہے۔ ڈاکٹر نے کہا: بڑھایا ہے۔

اس نے پھرکہا: ڈاکٹر صاحب!او نچاسنائی دیتا ہے۔

ڈ اکٹر نے کہا: بڑھا یا ہے۔

اس نے کہا: ڈاکٹر صاحب!میرے جاریانچ دانت بھی گر گئے ہیں۔

( ڈاکٹرنے کہا: بڑھایا ہے۔

اس نے کہا: ڈاکٹر صاحب! مجھے چیزیں یا زہیں رہتیں ۔

ڈ اکٹرنے کہا: بڑھایا ہے۔

جب ڈاکٹر نے بار بارکہا کہ بڑھا پاہے، بڑھا پاہے،تو بوڑ ھے کوغصہ آیا اور غصے میں کہنے لگا: یہ کیا؟ بڑھا پاہے، بڑھا پاہے۔

ڈ اکٹرنے کہا: بڑے میاں! بیجی بڑھا پاہے۔

بوڑھوں کی قوت برداشت اتن کم ہوجاتی ہے کہ وہ ہوا کو بھی گالیاں دیتے ہیں۔
تو نو جوانوں کو چاہیے کہ وہ اپنے آپ پر غصے کو حاوی نہ ہونے دیں۔ بلکہ غصے کو کنٹرول
کرنے کی کوشش کریں۔ اسی لیے نبی علیہ السلام نے پوچھا: پہلوان کون ہے؟ اور پھر
صحابہ چھی کو سمجھایا کہ جواپ غصے کو قابو میں کرلے ، اللہ کی نظر میں وہ پہلوان کی مانند
ہوتا ہے۔ تو اگر بندے کے اندر صبر ہو، حکم ہوا ور دو سروں کے ساتھ مل جل کرر ہے
ہوتا ہے۔ تو اگر بندے کے اندر صبر ہو، حکم ہوا ور دو سروں کے ساتھ مل جل کرر ہے
کے اجھے اخلاق ہوں تو انسان کی زندگی بہت اچھی گزرتی ہے۔ چنانچہ جب کوئی بندہ
ایک بات کو قبول نہیں کرر ہا ہوتا تو ضرور سوچیں کہ آخر اس کی کیا وجہ ہے؟ تھوڑا سا
سوچنے ہے وہ وجہ بھی سمجھ میں آجا ہے گی۔

### باپ بیٹے کی سوچ کا انداز:

ایک الجینیئر اینے تمرے میں بیٹا کوئی ڈرائنگ بنار ہا تھا۔اس کا اکلوتا بیٹا بھی گھر میں تھا۔اس کی بیوی کسی کام کےسلسلے میں کہیں گئی ہوئی تھی ۔اس لیے بجہ بھی اس کوسنجالنا تھا۔اب بچے بھی اس کے کمرے میں تھا۔ بھی وہ اس کتاب کو چھیٹر تا اور بھی اس کتاب کو .....ہم نے اکثر و بیشتر دیکھا ہے کہ انجینئر ز اور ڈاکٹر ز کے کمروں کی حالت عجیب ہوتی ہے۔ کہیں کتابیں پڑی ہوتی ہیں ، کہیں کاغذبکھرے ہوئے ہوتے ہیں اور ان بے جاروں کے پاس ان کوتر تیب سے اور صفائی سے رکھنے کی فرصت ہی نہیں ہوتی۔ان کی گاڑیاں بھی قابل دید ہوتی ہیں اور ان کے کمرے بھی قابل دید ہوتے ہیں۔ ہاں! اگر کوئی صفائی رکھنے والا ہوتو الگ بات ہے۔ورنہ اکثر و بیشتر ایسا ہی معاملہ ہوتا ہے۔ اپنی اپنی طبعیت ہوتی ہے۔....بہر حال انجینئر کے ہر طرف کاغذ بکھرے ہوئے تھے۔ادھربھی کاغذادھربھی کاغذ۔ چنانچہ جب بچیکسی کاغذ کو ہاتھ لگا تا تو ہو کہتا: بیٹا! بیڈرائنگ ہے،اس کو ہاتھ نہ لگاؤ۔ پھروہ دوسرے کاغذ کو ہاتھ لگا تا تو وہ کہتا: بیٹا!اسے ہاتھ ندلگاؤیہ میراقیمتی کاغذ ہے۔اب وہ کام کر ہی نہیں یار ہاتھا۔ بچہ ا ہے خوب ڈسٹر ب کر رہا تھا۔ اس کا بیجھی جی نہیں جاہ رہا تھا کہ میں اپنے بیچے کو ڈ انٹوں یا کمرے سے نکالوں۔آ خراس کا بیٹا تھا۔ دل کا فکڑا تھا۔

اس کے ذہن میں ایک خیال آیا کہ میں اس بچے کو کہیں مصروف کرتا ہول۔
چنا نچہ اس کے سامنے ایک اخبار پڑا ہوا تھا اور اس کے اوپر پوری دنیا کا نقشہ بنا ہوا
تھا۔اس نے کیا کیا؟ اس نے قینچی لی اور اس دنیا کے نقشے کے آٹھ دس کھڑ ہے کر دیے
اور بچے ہے کہا: بیٹا! میں تہہیں ٹیپ بھی دیتا ہوں اور میں تہہیں یہ چند کا غذ دیتا ہوں ،
اگرتم ان کوتر تیب سے جوڑ کر لاؤ گے تو میں تمہاری پسند کی و نیلا آئس کریم تمہیں لے کر

دوں گا۔وہ بچے تھا اس لیے و نیلا آئس کریم کا نام س کرخوش ہو گیا۔ چنانچہ وہ ٹیپ اور کاغذ کے مکڑے لیے کر دوسرے کمرے میں چلا گیا۔ اب انجینئر صاحب ناکہ کا سانس لیا کہاب بیدو گھنٹے و ہیںمصروف رہے گا اور میں اپنا کام نکال لوں گا۔۔

ابھی پانچ منٹ نہیں گزرے تھے کہ بچہوا پس آیا اور کہنے لگا: ابو جی ! ہیں نے اپنا کام کرلیا ہے، آپ دیکھیں۔ جب اس نے وہ کاغذ لے کرا پنے سامنے رکھا تو بڑا جیران ہوا کہ سمندر سے سمندر ٹھیک ملے ہوئے ہیں، پہاڑوں سے پہاڑٹھیک ملے ہوئے ہیں، پہاڑوں سے پہاڑٹھیک سب ہوئے ہیں، ہلکوں کی حدود بالکل اپنی جگہ پرتھیں، اور اس بیچے نے بالکل ٹھیک سب چیزوں کو جوڑ دیا۔ وہ جیران ہوگیا کہ اگر میں انجینئر بھی جوڑنے بیٹھتا تو جھے بھی اتنا چیزوں کو جوڑ دیا۔ وہ جیران ہوگیا کہ اگر میں انجینئر بھی جوڑ کر لے آیا۔ چنا نچہوہ جیران موکر بیچ سے بوچھے لگا: بیٹا! تم نے اتنا جلدی پینقشہ کیے جوڑلیا؟ تو بیچ نے مسکرا کر اس کاغذ کو النا کر دیا۔ جب اس نے النا کر کے رکھا تو اس نے ویکھا کہ دوسری طرف ایک عورت کی بڑی ہوئی تھی۔ بیچ نے وہ تصویر جوڑی اور دوسری طرف ایک عورت کی بڑی سی تصویر بنی ہوئی تھی۔ بیچ نے وہ تصویر جوڑی اور دوسری طرف سے دنیا کا نقشہ خود بخو و جڑگیا۔

تو بھی! ہوسکتا ہے کہ یہ مسئلہ ہماری نظر میں دنیا کا نقشہ جوڑنے کی طرح مصیبت ہواور ہوسکتا ہے کہ دوسرے بندے کے سامنے اس تصویر کو جوڑنے کی طرح بہت آسان ہو۔اس لیے غصے میں آنے یا پریشان ہونے کی کیا ضرورت ہے؟ جو بندہ اس حقیقت کو سمجھ لیتا ہے اس کی زندگی کے اندرخوشیاں آجاتی ہیں۔

# كاميابزندگى كاراز:

ایک اصول یا در کھیے!.....کہ کامیاب زندگی گزارنے والے لوگ عام طور پر شبت سوچ والے لوگ ہوتے ہیں۔ ہیں ایک دفعہ ورلڈ بک آف ریکارڈ پڑھر ہاتھا۔ اس میں انہوں نے ایک جگہ بہت عجیب بات کھی۔ انہوں نے لکھا کہ' ونیا میں جتنے لوگوں نے ریکارڈ قائم کیے یا تاریخ میں انہوں نے کوئی نمایاں کام کر کے دکھائے ، ہم نے ایسے سینکڑ وں لوگوں سے انٹرویو لیے اور ہم نے ان میں ایک چیز مشترک دیکھی کہ جس بند ہے نے انٹرویود یا اس نے کہا کہ مقابلے سے پہلے مجھے پکا یقین تھا کہ میں جیت حاوٰں گا ، اور میں جیت گیا۔''

انہوں نے لکھا کہ ہمیں ایک بندہ بھی ایبانہیں ملا کہ جس نے کہا ہو کہ مقابلے سے پہلے میں ڈرر ہاتھا کہ میں ہار جاؤں گا مگر میں جیت گیا۔تو معلوم ہوا کہ مقابلے میں ڈرر ہاتھا کہ میں ہار جاؤں گا مگر میں جیت گیا۔تو معلوم ہوا کہ مقابلے میں وہی لوگ جیتنے ہیں جن کے اندر مثبت سوچ ہوتی ہے اور جیتنے کا شوق سایا ہوتا ہے۔۔

God helps those who help themselves.

"خداان کی مدد کرتا ہے جواپنی مدد آپ کرتے ہیں"

اس لیے اگر ہم بھی مثبت سوچ رکھ کراپنے زندگی کے کاموں کوسنوارنے کی کوشش کریں گےتو ہم بھی ان مسائل کو بڑے آ رام سے ختم کردیں گےاور ہم بڑی پر سکون زندگی گزارنے والے بن جائیں گے۔

### كىنىر كے مریض كى قوت ارادى:

اٹلی کار ہے والا ایک آ دمی تھا۔ اس نے عربی زبان سیمی ۔ اس کو ہربل میڈیس کے ساتھ بڑا لگاؤ تھا۔ عربی زبان سیمینے کے بعد وہ ایک لائبر ری میں گیا۔ اسے وہاں پرعربوں کی یونانی حکمت کی کتابیں مل گئیں۔ اس نے چند کتابوں کا اطالوی زبان میں ترجمہ کر دیا۔ جب ترجمہ ہوا تو لوگوں نے اس کی کتاب ہاتھوں ہاتھ خرید لی۔ پورے ملک میں اس کی شہرت ہوگئی کہ اس نے کتنا اچھا کا م کیا کہ اس نے ایساعلم ایک زبان

سے دوسری زبان میں منتقل کر دیا۔

جب ہرطرف اس کی تعریفیں ہور ہیں تھیں تو اس بندے کی طبیعت خراب ہوگئ۔ ڈاکٹر کے پاس تشخیص کے لیے گیا تو ڈاکٹر نے تشخیص کی کہ آپ کو کینسر ہےاوریہ کینسرا تنا بھیل چکا ہے کہ ہمارے خیال میں دوسال کے اندر آپ اپنی زندگی کے آخری کیے تک پہنچ جائیں گے ،اس سے زیادہ آپ زندہ نہیں رہ سکتے۔

جب ڈاکٹرنے کہا کہ آپ کی زندگی اب دوسال ہاتی ہے، بیاری بڑھ جائے گ ادرعلاج نہیں ہوسکے گا تو اس بندے نے سوچا کہ مجھے استے تھوڑ ہے دفت میں بہت سارے کام کرنے ہیں۔لہذا مجھے پریشان ہونے کی بجائے زیادہ کام کرناچا ہے۔ چنانچہ وہ کینسر کا مریض لائبر ریوں میں گیا اور اس نے یونانی تھمت کی عربی کتابیں ڈھونڈ ناشروع کر دیں۔ ہالآخر اس نے ای (۸۰) کتابیں ڈھونڈ نکالیس جو

کتابیں ڈھونڈ ناشروع کر دیں۔ بالآخراس نے اس (۸۰) کتابیں ڈھونڈ نکالیں جو عربی زبان میں ڈھونڈ نکالیں جو عربی زبان میں اوراطالوی زبان میں ان کا ترجمہ کیا جانا بہتر تھا۔ پھراس نے اپنے ساتھ ترجمہ کرنے والوں کی ایک فیم بنالی۔ان سے اس نے کہا کہ جو اصطلاحات ہیں ان کا ترجمہ میں کروں گا اور جوسید ھے سید ھے نقرے ہیں ان کا ترجمہ آپ کرتے جا کیں۔اس طرح اس کا کام تیز ہو گیا۔اندازہ لگائے کہ اس بندے نے دوسالوں میں ای کتابوں کا ترجمہ عربی زبان سے اطالوی زبان میں کرویا بندے نے دوسالوں میں ای کتابوں کا ترجمہ عربی زبان سے اطالوی زبان میں کرویا اور ورلڈ بک آفریک آفریش اس بندے کا نام کھا گیا۔

# آ ٹو میٹک سلائی مشین کی ایجاد:

میں ایک سائنس دان کے حالات زندگی پڑھ رہا تھا۔وہ کپڑے کی سلائی مشین بنانا جاہتا تھا .....کپڑے کی سلائی عورتیں اپنے ہاتھ سے سوئی دھاگے ہے کر لیتی ہیں ....جس سوئی کے ساتھ ہاتھوں سے سلائی کی جاتی ہے اس کے سرے پر بالکل نوک بنی ہوتی ہے اور پیچھے دھا گہ ڈالنے کے لیے سوراخ ہوتا ہے۔اس سے عور تیں ہاتھ سے کپڑے میں لیتی ہیں ۔۔۔۔اس نے اس کے لیے ایک آٹو میٹک مشین ڈیز ائن کی۔

مشین تو ٹھیک ڈیزائن ہوگئی۔ گرمسکہ یہ بنا کہ جب وہ سوئی کوفٹ کرتا تو وہ ایک ہی لیے میں ٹوٹ جاتی ۔ وہ بڑا پریشان ہوا۔
ہی لیے میں ٹوٹ جاتی ۔ جیسے ہی مشین چلتی تو سوئی ٹوٹ جاتی ۔ وہ بڑا پریشان ہوا۔
اس نے مختلف قتم کے مٹیر میل آز مائے گرکوئی کام بنما نہیں تھا۔ ۔۔۔۔۔اگرکوئی عام آ دمی ہوتا تو تھک ہار کے بیٹھ جاتا کہ کوئی سوئی کامیاب نہیں ہور ہی ۔۔۔۔گراس کواتنی سمجھتھی کہ اگر ایک صورت میں کام نہیں بن رہا تو کسی دوسرے آپشن کے بارے میں بھی سوچنا چاہیے۔ چنا نچہاس نے سوچنا شروع کر دیا۔

اس کے ذہن میں آیا کہ اس سوئی کا سوراخ اس کے سرے پر کیوں بنا ہوا ہے،
میں اس کو ٹپ کے او پر کیوں نہ بناؤں۔ اس خیال کے آنے کے بعد اس نے ایک نئ
سوئی بنائی اور اس کا سوراخ اس نے ٹپ کے قریب بنا دیا۔ پھر اس نے اسے مشین
میں فٹ کیا تو مشین نے چلنا شروع کر دیا اور وہ آٹو مینک مشین بنانے کا موجد بن
گیا۔ تو معلوم ہوا کہ ہمیں بھی اپنی زندگی میں مسائل کو ذرا متباول طریقے سے حل کر لینا
چاہیے۔اللہ تعالی کسی نہ کسی طرح اس مسئلے کو ضرور حل کردیتے ہیں۔

# مثبت سوچ پُرامیدر کھتی ہے:

مثبت سوج سے انسان کے اندرامید پیدا ہوجاتی ہے۔ وہ پرامید ہوتا ہے کہ میں مثبت سوج سے انسان کے اندرامید پیدا ہوجاتی ہے۔ وہ پرامید ہوتا ہے کہ میں بیدا م کر جاؤں گا،میر اللّٰہ میر کی مدد کرے گا۔ اور دینا امید کے اوپر قائم ہے۔ اور جن لوگوں کی منفی سوج ہوتی ہے ان کے اندرا کثر گھبرا ہث اور ڈپریشن ہوتا ہے۔ انہیں کی منفی سوج ہے منع کیا ہے کیونکہ بیمنفی سوج ہے منع کیا ہے کیونکہ بیمنفی سوج

B AND BEST OF THE PERSON OF TH

انسان کو مایوس کرتی ہے،اورشریعت نے مایوی کو کفار کا شیبوہ قرار دیا ہے۔ چنانچہ اللہ تعالیٰ ارشاد فرما تا ہے:

﴿ وَلاَ مِانِئَسٌ مِنْ رُوْحِ اللّٰهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكَفِرُوْنِ ٥ ﴾ چنانچەمۇمن كونجىشە پُرامىدر بهنا چاہیے۔ جب ہم پرامید ہوكرزندگی گزاری گئة پھراللّٰدتعالیٰ كامیا بی کے لیےراستہ بھی کھول دیں گے۔حدیث قدی میں ہے: آنا عِنْدَ ظُنَّ عَبْدِی بِیْ

'' میں بندے کے ساتھ اس کے گمان کے مطابق معاملہ کرتا ہوں۔'' اگر بندے کا اللہ کے ساتھ اچھا گمان ہوگا تو اللہ تعالیٰ اچھا معاملہ کریں گے اور اگر بدگمانی ہوگی تو و بیا ہی معاملہ ہوگا۔اس لیے سوچ ہمیشہ اچھی رکھنی جا ہیے۔

# مثبت سوچ ہے دشمن پر فتح:

بائبل کے اندرایک واقعہ ہے کہ طالوت میں اللہ کے پینیبر تھے۔۔۔۔۔اس واقعہ کا اشارہ قرآن مجید کے اندر بھی ہے۔۔۔۔۔گر بائبل کے اندراس کی تنصیل پچھاس طرح سے ہے کہ ان کا مقابلہ جالوت کے ساتھ ہوا۔

جالوت ایک بڑا نجم شجم انسان تھااور بہت جنگ جوشم کا بندہ تھا۔اس کے ساتھ ساتھ وہ ایک ظالم انسان بھی تھا۔ طالوت علیم اس کے مقابلے میں آئے۔طالوت علیم اسلام کے مقابلے میں آئے۔طالوت علیہ السلام کے ساتھ تھوڑے سے بندے تھے اور جالوت کے ساتھ زیادہ بندے تھے۔اور طالوت میں ضعیف العمر بھی ہونچکے تھے۔

بندے کی جیسی عمر ہوتی ہے اس کی آبزرویشن بھی ولیبی ہوتی ہے۔ جب طالوت علیہ السلام نے جالوت کو دیکھا تو انہیں وہ کیم وضیم نظر آیا۔ چنانچہ بائبل کے الفاظ ہیں کہ انہوں نے اسے ویکھتے ہی کہا: It is very difficult to kill him, because he is very big.

''اے مارنا تو بہت مشکل ہے کیونکہ بیتو بہت بڑا ہے۔'' اس وقت ان کے ساتھ ایک نو جوان بھی تھا جس کا نام داؤد عیلا تھا۔ اس نو جوان نے جب جالوت کود یکھا تو دیکھتے ہی مسکرایا اور کہنے لگا:

It is very easy to kill him, because he is very big. I will never miss him.

'''اے مارنا تو بہت آ سان ہے کیونکہ بیتو اتنا بڑا ہے، میرا نشابہ بھی خطا ہو ہی نہیں سکتا۔''

اور واقعی ایبا ہی ہوا کہ داؤ د علیہ السلام نے اس پر ایک پھر پھینکا جو اس کے ماتھے پرلگا اور وہیں اس کوموت آگئی۔اس طرح اللہ تعالیٰ نے طالوت علیہ السلام کوفتح عطافر ما دی۔ تجی بات ہے کہ جن لوگوں کے اُندرامیدا ور مثبت سوچ ہوتی ہے اللہ تعالیٰ ان کے لیے رائے بھی کھول دیا کرتے ہیں۔

# نقصان كونفع ميں بدلنے كى صلاحيت:

اللہ تعالیٰ نے انسان کواتن خوبیاں دی ہیں کہ بیا ہے Minus (نقصان) کواپنا Plus (نفع) بنانے کی صلاحیت رکھتا ہے۔کوئی بھی انسان ہو، وہ اپنی قوت ارا دی کو استعال کر کے نقصان سے نچ سکتا ہے۔ اگر ہم بھی آج تک منفی سوچ کی زندگی گزارتے رہے ہیں تو آج ہم مثبت سوچ والی زندگی گزارنے کی نیت کرلیں۔پھر ہم اپنی آئکھوں سے اس کی برکتیں دیکھیں گے۔

دلوں کی دنیا میں انقلاب:

حضرت سینج بخش لا ہور کے بہت بڑے بزرگ گزرے ہیں۔ انہی کی وجہ سے

اس علاقے میں وین آیا۔ان کا نام حضرت علی ہجو ری تھا۔ان کے بارے میں خواجہ معین الدین چشتی اجمیری نے کہا: ۔

سمج بخش فیضِ عالم مظہر نور خدا ناقصاں را پیرِ کامل کاملاں را راہ نما ان کواللہ تعالیٰ نے الیمی روعانیت بخشی تھی۔

ایک مرتبہ حضرت علی ہجویری نے کسی دریا کوعبور کرنا تھا۔۔۔۔دریائے سندھ جیسے بڑھے دریا کوعبور کرنے میں کوئی آ دھا پونہ گھنٹہ لگ جاتا ہے۔ کیونکہ آ دمی دریا کو بالکل سیدھا کراس نہیں کرسکتا، بلکہ ذرا اپ سٹریم جاکر دور سے وہ کشتی چلاتے ہیں اور چونکہ اوپر سے ہوا کا دباؤ بھی ہوتا ہے اس لیے پانی کے بہاؤ کے ساتھ ہتے ہوئے ترجیھا کراس کیا جاتا ہے۔۔۔۔۔۔حضرت کشتی پر بیٹھ گئے اور سفر شروع کر دیا۔ ہوا بہت تیز چلا رہی تھی۔ آپ کے سر پرٹو پی تھی۔ خیال آیا کہ کہیں ٹوپی اڑ کریانی میں نہ چلی جائے۔ چنا نچے جھرت نے ٹوپی اتار کر جیب میں ڈال لی اور ذکر ومرا قبہ میں مشغول ہو جائے۔ چنا نچے جھرت نے ٹوپی اتار کر جیب میں ڈال لی اور ذکر ومرا قبہ میں مشغول ہو

حضرت نے ایک دو دن پہلے سر کا حلق کروایا تھا۔۔۔۔۔۔۔۔ وہاں کشی میں ہی کہتے ہیں، جب نئ ٹی ٹنڈ ہوتی ہے تو بڑی خوش نما نظر آتی ہے۔۔۔۔ وہاں کشی میں ہی قریب سے ایک بچہ گزرا تواس نے دیکھا کہ اتناصاف شھرا ہے۔ چنا نچہاس نے سر پر ہاتھ پھیرا تو بڑا ملائم نظر آیا۔ اس نے جا کر دوسرے کو بتا دیا۔ اب دوسرا لڑکا بھی ہاتھ پھیر نے کے لیے آیا۔ اس کو بھی بڑا اچھا لگا۔ اس نے جا کر تیسرے کو بتایا۔ وہ تیسرا فرا شرارتی قتم کا تھا۔ جب وہ آیا تو اس نے آکر سر پر ہاتھ بھی پھرا اور ٹھونگا بھی لگا دیا۔ اس پر باقی بچے ہننے لگے۔ یہ اللہ کے بندے اللہ کے ذکر میں مست بیٹھے رہے۔ اللہ کے ذکر میں مست بیٹھے رہے۔ اللہ کے دوسرے بیچے نے تھپٹر رہے۔ اللہ کے دوسرے بیچے نے تھپٹر رہے۔ اللہ کے دوسرے بیچے نے تھپٹر رہے۔ ایک دوسرے بیچے نے تھپٹر

بھی لگا دیا۔

ان بچوں کی برتمیزی کو دیکھ کر قریب کے مردوں اور عورتوں نے ہنسا شروع کے سردوں اور عورتوں نے ہنسا شروع کر دویا۔ اب بیشغل بن گیا کہ بچہ آتا اور ان کے سر پڑھیٹر لگاتا اور ساری کشتی کے لوگ ہننے لگتے۔ ان کے لیے نداق بن گیا۔ جب کشتی والوں نے نداق اڑایا تو پھراللہ تعالیٰ کوا پنے بیارے بندے کا نداق اڑانے پرجلال آگیا۔ حدیث قدی میں آیا ہے:

من عَادَ لِی وَلِیّا فَقَدُ الْذَ نُتُهُ بِالْحَرْبِ

''جومیرے ولی ہے دشمنی کرتا ہے میرااس کے ساتھ اعلان جنگ ہے۔'' چنانچہ جب انہوں نے یہ بدتمیزی کی تو اللہ تعالیٰ نے حضرت کیج بخش کے دل میں الہام فر مایا کہ''اے میرے بیارے! بیاتنی بدتمیزی کررہے ہیں ،آپ کی شان میں گتا خیاں کررہے ہیں اورآپ کا اتناصبر کہآپ اس کو برداشت کرکے ہیٹھے ہوئے

ہیں ،اگرآ ب بدد عاکریں تو میں اس یوری کشتی کو ہی الٹ دیتا ہوں \_'' ہیں ،اگرآ ب بدد عاکریں تو میں اس یوری کشتی کو ہی الٹ دیتا ہوں \_''

کہتے ہیں کہ جیسے ہی ان کے ول میں بیالہام ہوا تو حضرت نے دعا کے لیے ہاتھ اٹھائے اور دعاما نگی:

''اے اللہ! اگر آپ کشتی اللہٰ ای جا ہتے ہیں تو ان سب لوگوں کے دلوں کی ۔'' 'کشتی کوالٹ دیجے۔''

اللہ تعالیٰ نے ان کی دعا قبول کرلی۔ کہتے ہیں کہ اس کشتی میں جتنے مرداور عورتیں تضیں ،ان میں سے ہرایک کو اللہ تعالیٰ نے موت سے پہلے ولایت کا نور عطا فرما دیا۔ یہ ہوتی ہے مثبت سوج۔اللہ والوں کی ایسی کیفیت ہوتی ہے کہ ایسے حالات میں بھی ان کی زبان سے بد دعا نہیں نکلی ، بلکہ ان کی زبان سے دعا کمیں نکل رہی ہوتی ہیں۔ ہیں۔

الإن الفياليات (82) (82) (82) المستال المستال المستال المستال المستال المستال المستال المستال المستال المستال

### نبي ءِرحمت مله الله الله كل رحمت بهرى سوج:

اللّٰہ کے پیارے حبیب ملیّہ ﷺ تاریخ انسانیت میں سب سے زیادہ مثبت سوج ر کھنے والے یتھے۔ نبی علیہ السلام طا نف میں تشریف لے گئے۔ آپ جانتے ہیں کہ ان لوگوں نے کس قدر براسلوک کیا! بچوں نے پھر سچینکے اور آپ مٹھینے کے قد مین مبارک سے خون نکلا اور تعلین مبارک خون سے بھر گئے۔ نبی علیہ السلام بہت تھے ہوئے تھے۔ بھوک بھی تھی، پیاس بھی تھی۔ بہت پریشانی کے عالم میں اس بستی سے نکلے اور عنبہ اور شیبہ کے انگور کے سامنے آس میٹھے۔ وہاں آپ ما آتی ہے نے دعا مانگی۔ ٱللُّهُمَّ اِلَّيْكَ ٱشْكُوا صُعْفَ قُوَّتِي وَ قِلَّةَ حِيلَتِي وَ هَوَانِي عَلَىَ النَّاسِ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَنْتَ رَبُّ المُسْتَضَعَفِيْنَ وَاَنْتَ رَبَّى إلىٰ مَنْ تَكِلُنِي إلى بَعِيْدٌ يَتَجَهَّمُنِي آمُ إلى عَذُوٍّ مَلَّكْتَهُ آمُرِي إنْ لَّمْ يَكُنْ بِكَ عَلَىَّ غَضَبٌ فَلَا أَبَالِي وَ لَكِنْ عَافِيَتُكَ هِيَ أَوْسَعُ لِيُ اَعُوْذُ بِنُوْدٍ وَجُهَكَ الَّذِي اَشُرَقَتْ لَهُ الظُّلُمَاتُ وَ صَلُحَ عَلَيْهِ ٱمْرُالدُّنْيَا وَ الْآخِرَةِ مِنْ أَنْ تُنْزِلَ بِي غَضَبَكَ أَوْ يَحُلَّ عَلَىَّ سَخَطُكَ لَكَ الْعُقْبِلِي حَتَّى تَرْضِلِي وَ لَا يَحُولَ وَ لَا قُوَّةَ إِلَّا مِكَ اے اللہ! تحقی ہے شکایت کرتا ہوں میں اپنی کمزوری اور بے کسی کی ، اور لوگوں میں ذلت ورسوائی کی ۔اےارحم الراحمین! تو ہی ضعفاء کارب ہےاور تو ہی میرایر ودگار ہے، تو مجھے کس کے حوالے کرتا ہے؟ کسی اجنبی برگانے کے جو مجھے دیکھے کرترش روہوتا ہے اور منہ چڑھا تا ہے یا کسی دشمن کے جس کوتو نے مجھ برقابودے دیا ہے۔اے اللہ!اگرتو مجھ سے ناراض نہیں ہےتو مجھے کسی کی بھی پر وانہیں ، تیری حفاظت مجھے کافی ہے۔ میں تیرے چبرے کے اس نور

کے طفیل جس سے تمام اندھیریاں روشن ہوگئیں اور جس سے دنیا و آخرت کے سارے کام درست ہو جاتے ہیں ، اس بات سے بناہ ما نگتا ہوں کہ مجھ پر تیرا عصہ ہو یا تو مجھ سے ناراض ہو، تیری نارافسگی کا اس وقت تک دور کرنا ضروری ہے جب تک تو راضی نہ ہو، نہ تیرے سواکوئی طاقت ہے نہ کوئی تو ت ۔ ہے جب تک تو راضی نہ ہو، نہ تیرے سواکوئی طاقت ہے نہ کوئی تو ت ۔ یہ ایس میں اتنی بیاری دعا ہے کہ بڑا پر بیٹان بندہ بھی اگر اس دعا کو مانگے تو اس میں اتنی برکت ہے کہ اس دعا کو مانگے ہے اللہ تعالی اس بندے کے دل کوتسلی دے دیے ہیں ۔ یہ ہمارا تجربہ ہے۔

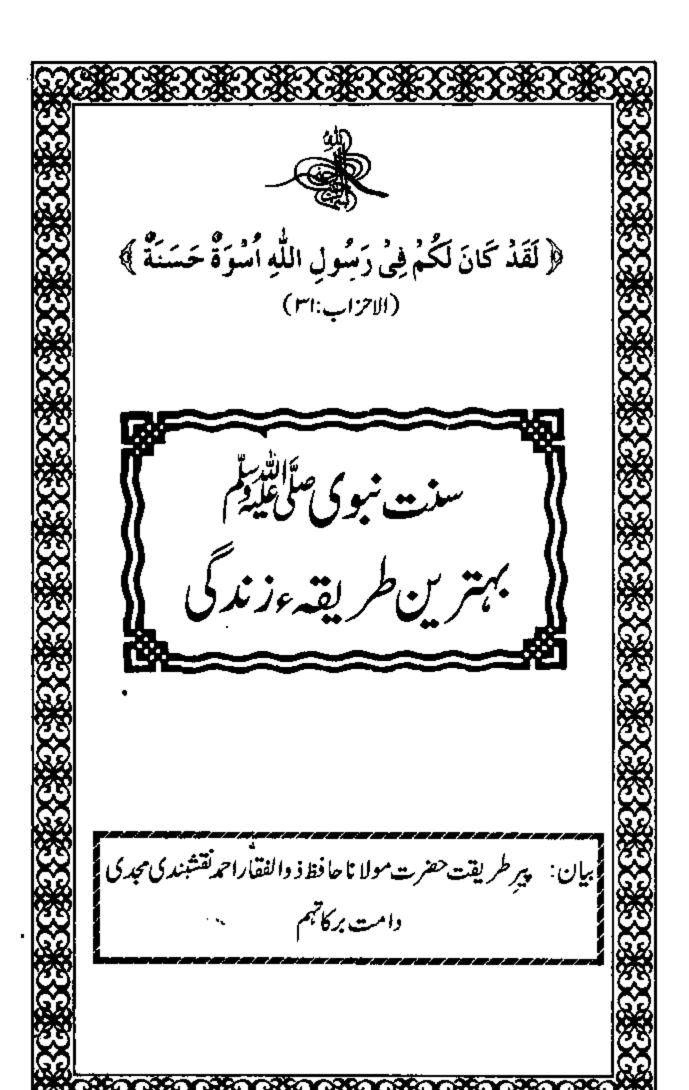
جب نی علیہ السلام نے بید عا ما گی تو اللہ تعالیٰ کی طرف سے جرئیل علیہ السلام کی اڑوں کے انتظام والے فرشتے میکا ٹیل علیہ السلام کو ساتھ لے کر آئے۔ جرئیل نے آکر عرض کیا کہ بیں فلاں فرشتے کو ساتھ لایا ہوں ان لوگوں نے آپ کے ساتھ اس قدر براسلوک کیا ہے، اگر آپ اجازت دیں قو دو پہاڑوں کو آپس میں ملاکر پوری کی پوری بستی کو بی ختم کر دیا جائے۔ اب فراغور کیجیے کہ ان لوگوں نے نبی علیہ السلام سے کیا سلوک کیا تھا اور ایسے سلوک کے بعد بندے کا کیار دعمل ہوتا ہے، مگر اللہ کے محبوب نقے۔ اس نبی ورحت نے فرمایا کہ نبیس، میں نبیس چاہتا کہ ایسا عمل کیا جائے۔ پوچھا: آخر کیوں؟ فرمایا: بیلوگ جھے نبیس، میں نبیس چاہتا کہ ایسا عمل کیا جائے۔ پوچھا: آخر کیوں؟ فرمایا: بیلوگ جھے نبیس بچھان سکے تو میں امرید کرتا ہوں کہ ان کی اولا دوں میں سے اللہ ایسے لوگوں کو پیدا کر دے گا جو جھے امرید کرتا ہوں کہ ان کی اولا دوں میں سے اللہ ایسے لوگوں کو پیدا کر دے گا جو جھے امرید کرتا ہوں کہ ان کی اولا دوں میں سے اللہ ایسے لوگوں کو پیدا کر دے گا جو جھے امرید کرتا ہوں کہ ان کی اولا دوں میں سے اللہ ایسے لوگوں کو پیدا کر دے گا جو جھے امرید کرتا ہوں کہ ان کیا تا کی اولا دوں میں سے اللہ ایسے لوگوں کو پیدا کر دے گا جو جھے امریکی کی اور جھ پر ایمان لانے والے بن جا کیں عب سے قربان جا کیں اس شبت

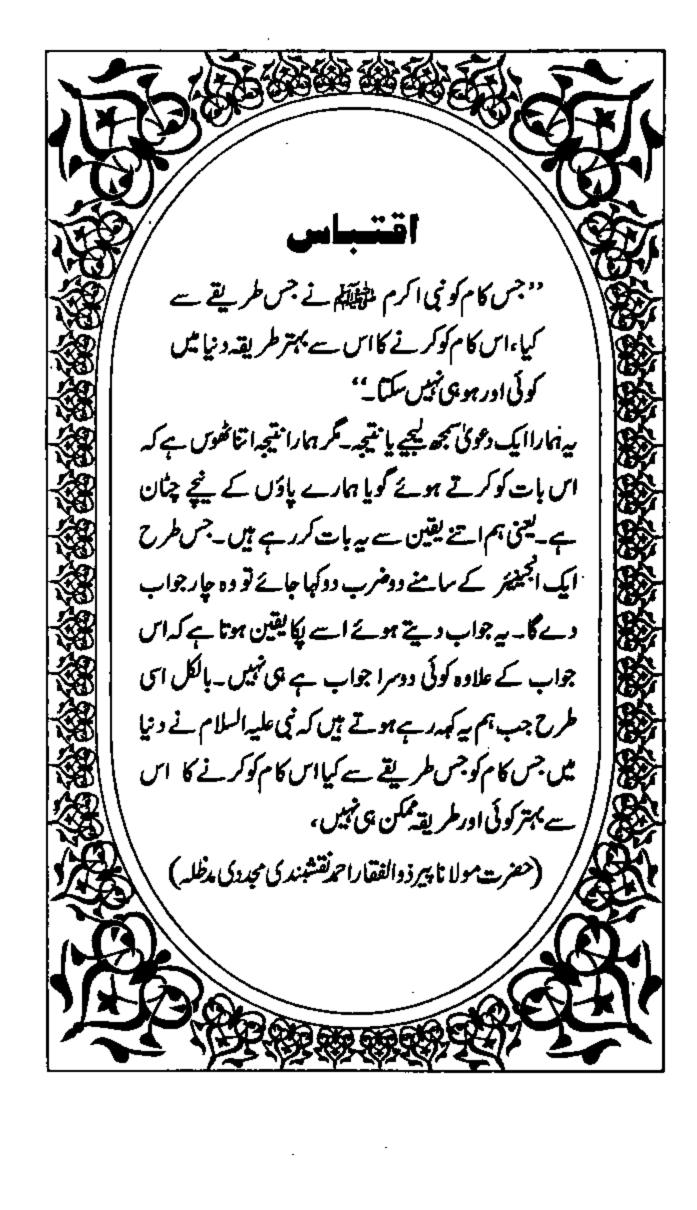
جوعاصی کو کملی میں اپنی چمپائے جو دشمن کو بھی زخم کھا کر دعا و بے اسے اور کیا نام و ہے گا زمانہ وہ محمت نہیں ہے تو پھر اور کیا ہے ائٹدرب العزت نبی علیہ السلام کی رحمتہ للعالمینی کا پچھتھوڑ اسار تکے جمیس بھی عطا فرما وے۔ ہمارے اندر بھی متبت سوچ آجائے اور ہماری زندگی بھی کامیاب بن جائے۔

سلام اس پر کہ جس نے خوں کے پیاسوں کو قبائیں دیں سلام اس پر کہ جس نے گالیاں سن کر دعائیں دیں

وَ اخِرُ دَعُوانا أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِين







# نت نبوی سال علیه م اسب بهترین طریقه زندگی

ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ وَكَفَىٰ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفَىٰ آمَّا بَعُدُ! فَاَعُوٰذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْظِنِ الرَّجِيِّمِ ٥بسُمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ٥ ﴿ وَمَا اَرْسَلُنَاكَ إِلَّا رَحُمَةً لِّلُعَالَمِينَ ٥ ﴾ .....وَ قَالَ اللَّهُ تَعَالَىٰ فِي مَقَامٍ آخَرَ ..... ﴿ لَقَدُ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ ٱسُوَةٌ حَسَنَةٌ ﴾ (الاتزاب:٣١) ﴿ مَنُ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدُ اَطَاعَ اللَّهَ ﴾ (النماء: ٨٠) وَ قَالَ اللَّهُ تَعَالَىٰ فِي مَقَامٍ آخَرَ ..... ﴿ وَ مَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَ رَسُولُكُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ٥ ﴾

سُبُحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّتِ عَمَّا يَصِفُونَ٥وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ٥ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ٥

ٱللُّهُمَّ صَلَّ عَلَىٰ سَيِّدِناَ مُحَمَّدٍ وَّعَلَىٰ آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكُ وَسَلِّمُ ثناخوانوں میں نام لکھوانے کی تمنا:

محسن انسانیت سرور کونین سید الاولین و الآخرین رحمت للعالمین حضرت محمد ﷺ کی میارک زندگی جارے لیے نمونہ ہے۔اگرانسان دنیاوآ خرت کی کامیابی حاصل کرنا جا ہے تو وہ آپ مٹھی ہے اخلاق عظیم کو اور عادات مبار کہ کو اس طرح ا پنائے کہ اس کا ظاہر و باطن نبی علیہ السلام کی تعلیمات کے مطابق بن جائے۔آپ مُثَاثِينِهِ كَ مبارك زندگ اتن كامل ہے كہوہ ہرزاد ہے ہے كمل نظر آتى ہے۔سيرت کے عنوان پراس امت کے علمانے بہت کا م کیا۔ ہر ہر پہلوکوا جا گر کرنے کی کوشش کی

در نبی علیہ السلام کے ثناخوانوں میں اپنانا م لکھوایا۔ عاجز بھی اس جماعت میں شامل نے کامتمنی بن کرآیا ہے۔ بی چاہتا ہے کہ نبی علیہ السلام کی مبارک زندگی کو اتنا کے کامتمنی بن کرآیا ہے۔ بی چاہتا ہے کہ نبی علیہ السلام کی مبارک زندگی کو اتنا کر بیان کیا جائے کہ بھٹکی ہوئی انسانیت اپنی منزل پر پہنچے اور ہدایت کے نور ۔۔۔ نناہو سکے۔

مرا قائد ہے وہ ، زندگی پیغام تھا جس کا محمد نام تھا جس کا ، محبت کام تھا جس کا وہ رفتہ رفتہ جس نے قوم کو منزل عطا کر دی کل آغاز تھا جس کا چن انجام تھا جس کا

# مشاہیرِ عالم کی نامکمل زندگیاں:

جب ہم تاریخ عالم پرنظر ڈالتے ہیں تو پتہ چاتا ہے کہ دنیا میں جتنے مشاہیر آئے ،ان میں سے کوئی فاتح بنا، کوئی سائنسدان بنا، کوئی مختلف چیز وں کاموجد بنااور انہوں نے زندگی میں بہت کام کیے۔لیکن ایک عجیب بات ان میں مشترک نظر آتی ہے کہ خودانہوں نے اپنی زبان سے یاان کے جانے کے بعد دوسر بوگوں نے یہ بات کی کہ فلال نے تو بہت اچھا کام کیا،اگراس کواور وفت مل جاتا تو وہ اس کام کواور بہتر طریقے سے کرتا۔گویا کہ اپنی زندگی کے نامکمل ہونے کی گواہی اس نے خودا پنی زبان سے دی، یالوگوں نے اس کی تقد ایق کردی، مثال کے طور پر .....

…نوٹن نے ''لاز آف نیوٹن' 'پراس قدر ٹھوس کام کیا کہ سائنس کی دنیا میں اس
 کی بہت عرصہ تک اس وجہ ہے عزت ہوتی رہی ۔ پھر بھی لوگوں نے کہا کہ اگر نیوٹن کو
 ہے اور مہلت ملتی تو وہ اس ہے بھی ایک قدم آگے بڑھ کر کام کرتا۔

 ⊙ … آئن سٹائن کا نام آپ نے سنا ہوگا۔ سائنس کی دنیا میں آج یورپ اس کی اس طرح عزت کرتا ہے جس طرح دین کے معاملہ میں ہم اپنے پیٹمبروں کی عزت کرتے ہیں۔اس نے تھیوری آف ریلیٹویٹی پیش کی جس کی بنیاد پرانسان نے الیم الیم چیزیں بنا ئمیں کہ جس کی وجہ ہے اس کا جاند پر قدم نکانا آسان ہو گیا۔ گراس کے بارے میں بھی لوگوں نے یہی لکھا کہ اس کی زندگی نے دفانہ کی ،اگروہ کچھ دیراورزندہ رہتا تو اس کے سامنے کئی راز کھلتے۔

…شیکسپیئر کی زندگی پڑھ کر دیکھیے کہ اس نے اپنی زبان میں اپنے حساب ہے ایک ہے۔ بردھ کر ایک کتاب کھی ۔ ورنہ وہ ہے بردھ کر ایک کتاب کھی ۔ ورنہ وہ اس کے بردھ کر ایک کتاب کھی ۔ ورنہ وہ اس ہے بھی بہتر انداز میں کتابیں پیش کرتا۔

گویا جتنے بھی بڑے بڑے لوگ دنیا میں گزرے ان سب کے کام ادھورے رہ گئے ،انہوں نے خودا پنے آخری وقت میں شلیم کیا یالوگوں نے ان کے بارے میں کہا کہان کواپنا کام مکمل کرنے کی مہلت نہلی ۔

# تاریخ انسانیت میں کامل وکمل زندگی:

تاریخ انسانیت میں ایک ہستی ایس ہے کہ جس نے اپنی زندگی میں ایک لاکھ چوہیں ہزار افراد کی موجودگی میں بقائی ہوش وحواس ،لوگوں سے پوچھا کہ اےلوگو! میں جس مقصد کو لے کراس دنیا میں آیا تھا، میں نے اس مقصد کو پورا کردیا، کیاتم اس پر گواہی دیتے ہو؟ ایک لاکھ چوہیں ہزار لوگوں نے بیک زبان ہوکر کہا: اے اللہ کے محبوب مائی آپ نے فرمایا، آپ نے اللہ کا پیغام پہنچا دیا ہے۔معلوم ہوا کہ تاریخ انسانیت میں ایک ہی زندگی ایس ہے کہ جس کے کامل اور کممل ہونے کی گواہی ان کی اپنی زبان سے بھی ملی اور ان کے سامنے جولوگ تھے ان کی زبان ہے بھی ملی ۔ لہٰذا اس بات کی ضرورت ہے کہ آج ہم اس''نئی روشن''کے دور میں زندگ گزار نے والےلوگول کواس شخصیت کی زندگی سے روشناس کرائیں تا کہ وہ ادسور سائز گر ار نے والے لوگول کے بیچھے بھا گئے کی بجائے اس پوری زندگی گزار نے والی ہستی کی انباع کریں۔ اس میں ان کی ذاتی فلاح بھی ہے اور اس میں پوری انسانیت کی رہنمائی بھی۔ نبی علیہ السلام کی زندگی ہمرلحاظ سے کامل اور کمل ہے۔

### ایک نےزاویے سے سیرت نبوی کامطالعہ:

اس عاجز کا خیال ہے کہ سیرت سٹٹری سنٹر میں بڑے بڑے علاء ،مفکرا ورعلامہ حضرات تشریف لاتے رہتے ہیں اور وہ بڑے بڑے علمی نکات بیان کرتے رہتے ہوں اور وہ بڑے برے میں نکات بیان کرتے رہتے ہوں گے۔ یہ عاجز تو ایک چھوٹا ساطالب علم ہے اور سیرت کے میدان میں تو ابھی اس عاجز کا شار Beginners (مبتدی لوگوں) میں ہوتا ہے۔ البتہ اپنی بساط کے مطابق یہ عاجز سیرت کے عنوان کو ایک نئے زاویے سے کھو لنے کی کوشش کرے گا۔

سائنس کا زمانہ ہے۔گھر گھر میں کمپیوٹر پہنچ رہے ہیں۔چھوٹے چھوٹے بچ بھی
کمپیوٹر پر ہیٹھ کر کام کرتے ہیں۔سکولول میں بھی ان کو کمپیوٹر پڑھایا جاتا ہے۔انٹر بیشنل
شکنالوجی کا زمانہ ہے۔آرٹی فیشیل انٹیلی جنس پر کام ہور ہاہے۔سپر کمپیوٹر کے اس دور
میں چونکہ ذہمن میں سائنسی چیزیں اکثر آتی رہتی ہیں ،اس لیےلوگوں کی سوچ ہی ایسی
ہوگئی ہے کہ ہر چیز کوسائنسی نکتہ ،نظر سے جانچنے کی کوشش کرتا ہے۔

نبی علیہ السلام کی مبارک زندگی اور آپ کی مبارک سنتیں سائنسی نکتہ ، نظر سے ہمیں کیسے معلوم ہوتی ہیں؟ ....اس سلسلہ میں عاجز کا ایک Conclusion ( بتیجہ ) ہے۔ پہلے وہ آپ کے سامنے پیش کرد ہے گا۔ پھراس کے بعداس کی سپورٹ میں چند

باتیں آپ کی خدمت میں پیش کرے گا۔امید ہے کہ آپ بیہ باتیں ہوش کے کا نول ہے جمل کے جذیبے سے سنیں گے اور اپنے دل میں جگہ دیں گے۔قرآن مجید میں

﴿ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِ تُحَرَّى لِمَنْ كَانَ لَهُ قَلْتُ ﴾

'اس قرآن میں نفیحت ہان کے لیے جن کے سینوں میں دل ہو'

اور جن کے سینوں میں سِنل ہوان کوان ہاتوں سے فائدہ نہیں ہوتا۔ طلب لے کے بیٹھیں گے تو ان شاء اللہ یہ ہاتیں آپ کے لیے Food for thought ( فکر انگیز ) ہوں گی۔ یہ باتیں سائنس کے طلباء کواور لکھے پڑھے حضرات کو فائدہ دیں گی۔ لہٰذا آپ میر بے ان الفاظ کو توجہ سے سین اور پھرا ہے گھروں میں جاکراس پر سوچیں ۔ آپ ان نکات کوئ کر حیران ہوں گے کہ ہم نے تو سنت کواس انداز سے بھی سوچیں ۔ آپ ان نکات کوئ کر حیران ہوں گے کہ ہم نے تو سنت کواس انداز سے بھی موج پھی نہیں تھا۔ اس عاجز کے حیاب سے تو یہ ایساعنوان ہے کہ جس پر بیسیوں طلبا وطالبات پی آئے ڈی اسلا مک سٹڈیز کر سکتے ہیں۔

### سدت نبوی کے دو پہلو:

نی علیہ السلام کی مبارک سنتوں کے بار ہے میں دو Phase (در ہے) ہیں۔
(1) ..... پہلا فیزتو ہے کہ جوانسان نبی علیہ السلام کی مبارک سنتوں پڑمل کر ہے گا،
اللہ رب العزت کی طرف ہے اس کی زندگی میں برگتیں ہوں گی۔ وہ دنیا میں بھی
کامیاب ہوگا اور آخرت میں بھی کامیا بی اس کے قدم چو ہے گی۔اللہ تعالیٰ نے ارشاد
فرمایا،

مَن يُطِعِ اللَّهُ وَرَسُولُهُ فَقَدُ فَازَ فَوزٌ اعْظِيْماً '' جو مخص الله تعالى اوراس كے رسول كى اطاعت كرے گاتختين وہ بہت بڑى كامياني يانے ولا بن جائے گا'' نی علیہ السلام کے مبارک طریقوں پر عمل کرنا اور آپ کے اخلاق و عادات کو اپنانا، اس کو سنت کی پیروی کہتے ہیں۔ یہ پیروی عبادات میں ہو، معاشرت میں ہو، معیشت میں ہو، انفرادی سطح پر ہو یا اجتماعی سطح پر ، اس میں ہماری کا میابی ہے۔ ایک انداز تو یہ ہے کہ سنت پر عمل کریں گے تو و نیا میں بھی سکون ملے گا اور آخرت میں بھی کا میابی ملے گی، اللہ تعالیٰ کی پشت پناہی ملے گی، روز محشر وہ اللہ رب العزت کے مقبول بندوں میں شار ہوگا اور اللہ تعالیٰ اس کو جنت عطافر مادیں گے۔ یہ ایک فیز ہے مقبول بندوں میں شار ہوگا اور اللہ تعالیٰ اس کو جنت عطافر مادیں گے۔ یہ ایک فیز ہے مقبول بندوں میں شار ہوگا اور اللہ تعالیٰ اس کو جنت عطافر مادیں گے۔ یہ ایک فیز ہے مقبول بندوں میں شار ہوگا اور اللہ تعالیٰ اس کو جنت عطافر مادیں گے۔ یہ ایک فیز ہے مقبول بندوں میں ہیں ، بلکہ اور یہ سے گفتگو سنتے رہتے ہیں۔ آج ہماری گفتگو کا عنوان یہ با تیں نہیں ہیں ، بلکہ آج ایک اور گوشے پر روشنی ڈالنے کی ضرورت ہے۔ سنت کوایک مختلف زاویے سے دیکھنے کی ضرورت ہے۔

(2).....آج کی گفتگو کاعنوان اس کا دوسرا فیز ہے۔ وہ دوسرا فیزیہ ہے کہ ''جس کام کو نبی اگرم مٹھ لیکھ نے جس طریقے سے کیا ، اس کام کو کرنے کا اس سے بہتر طریقہ دنیا میں کوئی اور ہو ہی نہیں سکتا۔''

سے ہماراایک دعویٰ ہمجھ لیجے یا نتیجہ۔ مگر ہمارانتیجہ اتناظوں ہے کہ اس بات کوکرتے ہوئے گویا ہمارے پاؤں کے نیچ چٹان ہے۔ یعنی ہم اسنے یقین سے یہ بات کر رہے ہیں۔ جس طرح ایک انجینیئر کے سامنے دوضرب دوکہا جائے تو وہ چار جواب دی گا۔ یہ جواب دیتے ہوئے اسے پکا یقین ہوتا ہے کہ اس جواب کے علاوہ کوئی دوسرا جواب ہے ہواب دیتے ہوئے اسے پکا یقین ہوتا ہے کہ اس جواب کے علاوہ کوئی دوسرا جواب ہے ہی نہیں۔ بالکل ای طرح جب ہم یہ کہدرہے ہوتے ہیں کہ نی علیہ السلام نے دنیا میں جس کام کو جس طریقے سے کیااس کام کوکرنے کا اس سے بہترکوئی اور طریقہ ممکن ہی نہیں ، تو اس بات کوکرتے ہوئے ہمارہ یاؤں کے نیچ بھی چٹان اور طریقہ ممکن ہی نہیں ، تو اس بات کوکرتے ہوئے ہمارہ یاؤں کے نیچ بھی چٹان اور طریقہ ممکن ہی نہیں ، تو اس بات کوکرتے ہوئے ہمارہ یہ یاؤں کے چہمی چٹان

میں آپ کے سامنے پیش کروں گا۔

# سونے کی جارمکنہ صور تیں:

انسان روزانہ سوتا ہے۔ دیکھنا یہ ہے کہ سونے کی کون می پوزیشن طبی طور پرزیادہ بہتر ہے؟ دیکھیں! سونے کے مختلف اندز ہوسکتے ہیں۔اس کی چارمکنہ صورتیں ہیں:

- ⊙ .....ایک تو به که انسان چپت سوئے ۔ یعنی اس کی کمر بستر پر ہواور اس کا چپرہ آسان کی طرف ہو۔
- ⊙ .....دوسری صورت میہ ہے کہ پہنٹ سوئے۔ لیعنی چہرہ نیچے بستر کی طرف ہواور کمر
   آسان کی طرف ہو۔
  - ⊙.....تیسری صورت بہے کہ بائیس طرف کروٹ لے کرسوئے۔
  - ⊙ ..... چوتھی صورت ہے ہے کہ دائیں طرف کروٹ لے کرسوئے۔

#### (۱)....سيدهاسونا:

پہلی صورت ہے ہے کہ انسان چت سوئے۔ طبی طور پر بیصورت انسان کے لیے نقصان دہ ہے۔ ۔۔۔۔۔۔وہ کیے ؟۔۔۔۔۔اگر آپ انسان کی ریڑھ کی ہڈی کی بناوٹ کے بارے میں سوچیں تو آپ کو بعۃ چلے گا کہ بیہ بالکل سیدھی نہیں ہے، بلکہ خم دار ہے۔ اس کی وجہ بیہ ہے کہ معدے کے اندروزن ہوتا ہے اوراس وزن نے بالآخر کسی جگہ اپنا زور ڈالنا ہوتا ہے اوراس مقصد کے لیے کسی ہڈی نے اس کو برداشت کرتا تھا۔ اس لیے اللہ تعالیٰ نے سپائنل کارڈ (ریڑھ کی ہڈی) بنادی اور معدے کا وزن اس کے اوپر اگر گئا والا گیا۔ اور اس کو سنجا لئے کے لیے اس ریڑھ کی ہڈی کو تھوڑ اساخم دار بنا یا گیا۔ چنا نچہ یہ چیچے کندھوں سے سیدھی آتی ہے اور جہاں ہمارا پیٹ ہے وہاں تھوڑ اسا تھا تھوڑ اسا تھ

ہیں۔ تو جب آ دمی سیدھا سویا ہوتا ہے تو اس کی ریڑھ کی ہڈی کا خم او پر کی طرف ہوتا ہے اور اس خم کے او پراس کے بہیٹ کا وزن ہوتا ہے۔ اور ماشاء اللہ کسی کا دس کلوتو کسی کا بچاس کلو۔ اب استے وزن نے اس کے او پراٹر کرتا ہوتا ہے۔ سائنس کا بیاصول ہے کہ جب بھی کسی خم وار چیز پر کوئی وزن ڈالا جائے گا تو وہ سیدھا ہونے کی کوشش کرے گی۔ وہ وزن سیدھا اس کے دونوں سروں پر نتقل ہوگا اور اس خم کوسیدھا کرنے کی کوشش کرے گا۔ جب ریڑھ کی ہڈی پر پچاس کلوکا وزن ڈالا جائے گا تو وہ حقیقت کی کوشش کرے گا۔ جب ریڑھ کی ہڈی پر پچاس کلوکا وزن ڈالا جائے گا تو وہ حقیقت میں اس کے او پر والے اور نیچے والے سرے پر اپنا زور ڈالے گا۔ ایسی صورت میں متبحہ بیڈکاتا ہے کہ

﴾ .....گردن کے مہرے درمیان سے دباؤ میں آجاتے ہیں اور گردن کے پیچھے انجا کنا کا در دشووع ہوجا تا ہے ، یا

﴾ .....کمر کے نچلے مہرے درمیان میں سے دباؤ میں آجاتے ہیں اورلو بیک پین (کمرکے نچلے حصے میں درد) ہوجاتی ہے۔

یہ کمر کے نچلے جصے میں درد کیا چیز ہے؟ ریڑھ کی ہڈی کے آخر میں جو چندمہر ہے ہیں وہ آپس میں دب جاتے ہیں اور ان کے درمیان جو گوشت اور نروز ہیں وہ دب جاتی ہیں، جس کی وجہ سے انسان کو در دہوتا ہے۔ یہ کیوں دب جاتی ہیں؟ اب بالآخر ڈاکٹروں کو یہ بات ماننا پڑے گی کہ جولوگ سیدھا سوتے ہیں ان کوگر دن کے پیچھے ذاکٹروں کو یہ بات ماننا پڑے گی کہ جولوگ سیدھا سوتے ہیں ان کوگر دن کے پیچھے انجا منا کا در دبھی ہوتا ہے یا پھرلو بیک پین زیادہ ہوجاتی ہے۔ اب وہ بھی وجہ بتاتے ہیں کہ پیٹ کا در دبھی ہوتا ہے یا پھرلو بیک پین زیادہ ہوجاتی ہے۔ اب وہ ان دونوں سروں ہیں کہ پیٹ کو دونوں جو ساری راہت ریڑھ کی ہٹری پر پڑار ہتا ہے وہ ان دونوں سروں پر ہنتقل ہوکر آ دمی کو دونوں جگہ پر در دکرتا ہے۔ لہذا معلوم ہوا کہ اس طرح سونا انسان کے لیے بہتر نہیں۔

E ( JESSEN 1974 MEGGINE BEER (95) BEER (195) DE BEER (195)

#### (۲)....الثاسونا:

سونے کا دوسراطریقہ یہ ہوسکتا ہے کہ آ دمی پٹ سوئے۔اس کواوندھاسونا کہتے ہیں۔کہ چہرہ زمین کی طرف ہواور کمراو پر کی طرف ہو۔سونے کا بیطریقہ بھی طبی طور پرانسان کے لیےنقصان دہ ہے۔

کیونکہ انسان کے معدے کے ساتھ آنتیں ہوتی ہیں حیاں ہے اس کی غذا گزر رہی ہوتی ہے۔اور وہاں اس کوجسم ہے مختلف وٹامنز اور کیمیکلز ملتے ہیں۔وہ آنتین دائیں اور بائیں سائیڈیر ہوتی ہیں۔ان آنتوں میں خوراک بھری ہوتی ہے اور ہر آنت ایک دوسرے کے ساتھ چربی کی ایک باریک سی جھلی کے ساتھ جڑی ہوتی ہے۔....اگر کسی بکری کوذیح کیا جائے اور آپ اس کی آنتوں کودیکھیں تو آپ کواس کی آنتیں ایک دوسرے کے ساتھ باریک سی جھلی کے ساتھ جڑی ہوئی نظر آئیں گی ..... جب انسان الٹاسوتا ہے، یعنی پیٹ کے بل ، تو اس کی آئنتیں او پر ہوتی ہیں اور وہ دونوں طرف معلق بوزیشن میں لٹک رہی ہوتی ہیں۔ان کے اندر وز ن بھی ہوتا ہے۔اور ہم نے ماء شااللہ نمر غا اور چرغہ کھایا ہوتا ہے۔ان میں اچھا خاصا وزن بھی ہوتا ہے۔اب الی صورت میں بیامکان موجود ہوتا ہے کداگر کسی جگہ سے وہ چر بی کمزور ہے تو وہ آنت اوپر ہے نیچے گرے گی اور اس میں بل آ جائے گا۔ گرہ لگ جائے گی۔ صدیث پاک میں بھی فرمایا گیا ہے کہ الٹا مت سویا کرو،اس طرح الٹا سونے ہے ممکن ہے کہ آنتوں میں کوئی گانٹھ پڑجائے۔جب میگرہ لگ جاتی ہے تو پھر ہیتالوں میں پہنچ کرلمیا آپریشن کروا ناپڑتا ہے۔آج کل ڈاکٹروں نے اس بات کو بھی کنفرم کر دیا ہے کہ کئی لوگ ایسے آتے ہیں کہ جن کی آنتوں میں الٹاسونے کی وجہ سے گرہ لگ جاتی ہے اوران کا آپریشن کرنا پڑجا تا ہے۔اگرسو بندوں میں سے کسی ایک کا بھی پیمسئلہ بن جائے تو کہا جائے گا کہ سونے کا پیطریقدانسانی صحت ہے منافی ہے۔

# (۳)..... بائيس کروٹ پرسونا:

سونے کی تیسری مکنے صورت ہے ہے کہ آ دمی اپنی بائیں کروٹ پرسوئے۔ جب
آ دمی بائیں کروٹ پرسوتا ہے تو اس وات اس کا دل نیچے ہوتا ہے اور باقی ساراسٹم
او پر ہوتا ہے ۔۔۔۔۔ جیسے دو منزلہ عمارت ہے اور پہپ نیچے لگا ہوا ہے۔ جب سپلائی
کرنے کاسٹم او پر ہوتا ہے تو پہپ انڈر پریشر ( دباؤیس ) آ جاتا ہے۔ اگر نیچ
سپلائی کرنا ہوتو اس کا کوئی ہیڈ نہیں ہوتا۔ اس کے پاس جتنا پانی ہوتا ہے وہ سارا خود
بخو دینچے چلا جاتا ہے۔ جب اسے کشش تھل کے مخالف پہپ کرنا ہوتا ہے تو اس کے
اور اس کا دل اس کے اس طرح دل انڈر پریشر ( دباؤیس ) کام کر ہا ہوتا ہے۔ سونے
کے بیچے ہوتا ہے۔ اس طرح دل انڈر پریشر ( دباؤیس ) کام کر ہا ہوتا ہے۔ سونے
کے اس طریقے میں دوخرابیاں ہیں۔

(۱) ۔۔۔۔ چونکہ انسان کا دل دباؤیں ہوتا ہے اس لیے اس کی نیند بہت گہری ہوتی ہے۔ اتنی گہری کہ آپ اس کوالارم لگا کر دیں تو وہ یکی اپلیں نہیں سے گا۔ آپ اس کو نماز کے لیے جگا کمیں گے تو وہ بس اول کرے گا اور پھر سوجائے گا۔ بعد میں آپ اس سے کہیں کہ میں نے آپ کو جگایا تھا۔ وہ کہے گا کہ مجھے تو نہیں بتا کہ جگایا بھی تھا یا نہیں ۔ کئی مرتبہ اگر جاگ بھی جا تا ہے تو اس کا دماغ تھوڑی دیر کے لیے پوری طرح کا منہیں کرر ہا ہوتا۔ چنانچہ وہ کہتا ہے کہ میں ذرا پانچ منٹ کے لیے بیٹھوں گا۔ فریش کا منہیں کرر ہا ہوتا۔ چنانچہ وہ کہتا ہے کہ میں ذرا پانچ منٹ کے لیے بیٹھوں گا۔ فریش کا منہیں کرد ہا ہوتا۔ چنانچہ وہ کہتا ہے کہ میں ذرا پانچ منٹ کے لیے بیٹھوں گا۔ فریش کا تازہ دم) ہوجاؤں گا، پھر ہوش میں آگر بات کروں گا۔

(۲) ۔۔۔۔۔ایسے لوگ عام طور پر ڈراؤنے خواب و کیھتے ہیں۔ چونکہ دل دباؤ میں ہوتا ہاں لیے خواب میں دیکھتے ہیں کہ بھینس پیچھے بھاگی چلی آرہی ہے، ایک سانپ ہے جسے میں دیکھ رہا ہوں ،فلال نے مجھے مار ڈالا۔اور پھروہ ہڑ بڑا کراٹھتے ہیں اور کہتے ہیں کہ مجھے بڑا ڈراؤنا خواب آیا ہے۔ برے خواب دیکھنے والے جتنے بھی بندے ہوں گے، آپ ان سے پوچھے کہ آپ کی سونے کی عادت کیا ہے تو وہ کہیں گے کہ ہم بائیں طرف کروٹ لے کرسوتے ہیں۔ آج میڈیکلی بیٹا بت ہو چکا ہے کہ بائیں طرف سونے کی صورت میں ول وباؤیس آجانے کی وجہ سے نیند بھی گہری آتی ہے اور برے اور ڈراؤنے خواب بھی زیادہ آتے ہیں۔ لہذا ثابت ہوا کہ بائیں طرف سونا انسان کے لیے فائدہ مندنہیں۔

### (۴).....دائين کروٹ سونا:

سونے کی چوتی مکنہ صورت ہیں ہے کہ انسان اپنی واکیں کروٹ کے کر
سوئے۔اس صورت میں اس کا پوراسٹم نیجے ہوتا ہے۔ اور دل او پر ہوتا ہے۔ گویا
اب اس صورت میں بہب او پر ہوتا ہے اور پہپ کو نیجے سپلائی کرنے کے لیے کیس
پریشر کی ضرورت نہیں ہوتی۔ یہ بھی مزے کی بات ہے کہ جب آ دمی جاگ رہا ہوتواس
وقت اس کی نبض کی رفآر ، جس کا تعلق براہ راست دل ہے ہوتا ہے ، ستر ہے گہمتر
ہوتی ہے ، لیکن سونے کی حالت میں اس کی نبض کی رفآر بہت کم ہو جاتی ہے۔ گویا
گاڑی کی سپیڈ کم ہو جاتی ہے۔ الی صورت میں اس پرلوڈ ڈالا جائے تو وہ بند ہی ہوئی
ہوتی ہے۔ اگر بائیں کروٹ سوئے گاتو یہی حال ہوگا کہ گاڑی کی سپیڈ کم تر ہوگئی اور
ہوتی ہے۔ اگر بائیں کروٹ سوئے گاتو یہی حال ہوگا کہ گاڑی کی سپیڈ کم تر ہوگئی اور
ہوتی ہے۔ اگر بائیں کروٹ سوئے گاتو یہی حال ہوگا کہ گاڑی کی سپیڈ کم تر ہوگئی اور
ہوتی ہے۔ اگر بائیں کروٹ سوئے گاتو ہی حال ہوگا کہ گاڑی کی سپیڈ کم تر ہوگئی اور
دائیں کروٹ پر سوئیں گے تو ایسے میں انسان کی جیسے ہی نبض کی رفتار کم ہوئی اس
حساب سے اس پرلوڈ بھی کم ہوگیا۔ یوں مجھے کہ نیند کی حالت میں انسان کا ول تقریبہ
تف لوڈ کنڈیشن میں جل رہا ہوتا ہے۔ اور پور ہے ہم کوخون کی مطلوبہ مقدار پہنچار ہا
ہوتا ہے۔

سونے کی سب سے بہترصورت: اس طرح سونے سے تین فائدے حاصل ہوتے ہیں۔ (۱) ۔۔ ایسے بندے کی نیند بہت گہری نہیں ہوتی۔ ذراسا کھ کا ہوا، یا کوئی بات ہوئی یا الارم بجاتو وہ فوراً اٹھ جائے گا۔

(۲)....ایسے بندے کوؤراؤنے خواب نہیں آتے۔

(۳) ۔ ایسی پوزیشن میں بندہ تھوڑی دیر کے لیے سوتا ہے لیکن بیا ہے آپ کو یول تازہ دم محسوس کرتا ہے جیسے وہ بہت دیر تک سوکرا ٹھا ہے۔اسے محسوس ہوتا ہے کہ دس منٹ کی بجائے دو گھنٹے آ رام کیا ہے۔

لہذا آج میڈیکلی یہ بات ثابت ہو چکی ہے کہ انسان کے لیے سونے کا بہترین طریقہ یہی ہے کہ وہ اپنی وائیس کروٹ پر سوئے ، اور یہی میرے محبوب ملی ایک میں ہے۔ آج سائنس اپنی تحقیق کے بعد اس چیز کو ثابت کرچکی ہے۔ معلوم موا کہ سائنس بھٹکتی رہتی ہے۔ اور جب بھی منزل ملتی ہے تو وہ وہ ہی جگہ ہوتی ہے جہاں میرے محبوب ملی آتی ہے تہ وہ وہ ہی جگہ ہوتی ہے جہاں میرے محبوب ملی آتی ہے تہ موسے ہیں بات سمجھ میں آتی ہے کہ جس کام کو نبی علیہ السلام نے جس طریقے سے کیا ، اس کام کو کرنے کا اس سے کوئی اور بہتر طریقہ و نیا میں ممکن ہی نہیں۔

### س باته اورجد بدسائنسی تحقیقات:

سیچے ہال پہلے کی بات ہے کہ یورپ کے لوگ مسلمانوں کا نداق اڑایا کرتے سے کہتم چھٹیاں گھروں میں ہی گزار دیتے ہو، ساحل سمندر پہ کیوں نہیں جاتے ؟ ہم پوچتے تھے، کیوں جا کیں؟ کہتے تھے: سورج کی دھوپ میں غسل کرنے کے لیے، ن باتھ لینے کے لیے۔ کونکہ اس سے مسام کھل جاتے ہیں اور اس کے بشار فائد بہیں۔ ہم انہیں جواب دیتے تھے کہ ہم میکام نہیں کرتے۔وہ جواب میں کہتے کہ آپ تو دقیانوں شم کے لوگ ہوا ورجد یدسائنس سے فائدہ ہی نہیں اٹھاتے۔

کچھ عرصے کے بعد یوری دنیا میں شخفیق کی گئی کہ مختلف بیاریاں کہاں کہاں پائی جاتی ہیں۔اس تحقیق سے پیۃ چلا کہ بوری دنیا میں جلد کے کینسر کی سب سے زیادہ شرح بورپ میں ہے۔اب ان کو پریشانی لاحق ہوئی کہ یہاں جلد کے کینسر کی شرح اتنی کیوں ہے؟ ..... ہمارے ہاں تو جلد کا اسپیشلٹ ڈاکٹر بھی بڑی مشکل ہے ملتا ہے۔ پورے شہریُں شاید کوئی ایک ایسا ڈاکٹر ہوتا ہو، ورنہ تو ہوتا ہی کوئی نہیں۔اور و ہاں تو ہر دوسرا چوتھا ڈاکٹر جلد کا اسپیشلٹ ہے۔....انہوں نے کہا کہ ہمارے ہاں اس کی اتنی زیادہ شرح کیوں ہے؟ چنانچہ جب اس پر خفیق کی گئی تو یہ بات سامنے آئی کہ ہمارے جسم پر سورج کی جو دھوپ ڈائر یکٹ پڑتی ہے ، اس میں الٹرا وائلٹ ریز (بالائے بنفثی شعائی) ہوتی ہیں اور وہ شعا کمیں جب جلد کے اوپر پڑتی ہیں تو جلد ان کو جذب کر لیتی ہے۔اس کی وجہ سے جلد کے ٹشؤز کے اندر کینسر کی صورت پیدا ہو جاتی ہے۔جب یتحقیق سامنے آئی تو یورپ میں کہرام مچے گیا۔ چنانچہ پچھے کمپنیوں نے کہا کہ ہم اس کے لیےایسی چھتریاں بنائیس کے جوان مفرصحت شعاعوں ہےانسان کو بچاسکیں گی ۔لہذااب ڈاکٹر کہتے ہیں کہ جس بندے نے من باتھ لینا ہووہ چھتری استعال کرے ..... ذرا بیتو بتاؤ کہتم کس کس کے ہاتھ میں چھتری بکڑاؤ گے .....اس تحقیق کے بعدان لوگوں کا ساحل پر جانا مہنگا بھی ہو گیا اورمشکل بھی ہو گیا کہ اپنی حفاظت بھی کرنی پڑتی ہے۔

اب الله رب العزت نے ہمیں پوائٹ دے دیا۔ ہم ان سے بات کرتے ہیں کہ جب ہم کہتے تھے کہ ہم ساحل پرین باتھ لینے نہیں جاتے تو تم لوگ مذاق کرتے سے سے ، اب جب سائنس نے بتایا کہ اس سے تمہیں بیاریاں لاحق ہوتی ہیں تو اپنی چھٹیاں وہاں گزار نے کی بجائے کہیں اور جانے کی باتیں سوچتے ہو۔ اس کو کہتے ہیں: «کھوتی مراز کے بوہر بیٹھ''

یعن گدھا گھوم بھرکر ہالآخر ہو ہڑ کے درخت کے بینچ ہی آتا ہے۔ بیسائنس دان بیچارے اس کھوتی کی مانند ہوتے ہیں اور ادھرادھر ہاتھ پاؤں مارتے رہتے ہیں، ہالآخر اسی درخت کے بینچ پہنچتے ہیں جس درخت پر میرے محبوب ماڑی آنے کی سنتوں کا سامیہ ہے۔

نى عليه السلام في فرمايا:

''جو پانی سورج کی دھوپ کی وجہ سے گرم ہواس سے تم وضومت کرو۔' انسان جیران ہوتا ہے کہ آگ پر پانی گرم کیا جائے تو وضو کرنا جائز ہے، نبی علیہ السلام نے گرم پانی سے وضو کرنے سے منع نہیں فر مایا، لیکن بیفر مایا کہ جو پانی دھوپ کی وجہ سے گرم ہو، تم اس سے وضومت کرو۔انسانی عقل اس کی تہد تک نہیں پہنچ رہی ہوتی ہے،اس پانی کے اندرالٹرا وائلٹ شعاعوں کا اثر ہوتا ہے۔لہذا جب اسے بندہ اپ جسم پر استعمال کرتا ہے تو اس پر بھی ان شعاعوں کا اثر پڑتا ہے۔سوچے کہ سائنس تو اب یہ بات بتارہی ہے جبکہ میرے آقا میں پہنچ نے آج سے چودہ سوسال پہلے ہی سے سمجھا دیا کہ یہ چیزیں تمہارے لیے نقصان دہ ہیں بتم ان کومت استعمال کرنا۔

# موٹا یا کم کرنے میں سائنسی ترجیحات:

نیوبارک میں ہمارے ایک دوست ہارٹ اسپشلسٹ ہیں۔ ایک مرتبہ ہم ان
کے آفس میں بیٹھے تھے۔ وہاں پر بچھ لٹر پچر پڑا ہوا تھا۔ اس لٹر پچر پر لکھا ہوا تھا کہ بیہ
میڈیکل ایسوی ایشن آف امریکہ کی طرف سے شائع ہوا ہے۔ یعنی اس میں بالکل
کی اور ماڈرن ریسرچ پرمنی با تیں لکھی ہوئی تھیں۔ میں نے اسے پڑھنا شروع کر
دیا۔ ۔۔۔ میری عادت ہے کہ جو چیز ملے اسے ضرور پڑھتا ہوں۔ اس کا عنوان بڑا
دیا۔ ۔۔۔ میری عادت ہے کہ جو چیز ملے اسے ضرور پڑھتا ہوں۔ اس کا عنوان بڑا

ور آپ این وزن کوکنٹرول سیجیے، آسانی کے ساتھ''.

#### المَاعِلَةِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ المُلاّلِي المُلْمُلِي اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ ا

اس کے اندر عجیب ریسر ج لکھی ہوئی تھی۔ بیلکھا ہوا تھا کہ:

..... جو بنده اپنے اضافی وزن کو کنٹر ول کرنا جا ہے اور

.....وه ورزش بھی نہیں کرسکتا،

.....وه سلمنگ سنشر مین بھی نہیں جا سکتا،

.....وه زیاده کھانے پر قابونہیں پاسکتا، اور

.....وه اليي گوليان بھي استعال نہيں کرسکتا ،تو

....اس کے لیے ایک آسان طریقہ ہے کہ وہ آ دمی اپنے کھانے کوخوب چہا چہا کرکھایا کرے۔

جب میں نے یہ بات پڑھی کہ وہ اپنے کھانے کوخوب چبا چبا کر کھایا کرے تو میں نے کہا کہ بیاتو میرے محبوب مٹائیلیم کی سنت ہے۔ حدیث پاک میں آیا ہے کہ '' نبی علیہ السلام جب لقمہ منہ میں لیتے تنصفو اس کوخوب اچھی طرح چبا کراندر نگلتے تنصے۔ پھراس کے بعد دوسرالقمہ کھایا کرتے تنص''۔

### پیٹ بھرنے کا فیصلہ د ماغ کرتا ہے:

پھراس کے بعد انہوں نے اس کی سائنسی وجہ بھی گھی کہ جب انسان کھانا کھاتا ہے تو اس کو پتہ چل جاتا ہے کہ میرا پیٹ بھر گیا ہے۔ بیہ فیصلہ انسان کا پیٹ نہیں کرتا ، بلکہ یہ فیصلہ اس کا د ماغ کرتا ہے۔

د ماغ یہ فیصلہ کیسے کرتا ہے؟ د ماغ کے پاس دوطرف سے سینز آتے ہیں۔ ﴿ .....ایک سینل مند کی طرف سے آتا ہے۔ منہ ایک کرشنگ یونٹ ہے جس میں دانت غذا کو چباتے ہیں۔ جتنی مرتبہ بھی منہ چلتا ہے اس کو گنا جاتا ہے، پھروہ گنتی د ماغ کو پہنچتی ہے کہ اتنی مرتبہ چل چکا ہے۔ د ماغ کو شکنل یہ ملتا ہے کہ خوب سیر ہوکر کھالیا

اسدوسرا سکنل پیٹ کی طرف سے دماغ کوملتا ہے۔ وہ کیے؟ وہ اس طرح کہ ہارے پیٹ کی اوپر والی سطح پر پچھٹرانس ڈیوسرز ہیں، جوسگنلز کو ایک حالت ہے دوسری حالت میں تبدیل کر دیتے ہیں۔ چنانچہ جب ہمارے پیٹ میں خوراک جاتی ہے تو پیٹ بھیلتا ہے۔ جب پیٹ بھیلتا ہے تو وہ ٹرانس ڈیوسراس کے پھیلاؤ کا تگنل د ماغ کو پہنچا تا ہے۔ بیدلا نگ ا بیٹنگ ٹرانس ڈیوسر کہلا تا ہے۔ بینی بیفوراً سکنل نہیں دیتا، بلکہاس کوسکنل پراسس کرنا پڑتا ہےاوراس پراسس کرنے میں اسے تقریباً آٹھ منٹ لگتے ہیں۔مثال کےطور پراگر آپ ابھی کوئی چیز منہ میں ڈالیں اور وہ بھی ایک دم ہی ڈالدیں تو آپ کو جو پیمحسوں ہوگا کہ پیٹ کتنا بھرا ہوا ہے ، وہ آٹھ منٹ بعد ہی د ماغ کو سیح سگنل پہنچے گا،جس ہے آپ کو پہتہ چلے گا کہ پبیٹ کتنا کبرا ہوا ہے۔ہم کیا کرتے ہیں؟ ماشاءاللہ، جب دسترخوان پر بیٹھتے ہیں تو سوچ لیتے ہیں کہ بس یا ہم نہیں یا پہبیں ، یعنی خوب کھاتے ہیں اور تھوڑی دریہ میں جو کچھ دستر خوان پر ہوتا ہے وہ پیٹ میں چلاجا تا ہے۔ہم کوشش کرتے ہیں کہ ہم جتناا ندر ڈال سکتے ہیں ڈال لیں۔شروع کے دو چارمنٹوں میں ہم ضرورت سے زیادہ کھار ہے ہوتے ہیں اور د ماغ کہدر ہا ہوتا ہے کہ ابھی گنجائش ہے۔حالانکہ گنجائش ختم ہو چکی ہوتی ہے۔اور ہم کھاتے چلے جا رہے ہوتے ہیں۔ پھر جب سات آٹھ منٹ گزرتے ہیں تو ہم پھر کہتے ہیں کہ آج بڑا کھالیا۔ بیہم کیوں کہتے ہیں کہ آج ہم نے بڑا کھالیا؟ اس لیے کہ اب صحیح سکنل د ماغ کوچنچ ر ہاہوتا ہے۔

اس کی ایک آسان می مثال عرض کر دوں ، آپ نے کھانا کھانا شروع کیا۔ بھلے آپ نے کھانا کھانا شروع کیا۔ بھلے آپ نے پانچ سات لقمے ہی لیے ہیں۔اس دوران کوئی فون آ جائے اور آپ ٹیلی فون سننے چلے جا کیں تو آپ پانچ دس منٹ ٹیلی فون سننے کے بعد آتے ہیں تو آپ محسوس کرتے ہیں کہ اب بھوک ختم ہوگئ ہے۔ ہم اسے کہتے ہیں: جی بھوک مرگئ۔وہ

بھوک مری نہیں ہوتی بلکہ وہ جو پانچ دس منٹ کا درمیان میں وقفہ ماتا ہے اس میں سکنل پراسس ہوکر د ماغ میں پہنچ چکا ہوتا ہے۔ اور سچے انفار میشن آ چکی ہوتی ہے کہ اب پیٹ بھر چکا ہے۔ اگر ہم آ ہتہ آ ہتہ آ رام آ رام سے چبا چبا کر کھانا شروع کریں تو ہم مناسب سا کھانا کھا ئیں گے اور ہمارے د ماغ میں سچے سکنل پہنچے گا اور ہمیں محسوس ہو جائے گا کہ ہم نے پیٹ بھر کر کھا لیا ہے۔ اس طرح ہم زیادہ کھانے کی عادت سے نگ جائیں گے اور درمیان سے موٹے نہیں ہوں گے۔ زیادہ کھانے کی وجہ سے ہی جسم جائیں گے اور درمیان سے موٹے نہیں ہوں گے۔ زیادہ کھانے کی وجہ سے ہی جسم میں چر بی بڑھتی ہے۔ دراصل جتنی ہمیں ضرورت ہوتی ہے ہم اپنی جلد بازی کی وجہ سے اس سے یا نچے یا دس گنازیادہ کھانے کے عادی ہوتے ہیں۔

ہمارا منہ ایک کرشگ یونٹ کی طرح ہے۔ اس میں دانت لقے کو کرش کرتے ہیں۔ ایک لقے کو جب بار بار چبا ئیں گے تو د ماغ نے تو د کھنا ہے کہ کتنا وقت چبا نے کاعمل ہوا ہے۔ بھلے آپ ایک ہی لقے کو چباتے ہیں یا دس لقموں کو ۔ تو معلوم ہوا کہ اگر لقمہ منہ میں ڈالیس اور اچھی طرح چبا ئیں اور اس کے بعد نگلیں ، پھر دوسر القمہ منہ میں ڈالیس اور اتنا ہی ٹائم دیں۔ اس طرح آ ہتہ آ ہتہ کھاتے ہوئے ہم میں ڈالیس اور چبا ئیں اور اتنا ہی ٹائم دیں۔ اس طرح آ ہتہ آ ہتہ کھاتے ہوئے ہم میں منٹ میں اتنا کھانا کھالیں کہ ہمارا د ماغ مکمل فیصلہ کر سکے کہ ہم نے ضرورت کے مطابق کھانی ہوجائے مطابق کھانیا ہے۔ لہذا آپ ایک چپاتی کھائیں گو تو آپ کی طبیعت مطمئن ہوجائے گیا۔ آپ محسوس کریں گے کہ میر اپیٹ بھر چکا ہے اور میری بھوک مٹ چکی ہے۔ آپ گوگولیاں کھانے اور ڈائنگ کرنے کی ضرورت نہیں ہوگی۔

# معدے کوڈبل ڈیوٹی نہ دیں:

ایک اور بات یا در تھیں کہ جب ہم نوالا منہ میں چباتے ہیں اور اندرڈ التے ہیں تو ہمارے معدے کا کام خوراک کوہضم کرنا ہوتا ہے۔اگر ہم لقمے کو پوری طرح چبا کر معد ہے میں نہیں بھیجیں گے تو معدہ ہو جھ تلے آجا تا ہے۔ اس صورت میں اسے کرشنگ بھی کرنی پڑتی ہے اور اس کے ساتھ ساتھ خوراک بہضم بھی کرنی پڑتی ہے۔ گویا اس طرح بهم معد ہے کو ڈیل ڈیوٹی دے دیتے ہیں۔ جس کا نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ معدہ ہوجی ہونے کی وجہ نے خوراک بھمل طور پر کرش نہیں کریا تا، جس سے چے وٹا منز نہیں بنتے اور معدہ ہر چیز کو چربی میں تبدیل کرتا چلا جاتا ہے۔ ایسا بندہ عام طور پر در میان سے موٹا ہوجا تا ہے۔ ایسا بندہ عام طور پر در میان سے موٹا ہوجا تا ہے۔ ایسا بندہ عام طور پر در میان سے موٹا موجا تا ہے۔ اور پھر دہ کہتا ہے کہ پہانہیں ، ذرا ساتھال ہی ساکھالیں تو پید بڑھ جاتا ہے۔ وہ اس لیے کہ آپ نے سلم کو کمل طور پر استعال ہی نہیں کیا۔ آپ کرشنگ (خوراک کو پینے) کا کام اپنے منہ سے لیا کریں اور ہاضے کا کام اپنے منہ سے لیا کریں اور ہاضے کا کام اپنے منہ سے لیا کریں اور ہاضے کا کام اپنے منہ سے لیا کریں اور ہاضے کا کام اپنے معد سے سے لیا کریں۔

ڈاکٹر کہتے ہیں کہ جو بندہ اپناوزن کنٹرول کرنا چاہتا ہے اسے چاہیے کہ وہ انھی طرح چبا چبا کرتسلی سے کھانا کھائے ، تا کہ کھانے میں پھے وقت گے اور اس کے پیٹ میں جوخوراک جا چکی ہے اس کا مناسب سکنل و ماغ کو پہنچے۔اگر اس طرح وہ کھائے گاتو اس کے پیٹ میں فالتو چر بی نہیں ہے گی۔ورنہ پیٹ بڑھ جانے کی صورت میں ڈاکٹر کہتے ہیں کہ آپ کو ہارٹ افیک ہوسکتا ہے۔ اس طرح گویا ہم خود مصیبت خریدتے ہیں۔

معلوم ہوا کہ جہاں ہم نبی علیہ السلام کی سنت مبار کہ کو چھوڑتے ہیں وہیں تھوکر کھاتے ہیں اور اپنے لیے مصیبت خریدتے ہیں۔کتنا اچھا ہو کہ ہم ہر کام نبی علیہ السلام کی سنت مبار کہ کے مطابق کریں۔اس میں دنیا کا بھی فائدہ ہے اور دین کا بھی فائدہ ہے۔ تسليم كي بغيرسنت نبوى مُنْ يَلِيم يمل

اب یورپ میں لوگ جب کھانے کے لیے بیٹھتے ہیں تو وہ تقریباً ایک گھٹے تک کھانے کا پروگرام بناتے ہیں اور تسلی سے کھاتے ہیں۔ کیوں؟ اس لیے کہوہ کہتے ہیں کہ اس طرح انسان تھوڑا کھا تا ہے اور وزن بھی نہیں بڑھتا۔ چنانچہ انہوں نے تسلیم کے بغیر ہمارے نبی علیہ السلام کی سدتِ مبارکہ پڑمل کرنا شروع کردیا۔ بعنی ''کھوتی مڑتڑ کے بوہڑ ہیٹھ''
اس بات کونو جوان اچھی طرح یا دکرلیں۔

موتیا کاعلاج وضویے:

غور کیجے! ایک آدمی جب ضیح اٹھتا ہے اور فیحرکی نماز پڑھنے کے لیے اسے وضو
کرنا پڑتا ہے۔ وہ وضوکر نے کے لیے اپنے منہ پر پانی ڈالتا ہے۔ آج ڈاکٹر کہتے ہیں
کرآ تکھوں کا کالا اور سفید موتیا انسان کی بینائی متاثر کرتا ہے اوراس کوکنٹرول کرنے کا
طریقہ یہ ہے کہ انسان صبح کے وقت آتکھوں میں پانی کے چھینٹے ڈالے۔ کیوں؟ اس
لیے کہ اس وقت اوزون ہوتی ہے جو پانی کے ساتھ مل کرانسان کی آتکھوں میں جاتی
ہے۔ اور انسان کی بینائی کوٹھیک رکھتی ہے۔ جن لوگوں کو فیجر کی نماز پڑھنے کی عادت
ہے۔ اور وہ وضو کے دوران اپنا چبرہ وھوتے ہیں تو وہ الحمد لللہ میہ فائدہ حاصل کر لیتے
ہیں۔

## مسواك اورجد بدسائنسي تحقيقات:

یہ بندہ دضو کے دوران مسواک بھی کرتا ہے۔اس میں بھی عجیب نکتہ ہے۔ آج سے بچھ سال پہلے یورپ کے ڈاکٹر زکتے تھے کہ ہرآ دمی صبح اٹھ کرسب سے پہلے دانت صاف کرے،اپنے منہ میں مسواک کرے، برش کرے۔لیکن مزید ریسری کے بعداب کہتے ہیں کہ صح کے وقت مسواک کریں یا نہ کریں ، یہ آپ کی اپنی مرضی ہے البتہ رات سونے سے پہلے مسواک ضرور کیا کریں۔ یعنی صبح کے وقت مسواک کرنے سے زیادہ ضروری ہے کہ انسان رات کو کر کے سو۔ ،جہ کیا ہے؟ کہتے ہیں کہ انسان کے وانتوں کے اندر کی جگہوں میں بیکٹیریا کی کئی ڈویژن فوج ہوتی ہے۔ ون کے وقت انسان ہو لتے رہتے ہیں، کھاتے پینے رہتے ہیں، منہ بلاتے رہتے ہیں، جس کی وجہ سے بیکٹیریا کو کام کرنے کا موقع نہیں ماتا۔ جب آ دی رات کوسوجاتا ہے اور منہ بند ہوتا ہے تو جتنی دیر تک وہ سوتار ہتا ہے اس وقت تک رات کوسوجاتا ہے اور منہ بند ہوتا ہے تو جتنی دیر تک وہ سوتار ہتا ہے اس وقت تک بیکٹیریا اس کے دانتوں کو خراب کرتا رہتا ہے۔ اور دانتوں کے درمیان خوراک کے جو ذرات رہ جاتے ہیں ۔ یوں انسان مطرح طرح کی بیاریوں کا شکار ہوجاتا ہے۔ اس لیے وہ کہتے ہیں کہ دات کو مسواک طرح طرح کی بیاریوں کا شکار ہوجاتا ہے۔ اس لیے وہ کہتے ہیں کہ دات کو مسواک کرے صاف منہ لے کرسونازیا دہ ضروری ہے۔

جب بیر بسرج ہم نے پڑھی تو سیدہ عائشہ ﷺ کی بات یادا گئی۔وہ فرماتی ہیں کہ نبی علیہ السلام رات کوسونے سے پہلے مسواک فرماتے تھے۔ گویاصاف منہ لے کر نبی علیہ السلام رات کو آرام فرماتے تھے۔ بلکہ آپ ماڑھ آئی ہوں میں ایک مرحبہ ہیں، جتنی مرحبہ ہیں ایک مرحبہ ہیں، جتنی مرحبہ ہیں ایک مرحبہ ہیں میں ایک مرحبہ ہیں میں ایک مرحبہ ہیں میں ایک مرحبہ ہیں مرحبہ ہیں

گنده دین اور امراضِ شکم:

آج ڈاکٹر کہتے ہیں کہ انسان کے پیٹ کی زیادہ تر بیاریاں اس کے گندے دانتوں کی وجہ سے ہوتی ہیں۔ واقعی جولوگ مسواک کرنے کے عادی نہیں ہوتے ان کو پیٹ کی وجہ سے ہوئی بیاری ضرور ہوتی ہے۔ لہذا جو بندہ بیاریوں سے بچنا چاہتا ہے اس کو چاہیے کہ وہ اپنے منہ کو صاف رکھے۔ یہ میرے پیارے نبی علیہ السلام کی مبارک سنت ہے۔ آج یورپ اور امریکہ میں چھوٹے چھوٹے بچوں کو سمجھایا جاتا ہے

#### الله المنظمة ا

کہ رات کوسونے سے پہلے ضرور مسواک کریں اور اپنے منہ کوصاف رکھیں۔ تو پہلے کہتے تھے کہ صبح کومسواک کیا کرواور اب کہتے ہیں کہ رات کومسواک کیا کرو۔ گویا بھتکی ہوئی سائنس ایک مرتبہ پھر جس منزل پر پہنچی۔ وہاں میرے محبوب ملتی ہیں ہوئی ہوئی کہ:
قدموں کے نشانات ہیں۔ اور یہ بات ثابت ہوئی کہ:

'' کھوتی مڑتڑ کے بوہڑ میٹھ''

### گردن کامسح کرنے میں جسمانی فائدے:

جب بندہ وضو کرتا ہے تو صرف مسواک ہی نہیں کرتا۔ بلکہ وہ چہر ہ بھی دھوتا ہے،اپنے ناک میں بھی پانی ڈالتا ہے، کلی بھی کرتا ہے اوراپنے کا نوں کامسح بھی کرتا ہے۔ون میں کتنی مرتبہ؟ پانچ مرتبہ۔

انسان کی گردن والے جھے میں سارے الیکٹرانکس ہیں۔ و ماغ کی ساری نروز
ایک بنڈل کی شکل میں گردن کے پچھلے جھے ہے ہو کرریڑھ کی ہڈی میں اور پھر وہاں
سے پورے جسم میں جارہی ہوتی ہیں۔ اس لیے بیگردن کا پچھلا حصہ بہت ہی اہم اور
حساس حصہ ہے۔ اگر کوئی بندہ اس جھے کوخشک رکھے تو اس خشکی کی وجہ سے بسا او قات
اس جگہ پھوں میں تناؤ ساپیدا ہوجا تا ہے۔ پھر اس تناؤ کی وجہ سے اس کی نروز پر اس کا
اثر پڑتا ہے۔ لہٰذا ڈاکٹر کہتے ہیں کہ دن میں ایک دو مرتبہ نہایا کرو۔ ۔۔۔۔اللہ
اکبر! ۔۔۔۔انہوں نے پانی لگانے کا تو اب سوچا اور ہمیں وضو میں دن میں پانچ مرتبہ
یہاں پانی لگانے کا طریقہ نبی علیہ السلام نے بتا دیا۔ تو وہ اب سے کہتے ہیں کہ اس جگہ کو

'' کھوتی مژنز کے بو ہڑ ہیٹھ'' اس لیے کہاس کےسوااس کوکہیں پناہ ہی نہیں ملتی۔

#### اعضائے وضودھونے میں ہمارے فائدے:

اچھا! یہ بتا کیں کہ ایک آ دمی بڑا ہی لکھا پڑھا ہو، وہ ایک دن میں کتنی مرتبہ نہالے گا؟ وہ دفتر جاتے ہوئے ایک مرتبہ ہی نہائے گا۔لیکن انسان کےجسم کے پچھاعضا ایسے ہیں جوعام طور پر کام کرتے ہوئے ننگےر ہتے ہیں۔مثلاً:

- ⊙ … چېره نگا موتا ہے۔
- اسسہاتھ کہنیوں تک ننگے ہو سکتے ہیں۔ کیونکہ آ دمی کام کرر ہا ہوتا ہے۔ مستری کام
   کرتے وفت اپنی آستین او پرچڑ ھالیتا ہے۔ اس کا کام ہی ایسا ہے۔
  - ⊙ ..... يا وُل مُخنول تک ننگےرہ سکتے ہیں۔
  - ⊙ …… یہ بھی ہوسکتا ہے کہ کا م کرتے وفت اس کا سربھی نزگا ہو۔

یدوہ جگہیں ہیں جن کو عام طور پر کام کے دوران نگار کھنا پڑسکتا ہے۔ نماز پڑھتے ہوئے انہی کھلا رہنے والی جگہوں کو دن میں پانچ مرتبہ دھونے کا تھم عطا کیا گیا۔ فضا میں جتنا بلاز ما اور جتنے جراثیم ہیں وہ نگے بند ن پر ہی لگ سکتے ہیں۔ اللہ کی شان دیکھیں کہ وضو کے وقت ہمیں پتا بھی نہیں ہوتا اور ٹی جگہوں سے آلودگی صاف ہور ہی ہوتی ہے۔ ہمارے ساتھ کام کرنے والوں میں کوئی ٹی بی کامریض ہوتا ہے، کوئی السر کامریض ہوتا ہے اور کس کے منہ سے بیٹیر یا کے اثرات نکلتے ہیں اور ہمیں پتہ ہی نہیں ہوتا، اور وہ ہمارے جم کے ساتھ لگ جاتے ہیں۔ اگر اس جلد کو ہم دن میں مرتبہ دھوتے ہیں تو یہ اتنازیا وہ محفوظ طریقہ نہیں جتنا دن میں اس کو پانچ مرتبہ دھونا ہے ہیں تو یہ اتنازیا وہ محفوظ طریقہ نہیں جتنا دن میں اس کو پانچ مرتبہ مرتبہ دھونا ہے کہ آپ ان شکے دہنے والے اعضاء کو دن میں پانچ مرتبہ دھو کیس نے کہ آپ ان شکے دہنے والے اعضاء کو دن میں پانچ مرتبہ دھو کیس نے کہ آپ ان شکے دہنے والے اعضاء کو دن میں پانچ مرتبہ دھو کیست یوری ہوئی ؟ نبی علیہ السلام

3 (109) E 3 (109

### وضوکرنے میں شوگر کے مریضوں کا فائدہ:

ہارے ایک دوست شوگر کے مریض تھے۔ان کو ڈ اکٹر ہدایت دے رہا تھا کہ آپ اپنے پاؤں کو دن میں چند مرتبہ مساج کروایا کریں ....اس کی وجہ بیہ ہوتی ہے کہ پاؤں کے اندرخون کی جونالیاں جارہی ہوتی ہیں وہ شوگر کی وجہ ہے قدرے تنگ ہو جاتی ہیں اور باریک ٹشوز کے اندرخون نہیں پہنچ یا تا۔ای وجہ سے شوگر کے مریض کے پاؤں من ہوجاتے ہیں اور ڈاکٹر کہتے ہیں کہاس بات کا خیال رکھیں کہ یاؤں کے او پر زخم نہیں ہونا جا ہیے اور ان کو دن میں کئی د فعہ دیوایا کریں۔اب دیوانا اور زخم کو و کھنا ہر بندے کوا ضافی کا م نظر آتا ہے۔ لیکن جو بندہ نمازی ہے اور نبی علیہ السلام کی مباک سنتوں پڑمل کرتا ہے اس کا بدکام خود بخو د ہور ہا ہوتا ہے۔وہ کیسے؟ ہم نے دن میں یانچ مرتبہ یاؤں کومل مل کر دھوتا ہوتا ہے۔ جب مل کے دھور ہے ہوتے ہیں تو خود بخو دمساج ہور ہاہوتا ہے۔اس طرح خون کی اگر کوئی بندش وغیرہ ہوتو وہ خود بخو دٹھیک ہو جاتی ہے۔اب ذرا سوچے کہ اگر ایک کا فرشوگر کا مریض ہے تو اس کو تکلف کر کے ون میں کئی مرتبہ مساج کرنا پڑتا ہے اور اگر کسی مسلمان کو بیہ عارضہ لاحق ہوجائے تو ، اس کا دن میں پانچ مرتبہ خود بخو د مساج ہور ہا ہوتا ہے۔ بے نمازی لوگ اسے نظر انداز کر دیتے ہیں کیوں کہ ان کے لیے بیمشکل ہوتا ہے کہ جار پانچ مرتبہ اپنے یا وُں کو چیک کریں ۔ پھران کےجسموں کی حساسیت پوری نہیں رہتی ۔ لہٰذاا گرزخم بھی آ جا تا ہے توان کو پیتنہیں چلتا۔ بعد میں پتا چلتا ہے کہ یا وُں کئی دنوں ہے زخمی ہے۔ جب جارے دوست نے آ کر بتایا کہ ڈاکٹر نے بیہ ہدایات بھی دی ہیں تو میں نے کہا: اللہ کے بندے! کتنی پیاری بات ہے کہ بجائے اس کے کہتم ون میں پانچے مرتبہ بیٹھ کراینے یاؤں کوشٹولواور چیک کروہتم پانچ مرتبہ نماز پڑھ لیا کرو، ہرنماز کے وضو میں تمہیں پانچ مرتبہ اپنے یاؤں کومل مل کر دھونے کا موقع مل جائے گا اور یہی

یاؤں کا مساج ہے۔ کیونکہ وضوکرنے والا اپنے یاؤں کی انگلیوں کول مل کے دھوبھی رہا ہوتا ہے۔ اور جو بندہ وضو میں یانچ مرتبہ دن میں ہوتا ہے۔ اور جو بندہ وضو میں یانچ مرتبہ دن میں پاؤں دھور ہا ہوتا ہے۔ اسے یاؤں کے زخم کا احساس بھی ہوتار ہتا ہے۔ میں نے اس سے کہا کہ جا کہ جا کہ ڈاکٹر کو کہد دینا کہ تم مریضوں کوسیدھا سیدھا یہ کیوں نہیں کہد دیتے کہ تم یانچ مرتبہ وضوکیا کرو جمہیں بیافائدے خود بخو د حاصل ہوجا کیں گے۔

اس نے کہا: میں اپنے ڈاکٹر سے بات کروں گا۔وہ ڈاکٹر ہندو تھا۔ جب اس نے ڈاکٹر کو وضاحت سے بتایا کہ ہم یوں وضوکرتے ہیں اور اس کا یہ فائدہ ہے تو وہ جران ہو گیا اور کہنے لگا: چھا! تمہارا بچہ بھی وضو کرتا ہے اور بوڑھا بھی وضو کرتا ہے؟ اس نے کہا: ہاں۔وہ کہنے لگا: یہی بات ہے کہ جو بندہ عملی طور پر مسلمان ہوتا ہے وہ کتنی بیار یوں سے خود بخو دن کر ہا ہوتا ہے۔اگر تم بھی اسی طرح وضوکرتے ہوتو تمہیں روز انہ مساج کرنے کی ضرورت نہیں ،تم تو پہلے ہی وضو کے باعث یہ نفع اٹھارہے ہو۔ ہم نبی علیہ السلام کی مبارک سنت پڑ عمل کررہے ہوتے ہیں اور خود بخو داللہ تعالی ہمیں نقصان دینے والی چیز دل سے بچار ہے ہوتے ہیں۔ آج کفر کی دنیا ان سنتوں ہمیں نقصان دینے والی چیز دل سے بچار ہے ہوتے ہیں۔ آج کفر کی دنیا ان سنتوں ہمیں دنیاوی فائد ہے ڈھونڈ کران کو اپنانے کی کوشش کرر ہی ہے۔ کیا مطلب؟

## ايك نوبل پرائز ونركى الڻي سوچ:

ایک نوبل پرائز ونرتھا۔اس سے انٹر ویولیا گیا۔ انٹر ویو لینے والوں نے پوچھا: آپ نوبل پرائز ونرکیے ہے؟ اس نے جواب میں کہا: میں ایک پیشل ورزش کرتا ہوں۔ انہوں نے پوچھا: کون می ورزش؟

اس نے کہا: میں دن میں تقریباً پندرہ منٹ الٹا کھڑا ہوتا ہوں ۔ یعنی سرینچے اور ٹانگیں

او پر کرتا ہوں۔

انہوں نے یو چھا: وہ کیوں؟

اس نے کہا: وجہ یہ ہے کہ عام حالات میں دل نیچے ہوتا ہے اور سراو پر ہوتا ہے۔ اس صورت میں دل سے نیچے والے اعضا کوخون آسانی سے پہنچ جاتا ہے اور د ماغ گو پا او پر کی منزل ہے لہٰذااس تک خون پہنچنا ذرامشکل کام ہے۔ د ونوں سمتوں میں خون کا پر یشر مختلف ہوتا ہے۔ یعنی د ماغ کو جتنے پریشر کے ساتھ خون ملنا چا ہے اتنانہیں ملتا۔ پر یشر مختلف ہوتا ہے۔ اینا کھڑا ہوتا ہوں تو میرا سر نیچے ہوتا ہے اور دل او پر ہوتا ہے۔ اس طرح میر ادا خون میر کے د ماغ میں آجا تا ہے۔ اس طرح میر کے د ماغ کے بلین اورٹریلین خلیوں کے اندر میرا خون پہنچ جاتا ہے۔ اس طرح میر اد ماغ بہت اچھا اورٹریلین خلیوں کے اندر میرا خون پہنچ جاتا ہے۔ جس کی وجہ سے میرا د ماغ بہت اچھا کام کرتا ہے۔ اس کے میں آوبل پر ائز ونربن گیا۔

جب میں نے بیانٹرویو پڑھاتو میں نے کہا: یہ بھی پاگل ہے۔ اگراس کو دن میں پائچ مرتبہ نماز پڑھنے کی عادت ہوتی تو بے چارے کو بیدورزش نہ کرنی پڑتی۔ پورے دن میں اور کوئی صورت نہیں ہوتی کہ سرینچے ہوا ور انسان کا دل او پر ہو۔ ہمیشہ دل ینچے اور سراو پر ہوتا ہے۔ لیکن نماز کے بحدے میں انسان کا سرینچے اور اس کا دل او پر ہوتا ہے۔ اس لیے اگر تھوڑ اسا لمباسجدہ کیا جائے تو آدمی کو اپنے کا نول میں، چبرے میں اور د ماغ میں فراوانی کے ساتھ خون کین چامسوس ہوتا ہے۔ جیسے خون کا فلڈ آچکا ہو۔ ہوتا یہ ہے کہ سجدے کی حالت میں انسان کا زیادہ سے زیادہ خون سراور چبرے میں جار ہا ہوتا ہے اور ایک ایک خلیے کو جا کرتازگی بخش رہا ہوتا ہے۔ اس لیے لمبے سجدے کرنے والوں کے چبروں پر اللہ رب العزت ایک رونق عطا کردیتے ہیں۔ سجدے کرنے والوں کے چبروں پر اللہ رب العزت ایک رونق عطا کردیتے ہیں۔

صلحاکے چہروں برنور کی ایک سائنسی تو جیہ:

مجھے ایک ڈاکٹر ملا۔ وہ کہنے لگا: جی! دینِ اسلام نے کہا ہے کہ صلحا کے چہرے ہے۔

نور ہوتا ہے۔ میں نے کہا: بالکل کی بات ہے۔ کہے لگا: کیا آپ جانے ہیں کہ وہ کیسا فور ہوتا ہے؟ میں نے کہا: ہال۔ پھر وہ کہنے لگا: میں ایک میڈ یکل ڈاکٹر ہوں اور میں نے یہاں امریکہ میں ڈاکٹری کی ہے اور میں نے اس پرریسرچ کی ہے کہ اصل میں پیلوگ لیے بجد دل کی وجہ سے ان کے چہرے پر ، و ماغ میں اور ان لیے بجد ول کی وجہ سے ان کے چہرے پر ، و ماغ میں اور او پر والے باقی اعضا میں خون وافر مقد ار میں چلا جاتا ہے۔ جس کی وجہ سے ان کے چہرے دوسرول کی نبست زیا وہ تازہ نظر آتے ہیں۔ بڑھا ہے میں بھی ایسے لگا میں جو بیالکل جوان ہوں۔

اس کے بعدوہ ہنس کر کہنے لگا: جی! میں آپ کوایک بات بتاؤں؟ میں نے کہا: بتاؤ۔ کہنے لگا:اگرعورتوں کو پیتہ چل جائے کہ لمبے سجد ہے کرنے سے ہمارے چہرے کتنے تازہ نظرآ نمیں گے تو بے جاریاں کئی گئی گھنٹے روز ہی سجدے میں گزار دیں اور فیمتی فیمتی کریموں سے ان کی جان چھوٹ جائے۔تو پتا چلا کہ

'' کھوتی مزرز کے بوہر ہیٹھ''

## سرکے کے استعال میں سائنسی ترجیحات:

پچھلے دنوں کی بات ہے۔ میں نیویارک ٹائمنر پڑھ رہاتھا۔اس میں ایک تین کالم کی خبرگی ہوئی تھی۔اوراس پر لکھا ہوا تھا:

Burn your extra fat with the use of vinigar.

''سرکہاستعال کرکے اپنی اضافی چربی کوختم کر لیجیے۔''

مجھے بڑی جیرانی ہوئی۔ میں نے کہا کہ سرکہ استعال کرنا تو نبی علیہ السلام کی سنت ہے۔ نبی علیہ السلام کی سنت ہے۔ نبی علیہ السلام کے زمانے میں کوئی دعوت الیی نہیں ہوتی تھی جس میں سرکہ موجود نہ ہو۔ نبی علیہ السلام نے ارشاد فرمایا کہ'' جس گھر میں سرکہ ہوتا ہے اس گھر

میں سالن موجود ہوتا ہے''۔

پھر میں نے پورامضمون پڑھا۔اس میں لکھا ہوا تھا کہ اگر انسان روزانہ چائے کے ایک چچ کی مقدار سرکہ استعال کرلے تو وہ بھی موٹانہیں ہوسکتا۔اس کے استعال کے کئی طریقے ہیں۔مثلاً: پانی میں ڈال کر، یا سالن میں ڈال کر، یا سلا دپر ڈال کر، یا سلا دپر ڈال کر، یا سلا دہیں ڈال کر کھا کیں گے تو کئی لوگوں کے گلے اس کو برداشت نہیں کر سکتے۔اس لیے سرکہ استعال کرنے کا سب سے بہترین طریقہ ہے کہ آپ آ دھا گلاس سکتے۔اس لیے سرکہ استعال کرنے کا سب سے بہترین طریقہ ہے کہ آپ آ دھا گلاس بانی لیس اوراس میں ایک چچ سرکہ ملاکر روزانہ پی لیس سے چوہیں گھنٹے میں جتنی بھی بانی لیس اوراس میں ایک چچ سرکہ ملاکر روزانہ پی لیس سے چوہیں گھنٹے میں جتنی بھی بانی لیس اوراس میں ایک ج

توجن لوگوں کو ڈاکٹر کہتے ہیں کہ اپنا وزن کم کریں وہ بے چارے ورزش بھی کرتے ہیں کیکن کرتے ہیں گئی کرتے ہیں لیکن پھر بھی وزن کم نہیں کرپاتے ، وہ ڈاکٹنگ (فاقہ) بھی کرتے ہیں لیکن پھر بھی وزن کم نہیں کرپاتے ۔ ان کے لیے آسان اور قدرتی علاج یہ ہے کہ وہ سرکہ استعال کرنا شروع کر دیں ۔ مسلمان اس کو استعال کرنے کا اتنا زیادہ اہتمام نہیں کرتے ۔ اس خبر کے چھپنے کے بعدا مریکی سٹوروں میں سرکہ کی قیمت زیادہ ہوگئی ۔ ہم نے امریکیوں اور پورپیوں کے دستر خوانوں پرسر کہ استعال ہوتے دیکھا۔ میں نے امریکیوں اور پورپیوں کے دستر خوانوں پرسر کہ استعال ہوتے دیکھا۔ میں نے ایک امریکی ہے بو چھا: جی! آپ سرکہ کیوں استعال کرتے ہیں؟ اس نے جواب دیا کہ اس میں بہت فاکدے ہیں اس لیے ہم نے اسے اپنی غذا کا حصہ بنالیا ہے ۔ میں نے اسے اپنی غذا کا حصہ بنالیا ہے ۔ میں نے اس کے سامنے مہا ا

''کھوتی مزرز کے بو ہز ہیٹھ''

وه كمني كانا: ?What are you saying

"آپکیا کہدرے ہیں"

میں نے کہا: دیکھو! میں مسلمان ہوں اور بیدمیرے پیارے نبی علیہ السلام کی

سنت ہے۔ چونکہ آپ نے بھی اس پڑمل کیا تو میں نے کہا کہ ہماری تحقیقات میں ایک اورنگ انفار میشن کا اضافہ ہو گیا۔ وہ کہنے لگا: ہاں! بینی انفار میشن ہے ، تہہیں بھی نوٹ کرلینی چاہیے۔اللہ اکبر کبیرا!!

# زینون کے تیل سے ہائی کولیسٹرول کا علاج:

کے لوگوں کو ہائی کولیسٹرول کا پراہلم ہوتا ہے۔ ایسے لوگوں کو ڈاکٹر کہتے ہیں کہ پراٹھا مت کھا کیں، انڈہ مت کھا کیں۔ لا ہور میں ہمارے ایک دوست ڈاکٹر شاہد اولیں صاحب ہیں۔ وہ پیتھا لوجسٹ ہیں۔ لوگ اپنی ٹمیٹ رپوٹیس کرنے کے لیے ان کی لیبارٹری میں جاتے ہیں۔ وہ مجھے کہنے گئے: حضرت! میں نے سومریضوں پر ایک تجربہ کیا۔ میرے پاس ہائی کولیسٹرول والے مریض آئے، میں نے ان کا کولیسٹرول لیول چیک کیا اور میں نے اس سب کی دوائیاں چیٹروا ویں اوران سے کہا: آپ زیون کا استعال کرنا شروع کر دیں۔ سالن بھی اس میں بنا کمیں اوراگرول چا ہے تو پراٹھا بھی اس کا بنا کر کھا کمیں۔ اس کے علاوہ سلاد پر بھی زیون کا تیل ڈالیس جی کہ دود دھ میں بھی زیون کا استعال کرنا شروع کرویں۔ سال کے علاوہ سلاد پر بھی زیون کا تیل ڈالیس جی کہ دود دھ میں بھی زیون کا استعال کرنسکتے ہیں۔ پھرچالیس دنوں کے بعد آکر دوبارہ مجھ سے ٹمیٹ کروا کمیں۔ وہ کہتے ہیں کہ میں نے اس طرح ایک سو آکر دوبارہ مجھ سے ٹمیٹ کروا کمیں۔ وہ کہتے ہیں کہ میں نے اس طرح ایک سو مریضوں کا علاج کیا اوران سب کا کولیسٹرول لیول 200 سے کم ہوگیا تھا۔

جب انہوں نے یہ بات کہی تو میں بڑا حیران ہوا اور پو چھا: اچھا! اللہ تعالی نے زینون کے تیل میں یہ خاصیت رکھی ہے! یہ تو مجھے پینة تھا کہ قرآن مجید میں اللہ تعالی نے اس کی قسم کھائی ہے۔ ۔۔۔۔۔﴿ وَالنِّیبِ وَالْدَنَّا لَا تَعَالَى مَا كُلُ مَا كُلُ مَا كُولَى راز پوشیدہ ہوگا۔
رہے ہیں تو اس میں یقینا کوئی ناکوئی راز پوشیدہ ہوگا۔

بہر حال! ایسا کیوں ہوا؟ پچھلے دنوں میں نے ایک ریسرج پیپر پڑھا۔ اس میں اس بات کی وضاحت تھی۔ اس کو میں میڈیکل ٹیکنالوجی استعال کر کے سمجھانے کی بجائے اپنی زبان میں آسان بنا کر پیش کرتا ہوں۔

اس ریسری رپورٹ میں لکھا ہوا تھا کہ زینون کے تیل کے سائنسی فارمولے میں ایک کری خالی ہے۔ اس کری کی جگہ بالکل ایسی ہے جیسے بیڈکولیسٹرول کی ہوتی ہے۔ البندا میہ بیڈکولیسٹرول اس کری کی پوزیشن میں جا کرفٹ ہو جاتا ہے۔ اور یہ زینون کا تیل اس کوجسم سے باہرنکال دیتا ہے۔

اس سے پہتہ چلا کہ زینون کا تیل کولیسٹرول لیول کو کم ہی نہیں کرتا بلکہ بند شریانوں کو کھو لنے کا کام بھی کرتا ہے۔ لہذا اب باہر ملکوں میں دل کے مریضوں کو زیتون کے تیل کا نیس سنعال کرنے کی ہدایت کی جاتی ہے۔ لہذا اس وقت زینون کے تیل کا استعال یورپ کی دنیا میں بہت زیادہ ہے۔ کینیڈ اجس ایک ریسرچ یہ ہوئی کہ کون سا آئل کتنا استعال ہوتا ہے؟ انہوں نے ریسرچ رپورٹ میں لکھا تھا کہ اس وقت پورے کینیڈ امیں زیتون کے تیل کا استعال سب سے زیادہ ہے۔ کس لیے؟ اس لیے کہ نہوں نے دیکھا کہ اگرزیتون کا تیل استعال کریں مے تو دل کی بند شریا نیس بھی کھل جا کیں گا در ہارٹ افیک کے مریض کو فائدہ ہوجائے گا۔ اس کو کہتے ہیں:

میں جو تی ہو ہر بیٹھ نیں کہ بوجائے گا۔ اس کو کہتے ہیں:

یادر کھیں! زینون کا تیل استعال کرنا سنت بھی ہے۔ نبی علید السلام زینون کا تیل خوب استعال فرمایا کرتے تھے۔

### ریسرچ ورک کرنے میں جاری کمزوری:

ہارےنو جوانوں کی حالت یہ ہے کہ جب یہ ہوارے سنت پڑمل کرتے ہیں تو چونکہ ان کو سائنسی فوائد کا پت نہیں ہوتا اس لیے Down feel (سکل محسوس) کررہے ہوتے ہیں۔وہ یہ سوچتے ہیں کہ ہم اس طرح قدامت پرست نظر آئیں سے۔او خدا کے بندو! یہ تو ہماری کمزوری ہے کہ ہم نے ریسری ورک نہیں آئیں سے۔او خدا کے بندو! یہ تو ہماری کمزوری ہے کہ ہم نے ریسری ورک نہیں

کیا،اگر ہمارے سکالراس پر ریسرچ کرتے اور دنیا کو بتاتے کہ نبی علیہ السلام کی مبارک سنتوں میں تہارا ایہ فاکدہ ہے تو یہ کفر کی دنیا آج ہے کتنا پہلے اسلام قبول کر چکو ہوتی ۔ یہ تو ہمارا قصور ہے کہ ہم نے اسلام کے حسن کو اور نبی علیہ السلام کی مبارک سنتوں کو کھولا ہی نہیں۔ ہم نے ایسے سائنس دان پیدا کرنا بند کر دیے جو ایک طرف عالم بھی ہوتے اور دوسری طرف سائنس کی باریکیوں کو بچھ کرسائنس دانوں کو نبی علیہ السلام کی سنتوں کے فاکدوں سے روشناس کرواتے ۔ یہائی کمزوری کی وجہ ہے ہے کہ آج ہمارے نو جوان جب کی سنت پر عمل کررہے ہوتے ہیں تو اول کو سائنس کی مرب ہوتے ہیں جو تا ہیں معافر اللہ ان کو سائنس طور پر سمجھاتے ہیں جیسے معافر اللہ انہوں نے کوئی جرم کرلیا ہے۔ پھر جب ہم ان کو سائنسی طور پر سمجھاتے ہیں کہ اس کے اندریہ فائد سے ہیں تو پھر اللہ رب العزت ان کو ہمت عطافر مادیتے ہیں۔ چنانچہ وہ کہتے ہیں کہ اب ہم سنت پر بڑے شوق، جذبے اوریقین عطافر مادیتے ہیں۔ چنانچہ وہ کہتے ہیں کہ اب ہم سنت پر بڑے شوق، جذبے اوریقین عطافر مادیتے ہیں۔ چنانچہ وہ کہتے ہیں کہ اب ہم سنت پر بڑے شوق، جذبے اوریقین کے ساتھ ممل کریں سے کے ونکہ ہمارے لیے یہی ایک فائدے کی چیز ہے۔

# عجوه تھجور میں راز کی بات:

ہمارے ایک دوست کا کولیسٹرول ایول ہائی ہو گیا۔ ڈاکٹر نے ان سے کہا کہ آپ کو کولیسٹرول فورا کنٹرول کرنا چاہیے۔ کیونکہ بدالی حد تک پہنے چکا ہے کہ جہاں کسی وفت بھی ہارٹ افلیک (دل کا دورہ) ہوسکتا ہے۔ انہوں نے گھرا کر جھے فون کیا۔ کہنے گئے: حضرت! بیل بڑا پر بیٹان ہوں، جھے پچھ بتاہے۔ ان کی بات من کر ایک تو ہم نے ان کو دعا کیں ویں اور دوسرا نبی علیہ السلام کی سیرت میوار کہ پر نظر دوٹرائی کہ ہمارے سلے بقینا کہیں نہ کہیں روشی کا بینار ضرور ہوگا اور ہمیں اس سے دوڑائی کہ ہمارے زندگی بیں رہنمائی مل جائے گی۔ چنا نچے مطالعہ کے دوران نبی علیہ السلام کی مبارک زندگی بیس سے ایک ایسانی معاملہ سامنے آیا جس سے ہمیں امید کی ایک کرن نظر آئی۔ سے ایک ایسانی معاملہ سامنے آیا جس سے ہمیں امید کی ایک کرن نظر آئی۔

اورعرض کیا: اے اللہ کے نبی صلی اللہ علیہ وسلم! مجھے سینے میں در داور حفین ہوتی ہے۔ یہ س کرنبی علیہ السلام نے فر مایا: بیدول کی بیاری ہے۔

اس مدیث کو پڑھ کر پتا چلا کہ دنیا میں سب سے پہلے نبی علیہ السلام نے ہارث ائیک کی شخیص فر مائی۔ حالا نکہ سینے کی تھٹن کے ساتھ دل کا کیا تعلق؟ چودہ سوسال پہلے سس کو پید تھا۔لیکن نبی علیہ السلام نے فر مایا کہ ریتو دل کی بیاری ہے۔

پھرانہوں نے پوچھا: اے اللہ کے نبی مٹھیلیا اب میں کیا کروں؟ نبی علیہ السلام نے ارشا دفر مایا:

· 'تم عجوه تحجوري استعال كرو-''

انہوں نے وہ تھجوریں استعمال کیں اوران کی تکلیف دورہوگئی۔

ہم نے جب بیصدیث پڑھی تو ہم نے سوچا کہ اس میں بقینا کوئی نہکوئی راز ہو گا۔ کیونکہ مجور کے اوپر جو پچھ ہوتا ہے وہ تو کار بو ہائیڈریٹس ہی ہوتے ہیں۔ چنا نچہ گلتا ہے کہ اس کے اندر کوئی خاص نعمت موجود ہے۔ ہمیں اس میں راز کی بات یہ ملی کہ مجور کی تھلیوں کو ہیں کر خود کھاٹا اور اونٹوں کو کھلا نا عربوں کی عادت تھی۔ اسلمی بھے کے بارے میں روایت میں آتا ہے کہ وہ مجور دل کی تھلیوں کو ہیستی تھیں اور اپنے اونٹوں کو کھلا یا کرتی تھیں۔ اگر لوگوں کے پاس بھی کھانے کی اور ہیستی تھیں اور اپنے اونٹوں کو کھلا یا کرتی تھیں۔ اگر لوگوں کے پاس بھی کھانے کی اور پیستی تھیں اور اپنے اونٹوں کو کھلا یا کرتی تھیں۔ اگر لوگوں کے پاس بھی کھانے کی اور پیستی تھیں اور اپنے اونٹوں کو کھلا یا کرتی تھیں۔ اگر لوگوں کے پاس بھی کھانے کی اور پیستی تھیں اور اپنے اونٹوں کو کھلا یا کرتی تھیں۔ اگر لوگوں کے پاس بھی کھانے کی اور پیستی تھیں اور اپنے اونٹوں کو کھلا یا کرتی تھیں وہ بھی تھاپوں کو پیس کر کھالیا کرتے تھے۔

چناچہ ہم نے عاجی صاحب سے کہا کہ ہم آپ کوایک دوائی بھیج رہے ہیں اسے
استعال سیجے۔ چنا نچہ ہم نے عجوہ محبور کی چالیس مخطیاں لیں اور ابن کا ہائیڈرالک
پریس کے ذریعے پاؤڈر (سفوف) بنوالیا۔ بعد میں ان کوکیسولوں میں بھرلیا۔ پھر میہ
کیسول حاجی صاحب کو مجمود دیے اور ساتھ میہ بھی ہدایت دی کہ آپ ہر کھانے کے بعد
صبح دو پہرشام ایک ایک کیپول استعال کریں۔ بعد میں اور کیپسول بھی بھر کر جھیجے۔

الله کی شان کہ چالیس دن کے بعد جب وہ دوبارہ چیک اپ کروانے کے لیے گئے تو وہ کولیسٹرول جو 300 سے بھی زیادہ تھا تو اس دن اس کی ریڈنگ 185 تھی ۔ بیریڈنگ جوان اورصحت مندآ دمی کے کولیسٹرول کی ہوتی ہے۔ بیریڈنگ دکھ کرڈاکٹر چیران ہوئے کہ اس کی کوئی اور وجہ ہے؟ چنا چانہوں نے فون کیا کہ ڈاکٹر بید ریورٹ مانتا ہی نہیں ۔ میں نے کہا: ان سے کہو کہ وہ دوسرانمونہ لے لیس ۔ اس طرح جب دوسری دفعہان کا کولیسٹرول مایا گیا تو وہ بھی 185 نکلا۔

پھرہم نے بینسخہ اپنے کئی درجن دوستوں کو استعال کروایا اور سو فیصد لوگوں کو فائدہ ہوا۔ جی ہاں!اللہ تعالیٰ نے تھجور کی گھلیوں میں شفار کھی ہے۔

نى رحمت منافية كم كنام سے رجسر دائيك لا جواب دوائي:

میرے پاس کراچی میں ایک ڈاکٹر آئے۔ وہ کہنے گئے: حضرت! میں دل کی جسمانی بیاریوں کا بھی جسمانی بیاریوں کا تو اسپیشلسٹ ہوں، اب میں دل کی روحانی بیاریوں کا بھی اسپیشلسٹ بنتا چا ہتا ہوں۔ مجھےاس اسپیشلسٹ بنتا چا ہتا ہوں اس لیے آپ سے بیعت ہونے کے لیے آیا ہوں۔ مجھےاس کی اس بات پر بڑی حیرانی ہوئی۔ میں نے ان سے کہا: ذرا آپ اپنا تعارف تو کروائیں۔

وہ کہنے لگا: میں نے یو کے سے اسیشلائزیشن کی۔ پھر میں نے اپنے پیشے میں الی مہارت پیدا کرلی کہ میں سعودی عرب کے شاہی خاندان کا ہار نے اسپیشلسٹ بن گیا۔ میں کنگ عبدالعزیز کے زمانے سے لے کرچھتیں سال تک شاہی خاندان کا اسپیشلسٹ رہا ہوں۔ اب میں نے ریٹا گرمنٹ لے لی ہے اور اب میں نے سوچا ہے کہ کر اپنی میں غریب لوگوں کے لیے فری ڈیپنسری بناؤں گا اور ان کا علاج کروں گا۔ میں نے کہا: میرے پاس ایک دوائی ہے ، آپ استعال کر کے بتا کیں کہ وہ ول کے لیے فائدہ مند ہے بائیں۔

میں نے ان کو حاجی صاحب والے کیپسول دے دیے۔ ایک ہفتے بعد آکروہ کہنے گئے: حضرت! بیددوائی رجشر ڈکروائی ہے کیا؟ میں نے کہا:نہیں۔ میں نے کہا:نہیں۔

وہ کہنے لگا: حضرت! جلدی ہے آپ اے رجشر ڈکر والیں ، کیونکدا گرانسان اس کود نیا میں سپلائی کرے تو لاکھوں ڈ الرکما سکتا ہے۔

میں نے کہا: مجھے ایسا کرنے کی کوئی ضرورت نہیں، یہ چودہ سوسان پہلے میرے آقا اور سردارصلی اللہ علیہ وسلم کے نام پر رجسٹر ڈی ہو چکی ہے۔ ہمیں یہ نعمت نبی علیہ السلام کی مبارک حدیث سے ملی ہے اور میں یہ چاہوں گا کہ ہمیں ڈالر ملنے کی بجائے میرے مبارک حدیث سے ملی ہے اور میں یہ چاہوں گا کہ ہمیں ڈالر ملنے کی بجائے میرے مجبوب ملٹ آئیز کے اس فرمان کی محبوب ملٹ آئیز کے اس فرمان کی وجہ سے میرے اللہ نے اس میں لوگوں کے لیے بیاریوں کی شفار کھی ہے۔ وجہ سے میرے اللہ نے اس میں لوگوں کے لیے بیاریوں کی شفار کھی ہے۔

تو ہم یہ بات کہنے میں حق بجانب ہیں کہ بھٹلی ہوئی سائنس پھرایک مرتبہ اپنی منزل پر پہنچی ،گریہ وہی جگہ ہے جہاں میرے مجبوب ملٹانیا ہے قدموں کے نشانات مین -

# تیز چلنے کے جسمانی فائدے:

نیچھ سال پہلے کی بات ہے کہ ڈاکٹر تجویز کیا کرتے تھے کہ جاگئگ کیا کرو۔ اس لیے جوگر بنائے گئے۔ چنا نچہ ہر گھر میں بوٹ پہنچ گئے۔ مردوں نے بھی بوٹ پہننا شروع کر دیے، بچوں نے بھی پہننا شروع کر دیے اور عورتوں نے بھی پہننا شروع کر دیے۔ ہر بندہ کہتا ہے کہ صبح صبح دوڑنا چاہیے، جاگنگ کرنی چاہیے۔ ہم جب بھی یورپ کے مختلف ملکوں کا سفر کرتے ، دن ہوتا یا رات ، دو پہر ہوتی یا شام ، تو کہیں مرد دوڑتا نظر آتا اور کہیں عورت دوڑتی نظر آتی ، بچ بھی دوڑتے نظر آتے۔ بے چاروں کی دوڑگی ہوئی تھی لوگ کہتے تھے کہ یہ دوڑ لگانے والے اچھی ورزش کر رہے

ہیں اور اس کاصحت پر برواا چھااٹر پڑتا ہے۔

پھر چندسالوں کے بعد ڈ اکٹر وں کے پاس ایسے مریض آنے لگے جن کو بڑی عمر میں یاؤں کی ہڈیوں میں مستقل درویں رہنے لگیں۔ دوسرے جوڑوں میں بھی در دیں ر ہے لگیں۔ڈاکٹروں نے تحقیق کی تو پہتہ چلا کہ بیہوہ لوگ ہیں جودوڑ نے کے عادی ہیں۔ چونکہ دوڑنے کے دوران انسان کا ساراوزن یاؤں کی ہڑیوں پر پڑتا ہے اس لیے ان پرسب سے زیادہ اثر پڑتا ہے۔ جوانی میں تو پیتہ نہیں چلتا لیکن جیسے ہی آ دمی بڑھایے میں قدم رکھتا ہے تو پھر در دیں ظاہر ہونا شروع ہو جاتی ہیں۔اس وقت پیۃ چتا ہے کہ یہ ہڈیاں زیادہ گھس گئیں تھیں۔اصل میں ہڈیوں کے درمیان Lubricating ( چکنار کھنے ) کے لیے جومواد تھاوہ اضافی استعال ہو گیا۔لہٰذااب ڈ اکٹروں نے کہنا شروع کر دیا کہ جا گنگ کی بجائے Brisk Walk بہتر ہے۔

پیBrisk Walk کیاہے؟ برسک واک ذرا تیز چلنے کو کہتے ہیں ۔ نہ بھا گیں اور نہ ہی ستی سے چلیں، ذرا اچھے اور تیز انداز سے چلنا برسک واک کہلاتا ہے۔ ڈاکٹروں کی ریسرچ کے مطابق یہ برسک واک انسان کے لیے سب نے بہتر ورزش ہے۔

ہم نے جب نبی علیہ السلام فی مبارک سنتوں کو دیکھا تو ہمیں پیمپارک سنت ملی كه ني عليه السلام جب چلتے تھے تو اتنا تیز چلتے تھے كه يوں لگتا تھا كہ جيسے يا ني اونچي جگه سے نیچے کی جگہ پر آر ہا ہے۔ یعنی جیسے آ دمی او نیجائی سے نیچے کی طرف آئے تو ذرا تیزی سے آتا ہے، نبی علیہ السلام ای طرح تیز چلتے تھے۔ آج سائنس کی دنیا میں اس کانام Brisk Walk''ر کھ دیا ہے۔اسے کہتے ہیں:

'' کھوتی مرتز کے بوہر بیٹھ۔''

# ملکی پھلکی ورزش اور جدید سائنسی تحقیق:

ایک وفت تھا جب کہتے تھے کہ انسان کوضیح سویرے اٹھ کر ورزش کرنی جا ہیے۔ چنانچہاس مقصد کے لیےلوگوں نے اپنے گھروں میں ورزش مشینیں رکھی ہوئی تھیں۔ مرد بھی اور عور تیں بھی ورزش کرتے ۔عورتیں بھی گھروں میں دوڑ لگاتی تھیں۔

لیکن سائنس نے اب پھاور کہنا شروع کر دیا ہے۔ سائنس کہتی ہے کہ چوہیں گفتے ہیں سے ایک مرتبہ اگرآپ اپنے جسم کو زیادہ ورزش کروا کیں گے تو اس سے زیادہ توانائی ضائع ہوتی ہے،اس سے زیادہ بہتر ہے کہ آپ و تفے و تفے سے ہلکی بھلکی ورزش کریں۔ کیونکہ ورزش کا اصل مقصد یہ ہوتا ہے کہ انسان کے دل کی دھڑکن جو عام طور پر 70 ہوتی ہے، وہ ورزش کی وجہ سے بڑھ جائے اور اس کو 120 تک بہنچایا جائے۔ 120 تک محفوظ ہوتی ہے۔اگر 120 سے بھی او پر چلی جائے تو پھر انسان پراس کامضرا ٹر ہوسکتا ہے۔اگر 150 سے او پر چلی جائے تو اور زیادہ اثر ہوسکتا ہے۔اگر 150 سے او پر چلی جائے تو اور زیادہ اثر ہوسکتا ہے۔ اور 170 - 160 پر ہارٹ پراہلم شروع ہوسکتا ہے۔ تو ڈاکٹر کہتے ہیں کہ اتی ورزش کی جائے کہ دل کی دھڑکن 20 تک چلی جائے۔

ہمارا دل ایک پہپ کی مانند ہے۔ یہ پہپ خون سپلائی کرتا ہے۔ جب اس کی قوت بڑھ جائے گا، 70 کی بجائے 120 ہوجائے گاتو خون کا بہاؤ بڑھ جائے گا۔ جب خون کا بہاؤ بڑھ جائے گا۔ جب خون کا بہاؤ بڑھے گا تو ہمار ہے جسم کی شریا نوں کے اندرا گر کہیں کوئی رکا وٹ ہے تو یہ بہاؤ اس کو بہا کر لے جائے گا اور بالآ خر ہماراسٹم ٹھیک کام کرے گا۔ آپ نے دیکھا ہوگا کہ جیسے پائپ بند ہو جا کیں تو اس میں پیچھے سے ذرا پریشر کے ساتھ پائی ڈال دیتے ہیں اور وہ رکاوٹ ختم ہو جاتی ہے۔ اس طرح وہی Fluid کی ماری ہے۔ تو ہماری شریا نوں میں جہاں رہاؤ کا میکینزم) ہمارے جسم میں بھی کام کر رہی ہے۔ تو ہماری شریا نوں میں جہاں رہاؤ کا میکینزم) ہمارے جسم میں بھی کام کر رہی ہے۔ تو ہماری شریا نوں میں جہاں رہاؤ کا میکینزم) ہمارے جسم میں بھی کام کر رہی ہے۔ تو ہماری شریا نوں میں جہاں جہاں رکا وٹ ہوتی ہے، جب ہمارے دل کی دھڑکن 120 ہو

جاتی ہے تو خون کا بہاؤا تنا ہو جاتا ہے کہ خون کا وہ بہاؤ ساری رکاوٹ کوختم کر دیتا ہے۔ لہذا اتنی ہلکی ورزش کرنی چاہیے کہ آ دمی کے دل کی دھڑکن 1 است جلی جائے۔ اور 120 تک تو معمولی سی ورزش سے بھی چلی جاتی ہے۔ ابر فاکٹرزنے کہا ہے کہ ایک وقت میں بھاری ورزش کرنے کی بجائے مختلف اوقات میں ہلکی پھلکی ورزش کرکے اپنے جسم کے اندر جو بھی رکاوٹ یا بندش ہے اس کوختم کرلو، یہ ایک بہتر طریقہ ہے۔

ہمارے ایک دوست جاپان گئے ، وہاں پچھ ڈائر یکسرز کے ساتھ ان کی میٹنگ تھی۔ وہ میٹنگ میں ایک دو گھٹے بیٹھے رہے۔ اس کے بعد انہوں نے کہا کہ اب ہم ایکسر سائز کے لیے پانچ منٹ کا وقفہ کریں گے۔ وہ جیران ہوئے۔ دیکھا کہ جاپانی اپنی کرسیوں کے ساتھ کھڑے ہوکر ہاتھ او پر نیچ کرنے گئے اور انہوں نے ہلکی پھلکی ورزش کرلی۔ اور اس کے بعد وہ دوبارہ کرسیوں پر بیٹھ گئے۔ پھر دو تین گھٹے میٹنگ رہی اور اس کے بعد انہوں نے پھراسی طرح ایکسرسائز کے لیے وقفہ کیا۔ چونکہ وقفے ووزش کی سے سارا دن میٹنگ چلنی تھی اس لیے انہوں نے چار مرتبہ اس طرح ہلکی پھلکی ورزش کی۔

کہتے ہیں کہ میں نے ان سے سوال کیا کہ آپ ایسا کیوں کرتے ہیں؟ انہوں نے جواب ویا کہ یہ ماڈرن ریسرچ ہے کہ دن میں ایک ہی مرتبہ بھاری ایکسر سائز کرنے ہوائے دن میں کئی مرتبہ بھی پھلکی ورزش کرلی جائے تو انسان کاجسم زیادہ صحت مندر ہتا ہے اور اس کی زندگی لمبی ہوتی ہے۔ کہتے ہیں کہ یہ س کرمیں نے دل میں سوچا کہ یہ بے چارے دن میں چار پانچ مرتبہ ایکسر سائز کی بجائے ،اگر کلمہ پڑھ کر دن میں پانچ مرتبہ نماز ہی پڑھ لیتے تو ان کی بیا کیسر سائز تو خود بخود ہی ہو جاتی ۔واقعی ! ہم جودن میں نماز پڑھ رہے ہوتے ہیں تو ہمارے کتنے ہی مسلز کی ایکسر جاتی ہی مسلز کی ایکسر

سائز خود بخو د ہور ہی ہوتی ہے۔ ہمیں بینعت اللہ تعالیٰ کا تھم ماننے کی وجہ سے خود بخو د مل رہی ہوتی ہے۔ اللہ اکبر کبیرا!

### رويت ہلال اور جديد سائنسي ترجيحات:

اب میں آپ کو زیادہ سائنسی بات بتا دیتا ہوں۔ ہوسکتا ہے کہ کسی کا زیادہ سائنسی ذوق بھی ہو۔۔۔۔رمضان شریف کے روزوں کے بارے میں نبی علیہ السلام کی ایک حدیث مبار کہ ہے۔ نبی علیہ السلام نے ارشاد فرمایا،

#### صُوْمُوْا لِرُوْيَتِهِ وَافْطِرُوا لِرُوْ يَتِهِ

''بتم جب جا ندکو دیکھوتو روز ہ رکھوا ور جب جا ندکو دیکھوتو پھرا فطار کرو''

آج کل چاندکو و یکھنے کا ایک بڑا مسئد ہے۔ اس سلسلے میں دوگروہ ہے ہوئے ہیں۔ ایک گروہ کہتا ہے کہ جب ہم چاند دیکھیں گے تب ہم روزہ رکھیں گے۔ اور جب چاندکو دیکھیں گے تب عید منائیں گے۔ مسلمانوں کا ایک دوسرا نیا گروہ بھی ہے، وہ ماؤرن طبقہ ہے، وہ سائنس پڑھنے والے مسلمان ہیں۔ وہ کہتے ہیں کہ آج تو انسان چاند پر پہنچ چکا ہے لہٰذا ہمیں پورے سال کا شیڈول بنالینا چاہیے کہ کس دن چاندنظر آئے گا پھراس کے مطابق ہمیں عمل کر لینا چاہیے، چنا نچہ آج کے دور میں چاند و کیھنے کی ضرورت نہیں۔ اس بات پر اب عمل بھی ہور ہا ہے۔ پھی ملکوں میں ایسا ہی ہوتا ہے کہ رمضان المبارک کے شروع ہونے سے پہلے وہ بنا دیتے ہیں کہ فلاں دن تر اور کی اور فلاں دن عید کی نماز پڑھی جائے گی۔

اس لیے باہر ملکوں میں دوطرح کی عیدیں ہوتی ہیں۔ پچھلوگ کہتے ہیں کہ چاند
کود کچھ کر عید پڑھیں گے اور چاند کوئی د کچھ کر روز ہے رکھیں گے۔اور پچھلوگ کہتے
ہیں کہ ہم نے سائنس پڑھی ہوئی ہے، ہم تو سائنس دان بن چکے ہیں، کمپیوٹر میں
انجیلئر نگ کرلی ہے، فلال ڈگری بھی حاصل کرلی ہے اور فلال بھی، ہمیں تو اعدادوشار

ے ہی پتہ چل جاتا ہے ،اس لیے ہم پہلے سے ہی پیش گوئی کر لیتے ہیں ، پھراسی کی بنیاد پراعلان کردیتے ہیں کہ فلاں دن رمضان شریف ہوگا اور فلاں دن عید ہوگی۔

ایک مرتبہ ہم ایک ایسی جگہ پہنچ جہاں ستائیس میڈیکل ڈاکٹر زموجود تھے۔ان کے درمیان مجھے بیان کرنا پڑا۔اللہ تعالیٰ نے ایسی مہر بانی کی کہ بعد میں وہ سب ڈاکٹر سلسلے میں بیعت ہو گئے اوراللہ تعالیٰ نے ان کی زندگیاں بھی بدل دیں۔

وہاں پریہی رویت ہلال کی بحث چل پڑی۔ پھروہ ڈاکٹر زکہنے گئے کہ اچھا! ہم حضرت صاحب سے ہی پوچھ لیتے ہیں۔ چنانچہ ان میں سے ایک نے مجھ سے پوچھا: حضرت! آج کے دور میں چاند دیکھنے کی کیا ضرورت ہے جبکہ ہم اعداد وشار بھی کر سکتے ہیں:

> میں نے کہا: بھی ! نبی علیہ السلام نے ارشاد فرمایا: صُومُو الرُّ وَبِیّنِهِ وَ اَفطِرُو الرُّ وَبِیّنِهِ

''تم جب چا ندکود کیھوتو روز ہ رکھوا در جب چا ندکود کیھوتو ا فطار کر و۔''

اس کیے ہمار ہے سامنے تو ایک سیدھا سااصول ہے کہ ہم اس حدیث پڑمل کیا کریں۔ان میں سے ایک ڈاکٹر صاحب جو قرآن مجید کی پچھزیادہ ہی فہم رکھتے تھے وہ کہنے کیا کہ آج کے دور میں بھی آپ یہ بات کر رہے ہیں: حالانکہ آپ نے انجینیئر نگ بھی کی ہوئی ہے۔ کیا آج بھی جاند دیکھنے کی ضرورت ہے؟ آج تو بندہ پہلے ہی پیش گوئی کرسکتا ہے، جب جاند پرانسان پہنچ چکا ہے تو کیا اس کو پہتنہیں کہ جاند نظر کہ آئے گا؟

پھر میں نے اس کوحقیقت سمجھائی۔ میں نے کہا: ہمارے سامنے پچھ عرصہ پہلے یہ مسئلہ آیا تھا، ہم نے کہا کہ ہم خوداس کے بارے میں ریسرچ کرتے ہیں تا کہ ہمیں پتا مسئلہ آیا تھا، ہم نے کہا کہ ہم خوداس کے بارے میں ریسرچ کرتے ہیں تا کہ ہمیں پتا ہے۔ چلے کہ حقیقت کیا ہے۔

جب جاند کے دن پورے ہوجاتے ہیں تو ایک آخری دن ایسا آتا ہے کہ جب جا ندنظر سے اوجھل ہو جا تا ہے۔اس کو جب دیکھیں تو وہ ان دنوں میں سیاہ ہو چکا ہوتا ہے، نظر ہی نہیں آتا۔ سائنس کی ٹر مینالوجی (اصطلاح) میں اسے Birth of .new moon (نے جاند کی پیدائش) کہتے ہیں۔اس کو سجھنے میں ہمارے کئی دوست غلطی کرجاتے ہیں۔ وCrest (ہلال) کو نیا جا ند کہددیتے ہیں۔سائنس کی زبان میں وہ نیاجا ندنہیں۔ ہلال اور نئے جا ندمیں فرق ہے۔ جب جا ند گھٹے گھٹے نظر آ نابند ہوجا تا ہے تو اس کو. Birth. of new moon کہتے ہیں۔ پھراس کے سترہ یا بیں گھنٹوں کے بعد وہاں جا ندنظر آسکتا ہے۔ اس کو ہلا ل کہتے ہیں۔ہم اس Crest (ہلال) کو دیکھ کرعید مناتے ہیں۔New moon (نئے جاند) کو دیکھ کر نہیں مناتے۔ توبیا یک سائنسی مغالط ہے جو ہمارے لکھے پڑھے حضرات کولگ جاتا ہے۔ وہ کہتے ہیں کہ: جی سائنس دانوں نے کہہ دیا ہے کداب Birth of new moon (نے ماند کی پیدائش) ہو چکی ہے۔ لہذا نظر آجائے تو بھی عید پڑھو اور نظر نہ آئے تو بھی عید پڑھو۔ او خدا کے بندو! سجھنے کی کوشش کرو کہ سائنس وان . Birth of new moon کس کو کہدر ہے ہیں؟ جب جاند بالکل نظر آنا بند ہو جائے مجمی بھی جاند کی پیدائش کے بیں سکھنٹے ہوتے ہیں۔اور بھی بھی بارہ چودہ تھنٹے بھی ہوتے ہیں۔اس دوران بیرجانس بھی ہوتا ہے کہ جا ندنظر آجائے اور بیرجانس بھی ہوتا ہے کہ نظرنہ آئے۔الی صورت میں سائنس دان پینس جاتے ہیں۔

ایک مرتبدالی ہی صورت حال تھی اور قدر تامیں اس وقت امریکہ میں تھا۔ ہمیں تو وہاں ایک ایک منٹ میں تین نمین کالیں آر ہی ہوتی ہیں کہ حفرت! بتا کمیں کہ جاند نظر آئے گا کہ نہیں ماگر جاند نظر آئے گا کہ ہیں ، اگر جاند نظر آئے گیا تو ہم روز ہ رکھیں گے اور نظر نہ آیا تو ہم روز ہ نہیں کھیں مے۔ ان کو ہم جواب دیتے ہیں کہ ہم جاند دیکھنے کی کوشش کر رہے ہیں۔ آب

بھی کوشش جاری رکھیں ، تا کہ سنت پر بھی عمل ہو جائے اور ہم Space میں معلومات لیتے ہیں۔ Museum (خلائی عجائب گھر) سے بھی معلومات لیتے ہیں۔

واشکنن میں بہت سارے کا ئب گھر ہیں۔ انہیں Smithsonion series میں ہے۔ ان میں سے ایک of museums کہتے ہیں۔ دنیا ان کو دیکھنے کے لیے جاتی ہے۔ ان میں سے ایک Space Museum (خلائی عجائب گھر) بھی ہے۔ وہاں ایک ایسا ڈیپارٹمنٹ ہے جہاں خلا کے اندر چوہیں گھنٹوں میں رونما ہونے والی تبدیلیوں کے بارے میں معلومات ملتی ہیں۔

میں نے وہاں سے پیس میوزیم میں فون کیا اور وہاں پر بیٹھے ہوئے بند ہے سے میں نے خود بات کی ۔ میں نے اس سے کہا کہ میں امریکہ میں فلاں جگہ پر ہوں ، کیا اس وقت جھے Crest (ہلال) نظر آسکتا ہے۔ اس نے جواب دیا کہ نظر آنے کے چانسز ہو بھی سکتے ہیں اور نہیں بھی ہو سکتے۔ میں نے کہا: کیا مطلب؟ اس نے جھے ایک موثی سکتے ہیں اور نہیں بھی ہو سکتے۔ میں نے کہا: کیا مطلب؟ اس کا وہ مدار ایک موثی سی بات سمجھائی کہ چاندا ہے جس مدار کے اندر چل رہا ہے اس کا وہ مدار ایک لائن کی طرح نہیں، بلکہ یوں سمجھیں کہ پانچ سو کلومیٹر موٹا ٹائر ہے اور اس کے اندر چاند کہیں سے بھی گزرسکتا ہے اور دور سے بھی نزرسکتا ہے۔ دوسر لے نفلوں میں اس کو یوں سمجھیں کہ کو وہ مدار کسی دھا گے کی طرح نہیں ہیں ہے بلکہ وہ مدار کئی کلومیٹر موٹا ہے۔ اس میں چاند بالکل دائر نے کی شکل میں نہیں جالی دہ تر یہ سے بھی گزرسکتا ہے۔ اس لیے کہ پیل رہا، لہذا قریب سے بھی گزرسکتا ہے۔ اس لیے کہ پیل رہا، لہذا قریب سے بھی گزرسکتا ہے۔ اس لیے کہ

..... چاند کے اپنے اندرزلز لے بھی آتے ہیں،

..... چاند کے اپنے اندر کئی پراسیس ہور ہے ہوتے ہیں ، سمیر سر میں ہوں ۔

..... بول مجھیں کہ ایٹم بم چل رہے ہوتے ہیں۔

لبذا چاند کی پوزیش مختلف موتی رہتی ہے۔ چنا نچہ ہم یفین سے ہیں کہ سکتے کہ

جا ندنظر آئے گایانہیں آئے گا۔

ان کی ایک Naval Observatory (بحرید کا تحقیقاتی ادارہ) ہے۔ بحریہ والوں کو چاند کی گردش کا خیال رکھنا ضروری ہوتا ہے۔ کیونکہ چاند کی چودہ تاریخ High Tide ہوتا ہے۔ کیونکہ چاند کی چودہ تاریخ کا اللہ المام ادہ بحث کہ اس تاریخ کو سمندر کے اندر بہت ہی زیادہ مدو جزر ہوتی ہے۔ اس لیے جہاز رانوں کو پتا ہوتا چاہیے کہ المام کب ہوگی اور Low Tide کب ہوگی۔ لہذا وہ چاند کی گردش کے بارے میں معلومات لیتے رہتے ہیں۔ لہذا آج دنیا کہتی ہے کہ

We trace each inch of the trajectory of moon.

''ہم چاند کے داستے کے ایک ایک ایک گوٹریس کرتے ہیں۔''
اس لیے ہمارے پاس چاند کے بارے ہیں ہروقت سے اور تازی ترین معلومات ہوتی ہیں۔ ہیں ہروقت سے اور تازی ترین معلومات ہوتی ہیں۔ ہیں نے اس بحرید کے تحقیقاتی ادارے میں خود نون ملایا۔ وہاں پر ایک خاتون تھی۔ اس نے کہا کہ ہمارے کمپیوٹر سیشن میں آپ کواس کا جواب مل سکتا ہے۔ چنانچہ میں نے کمپیوٹر سیشن میں رابطہ کیا۔ وہاں بھی ایک خاتون انجیلیئر بیٹھی تھی۔ میں نے اس سے کہا کہ میں فلال جگہ ہے بول رہا ہوں اور میں چاہتا ہوں کہ آج میں اپنی آپ کھوں سے چا دیکھوں۔ اب آپ بتا کیں کہ سرکمپیوٹر کے مطابق اس کے کتنے چانسز آس میں۔ اس نے کہا: جی! ہم بتانہیں سکتے ، کیونکہ آج اس مہنے میں ایسا معاملہ ہے کہ چاند نظر آس بھی سکتا ہے اور نظر نہیں بھی آسکتا۔ میں نے کہا: وہ کیوں؟ اس نے جھے ذرا اور نے وہ تھی ل سے بات سمجھائی۔

وہ کہنے گئی: دیکھیں! ہم جب جاند کی Trajectory (راستے) کو ماستے ہیں تو مارے پاس بظاہر کوئی چیز نہیں ہوتی ، ہمارے پاس ایک Mathematical Mathematical (ریاضیاتی ماڈل) بنا ہوا ہے جسے ہم model Mathematical کے بیں۔ وہ ایکوایشز ہیں۔ وہ simulatro (حمالی مساوات) کتی ہیں؟ وہ 10000 ایکوایشز ہیں ان کو ہم equations (حمالی مساوات) کتی ہیں؟ وہ 10000 ایکوایشز ہیں ان کو ہم کیلکو لیٹ کر کے بتا سکتے ہیں کہ اس وقت چاند کہاں ہوگا۔لیکن اس میں جولوگ کیلکو لیٹ کر کے بتا سکتے ہیں کہ اس وقت چاند کہاں ہوگا۔ ہیں اس جولوگ Constants و بین سے جولوگ کے Mathematics (ریاضی) پڑھتے ہیں وہ جانتے ہیں کہ کچھ Constants ہیں مقداریں) ہوتی ہیں اور پچھ کا معتاریں) ہوتی مقداریں) ہوتی مقداریں) ہوتی فیل مقداریں) ہوتی ہیں اور پچھ ہزار متغیر مقداریں ہیں اور کسی اور کسی کی مقداریں ہیں اور کسی کی کہا کہ ان ایکوایشز میں چھ ہزار متغیر مقداریں میں جو ہزار ایک اکسان ہونے سے چاند کی لویشن میں فرق پڑ سکتا ہے۔ وہ کہنے گئی جب چاند کی دون گارئی سے کہ سکتا ہے کہ چانداس وقت نیاں ہوگا۔لہذا ہم سوفیصد یقین سے نہیں کہ سکتے ، باوجود اس کے کہ ہم چاند پر بہنچ یہاں ہوگا۔لہذا ہم سوفیصد یقین سے نہیں کہ سکتے ، باوجود اس کے کہ ہم چاند پر بہنچ کے بیاں ہوگا۔لہذا ہم سوفیصد یقین سے نہیں کہ سکتے ، باوجود اس کے کہ ہم چاند پر بہنچ کے بیاں ہوگا۔لہذا ہم سوفیصد یقین سے نہیں کہ سکتے ، باوجود اس کے کہ ہم چاند پر بہنچ کی بیاں ہوگا۔لہذا ہم سوفیصد یقین سے نہیں کہ سکتے ، باوجود اس کے کہ ہم چاند پر بہنچ کے بیاں ہوگا۔لہذا ہم سوفیصد یقین سے نہیں کہ سکتے ، باوجود اس کے کہ ہم چاند پر بہنچ

میں نے کہا: قربان جاؤں اپنے آتا ما اللہ کے سنت پر، جولوگ سائنس دان بن کرچاند پر پہنچ چکے ہیں وہ بھی تسلیم کررہے ہیں کہ چھ ہزار متغیر مقداروں میں ہے کی ایک میں بھی فرق آ جائے تو چاند کی لوکیشن میں فرق پڑسکنا ہے۔ لہذا ہم ایکوایشن پر سکنا ہے۔ لہذا ہم ایکوایشن پر سکتا ہے۔ لہذا ہم ایکوایشن پر سکتا ہے۔ اگر فیصلہ کرنا ہوگا تو ہمارے پاس اس کا طریقہ یہ ہوگا کہ ہم ظاہر میں دیکھ کر فیصلہ کرسکتے ہیں۔ نبی علیہ السلام نے چودہ سوسال پہلے بتادیا تھا کہ۔ میں دیکھ کر فیصلہ کرسکتے ہیں۔ نبی علیہ السلام نے چودہ سوسال پہلے بتادیا تھا کہ۔ میں دیکھ کر فیصلہ کر سکتے ہیں۔ نبی علیہ السلام نے چودہ سوسال پہلے بتادیا تھا کہ۔

''تم جب جاندکودیکھوتوروز ہ رکھواور جب جاندکودیکھوتو افطار کرو'' معلوم ہوا کہاتی ریسرچ کے باوجود: ''کھوتی مزتز کے بوہڑ ہیٹھ'' جب بحریہ والوں نے بھی کہد دیا کہ ہم نہیں کہد سکتے ، یہ تو د کیچے کر فیصلہ کرنا پڑے گا تو میں نے کہا کہ پھرمیرے آقا مٹھ آئیل کی بات تھی ہوئی۔ پتا چلا کہ ہم سائنس میں جتنا بھی آھے چلے جا کیں ۔ بالآخر میرے آقا اور میرے قروار مٹھ آئیل کی ہی باتیں تھی اور کمی ہوں گی اور ہمیں بالآخر ہوں گھٹے ٹیکنے ہوں گے اور ان چیزوں کو قبول کرنا ہو گا۔

عزیز نوجوانو! اگر ہم سائنس پڑھنے والے ہیں تو ہمیں چاہے کہ ہم سنت پرسائنس کے نقط انظر کے مطابق بھی سوچ بچار کیا کریں اور نبی علیہ السلام کی مبارک سنتوں کے فائد ہے ہم لوگوں کے سامنے کھولیں تا کہ سنت کو چھوڑ کرزندگی گزار نے والے ذوق اور شوق سے سنیں اپنائیں۔وہ دنیا میں بھی نقصان اٹھاتے ہیں اور ان کا آخرت کا بھی نقصان ہوتا ہے۔اس نقصان پانے والی انسانیت کا فائدہ سوچے اور اس کوسنت کے راستے پر لگانے کی کوشش کیجے۔جوآ دمی پہاڑ کی چوٹی پر رہتا ہوا ور اس کوسائنس کی روشی نہیں ہی کا گھوٹی ہے۔ جوآ دمی پہاڑ کی چوٹی پر رہتا ہوا ور اس کوسائنس کی روشی نہیں ہی کا کہ و نیا تو فائدہ نہیں پہنچا سکی ،گر میر ہے جو ب اس کوسائنس کی روشی نہیں کے اس کو بان بھی فائدہ پہنچا دیا۔اگر وہ پہاڑ کی چوٹی پر رہ کرسنت پرعمل کر رہا ہے، کو یااس کو وہاں بھی فائدہ اللہ ہا ہے۔ محسنِ انسانیت کے طریقوں میں پرعمل کر رہا ہے۔ اپندا ہمیں چاہیے کہ ہم اپنے محبوب میں ایک میار کے اللہ کے ہاں بھی سرخرو ہوجا کمیں اور دنیا کے فائد ہے ہی پال میں سرخرو ہوجا کمیں اور دنیا کے فائد ہے ہی پال میں سرخرو ہوجا کمیں اور دنیا کے فائد ہے ہی پال میں سرخرو ہوجا کمیں اور دنیا کے فائد ہے ہی پال میں سرخرو ہوجا کمیں اور دنیا کے فائد ہے ہی پال میں سرخرو ہوجا کمیں اور دنیا کے فائد ہے ہی پال میں سرخرو ہوجا کمیں اور دنیا کے فائد ہے ہی پال میں۔

# نماز وں کی رکعتیں اور سائنسی تو جیہات:

جب آ دمی رات کوسوتا ہے تو اس کی نبض کی رفتار بھی کم ہوجاتی ہے اور جب صبح اٹھتا ہے تو اس کے جسم میں شوگر لیول بھی ڈاؤن ہوتا ہے۔ اس کا بلڈ پریشر بھی کچھ ڈاؤن ہوتا ہے۔ اس لیے ڈاکٹر شوگر والوں کو کہتے ہیں کہ صبح اٹھ کر آپ اپنا شوگر لیول چیک کریں کہ کتنا ڈاؤن ہو چکا ہے۔ جب صبح کے وقت اس کا کولیسٹرول لیول ہی ڈاؤن تھا اور شوگر لیول بھی ڈاؤن تھا تو اس ایسے موقع پر اللہ تعالیٰ نے آ دمی کوا پیسر سائز کر نے کا تھم دیا۔ جس کو فجر کی نماز کہتے ہیں۔ اس نما زکی رکعتیں کتنی بنائی سائز کر نے کا تھم دیا۔ جس کو فجر کی نماز کہتے ہیں۔ اس نما زکی رکعتیں کتنی بنائی زیادہ ایکسرسائز کرنے کی ضرورت ہی نہیں۔ لیکن جب دن ہوا تو اب ہم نے ناشتہ ہمی کرلیا، پھردو پہر کے وقت ماشاء اللہ تکا کے دو پہر کا کھانا بھی کھایا۔ جب وہ دو پہر کے کھانے کے بعد شوگر لیول اور کولیسٹرول لیول اوپر چلا گیا تو رب کریم نے ظہر کی کھانے کے بعد شوگر لیول اور کولیسٹرول لیول اوپر چلا گیا تو رب کریم نے ظہر کی کہتیں بنا کہ ہی کہتی جا ہے ہوں کریم کے ظہر کی کہتیں ہی گئتی بنا دیں؟ بارہ رکعتیں۔ اس لیے کہ بھی !اب چار رکعتوں سے تیرا کا م نہیں کہتی کھایا، پھر آئس کریم کا کہا ہے ہا ہوں رکعتوں سے تیرا کا م بے گا۔ اس کے تم اب بارہ رکعتیں پڑھو۔ چنا نچہ ہم نے جب بارہ رکعتیں پڑھ لیں تو ہارا لیے تم اب بارہ رکعتیں پڑھو۔ چنا نچہ ہم نے جب بارہ رکعتیں پڑھ لیں تو ہارا کولیسٹرول لیول اور شوگر لیول اور بھی ڈاؤن ہوگیا۔

عصر کے وقت کے لیے بارہ رکعتوں کی ضرورت نہیں بلکہ چار رکعتوں ہے بھی کام بن سکتا ہے۔ باقی چار آ چشنل کہہ دی گئیں۔ لیعنی چار تو فرض ہیں اور باقی چار سنت غیر مؤکدہ ہیں، اگر بڑھ لیس تو اس میں تمہارا فائدہ ہے اور اگر نہیں پڑھو گے تو تمہار ہے مرضی ہے۔ تہمیں ان کوچھوڑنے کی بھی اجازت ہے۔ لہذا عصر کے وقت کی ایک سرسائز بھی تھوڑی کردی گئی۔

اس نماز کے بعد ہم چائے چتے ہیں اور تھورے بہت سکٹ کھاتے ہیں،اسے عصرانہ کہتے ہیں۔ پھر مغرب کی نماز میں سات رکعتیں پڑھنے کا تھم دیا گیا۔اب رکعتیں کیوں بڑھادی گئیں؟اس لیے کہتم نے چائے پی اور انگلش کسکٹ کھائے۔جس کے تہارا کولیسٹرول لیول اتنااونچا ہو گیا کہ اب تمہیں پہلے کی نبست زیادہ ایکسرسائز

كى ضرورت ہے۔ لہذااب سات ركعتيں برد صنے كا تعلم ويا ميا۔

مغرب کے بعد ہم نے گھر ڈنرلیا، اس میں دوستوں کو بھی بلایا اور ٹکا کے کھایا۔ لہٰذا پروردگار نے عشاء کی نماز کی سترہ رکعتیں کر دیں ۔۔۔۔ کیوں بھئی! دو پہرکا کھانا کھایا تو سترہ رکعتیں ۔۔۔۔اس لیے کہ دن کھانا کھایا تو سترہ رکعتیں ۔۔۔۔اس لیے کہ دن کی بارہ رکعتیں پڑھنے کے بعد بھی ہم نے جا گنا تھااور کام کرنا تھااور کولیسٹرول لیول اورشوگر لیول کم ہونے کا موقع موجود تھا۔ گراب تو تم نے کھا کے سوجانا ہے لہٰذا تہہیں اضافی کام کرنا پڑے گا۔ پروردگار نے ہماری صحت کا خیال رکھا۔

رمضان المبارک میں ہم سارا دن روزے کے ساتھ رہتے ہیں اور جب افطاری کا وقت آیا تو ہم نے خوب کھجوری بھی کھا کیں ، اور خوب روح افزا بھی ہیا، خوب کھوٹ کی ، اور خوب روح افزا بھی ہیا، خوب کہا یہ بیٹ بھر کر کھانے کے بعد خوب کہا یہ بیٹ بھر کر کھانے کے بعد پروردگار نے فرمایا: تم نے بھوکے رہنے کے بعد اب کسر نکالی ہے لہذا اب سترہ رکعتوں سے بھی کا منہیں ہے گا۔ اب ہیں رکعتیں اور بھی پڑھنی پڑھیں گی۔ کیونکہ تمہارا کولیسٹرول لیول اور شوگر لیول بہت زیادہ ہائی چلا گیا ہے۔ اب تمہیں اضافی محنت کرنی پڑے گی۔

اللہ تعالیٰ کی شان دیکھیے کہ ایک بندہ اپنے گھرسے باہرسفر پر چلا۔ جب بندہ سفر پر جاتا ہے تو بھاگ دوڑ کر رہا ہوتا ہے۔ بھی ادھراور بھی ادھرا کیسرسائز ہوتی رہتی ہے۔ اس ایکسرسائز میں شوگر لیول تو پہلے ہی ڈاؤن ہوتا ہے۔ پروردگار جانتے ہیں کہ اس کا شوگر لیول اور کولیسٹرول لیول ڈاؤن ہے، لہٰذامسافر کے لیے اللہ تعالیٰ نے جماعت معاف اور نماز ہاف ( آ دھی ) کردی۔

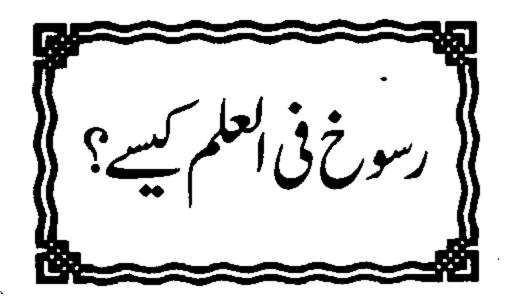
معلوم ہوا کہ پرور دگار نے ہمیں جو بھی تھم دیا اس میں ہم انسانوں کا ہی فائمہ ہے۔ لہٰذا اگر ہم نبی علیہ السلام کی مبارک سنتوں پڑمل کرتے چلے جا کیں محے تو ہمیں خود بخو دفا کہ ہے ملتے چلے جا کیں گے۔ چا ہے ہمیں پنتہ ہویانہ پنتہ ہو۔ بید نیا تھوکریں کھاتی پھرے گی اور بالاً خرر بسر جی کر ہے جس منزل پر پہنچ گی ، بید ہی جگہ ہوگی جہاں میر ہے جبوب مثال ہوں گے ۔
میر ہے جبوب مثالی ہم کے قدموں کے مبارک نشان ہوں گے ۔
نہ کہیں جہاں میں اماں ملی جو اماں ملی تو کہاں ملی مرے جرم خانہ خراب کو ترے علمو بندہ نواز میں مرے جرم خانہ خراب کو ترے علمو بندہ نواز میں بینے یا کہ جہاں میر ہے جبوب مثالی ہا گھاتھ کی سنت ہوگی ۔ تو کھوتی نے مز تر کے کہاں پہنچنا ہے ؟ اس جہاں میر ہے جبوب مثالی کھاتھ کی سنت ہوگی ۔ تو کھوتی نے مز تر کے کہاں پہنچنا ہے ؟ اس برخ و ہوں اور نہی علیہ السلام کی مبارک سنتوں والی زعدگی عطافر مادے ، تا کہ ہم دنیا میں بھی مرخرو ہوں اور آخرت میں بھی سرخرو ہوں ۔

وَ الْحِرُ دَعُوانًا آنِ الْمَحَمُدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلْمِيْن

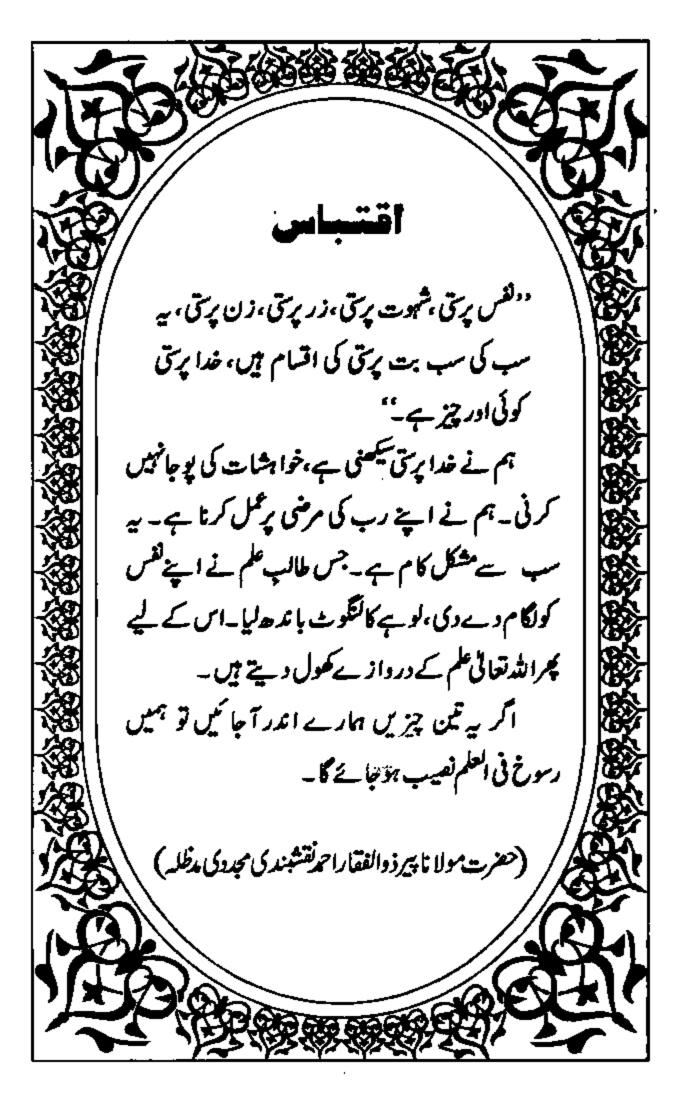




﴿ ثُمَّ آوُرَثُنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ﴾



بیان: پیرِطریقت حضرت مولا ناحافظ ذوالفقارا **چرنقشبندی مجدی** دامت برکاتهم



# 3 مين العلم كيسے؟ رسوخ في العلم كيسے؟

الْحَمْدُ لِلَّهِ وَكَفَىٰ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفَىٰ آمَّا بَعُدُ!
فَاعُودُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسُمِ اللهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ٥ فَاعُودُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسُمِ اللهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيْمِ٥ وَقَالَ اللهُ تَعَالَىٰ فِى مَقَامِ الْحَرُ وَقَالَ اللهُ تَعَالَىٰ فِى مَقَامِ الْحَرُ وَقَالَ اللهُ تَعَالَىٰ فِى مَقَامِ الْحَرُ وَ الرَّبَّانِيُّونَ وَ الْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتَابِ اللهِ وَكَانُواْ عَلَيْهِ شُهدَاء ﴾ و كَانُواْ رَبَّانِيْنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَابَ وَقَالَ اللهُ تَعَالَى فِى مَقَامِ الحِر وَقَالَ اللهُ تَعَالَى فِى مَقَامِ الحِر وَقَالَ اللهُ تَعَالَى فِى مَقَامِ الحِر وَقَالَ اللهُ تَعَالَى فِى مَقَامِ الْحِر وَقِي الْمُوسَلِيْنَ وَ الْمَالِي فِى مَقَامِ الْحَمْدُ وَاللهُ مَا لَيْ اللهُ وَنَ وَهِ الْعَلَى الْمُوسَلِيْنَ وَ الْمَالِمِيْنَ وَ الْعَلْمِيْنَ وَ الْحَمْدُ اللهِ وَتِ الْعَلْمِيْنَ وَ الْحَمْدُ وَتَعَلَىٰ آلِ سَيِّذِنَا مُحَمَّدُ وَبَارِكُ وَسَلِّمُ وَلِي اللهُمُ صَلِّ عَلَى الْمُوسَلِكُ وَسَلِمُ اللهُ وَاللهُ وَاللهُ مَا لَلْ سَيِّذِنَا مُحَمَّدُ وَبَارِكُ وَسَلِمُ اللهُ وَسَلِمُ اللهُ وَالِكُ وَسَلِمُ اللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ عَلَى الْمُحَمَّدُ وَاللهُ وَسَلِمُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ الْمُؤْمِنُ وَاللهُ الْعَلْمُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللّهُ الْمُؤْمِنُ الْعُولِ الْعُلْمُ وَاللّهُ وَاللّهُ الْعُلْمُ وَاللّهُ الْمُعَالِمُ الْمُقَامِ وَاللهُ وَاللّهُ الْمُؤْمِنَ الْمُعَمِّدُ وَاللّهُ الْمُ الْمُعَمَّدُ وَاللّهُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُ اللهُ الْمُؤْمِنُ الْمُعَمِّدُ وَاللّهُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمُ الْمُعَلّمُ وَاللّهُ الْمُؤْمِلُونَ الْمُؤْمِلُونَ الْمُؤْمِنَا الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِلِ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمُ الْمُؤْمُونُ الْمُؤْمِنُ الْمُؤْمِق

ارشاد بارى تعالى ہے:

كتاب اللي كے محافظ:

﴿ وَالرَّبَّانِيُّونَ وَ الْآخْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْ ا مِنْ كِتْبِ اللَّهِ ﴾ دَبَّانِیُّوْنَ ہے مرادُ' رب والے''''اللہ والے'' آخْبَادِ حِبر کی جمع ہے، لیمی دعلم والے' یعنی' علمائے کرام اور مشاکخ عظام''ان کا فرضِ منصی کیا ہے؟ ﴿ بِسَا استُخفِظُوا مِنْ كِتَابِ اللّهِ ﴾ -انہوں نے اللّدرب العزت كى كتاب كى حفاظت كرنى السّنْخفِظُوا مِنْ كِتَاب كى حفاظت كرنى الله الله كا بير مرآيت پر ڈیرے ڈالنے ہیں ۔الفاظ كى بھى حفاظت كرنى ہے۔ كرنى ہے اور معانى كى بھى حفاظت كرنى ہے۔

جس طُرَح حفاظِ کرام الفاظِ قرآن کے محافظ ہیں اور علمائے کرام معانی ۽ قرآن کے محافظ ہیں ، اس طرح محدثین کرام الفاظِ حدیث کے محافظ ہیں اور فقہائے کرام معانی حدیث کے محافظ ہیں۔

صدیث کہتے ہیں بات کواور فقہ کہتے ہیں بات کی سمجھ کو۔ ﴿ فَمَا لِهَاوُ لَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ﴾ "اس قوم كوكيا مواكم بات بى نہيں سمجھتے ؟"

بات کی سمجھانسان کو تعلیم سے حاصل ہوتی ہے۔ بیہ بیچ جوآج شاگر دبن کراستاد کے سامنے پڑھ رہے ہیں بیکل مسندِ ارشاد پر بیٹھ کر دوسروں کو پڑھار ہے ہوں گے۔

نيت كى اہميت:

ہر مل کی ابتدا نیت سے ہوتی ہے۔اس لیے آج کی اس محفل میں طلبا ہیے کام کی ابتدا تھے نیت کے ساتھ کریں۔انسان جس راستے پر چلتا ہے اسکے ذرات بھی نظر آتے ہیں اور جس راستے پرنہیں چلتا اس کے پہاڑ بھی نظر نہیں آتے۔نیت کوشیح کرتا یہ عمل کی بنیا دہے۔ نبی علیہ السلام نے ارشا دفر مایا:

إِنَّمَا الْآعُمَالُ بَالنِّيَّاتِ

''اعمال کا دارومدار نیتوں پر ہے۔''

ا کابرینِ امت نے نیت کی اہمت کے بارے میں گراں قدر اقوال ارشاد فرمائے ہیں،مثال کےطور پر:

⊙ سبيدناعمر ﷺفرمايا كرتے تھے:

#### لَا عَمَلَ لِمَنْ لَلَا فِيَّةَ لَهُ ''جس بندے کی کوئی نبیت نہیں اس کاعمل نہیں''

⊙ ..... يحيٰ بن كثير ﷺ فرمايا كرتے تھے:

''نیت کرناسیکھو!اس لیے کہ نبیت کرناعمل سے زیادہ فضیلت رکھتا ہے۔''

- ⊙ .....داؤد طائی رحمة الله علیه کهار اولیا میں ہے گزرے ہیں۔ وہ امام اعظم ابوحنیفه
   رحمة الله علیه کے شاگر دوں میں سے تھے۔انہوں نے جومجلس تدوین فقه بنائی تھی اس
   کے جیالیس نمایاں حضرات میں سے تھے۔اسمجلس میں ،
  - ⊙.....امام ابو يوسف رحمة الله عليه جيب كثير الحديث عالم تضه،
  - ⊙ ..... قاسم بن معین اورمحمہ بن حسن جیسے ادب اور عربیت کے ماہر تھے ،
    - ⊙ .....امام زفر رحمة الله عليه جيسے قياس اور استحسان کے بادشاہ تھے،

اس مجلس میں داؤ د طائی رحمة اللہ علیہ جیسے تقویٰ کے پہاڑ بھی تھے۔ بید داؤ د طائی رحمة اللہ علیہ فر مایا کرتے تھے:

#### '' 'حسن نبیت ہر خیر کا مجموعہ ہے۔''

⊙ .....سفیان توری رحمة الله علیه خود صاحب مذہب فقیه گزرے ہیں۔ یہ امام اعظم رحمة الله علیه سے عمر میں پچھ بڑے تھے گرعلم میں امام اعظم ابو حنیفه رحمة الله علیه سے بھی استفادہ کرتے تھے۔ ان کی کتب منگوا کرا ہے پاس رکھا کرتے تھے اور پڑھا کرتے تھے۔ چنا نچہ ایک مرتبہ ایک عالم ان سے ملئے آئے تو انہوں نے ان کے سر ہانے کے بیچے پڑی ایک کتاب دیکھی۔ وہ امام ابو حنیفہ رحمة الله علیه کی کھی ہوئی کتاب ' کتاب الاهن' متی۔ انہوں نے یو چھا: حضرت! آپ بھی یہ کتا ہیں پڑھتے ہیں؟ فرمانے گئے:

"میراجی چاہتا ہے کہ امام ابوحنیفہ علا کی سب کتابیں میرے پاس ہوں اور

میں ان سے فائدہ اٹھاؤں۔''

يه سفيان توري الله فرمايا كرتے تھے:

'' میں اپنی نیت کی گمرانی سب سے زیادہ کرتا ہوں اس لیے کہ ریہ ہروفت او تی برلتی رہتی ہے۔''

یعنی نیت ہی نہیں کرتے تھے بلکہ نیت کی نگرانی بھی کرتے تھے۔

امام احمد بن عنبل رحمة الله عليه كے پاس ایك بزرگ آتے تھے۔ ان كوابو ہاشم
 صوفی كہاجا تا تھا۔ آپ فرما يا كرتے تھے:

''اگرابو ہاشم صوفی نہ ہوتے تو میں ریا کی دقیق باتوں سے بھی واقف نہ ہو سکتا۔''

الله والوں کی صحبت میں بیٹھ کر پہۃ چلتا ہے کہ ریا کیا ہوتی ہے اور تھیج نیت کیا ہوتی ہے؟

⊙ ..... يوسف بن اسباط رحمة الله عليه فرمايا كرتے تھے:

'' نیت کوٹھیک رکھنا بڑے بڑے ممل کرنے سے بھی زیادہ مشکل کام ہے۔''

'' نیت کے سیح ہونے سے چھوٹے عمل بھی اللہ کے ہاں بہت بڑے بن جایا کرتے ہیں اور نیت کے سیح نہ ہونے سے بڑے کمل بھی اللہ کے ہاں بے قیمت بن جایا کرتے ہیں۔''

حصول علم میں نبیت کا پہلو:

طلباکی نیت کیا ہو؟ کیا یہی نیت ہوکہ

🗨 .....ہم عالم بن کرخطیب بنیں گے،

⊙....فقیہ بنیں گے،

⊙.....واعظ بنیں گے،

⊙....امام بنیں گے،

نہیں، نیت یہ ہونی چاہیے کہ میں اپنے اللہ کو راضی کرنا چاہتا ہوں، میں بیام کیے کروں، بیم ہے کتابوں سے ملے گا، لہذا میں وہ علم پڑھنے کے لیے اساتذہ کی خدمت میں حاضر ہوں۔ جب آپ اس نیت کے ساتھ پڑھیں گے تو پھر اللہ تعالی مل کی تو فیق بھی عطافر مادیں گے۔

نىت كى فوقىت عمل ىر:

نی علیہ السلام نے دوسری جگہ پر فرمایا:

نِيَّةُ المُومِنِ خَيرٌ مِّنُ عَمَلِهِ كَ مِنْ مِنْ مِمَا مِنْ عَمِنَ مِنْ مِنْ

''مومن کی نبیت اس کے مل سے بھی زیادہ بہتر ہوتی ہے''

اس کی تین وجو ہات ہیں:

سب سے پہلی وجہ میہ ہے کہ مومن جب بھی کسی نیک عمل کی نیت کرتا ہے تو اس کے نامہ اعمال میں ایک نیکی فورا لکھ دی جاتی ہے۔ اگر چہ بعد میں وہ عمل کرے اور ریا کاری کی وجہ سے اس عمل پرکوئی اجرنہ ملے۔ یعنی عمل پراجر ملے نہ ملے ، نیت پراجر فورا مل جاتا ہے۔

دوسری وجہ یہ ہے کہ نیت کے اندر دوام ہے، نیت کے اندر طول ہے، عمل کے

اندر نہیں .....وہ کیے؟ .....کہ ایک آ دمی زندگی میں نیکی تو سوسال کرتا ہے،اس سے زیادہ کرئی نہیں سکتا کیونکہ اس کی عمر بی اتنی ہوتی ہے۔ گویا کہ عمل کی ایک حد ہے۔
لیکن اس پراس کواجر کیا مطے گا؟ کہ بمیشہ بمیشہ جنت میں رہے گا۔ای طرح ایک آ دمی نے گناہ تو کیے سوسال، لیکن بمیشہ بمیشہ جہنم میں رہے گا۔اب یہ بات سجھ میں نہیں آتی کہ محدود عمل پر ہمیشہ جزا! .....اس کا کیا مطلب ہوا؟ .....علا نے اس کا جواب لکھا ہے کہ جس نے سوسال نیکی پرگز ارساس بندے کے دل میں نیت بیشی کہ جب تک وہ زندہ رہے گا،اس وقت تک اللہ رب العزت کی فر ما نبرداری کرتا رہے گا۔ چنا نچہ ای نیت کی وجہ سے اسے ہمیشہ ہمیشہ کے لیے جنت کی نعمیں مانوں کرتا رہے گا۔ چنا نچہ ای نیت کی وجہ سے اسے ہمیشہ ہمیشہ کے لیے جنت کی نعمیں مانوں دے دک گئیں۔اوردوسری طرف جوکا فرتھا، اس کی نیت بیشی کہ میں اللہ کوئیس مانوں گا۔ چونکہ اس کی نیت الی تھی اس لیے اس کو ہمیشہ ہمیشہ کے لیے جنم کی سزادی جائے گا۔ چونکہ اس کی نیت الی تھی اس لیے اس کو ہمیشہ ہمیشہ کے لیے جنم کی سزادی جائے گی۔ تو عمل محدود ہوتا ہے مگر نیت کے اندر طول ہوتا ہے، اس لیے نیت عمل سے زیادہ گی۔ تو عمل محدود ہوتا ہے مگر نیت کے اندر طول ہوتا ہے، اس لیے نیت عمل سے زیادہ گی۔ تو عمل محدود ہوتا ہے مگر نیت کے اندر طول ہوتا ہے، اس لیے نیت عمل سے زیادہ گی تو قبل ہوتی ہے۔

علانے اس کی ایک تیسری وجہ بھی لکھی ہے۔ وہ یہ کٹمل تو انسان جسم کے کسی بھی عضو سے کرسکتا ہے مگر نیت ہمیشہ دل سے ہوتی ہے۔ اور دل چونکہ باقی اعضا سے افضل ہے ہیں لیے مومن کی نیت بھی باقی اعمال سے افضل ہوتی ہے۔

### نيټ کې خرابي ،اعمال کې بريادي:

یا در کھیں! جس طرح سرکہ شہد کو فاسد کر دیتا ہے اسی طرح نیت کی خرابی بھی انسان کے مل کو فاسد کر دیتا ہے اسی طرح نیت کی خرابی بھی انسان کے مل کو فاسد کر دیتی ہے۔ ہمارے مشاکخ نے کہا کہا گرانسان چھٹا تکوں کے حساب سے اسے اپنی نیت پر محنت کرتا ہے تو منوں کے حساب سے اسے اپنی نیت پر محنت کرنے کی ضرورت ہموتی ہے۔ نیت یہ ہمونی چاہیے کہ ہم جو پچھ بھی کریں اللہ رب العزت کی صرورت ہموتی ہے۔ نیت یہ ہمونی چاہیے کہ ہم جو پچھ بھی کریں اللہ رب العزت کی رضا کے لیے کریں۔ اب اس کا میہ مطلب نہیں کہ فقط نیت سے ہی کام بن

جائے گا۔ایک آ دمی سفر کی نبیت تو کر لے کہ منزل پر جانا ہے مگر قدم ہی نہا تھائے تو وہ منزل پر جانا ہے مگر قدم ہی نہا تھائے تو وہ منزل پر ہر گزنہیں پہنچ سکے گا۔ چنانچہ اگر انسان محض تمناؤں سے سو ہے کہ مجھے جنت ملے گی تو بیاحتموں کی بات ہوگی۔اس لیے کیمل ضروری ہے۔

عملِ صالح كي ضرورت وابميت:

یمی وجہ ہے کہ ایمان لانے کے ساتھ ساتھ عمل صالح کی ترغیب بھی وی گئی ہے۔ چنانچہ ارشا دفر مایا:

﴿ إِنَّ الَّذِينَ امَنُوا وَعَمِلُوا الصَّلِحَتُ كَانَت لَهُمْ جَنَّتُ الفِرْدَوْسِ نُزُلاً ﴾ الفِرْدَوْسِ نُزُلاً ﴾

اس طرح ایک اور مقام پرارشا دفر مایا،

﴿ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلَيَعْمَلُ عَمَلًا صَالِحًا ﴾

نیک اعمال ہی کی وجہ سے بندے کواللہ رب العزت کے ہاں عزت نصیب ہو گی۔اسی لیے کا فرلوگ قیامت کے دن اعمال نہ ہونے کی وجہ سے پریشان پھریں مے۔اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں:

﴿ وَلَو تَوَى إِذِ المُهُ جُومُونَ فَاكِسُوا رُءُ وْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ﴾ اگرآپ ديکيس ان مجرمول کوجواپنے رب كے سامنے شرمساری کی وجہ ہے سرجھكا کے کھڑے ہوں مے۔

اور کیا کہیں ہے؟

رَبُّنَا أَبْصَوْنَا "اعمارے پروردگار!اب بم نے و کھليا"

و سيمعنا "اورهم في اليا"

فَارْجِعْنَا " ' 'پس بميں واپس دنيا ميں لوٹا ديجئے''

المالية المالية

نَعمَل صَالِحاً إِنَّا مُوقِنُون

''اب ہم نیک عمل کریں گے،ہمیں پکایفین آ گیاہے''

تو معلوم ہوا کہ قیامت کے دن مجرم لوگ بھی تمنا کریں گے کہا ہے کاش! ہم نے بھی نیک عمل کیے ہوتے۔

قیامت کے دن انسانوں کو بہت حسرت ہوگی۔اس لیے قیامت کے دن کا ایک نام ''یکوم الْسحسُریة'' (حسرت کا دن ) بھی ہے۔ بہت حسرتیں ہوگئی کہ کاش! ہم نے بیند کیا ہوتا۔

⊙ .....﴿ يَلْيَتَنِى اتَّخَذَتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ﴾
 ⊙ ..... ﴿ يُؤْيِلَتَنَى لَمُ اَتَّخِذُ فُلَاناً خَلِيلًا ﴾

کاش میں نے فلاں سے دوستی نہ لگائی ہوتی۔

﴿ لَقَدُ اَضَلَّنِيْ عَنِ الذِّكْرِ بَعُدَ إِذْ جَاءَ نِيْ وَكَانَ الشَّيْطُنُ
 لِلاُنسَانِ خُذُولًا ﴾

توفرمایا: اس دن تمام انسانوں میں سب سے زیادہ حسرت اس عالم کوہوگی جس کی باتوں کوئن کرلوگ عمل کریں سے اور جنت میں جار ہے ہوں گے اور وہ خودا پئے عمل کی کمزوری کی وجہ سے جہنم میں ڈالا جار ہا ہوگا۔ اس لیے ایک صحابی فرمایا کرتے سے کہ عنقریب ایک زمانہ ایسا آئے گا کہ تم دیکھو سے کہ جاال عبادت گزار ہوں گے اور وقت کے علما بدکار ہوں سے۔ اس لیے علم پڑمل کرنا انتہائی ضروری ہے۔

عمل سے زندگی بنتی ہے جنت بھی جہنم بھی

جواعمال ہم کررہے ہیں وہ ہمارے لیے جنت اور جہنم کا فیصلہ کررہے ہیں۔ ہمارا اٹھنے والا ہر قدم یا تو ہمیں جنت کے قریب کررہاہے یا جہنم کے قریب کررہاہے۔اگر شریعت کے مطابق ہے تو جنت کے قریب اور اگر نفسانیت اور شیطانیت کی وجہ سے

ہے تو جہنم کے قریب۔ایک روایت میں آیا ہے کہ علم برعمل کرنے والا انسان اللہ کا دوست ہوتا ہے، لہذا انسان اس بات سے الله رب العزت کی پناہ مائے کہ زبان عالم ہوا ور دل جاہل ہو۔اس لیے ہمارے اکا برفر ماتے تنے کہ دنیا میں ہرکسی کامحبوب ہوتا ہے اور ہمارامحبوب نیک عمل ہے، وہ جہاں ملے گا ہم اسے یا کیں گے، یعنی کرنے کی کوشش کریں ہے۔ چنانچہ نیک اعمال کی تلاش میں رہیں ، جتنا کر سکتے ہیں کر لیجے۔ جیسے تا جرکو جہاں بھی کچھ نفع ہووہ اسے جھوڑ تانہیں ۔اس طرت یہ نیک اعمال ہمارے لیے نفع ہیں ،اس لیے ہردن میں انہیں اکٹھا کرنے کی کوشش کرتے رہیں۔ نیک عمل کر کر کے تھکیں اور تھک تھک کر پھر نیک عمل کریں۔ایک شوق اور لگن ہو،اس لگن کے ساتھ انسان نیک اعمال کرنے میں مکن ہو۔ جب کسی کے پاس وقت کم ہوتو وہ تیزی ہے کام کرتا ہے۔مثال کےطور پر:ایک طالب علم امتحان دےر ہاہے اور وقت بہت کم ہےتو وہ تیز تیز لکھنے کی کوشش کرتا ہے اور کھلاڑی کے پاس وقت کم ہوتو وہ زیادہ ہے زیادہ رنز بنانے کی کوشش کرتا ہے۔ ہماری زندگی کا وقت کم ہے۔اس لیے ہم بھی زیادہ ہے زیادہ نیک اعمال کرنے کی کوشش کریں۔اور پیجمی کوشش کریں کہ ہم ایسے اعمال کریں جن پرہمیں بہترین اجرمل سکے۔

رسوخ فی انعلم کی معاون تین چیزیں

جلالین شریف کے حاشیے میں لکھا ہوا ہے کہ راتخین فی العلم میں شامل ہونے کے لیے تین چیزیں ضروری ہیں۔

(1).....تقو<u>ي</u>

سب سے پہلی چیز ہے کہ بندے کے اندر تقل ی ہو۔

# اَلَتَّقُواٰی فِیْمَا بَیْنَهُ وَ بَیْنَ اللّٰهِ

''تقوٰی وہ ہے جس کا تعلق بندے اور اللہ کے درمیان ہے۔''

تقوٰی کچھ کرنے کا نام نہیں، بلکہ کچھ کام نہ کرنے کا نام تقوٰی ہے۔ تقوٰی کی آسان تعریف ہیں کے کرنے سے تعلق باللہ میں آسان تعریف ہیں ہے کہ'' ہراس ممل کور ک کردیتا جس کے کرنے سے تعلق باللہ میں فرق آ جائے ، تقوٰی کہلاتا ہے۔''

### دل کی گواہی:

تعلق باللہ میں فرق آر ہا ہوتا ہے یا نہیں ، بیدول بتاتا ہے۔اللہ رب العزت نے

سینے میں جو بیدول بنایا ہے ، بیدانهان کوضیح صورت حال بتاتا ہے۔ای لیے کہا گیا کہ

اگرتم اپنی حقیت معلوم کرنا چا ہوتو اپنے دل سے گواہی لو، دل وہ گواہ ہے جو بھی رشوت

قبول نہیں کرتا ، ہمیشہ تجی گواہی دیتا ہے۔ چنا نچہ ہم جب بھی اپنی اوقات معلوم کرنا

چا ہیں ،ہمیں چا ہیں کہ ہم اپنے دل کے اندر جھا تک کر دیکھیں ، ہمیشہ تجی گواہی ہی

آئے گی۔ونیا میں دل کی عدالت سے بڑی عدالت کوئی نہیں۔ اس لیے ہمارے

مشائخ فرماتے ہیں کہ بھی بھی اپنے آپ کو خمیر کی عدالت کے کثیر سے میں کھڑا کر کے

مشائخ فرماتے ہیں کہ بھی بھی اپنے آپ کو خمیر کی عدالت کے کثیر سے میں کھڑا کر کے

یانی ہوجائے گا۔

### اِسْتَفْتِ قَلْبَكَ وَلَوْ اَفْتَاكَ الْمُفْتِيُوْنَ

#### تقوی کی اہمیت:

قرآن مجید میں جتنی تقوی کی اہمیت بتائی گئی ہے، شاید کسی دوسرے مل کی اتن اہمیت نہیں بتائی گئی۔ایک ایک آیت میں دو دواور تمین تمین مرتبہ تقوی اختیار کرنے کا تھم دیا گیا۔ یہ کتنی عجیب بات ہے!اگر پورے قرآن مجید میں اللہ تعالی صرف ایک مرتبة تقوّی اختیار کرنے کا تھم فرما دیتے تو اس کا اختیار کرنا فرض ہوجاتا۔ گر ہر چند آیت تیوں کے بعد ۔۔۔۔۔ اِ تَقُو اللّٰه ، اِ اللّٰه تا کو ایک سانس میں دو مرتبہ دہرائے اندر دو دو مرتبہ بھی فرمایا۔ کوئی آدمی ایک بی بات کو ایک سانس میں دو مرتبہ دہرائے تو اس سے اس کی اہمیت واضح ہوتی ہے۔ الله تعالی ارشاد فرماتے ہیں :
﴿ بِهَا مِنْ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰمِ الللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمِ

ویکھیں! آیت کے شروع میں بھی اِنتھٹو اللّٰہ اور آخر میں بھی اِنتھٹو اللّٰہ فرمیں بھی اِنتھٹو اللّٰہ فرمایا۔ یہاں تو ایمان والوں سے خطاب کیا اور دوسری جگہ سب انسانوں سے خطاب فرمایا:

﴿ يِنَا يُنَهَا النَّاسُ اتَّقُوْ ا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِّنُ نَّفُسٍ وَّاحِدَةٍ وَّ خَلَقَ مِنْهَا ذَوْجَهَا وَ بَتَ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيْرًا وَّ نِسَاءً ا وَّ اتَّقُوا اللَّهَ ﴾ مِنْهَا ذَوْجَهَا وَ بَتَ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيْرًا وَّ نِسَاءً ا وَ اتَّقُوا اللَّهَ ﴾ آيت ايك بى ہے اور اس ميں دومرتبہ تقوىٰ كا تھم ديا۔

### حصول بركت اورتقوي:

تقوی اختیار کرنے سے انسان کی زندگی میں برکتیں آتی ہیں۔آج زندگیوں میں جتنی پریشانیاں ہیں، یہ برکت کے نہ ہونے کی وجہ سے ہیں۔

..... نه مال میں برکت

.....نة توت حافظه مي*ن بركت* 

..... نەعزت مىں بركت

.....نەمىخت مىں بركىت

برکت ختم ہوتی جارہی ہے۔ تقویٰ کے سبب برکت نازل ہوتی ہے اور معصیت کے سبب برکت نازل ہوتی ہے اور معصیت کے سبب برکت زائل ہو جاتی ہے۔ قرآن عظیم الثان میں اللہ تعالیٰ ارشاد فرماتے

: 0%

﴿ وَلَوْ اَنَّ اَهُلَ القُراى امَنُوْا وَاتَّقُوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكْتٍ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ﴾ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ﴾

''اگران بستی دیسوں والے ایمان لاتے اور تقویٰ اختیار اُرتے تو ہم آسان سے اور زمین سے برکتوں کے درواز ہے کھول دیتے''

اللہ والوں کی ہر چیز میں برکت ہوتی ہے۔ کیونکہ وہ راشخین فی العلم ہوتے ہیں۔ ان کے وفت میں برکت آ جاتی ہے۔ وہ تھوڑ ہے وفت میں زیادہ کام کر جاتے ہیں۔ چندمثالیں من کیجیے:

- ⊙ ....حضرت اقدس تھانوی ﷺ کی 925 کتابیں دارالعلوم دیو بندگی لائبریری ہیں موجود ہیں۔ یہ کتابیں انہوں نے بلا واسطہ لکھیں اور جو کتابیں انہوں نے اپنے شاگردوں اور خلفا کو ہدایات دے کر لکھوائیں ، ان کو بھی ملا کر سب کتابوں کی تعداد 2700 بنتی ہے۔ ہم ابھی تک ان کتابوں کو پڑھ بھی نہیں سکے۔
- ایک بزرگ ایسے بھی گزرے ہیں کہ انہوں نے اتنی کتابیں لکھیں کہ جب وہ فوت ہوئے تو ان کی زندگی کے ایام کوان کی کتابوں کے صفحات پر تقسیم کیا گیا تو ہیں صفحے روز انہ کے ہے۔ اب ہیں صفحے روز انہ لکھ دینا کوئی آسان کام نہیں۔ یہ کیا چیز تھی؟ یہ برکت تھی۔
- قوت حافظہ میں بھی برکت تھی۔ ابوز رعدر حمۃ اللہ علیہ کا ایک شاگر دایک مرتبہ رات کو دیر ہے گھر آیا۔ بیوی الجھ پڑی کہ دیر ہے کیوں گھر آیا ہے؟ انہوں نے جواب دیا کہ درس میں تاخیر ہوگئی۔ اس نے کہہ دیا کہ تیرے استاد کو ہی نہیں کچھ آتا ، مجھے کیا آئے گا۔ اس نے غصے میں آکر کہا: اچھا! اگر میرے استاد کو ایک لا کھ حدیثیں یا د نہ ہوں تو تجھے تین طلاق۔

جب رات گزرگئی تو ان کے دماغ ذرا ٹھنڈ ہے ہوئے۔ بیوی نے پوچھا: جی! طلاق واقع ہوئی ہے یانہیں؟ کیونکہ مشروط طلاق تھی۔ وہ اپنے استاد کے پاس پہنچ۔ ابوذ رعدر حمۃ اللہ علیہ سے پوچھا: حضرت! بیدواقعہ پیش آیا ہے، کیا ہمارا زکاح باقی ہے یا نہیں؟ حضرت مسکرائے اور فر ہایا: جاؤ! میاں بیوی کی زندگی گزارو، ایک لا کھ حدیثیں مجھے اس طرح یاد ہیں جس طرح لوگوں کوسورت فاتحہ یا دہوتی ہے۔

# ز مین کی زینت اور تقویی:

یادر کھے! آسان کی زینت ستاروں سے ہے، زمین کے زینت پر ہیز گاروں سے ہے۔ جیسے ہمیں آسان پرستارے جگ مگ کرتے نظر آتے ہیں ای طرح آسان والوں کوزمین پرمقی لوگ یوں جھل مل کرتے نظر آتے ہیں۔

#### معاملات اورتقوي:

یہ تقویٰ فقط کھانے پینے کی حد تک محدود نہیں۔ یہ پوری زندگی پر حاوی ہوتا ہے۔ معاملات میں بھی تقویٰ اختیار کرنا پڑتا ہے۔امام اعظم رحمۃ اللّٰدعلیہ کی زندگی کا مطالعہ کر کے دیکھیے ۔تقویٰ کوسمجھنا ہوتو ان کی زندگی بہترین مثال ہے۔

ابتدامیں ان کی کیڑے کی دکان تھی۔ ایک دن ظہر کے وقت دکان بندگر کے آرہے ہیں۔ جواب دیا: دکان بندگر کے آرہے ہیں۔ کس نے پوچھا: نعمان! آپ کہاں جارہے ہیں؟ جواب دیا: دکان بندگر کے جارہا ہوں۔ پوچھا: حضرت! آئی جلدی؟ فر مایا: ہاں! آج موسم ابرآ لود ہے اور جب آسان پر با دل ہوں اس وقت روشی ٹھیک نہیں ہوتی اور یوں گا مک کو کیڑ ہے کی صحیح کوالٹی کا پیتہ نہیں چلتا ، میں نے دکان اس لیے بند کر دی کہ کوئی کم قیمت کیڑ ہے کو بیش قیمت کیڑ اسمجھ کر دھو کہ نہ کھا جائے۔ اس امت کو تجارت یا تو صدیق اکبر عظامی نے سکھائی یا پھراما ماعظم ابو حذیفہ رحمہ اللہ علیہ نے سکھائی۔

#### احتیاط ہی تقویٰ ہے:

آ دمی کو ہرکام میں احتیاط کرنی چاہیے۔ مثلاً غیر محرم کے چہرے کی طرف دیکھنا حرام ہے اور اگر برقع میں ہواور اس پر نظر پڑجائے تو فتویٰ ہے کہ اس کی اجازت ہے۔ کیکن اس کے کپڑوں کو بھی نہ دیکھنا، اس کا نام تقویٰ ہے۔ لیعن غیرعورت کا چہرہ تو کیا ویکھنا اس کے کپڑوں کو بھی نہ دیکھے۔ بیسو ہے کہ یہ نیلی ہے، پیلی ہے، جو ہے جھے اس سے کوئی غرض نہیں۔

چنانچ متق لوگ بی اللہ کے ولی بنتے ہیں۔اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں:
﴿ إِن أَو لِيَاءُ هُ إِلَّا المُتَقُون ﴾
﴿ إِن أَو لِيَاءُ هُ إِلَّا المُتَقُون ﴾
﴿ إِن أَو لِيَاءُ هُ إِلَّا المُتَقُون ﴾
﴿ إِن كَو لَى وَبَى مُوتِ بِين جُوتِقَى مُوتِ بِين .''
دوسرى جگدارشادفرمانا:

ُ اللَّهُ مِنَ المُتَّقِينُ ﴾ ﴿ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ المُتَّقِينُ ﴾ ﴿ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ المُتَّقِينُ ﴾ ' ' بين'

### (۲).....تواضع:

طالب علم میں دوسری چیز ایسی ہونی جا ہیے جواس کے اور دوسرے بندوں کے درمیان تعلق رکھتی ہے۔اس کو'' تواضع'' کہتے ہیں۔

فِيْمًا بَيْنَهُ وَبَينَ النَّاسِ

یعنی جومعاملات اللہ کے بندول کے ساتھ ہوں اس میں طبیعت کے اندر تو اضح ہو۔ تو اضع کسے کہتے ہیں؟ دوسروں کے سامنے جیموٹا بن کرر ہنا، تو اضع کہلاتا ہے۔

بزابنے كاطريقه:

نفس جا ہتا ہے کہ برد ابن کررہے۔ یا در کھنا! جو برد ا بنا جا ہتا ہے، اسے جا ہے کہ

B (49) B

چھوٹا بن کر رہے۔اللہ تعالیٰ اسے بڑا بنا دیں گے۔چھوٹا بن کے رہنے میں بڑائی ہے۔ ۔

'' جس نے اللہ کے لیے تواضع اختیار کی ، اللہ رب العزت اس کو بلندی عطا فرمادیتے ہیں۔''

نبی علیہ السلام جب کھانا کھانے کے لیے بیٹھتے تھے تو آپ مٹھی آئیں ٹیک نہیں لگاتے تھے۔آپ مٹھی فرماتے تھے کہ میں اس طرح بیٹھ کر کھانا کھا تا ہوں جس طرح غلام اینے آقاﷺ کے سامنے بیٹھ کر کھانا کھا تا ہے۔

حضرت عمر ﷺ دعا ما نگتے تھے:

اَللَّهُمَّ اجْعَلْنِی فِی عَیْنِی صَغِیرًا وَ فِی اَعیُنِ النَّاسِ تَجِیرًا اَ فِی اَعیُنِ النَّاسِ تَجِیرًا "
"اے الله! مجھے لوگوں کی نگاہوں میں بڑا کر دے اور مجھے میری اپنی نگاہوں میں چھوٹا بنادے۔"
میں چھوٹا بنادے۔"

''میں اس ہے اچھا ہوں''

دس پندرہ بندے پڑھانے والے ہوں تو ہرایک کہتا ہے کہ میں اس سے اچھا ہوں۔ مل کررہ ہنے والے ہوں تو الجھ پڑتے ہیں، ہرایک کہتا ہے کہ میں اس سے اچھا ہوں۔ آج لڑائی اس بات کی ہی ہے۔ ہمارے مشاکع ایک عجیب بات فرماتے ہیں۔ ہوں۔ آج لڑائی اس بات کی ہی ہے۔ ہمارے مشاکع ایک عجیب بات فرماتے ہیں۔ وہ کہتے ہیں کہ طلبا کو اس طرح رہنا چا ہیے کہ ہر طالب علم دوسرے دوستوں کو سمجھے کہ اصحاب کہف کی مانند ہوں، جس طرح اصحاب کہف کے کتے کی مانند ہوں، جس طرح اصحاب کہف کے کتے کی مانند ہوں، جس طرح دوستوں کو سنوں کے میاتھ مغفرت کا وعدہ فرمالیا، میرے دوستوں کے صدیقے مولا میری بھی مغفرت فرما دیں گے۔ ہم اس طرح دوسروں کو دوستوں کے میاتھ منازی کے بیاری عطافر ماتے ہیں؟

ہمارے حضران نے تو ہمیں چھپنا سکھایا ہے، مگر آج لوگ چھپنا پسند کرتے ہیں۔اخبار والوں سے جا کرا لجھتے ہیں کہا لیک کالم کی خبر کیوں لگائی ؟ تین کالم کی ہونی چاہیےتھی۔کیااس طرح عزتیں ملیں گی ؟نہیں، بلکہ جھکنے سے عزتیں ملتی ہیں۔

### فقيرانه شان ميں اسلام کی و کالت:

حضرت مولانا قاسم نانوتوی رحمۃ اللہ علیہ کو ایک مرتبہ دعوت دی گئی کہ آپ شاہجہان پور میں آ ہے اور دینِ اسلام کی دعوت دیجیے۔عیسائیوں نے بھی آنا تھا، ہندوؤں نے بھی آنا تھا، ہندوؤں نے بھی آنا تھا،اس کے علاوہ اورادیان کےلوگوں نے بھی آنا تھا اور وہاں پر ہندوؤں نے بھی آنا تھا اور وہاں پر ہرایک نے اپنے دین کی بات کرنی تھی۔اس پر ''مباحثہ شاہجہان پور'' کے نام سے ایک کتا بچہ بھی موجود ہے۔

حضرت نا نوتوی رحمۃ اللّہ علیہ چل پڑے۔حضرت نے ان کو بتا دیا تھا کہ میں ایک دن پہلے ریل گاڑی کے ذریعے پہنچ جاؤں گا۔حضرت اکیلے ہی چلے تھے۔ ابھی حضرت دواشیشن پیچھے تھے ول میں خیال آیا کہ میں نے ان کو بتا دیا تھا کہ ریل گاڑی کے ذریعے آؤں گا،کہیں ایسانہ ہوکہ وہ میرے استقبال کو آجا کیں ،اور میں تو استقبال

کے قابل ہی نہیں ہوں۔ چنانچہ خیال آیا کہ ایک اسٹیشن پہلے اتر جاتا ہوں ، آگے پانچ میل کا فاصلہ ہے ، وہ میں پیدل ہی طے کرلوں گا۔

چنانچہ حضرت ایک اسٹین پہلے اتر گئے اور پیدل چل پڑے۔ راستے میں ایک بڑی نہرعبور کرنی پڑگئی۔ اس کا بل نہیں تھا۔ جب نہرعبور کی تو حضرت کا پا جامہ اس میں بھیگ گیا۔ حضرت نے تہبند باندھ لیا اور پا جامہ کو بچھا دیا تا کہ یہ خشک ہوجائے۔ پھر سوچا کہ اس کوسو کھنے میں تو دیر لگے گی اور اس طرح میرا وقت ضائع ہوگا۔ چنانچہ آپ نے اپنی لاٹھی کندھے پر رکھی اور اس کے پیچھے پا جامہ لاٹکا لیا۔ یہ اسلام کا سفیر اپنی فقیرانہ شان میں جارہا تھا، حضرت اللہ کی یا دمیں مست چلتے رہے۔ حضرت علم کے آفت اور ماہتاب تھے، جبال علم میں سے تھے۔ گر اس فقیرانہ انداز میں کہنچ۔ حضرت رحمۃ اللہ علیہ جب اس شہر میں پنچ تو ایک سرائے میں کمرہ کرائے پر لے کہنچ۔ حضرت رحمۃ اللہ علیہ جب اس شہر میں پنچ تو ایک سرائے میں کمرہ کرائے پر لے کرقیام کرلیا اور سوچا کہ کل میں اپنے وقت پرمجلس کی جگہ پہنچ جاؤں گا۔

ادھر جولوگ انظار کے لیے آئے ہوئے تھے، انہوں نے جب دیکھا کہڑین آچکی ہے اور حضرت ابھی تک نہیں آئے تو وہ جیران ہوئے۔ إدھر دیکھا اُدھر دیکھا گرکہیں نہ ملے۔ان میں سے جو بڑے عالم تھے انہوں نے کہا: بھئ پتا کرو کہ ہوسکتا ہے کہڑین میں نہ آسکے ہوں ، لیٹ ہو گئے ہوں ،کسی اور ذریعے سے پہنچے ہوں اور شہر میں کہیں آگئے ہوں۔

انہوں نے شہر کی سرائے سے پتا کیا تو قاسم نام کے کسی بندے کا نام نہ ملا۔
انہوں نے کہا کہ میں خود پیتہ کرتا ہوں۔ جب انہوں نے خود دیکھا تو انہیں ایک جگہ خورشید حسن کا نام لکھا نظر آیا۔ یہ حضرت کا تاریخی نام تھا۔ حضرت نے اپنے اسی تاریخی نام سے کمرہ بک کروالیا تھا تا کہ کسی کوجلدی پتہ نہ چلے۔ انہوں نے پوچھا: یہ کون ہے؟ منتی نے کہا کہ یہ ایک بہت ہی نازک بدن والے آدمی ہیں۔ حضرت

'' چندلفظ پڑھ لیے تھے، مخلوقِ خدا پہچان گئی، ورنہ تو قاسم اپنے آپ کو ایسے مٹاتا کہ کسی کو پتاہی نہ چلتا۔''

الله تعالیٰ البی سوچ رکھنے والوں کوعز تنیں اور بلندیاں عطافر ماتے ہیں۔

### دارالعلوم د يوبند كے طلبا كى تواضع:

حضرت اقدس تھانوی رحمۃ اللہ علیہ نے جس سال دارالعلوم دیو بند سے دورہ مدیکے کیا تو دارالعلوم کی انتظامیہ نے طلبا کی دستار بندی کے لیے ایک جلے کا اجتمام کیا۔ حضرت اقدس تھانوی کی پھھ اور طلبا کو لے کر اپنے استاد حضرت شخ البند کی خدمت میں چیش ہوئے۔ تو شخ البند نے پوچھا: اشرف علی! کیسے آئے؟ عرض کیا: حضرت! ہم اس لیے حاضر ہوئے ہیں کہ ہم نے بیسنا ہے کہ دارالعلوم کی انتظامیہ ہماری دستار بندی ہوگ تو ہماری دستار بندی ہوگ و البند جلال ماری دستار بندی ہوگ و البند جلال ماری دستار بندی ہوجائے گی۔ لہذا آپ انہیں منع فرمادیں۔ بیس کر شخ البند جلال میں آگے اور فرمانے گئے: اشرف علی! تم ابھی اپنے اسا تذہ کے سامنے ہوتے ہواس میں آگے اور فرمانے گئے: اشرف علی! تم ابھی اپنے اسا تذہ کے سامنے ہوتے ہواس

کسی شاعرنے ایک عجیب شعرکہا ۔

تواضع کا طریقہ سیکھ لو لوگو! صراحی سے
کہ جاری فیض بھی ہے اور جھکی جاتی ہے گردن بھی
ایک اور شاعر نے اس بات کوایک بجیب انداز سے باندھا ۔
جو اہلِ وصف ہوتے ہیں ہمیشہ جھک کے رہتے ہیں
صراحی سرنگوں ہو کر بھرا کرتی ہے پیانہ
جب تک صراحی کا سرنہ جھکے وہ پیانہ ہیں بھر عتی ۔ اس طرح اگر ہمارے اندر بھی
تواضع ہوگی تو اللہ تعالیٰ ہم ہے بھی علم کا فیض جاری فرمادیں گے۔

(۳)....زي<u>د:</u>

طالب علم کے اندر جو تیسری چیز ہونی چاہیے وہ ہے'' زہد'' فیمّا بَیْنَهٔ وَ بَیْنَ الدُّنیّا ''جو بندے اور دنیا کے درمیان ہے۔''

#### زېدكامطلب:

زہد کا کیا مطلب ہے؟ زہد کا مطلب بینہیں کہ چیزیں کم ہوں ،اس کا مطلب ہے،خواہشات کا کم ہونا۔ورنہ تو قیامت کے دن کچھا یسے لوگ ہوں گے جود نیا میں فقرا ہوں گے اور قیامت کے دن قارون کے ساتھ ان کا حشر ہوگا۔اس لیے کہ ان کے دل کی چاہتیں ہی ایسی ہوں گی۔اور کئی دنیا کے بادشاہ ہوں گے اور قیامت کے دن ان کوفقرا کے ساتھ کھڑا کیا جائے گا۔تو دل کی آرز وؤں کے کم ہوجانے کا نام زہد

والم المالية ا

ہے۔طلبا کواس لفظ کوخوب اچھی طرح سمجھنا چا ہیے اور اس کی حقیقہ۔ کو دل میں بٹھانا چاہیے۔

#### قناعت كى فضيلت:

دیکھیے! اللہ رب العزت نے ہمیں ایک بڑے کام کے لیے چنا ہے: ہم آخرت کے طلب گار بنیں، دنیا کی طلب کو چھوڑ دیں۔ دنیا طلبی اور چیز ہے، خدا طلبی اور چیز ہے۔ ہم اللہ کو چھوڑ دیں۔ دنیا طلبی اور چیز ہے، خدا طلبی کے راستے کو اپنایا ہے۔ اس لیے رزق کے معاملے میں ہمیں مجاہدہ بھی آئے تو ہم بخوشی قبول کریں۔ لوگ باتیں کرتے رہیں گے۔ مگر تھوڑی دنیا پر راضی ہوجانا بھی بڑی نعمت ہے۔ حدیث یاک میں آیا ہے:

''جوانسان دنیا میں تھوڑ ہے رزق پر اللہ سے راضی ہو جائے گا، اللہ تعالیٰ قیامت کے دن اس کے تھوڑ ہے عملوں پر راضی ہوجائے گا۔'' رَضِینَا قِسْمَةَ الْجَبَّارِ فِینَا

ہم پراللہ رب العزت کی کتنی رحمت ہے کہ اس نے ہمیں علم کے لیے چن لیا۔ ہمارااللہ تعالیٰ پراحسان نہیں ، بیاللہ رب العزت کا ہم پراحسان ہے۔الحمد ہللہ

> منت سے کہ خدمتِ سلطان ہمی کنی منت از و شناس کہ در خدمت گزارشتن

''اے مخاطب! تو بادشاہ پراحسان نہ جتلا کہ تو بادشاہ کی خدمت کرتا ہے،ارے! بادشاہ کی خدمت کرنے والے تو لا کھوں ہیں یہ بادشاہ کا تجھ پراحسان ہے کہ اس نے مجھے خدمت کے لیے قبول کرلیا ہے۔''

تمام برائیوں کی جڑ:

د نیا کی محبت دل ہے نکال دیجیے کیونکہ بیتمام برائیوں کی جڑ ہے۔حدیث پاک

میں آتا ہے:

حُبُّ الدُّنيَا رَأسُ كُلِّ خَطِيئَةٍ "دنيا كى محبت تمام برائيوں كى جڑے۔"

(3)

اگر دل میں ہوں بھی نہ ہواور آرز و گیں بھی کم ہوں تو پھرعلم کا حصول آسان ہو جاتا ہے۔اور اگر طالب علم ،علم کی طلب میں سنجیدہ نہ ہوتو اس کے لیے بیٹلم ،علم نافع نہیں بن سکتا۔

علمائے کرام کے رزق کی ترتیب:

یا در تھیں! جومقدر میں لکھا ہے وہ یقیناً مل کے رہنا ہے۔لوگ یہ کہتے ہیں کہ جی اگرآ یہ عالم بنیں گے تو کھا کیں گے کہاں ہے؟ ایسا کہنے والے یا تو جاہل ہوتے ہیں یا پھر متجاہل ہوتے ہیں۔ بھئ! عالم بن کرنہیں کھائیں گے تو پھر کب کھائیں گے۔آپ کوئی ایک مثال بیان فر ما دیجیے کہ کوئی حافظ ہویا عالم ہوا ور وہ بھوک پیاس کی وجہ سے ایڑیاں رگڑ رگڑ کر مرگیا ہو۔ کوئی ایک مثال نہیں وے سکتے۔ زیادہ کھا کر مرنے والوں کی مثالیں تو ہم بھی دیتے ہیں۔امامسلم کے ساتھ کیا معاملہ پیش آیا؟ کم کھا کے مرنے کی مثال آپنہیں دے سکتے۔البتہ، یہ عاجز اسی جگہ بیٹھے ہوئے آپ کو مثال وے سکتا ہے کہ بی ایچ ڈی ڈاکٹر ،ایم بی بی ایس ڈاکٹر ،ایم اے،ایم ایس ی کیے ہوئے کتنے بندے ایسے تھے کہ جن کے حالات ایسے بنے کہ وہ بھوک اور پیاس کی وجہ سے ایڑیاں رگڑتے ہوے مرگئے ۔ تو بتا پئے کہ رزق کس لائن پرزیادہ ملا؟ اس علم کی لائن پرزیادہ ملا۔فرق اتناہوتا ہے کہآ پکو دفتر سے ملتا ہوا نظرآ تا ہے کیکن اللہ کی طرف سے ملتا ہوا نظرنہیں آتا۔ بیعلما وہاں سے کھاتے ہیں جہاں سے انبیاء کھایا کرتے تھے۔کیونکہ بیا نبیا کرام کے دارث ہیں۔ان کا رزق بھی اس حساب سے ہے۔جیسے تنخواہ ملنے کی ایک روٹمین ہوتی ہے، کئی جگہوں پر ہاتھ نے دیتے ہیں اور کئی جگہوں پر بنک کے ذریعے دیتے ہیں ، تر تبیب مختلف ہوتی ہے ، اس طرح اللہ تعالیٰ نے رزق کی جوتر تبیب انبیائے کرام کے لیے بنائی تھی وہی علمائے کرام کے لیے بناوی ۔

# خدا پرسی کوئی اور چیز ہے:

. عزیز طلبا! خواہشات کی رو میں نہیں بہنا، بلکہ خواہشات کو تھام لینا ہے۔ جس نے اپنے نفس کے ساتھ بیہ مقابلہ کرلیا، علم کے راستے اس کے لیے کھل گئے۔ اس لیے بایز ید بسطا می فرماتے تھے کہ'' جنت دوقدم ہے''۔ کسی نے پوچھا: حضرت! اس کا کیا مطلب ہے کہ جنت دوقدم ہے؟ فرمایا:''اے دوست! تیرا پہلا قدم تیر نفس پر آئے گاتو تیرا دوسرا قدم جنت میں پہنچ جائے گا''۔ اگرنفس کی خواہشات کو پورا کریں گئے تھا مے حروم ہوجا کیں گے۔ یا در کھنا!

'' نفس پرستی ،شہوت پرستی ، زر پرستی ، زن پرستی ، بیسب کی سب بت پرستی کی اقسام ہیں ،خدا پرستی کوئی اور چیز ہے۔''

ہم نے خدا پرسی سیکھنی ہے،خواہشات کی پوجانہیں کرنی۔ہم نے اپنے رب کی مرضی پڑھل کرنا ہے۔ بیسب سے مشکل کام ہے۔ جس طالب علم نے اپنے نفس کو لگام دے دی،لو ہے کالنگوٹ باندھ لیا۔اس کے لیے پھراللّہ تعالیٰ علم کے درواز ہے کھول دیتے ہیں۔

اگریہ تین چیزیں ہمارے اندر آجا کیں تو ہمیں رسوخ فی العلم نصیب ہوجائے ا۔

# الچھمعلم کے دواوصاف:

اب دو باتیں اساتذہ کی خدمت میں ....ادب کے ساتھ ....اچھے معلم کے اندردو چیزیں ہونا ضروری ہیں۔

#### raf Milin 1888 (157) 1888 (157) 1888 (157) 1888 (157) 1888 (157) 1888 (157) 1888 (157) 1888 (157) 1888 (157)

# (۱)....اخلاص

پہلی چیز اخلاص ہے۔ پڑھانے کا مقصد اللّٰہ کی رضا ہو۔اخلاص ہو۔ جب اخلاص ہوتا ہے تو پھرانسان جھگڑوں ،فتنوں میں نہیں پڑتا،سازشوں میں نہیں الجھتا، بلکہ وہ دین کا کام کرتا ہے۔ہمارے حضرات اخلاص کا بہت زیادہ خیال رکھتے ہتھے۔

## سيدناعلى كرم الله وجهه كااخلاص:

سیدناعلی کرم اللہ و جہدا یک کافر کے سینے پر پڑھ گئے۔ چا ہتے تھے کہ خنجر مارکر
اس کا کام تمام کردیں ای لیجے اس کا فرنے آپ کے مند پرتھوک دیا تو آپ پیچھے ہٹ
گئے۔ اس نے پوچھا: آپ نے جھے قتل کیوں نہ کیا؟ فرمایا: میں تجھے پہلے اللہ کے لیے
قتل کرنا چاہتا تھا، جب تم نے تھوک بچینکا تو مجھے غصد آیا، للبذااگر اب میں تجھے قتل کرتا
تو اس میں میرا ذاتی انتقام بھی شامل ہوتا، اس لیے میں پیچھے ہٹ گیا، کیوں کہ میں کوئی
کام اپنی ذات کے لیے نہیں کرنا چاہتا۔ ایسے غصے کے عالم میں بھی اس بات کا لحاظ
رکھا کہ میرا ہر کام اللہ کے لیے ہو۔ اس کوا خلاص کہتے ہیں۔

### شيخ الهند 🎥 كااخلاص:

حضرت اقدى تقانوى رحمة الله عليه فراغت كے بعد جب ابتدا ميں كا نپورتشريف كے تو دہاں قريب كے ديہا توں ميں كچھ اہلِ بدعت بھى تضے دحضرت نے ايك مرتبہ جلسه ركھوا يا اور اپنے استاذ محترم حضرت شيخ الہند ﷺ كو بلوا يا۔ چنا نچ حضرت شيخ الہند ﷺ كو بلوا يا۔ چنا نچ حضرت شيخ الہند ﷺ تشريف لائے اور انہوں نے بيان كر ناشروع كر ديا۔ الله كی شان كه حضرت اقدى خانوى على جومضمون جا ہے تھے كہ يہ بيان ہو، وہى شروع ہوگيا۔

عین اس وقت جب مضمون اینے عروج پرتفا اس وقت ایک عالم مولا نالطف الله علی گرهی ، جو مائل به بدعت تنصے ، اس طرف تھوڑ اسا میلان تھا ، وہ آھئے۔اب ان کو دیکے کرلوگوں نے یہ سوچا کہ اب وقت ہے یہ صفحون بیان ہونے کا۔ جیسے ہی وہ آکر بیٹے بھے ،حضرت شخ الہند ہا نے فر مایا، 'و مَاعَلَینا اِلّا البَلاغ ' اور بیٹے گئے۔

اب اس طرح ایک دم تقریر بند کر دینا بڑا مجیب سالگا۔ خیر! بعد میں کھانے کے دستر خوان پر ہی مولا نافخر الحسن نے شخ الہندرجمۃ الله علیہ سے پوچھا: بھی ! وہ تو وقت تھا بیان کرنے کا ،مولا نالطف الله آئے تھے تو آپ نے توایک دم ہی تقریر بند کر دی۔ آپ نے فر مایا: ہاں! مجھے بھی یہی خیال آگیا تھا کہ اب وقت آیا ہے مضامین بیان کرنا کرنے کا ،کین میرے دل میں خیال آگیا تھا کہ اب وقت آیا ہے مضامین بیان کرنا کرنے کا ،کین میرے دل میں خیال آیا کہ اب میں اس کوسنانے کے لیے یہ بیان کرنا ہوں تو یہ اس کے لیے ہوگا اللہ کی رضا کے لیے نہیں ہوگا چنا نچہ میں نے بیان بند کر دیا۔ بیان میں بھی اس بات کا خیال ہوتا تھا کہ میری ہر بات اللہ کی رضا کے لیے دیا۔ بیان میں بھی اس بات کا خیال ہوتا تھا کہ میری ہر بات اللہ کی رضا کے لیے دیا۔ بیان میں جھاڑے ختم ہوجا میں۔

اخلاص کی اہمیت:

اخلاص اتنا ضروری ہے کہ ﷺ علم کی کمی عمل پوری کرجا تا ہے، ﷺ کمی اخلاص پوری کرجا تا ہے، مگر ﷺ ……اخلاص کی کمی بھی پوری نہیں ہوا کرتی ۔۔

اسى كيے فرمایا:

﴿ اَلَا لِلّٰهِ الدِّينُ الْخَالِصُ ﴾ ﴿ اللهِ اللهِ الدِّينُ ﴾ ﴿ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّينُ ﴾

ملاوث والے عمل الله كويسند نہيں:

بھئ ! ملاوٹ کوتو دنیا بھی پسندنہیں کرتی ۔حدیث پاک میں نبی علیہ السلام نے

فرمايا:

#### مَن غَشَّ فَلَيسَ مِنَّا ''جس نے ملاوٹ کی وہ ہم میں سے نہیں۔''

جس طرح لوگ مادی چیزوں میں ملاوٹ کو پسندنہیں کرتے اس طرح اللہ تعالیٰ بھی عمل میں ریا کی ملاوٹ کو پسندنہیں فر ماتے۔اگر آپ کو ملاوٹ والی کوئی چیز ملے تو آپ اس کوفوراً رد کر دیتے ہیں۔اللہ رب العزت بھی اس طرح فر ماتے ہیں کہ اگر ملاوٹ والے عمل لاوٹ والے تو ہم بھی ان کور دکر دیں گے۔

### ہیرے اور اخلاص کی قیمت میں فرق:

ایک مرتبہ مجھے کوئی صاحب دعا کروانے کے لیے لے گئے۔ مجھے پوچھنے

گا: حضرت! آپ نے بھی ہیرے دیکھے ہیں؟ میں نے کہا: میں اس لائن کا بندہ نہیں

ہوں اور نہ ہی مجھے اتنا شوق ہے۔ انہوں نے ایک چھوٹی سی ڈبیا نکالی اور اس کو کھول

کر مجھے ہیرے دکھانے لگا اور ساتھ ساتھ بتانے بھی لگا کہ بیات لاکھ کا ہے اور بیہ

اتنے لاکھ کا ہے۔ ہم تو سن س کر جیران ہور ہے تھے۔ ہم نے کہا: بیتو بہت چھوٹے ہیں
اور آپ قیمت زیادہ بتا رہے ہیں۔ کہنے لگے: حضرت! ہیرا ہمیشہ چھوٹا ہوتا ہے لیکن
قیمت میں بڑا ہوتا ہے۔ اس وقت مجھے یہ بات یا وآئی کہ قیامت کے دن اخلاص نیت

گی وجہ سے جن لوگوں نے کام کیے ہول گے ان کے ممل اگر چہ چھوٹے ہوں گے مگر

اللہ کے ہاں ان کی قیمت بڑی موٹی ہوگی۔

#### مفتى محرحسن على كااخلاص:

مفتی محمد حسن طالانے لا ہور میں جامعہ اشر فیہ کی بنیا در کھی ۔ شروع میں وہاں حچوٹی سی مسجد تھی اور حچوٹا سا جامعہ تھا۔ ان کے ہاں ایک ایسے عالم تھے جو حضرت مدنی کی طرف پنجھ میلان رکھتے تھے۔ای طرز پر جلسے اور سیاست .....اوران کا مزاج ذکر والا تھا۔وہ نیک انسان تھے۔انہوں نے سوچا کہ اکٹھار ہے میں آپس میں کہیں کوئی تناز عدنہ کھڑا ہوجائے ،اختلاف رائے نہ بڑھ جائے ،للہٰداایک سال کمل ہونے پرانہوں نے ای محلے میں ایک دوسرے جامعہ کی بنیا در کھ دی۔

جب انہوں نے نئے جامعہ کی بنیا در کھی تو لوگ بڑے غصے میں آ گئے کہ اگر نیا جامعہ بنانا ہی تھا تو کہیں دور بنا لیتے۔ای جگہ،قریب میں نیا جامعہ کھولنا مناسب تو نہیں۔

اس سلسلے میں مفتی محمد حسن کے ایک صاحبزادے نے ابنا ایک واقعہ مجھے خود
سنایا۔ فرمانے گلے کہ میں کسی کام کے لیے جار ہاتھا تو ایسے ہی میں نے اپنے والد
صاحب سے کہا: اہا تی! آپ نے دیکھ لیا ہے کہ انہوں نے ہمارے ساتھ کیا کیا؟ ابا
جی نے بوچھا: بیٹا! کہاں جارہے ہو؟ میں نے کہا: امی نے کام بھیجا ہے۔ فرمایا: تم وہ
کام کر کے آؤ، پھرمیں آج تمہیں اخلاص کا درس دوں گا۔

جب میں وہ کام کر کے واپس آیا تو بیٹھ گیا اور عرض کیا ابا جی ! بتا کیں۔ تو والد صاحب نے مجھ سے پوچھا: یہ بتاؤ کہ اگر تمہار ہے سر پر کسی چیز کا اتنابو جھ ہو کہ تم سے اٹھایا نہ جار ہا ہو جتی کہ گردن ٹو شے کے قریب محسوس ہو ہتم انتہائی مشقت کے ساتھ وہ بوجھ لے کر جار ہے ہو، اور ایسے وقت میں کوئی دوسرا بندہ آجائے اور یہ کہے کہ تم آدھا بوجھ مجھے وے دو میں اپنی ذمہ داری سے منزل پر پہنچا دوں گا، تو اب بتاؤ کہ وہ تمہارا دوست ہوگا۔ تو ابا جی نے دوست ہوگا یا تہارا وثمن ہوگا ؟ میں نے کہا: حصرت! وہ دوست ہوگا۔ تو ابا جی نے فرمایا: دیکھو بیٹا! یہا تنابر اشہرتھا اور اس میں بہا کی دار العلوم تھا اور استے بوے شہر کی مسئولیت کا بوجھ صرف ہمارے سر پر تھا، اب ایک دوسرا مدرسہ بن گیا ہے اور یوں مسئولیت کا بوجھ صرف ہمارے سر پر تھا، اب ایک دوسرا مدرسہ بن گیا ہے اور یوں قیامت کے دن جو پوچھا جائے گا اس کا بوجھ تقسیم ہوگیا، اب ان بوجھ تقسیم کرنے

والوں کو دوست سمجھیں یا دشمن سمجھیں؟ سبحان اللہ! کتنے بڑے مسئلے کو کتنے پیار سے طل<sup>.</sup> کر دیا۔اس کوا خلاص کہتے ہیں۔

### مولا ناحسين احمد مدني 🎥 كااخلاص:

خفزت مولا ناسید حسین احمد مدنی رحمة الله علیه کوالله تعالی نے ایسا ور دعطا فر مایا تھا کہ وہ چا ہے تھے کہ فرنگی یہاں سے دفع ہوجائے اور ہم اپنے دین والی زندگی کوممل میں لاسکیس۔ چنانچہ وہ اس کے لیے بہت متحرک رہتے ہتھے۔اوران کی طبیعت الی تھی کہ جب ان کے پاس کوئی مہمان آتا تھا تو وہ مہمان کو بڑے بیار سے رکھتے ہتھے۔اس کی خوب خدمت بھی کرتے ہتھے اور اس کو بڑی مجہان آتا تھا اور اس کو بڑی مجبت دے کر ہیجتے ہتھے۔

حضرت اقدس تھانوی رحمۃ الله علیہ کی طبیعت میں اصلاح کا پہلو غالب تھا۔ جو طالب بھی آتے ہے حضرت ان پرختی فر ماتے ہے۔ کیونکہ جب تک بختی نہ ہوتب تک اصلاح نہیں ہوتی .....حضرت مرشد عالم رحمۃ الله علیہ فر مایا کرتے ہے کہ ' دب نہ ہوتو اوب پیدا نہیں ہوتا'۔ اس لیے بختی کرنی پرخی ہے۔ گرمشائخ کی بختی بھی الله کی رضا اوب پیدا نہیں ہوتا'۔ اس لیے بختی کرنی پرخی ہے۔ گرمشائخ کی بختی بھی الله کی رضا کے لیے نہیں ہوتی ..... چنا نچہ حضرت اقد س کے لیے نہیں ہوتی ..... چنا نچہ حضرت اقد س کے ایے نہیں ہوتی ہے۔ اپنے حضرت اقد س کے ایم ناتا تو حضرت اس کا بستر اٹھوا کر باہر نکال دیتے تھے۔ جیسے حضرت مجذوب ہے کوئی بات ہوگئی تھی تو حضرت بھی نے فرمایا کہتم اپنا بستر اٹھاؤ اور یہاں سے چلے جاؤ۔ گر باہر تو ملاب صادق تھے۔ انہوں نے سوچا کہ حضرت نے تو مجد ہے تی نکالا ہے نا مجد کے باہرتو میں بیٹھ سکتا ہوں۔ چنا نچہ وہ در واز ہے کے سامنے بیٹھ گئے اور جب در واز ہ کے باہرتو میں بیٹھ سکتا ہوں۔ چنا نچہ وہ در واز ہے کے سامنے بیٹھ گئے اور جب در واز ہ کے کا ہرتو میں سیٹھ سکتا ہوں۔ چنا نچہ وہ در واز ہے کے سامنے بیٹھ گئے اور جب در واز ہ کے کا ہرتو میں سیٹھ سکتا ہوں۔ چنا نے وہ در واز ہے کے سامنے بیٹھ گئے اور جب در واز ہ کے سامنے بیٹھ گئے اور جب در واز ہ کے ایم اس کے باہرتو میں سیٹھ سکتا ہوں۔ چنا نچہ وہ در واز ہے کے سامنے بیٹھ گئے اور جب در واز ہ کیس سے بیٹھ گئے اور جب در واز ہوئے وہ ہیں در ہے تھے۔ اسی طرح کی دن گنا سے کھیں کے ۔ وہ وہ ہاں سے گئیس وہاں سے ۔ ایک دن حضرت بڑے تھے۔ اسی طرح کی دن گرا

نے اسے بھیج بھی دیا تھا اور بیاتنے دنوں سے دروازے پر ہی بیٹھا ہے۔حضرت نے اپنے ایک خادم سے کہا: جا کراس سے پوچھو یہ جا ہتا کیا ہے؟ حضرت مجذوب شاعر تھے۔ چنانچہ انہوں نے جواب میں ایک شعر لکھ کر بھیجا۔

اُ دھر تو در نہ کھولے گا اِدھر میں در نہ جھوڑوں گا حکومت اپنی ہے اُدھر تیری اِدھر میری حضرت کو یہ بات اتنی پیندا کی کہاسی وقت ان کو بلایا اور ان کی غلطی کومعاف کر

وياب

ادھر حضرت مدنی ہے آنے والے مہمانوں کے ساتھ بہت پیار محبت سے پیش آتے ہے۔ ایک آدی حضرت مدنی ہے ہیں آیا۔ حضرت رحمۃ اللہ علیہ نے اس کو کھانا بھی کھلایا، پاس بھی بٹھایا، اچھی اچھی یا تیں بھی سنا کیں اور رات کو جب سونے لگا تو حضرت نے اس کے پاؤں بھی د بائے۔ جب اس نے بنفسی کا بیمالم ویکھا تو کہنے لگا: حضرت ایہ ہوانا دین۔ آپ تو بندوں کے ساتھ ایسے پیش آتے ہیں ان کا قربان ہونے کو دل جا ہتا ہے اور آگر حضرت تھانوی کے پاس چلے جا کیں تو وہاں تو قربان ہونے کو دل جا ہتا ہے اور آگر حضرت تھانوی کے پاس چلے جا کیں تو وہاں تو یوں گئی ہوتی ہے۔

دیکھیں! اختلاف دائے ہوتو عام طور پر بندہ تیلی لگا دیتا ہے۔ اسکے دن تھوڑی ی بات کی اور اس کو بھڑکا دیا ، گرنہیں ، یہ ہمارے اکا برکا اظلامی تھا کہ جب اس نے ایک بات کی اور اس کو بھڑکا دیا ، گرنہیں ، یہ ہمارے اکا برکا اظلامی تھا کہ جب اس نے ایس بات کی تو حضرت مدنی نے فور آ کہا: بھٹی نہیں ، ایسی بات نہیں ہے ، ہم معالے کو سمجھے ہی نہیں۔ اس نے پوچھا: حضرت معاملہ کیا ہے؟ فرمایا: دیکھو! جو بڑے سرجن ہوتے ہیں وہ انسان کے اندر سے پیٹ وغیرہ لکال کر چیرا دیتے ہیں اور اس کو نچوڑ کر کالے ہیں ، اس وقت بند ہے کو تکلیف محسوس ہوتی ہے۔ اور جب وہ بندہ کم پوڈر کے پاس آتا ہے تو کم پوڈر اس پر مرحم لگا کر پیار سے اس کو بند کر دیتا ہے ، حضرت کی کیفیت

سرجن کی مانند ہے اور میری کیفیت ایک کمپوڈ رکی مانند ہے۔ بیدا خلاص تھا ہمارے اکابر میں۔

### داغی عملوں کے بدلے جنت:

آب اگر بازار پھل لینے کے لیے جائیں اور آپ کوا یک روپے کے بدلے میں کوئی داغی سیب دے دے تو آپ قبول نہیں کریں گے۔کوئی گلا ہوا کیلا دے دے تو آپ کہتے ہیں: جی! تو لئے کی بھی ضرورت نہیں۔ جس طرح ہم ایک روپے کے بدلے میں گلے ہوئے کھل کو تو لئے کی بھی اجازت نہیں دیتے، بالکل ای طرح قیامت کے دن اللہ رب العزت اپنی جنتوں کے بدلے میں ریا والے گلے ہوئے مملوں کومیزان پر تلنے ہی نہیں دیں گے۔اللہ تعالی ارشا دفر ماتے ہیں:

#### ﴿ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيامَةِ وَزُنًّا ﴾

اللہ تعالیٰ فرما کیں سے کہ تم ایک روپے کے بدلے میں داغی کھل کو قبول نہیں کرتے ہے، میں جنتوں کے بدلے میں تمہارے داغی عملوں کو کیسے قبول کروں۔آپ کی دنیا QCC (کوالٹی کنٹرول سنٹرز) بناتی ہے۔ ہر بندہ کہتا ہے کہ میں نے پیسے دینے ہیں اس لیے جھے چیز کی کوالٹی چاہیے۔اللہ رب العزت نے بھی جنتیں دبنی ہیں ، ابی رضاد بنی ہے، اس لیے اللہ تعالیٰ کو بھی عملوں کی کوالٹی چاہیے۔

#### خسارے کا سودا:

یادر کھے! یہ جو دنیا تعربینس کرتی ہے ، اکرام کرتی ہے اور عزت کرتی ہے یہ بندے کے مملوں کا اجر ہوتا ہے جومل رہا ہوتا ہے .....ہم ایک مرتبہ بیٹھے ہوئے تھے۔ ان دنوں ہمارے ایک انجینیئر ووست کسی مشکل میں پھنس مجھے تھے، انہیں چیبوں ک ضرورت تھی۔ وہ بے چارے بہت آزردہ تھے کہ میرے پاس وسائل نہیں ہیں اور ب

کام کرنا بھی ضروری ہے۔

اسے میں ان کو کیشیر کا فون آیا کہ آپ آگر پینے لے جا کیں۔ وہ فون س کر برنے خوش ہوئے اور خوش خوش کیشئر کے پاس کہ مجھے میں پچپیں ہزار ملیں گے اور میرا کام ہوجائے گا۔ لیکن جب وہ تھوڑی دیر کے بعد واپس آئے تو ان کی آٹھوں میں آنسو تھے۔ ہم نے پوچھا کہ کیا بنا؟ کہنے گئے: جی ! بس کیشئر کو خلطی ہوئی۔ واؤ چر تو میرے بی نام کے تھے۔ میرے بی نام کے تھے گران کی اوائیگی ہو چکی تھی اور ان پر مہر لگانا بھول گئے تھے۔ میرے بی نام نے تاریخ دیکھی اور ملایا توریکارڈ نے بتایا کہ یہ پہلے پے آف ہو چکے ہیں۔ جب اس نے تاریخ دیکھی اور ملایا توریکارڈ نے بتایا کہ یہ پہلے ہے آف ہو چکے ہیں۔ لہٰذا اس نے کہا ہے کہ اب تو میرے یاس کچھنیں۔

جباس نے یہ بات کی تو فورا میر ہے ذہن میں یہ بات آئی کردیکھو! یہ بندہ امید لے کر گیا تھا کہ جھے کیشر سے نقدی ال جائے گی، گر اکا اداشدہ) واؤچ کی وجہ سے اس بندے کے ہاتھ کچھ نہ آیا۔ یا در کھنا! جن عملوں کوہم دنیا کی ناموری کی وجہ سے کرتے ہیں، یہ سب ہمار ہے پیڈ آف واؤچ ہیں، قیامت کے دن جب اللہ کے پاس جا کیں گے تو فرما کیں گے، اے میر ہندے!''فقد فیڈ نی ''یتو پیڈ آف ہو بچے ہیں، جمہیں و نیا ہیں ہی اس کا اجرال چکا ہے، کی نے تہماری تعریف کر وی تقی ،اب ہمارے پاس اس کا کوئی بدلہ نہیں۔ سوچے کہ اس وقت ہمارا کیا ہے گا؟ کیا یہ مشقتیں ہم دولفظوں کی خاطر اٹھاتے ہیں۔ اگر ہم اس لیے عمل کرتے گئی ہی بخرے ہیں کہ کوئی بندہ اجھے الفاظ کہہ دے یا ہمیں اچھا بچھ لے تو پھر ہم نے بڑے بھر ہم نے بڑے خدارے کا سودا کر لیا۔ کاش! ہم اللہ رب العزت کی رضا کے لیے عمل کرتے اور د نیا ہے کوئی طبع عوق ہوتی۔ تیا مت کے دن ہمیں اس کا اجرماتا، پھر پا چلا کہ اللہ تعالی کے سے کوئی طبع عوق ہوتی۔ تیا مت کے دن ہمیں اس کا اجرماتا، پھر پا چلا کہ اللہ تعالی کے باران عملوں کی گئی قدرو قیت ہے!

### ریا کے باعث ثواب سے محرومی:

# (۲)....اخضاص

معلم کے اندر دوسری صفت ' موخشاص' کی ہونی جا ہے۔ کونکہ تعلیم وتعلم کا م فقط اخلاص سے ہیں نہیں چلنا۔ آ دمی مخلص تو ہزا ہولیکن ہلے ہی کچھ نہ ہو، آتا جاتا کچھ نہ ہو، تو طلبا کو کیا فائدہ ملے گا؟ اس کا اخلاص کس کا م آئے گا؟ چنا نچے معلم کو ہراس کتاب میں تصص حاصل ہوجس کو یہ پڑھانا چا ہتے ہیں۔ اگر نہیں تو ا ہے مطالعہ سے یہ چیز حاصل کریں۔ بھی! جب ایک مضمون ملا ہے تو اس میں کما حقہ محنت سیجے تا کہ تہ چیز حاصل کریں۔ بھی! جب ایک مضمون ملا ہے تو اس میں کما حقہ محنت سیجے تا کہ آ ہے کواس کے یڑھانے میں تصص حاصل ہوجائے۔

ہمارے اکابر علائے و یوبند میں یہ دونوں نعتیں تھیں۔اخلاص بھی تھا اور اختصاص بھی تھا۔ان کے پاس جومضمون ہوتا تھا اس مضمون میں وہ بادشاہ ہوتے

#### طلبا کی استعداد بنانے کا طریقہ:

وارالعلوم کی طرف ہے''شرح تہذیب' پڑھانے کی ملق تھی تو سب سے پہلے طلبا کو ''قال اقول' رسالہ پڑھاتے تھے۔ پھر''ایباغو جی' پڑھاتے تھے۔ ایسا کیوں کرتے تھے؟ استعداد بنانے کے لیے۔اس کے بعداصل کتاب شرح تہذیب پڑھایا کرتے تھے۔اور آج حالت یہ ہے کہ جن کو شرح تہذیب دی جاتی ہے، پورے سال میں اس کو ہی ختم نہیں کر پاتے۔استعداد مسلم کی ہوتی تھی اور پڑھاتے مرقات تھے، آج پڑھامسلم رہے ہوتے ہیں اور استعداد مرقات کی ہوتی ہے۔آج اختصاص کی کی ہے۔وعظ کر کے طلبا کو بھگتا دیتا استعداد مرقات کی ہوتی ہے گہریئل کی باتھ دیا تو آسان کام ہے گریئل کے ساتھ دیا نتہیں، بلکہ یہ بدویا نتی کہلاتی ہے۔

# ينخ الهنداورا خضاص علم:

ایک مرتبہ حضرت شخ البند نے اپنی لاجریری کی کتابوں کونکاوا کر دھوپ میں رکھا۔۔۔۔۔ برسات کے موسم میں چیزیں بھیگ جاتی ہیں اور دیمک لگ جاتی ہے۔۔۔۔۔۔ جب دھوپ میں کتابیں رکھیں تو ایک طالب علم نے کہا: حضرت! ایک کتاب کے پانچ چھ صفحے دیمک نے کھا لیے ہیں۔ فرمایا: پھر دوسرا کاغذ ساتھ جوڑ دو۔ اس نے دوسرا کاغذ لگا دیا اور پوچھا: حضرت! اب کیا کروں؟ فرمایا: جوعبارت حذف ہوچگی ہے وہ ککھ دو! اس نے کہا: حضرت! جھے تو وہ زبانی یا ونہیں ہے اور اصل نخر بھی نہیں ہے، میں نے تو یہ کتاب کی سال پہلے پڑھی تھی، اب بھول چکا ہوں، کسے کتھوں؟ فرمایا: بس بھول سے؟ کون سی کتاب ہے؟ کہنے لگا: حضرت! میدی۔ کسے کھوں؟ فرمایا: بس بھول سے؟ کون سی کتاب ہے؟ کہنے لگا: حضرت! میبذی۔ الہندرجمۃ اللہ علیہ نے وہیں بیٹھے بیٹھے زبانی چھ صفح کی عبارت اس نے کوکتاب پر کھوا الہندرجمۃ اللہ علیہ نے وہیں بیٹھے بیٹھے زبانی چھ صفح کی عبارت اس نے کوکتاب پر کھوا

دی۔ان کو بوں اختصاص حاصل تھا۔

مولانا يجيٰ على اوراخضاصِ علم:

مولانا کیجیٰ طاف نے مسلم کو دوسو مرتبہ تنہیج پر پڑھا۔ ان حضرات کی زندگی ہی کتابوں میں گزری تھی۔ان کو کثر ت ِمطالعہ کا ایبا شوق ہوتا تھا۔ جب تخصص حاصل ہوگا تو پھردیکھیے گا کہ کام کیسے بنتا ہے؟

مولا نا نورمحمه بونتوى على اورا ختصاص علم:

حضرت شخ الہند ﷺ کا ایک شاگر د تھا۔ اس کا نام مولانا نور محمہ پونٹوی علاقے تھا۔
آپ نے شرح ما قاعال پونٹوی دیکھی ہوگی ..... پوند ایک شہر ہے جوملتان سے ستر
پہھتر میل دور مین سڑک سے تمیں کلومیٹر اندر ہے۔ طلبا تمیں کلومیٹر پیدل سفر کر کے سر
پرسامان اٹھا کر ان کے پاس پڑھنے کے لیے جاتے تھے۔ اس گاؤں میں تمین سوطلبا
ان کے پاس پڑھا کرتے تھے۔ وہاں تا تکہ بھی نہیں جاتا تھا۔ طلبا اپنا سامان سر پر اٹھا
کروہاں جاتے تھے۔

ایک دلچسپ بات آپ کو بتا دوں۔طلبا خود پڑھیں یا نہ پڑھیں، یہ جاتے وہیں ہیں جہاں پڑھائی اچھی ہو، یہ کی بات ہے۔

علامہ شریف کشمیری مال خیر المدار سے قاسم العلوم آگے تو ایک طالب علم بھی قاسم العلوم پہنچ گیا۔ ایک استاد نے اس کو دیکھا تو پوچھا: آپ یہاں کیے؟ کہنے لگا:
اس لیے کہ شیخ الحدیث صاحب آگے ہیں۔انہوں نے کہا: شیخ الحدیث صاحب تو بخاری شریف پڑھا کیں گے اور تو ابھی مرقات کے درج میں ہے،اس سے بخفے کیا فاکدہ ہوگا؟ کہنے لگا: حضرت! جہاں بڑے استاد محنت کرنے والے ہوں وہاں چھوٹوں کوخود بخودمخود محنت کرنے والے ہوں وہاں جھوٹوں کوخود بخودمخود محنت کرنے والے ہوں وہاں

الله تعالى في مولانا نورمحد بونوى رحمة الله عليه كوكيا مقام عطافر مايا تقا؟ مولانا خيرمحد جالندهرى رحمة الله عليه في ايك مرتبه مدرسه كسالانه جليه مين اكابرين كى موجودگى مين مولانا نورمحد بونوى رحمة الله عليه كي بارے مين كها بحس النحاق تشريف لائے مين مالين كاكسى كو وسمس النحاق "كهنا كوئى معنى ركھتا ہے۔ لائے ميں مالين كاكسى كو وسمس النحاق" كهنا كوئى معنى ركھتا ہے۔

ان کوعلم میں اتنا کمال حاصل تھا کہ فرمایا کرتے تھے:اگر ساری دنیا ہے شرح جامی صبط کرلی جائے ، مٹا دیا جائے اور کوئی آ دمی نور محمد کے پاس آ کر کہے کہ شرح جامی کی ضرورت ہے تو میں اس متن اور حاشیے کے ساتھ شرح جامی دوبارہ تکھوا سکتا ہوں۔ان کو بیا خضاص حاصل تھا۔

پھراللہ تعالیٰ نے ان کو دو عظیم شاگر د دیے۔عباد اللہ۔ دونوں کا نام عبداللہ تھا۔
ایک عبداللہ بہلوی ہے۔ ماشاء اللہ وہ شیخ طریقت بھی ہے اور مفسر قرآن بھی ہے۔ جب حضرت مولا نا نور محمہ پونٹوی عظیا شجاع آباد میں آئے ہے تھے تو عبداللہ بہلوی رحمۃ اللہ علیہ دارالعلوم کے تمام طلباہے کہہ دیا کرتے ہے کہ ان کی جو تیوں کوکوئی ہاتھ نہ لگائے ، یہ اعز از میں حاصل کروں گا۔ چنا نچہ جب شیخ آئے ہے تھے تو دارالعلوم کے مہتم مولا نا عبداللہ بہلوی رحمۃ اللہ علیہ حضرت کے جوتے خود اٹھایا کرتے ہے۔ دوسرے شاگر دمولا ناعبداللہ درخواتی رحمۃ اللہ علیہ حضرت

ایسے شاگردوں کے آنے کی وجہ بھی عجیب تھی۔اس کے پیچھے شنخ البند کے وہ اس کے پیچھے شنخ البند کے وہ اس کے پیچھے شنخ البند کے وہ اس کے پیچھے شنخ البند کے اس کے بیچھے شنخ البند کے اس کے میں آتے ہے اس دورانِ تعلیم میرات کو چھپ کر جس راستے سے حضرت دارالحدیث میں آتے ہتے ،اپ عمارے کے ساتھ اس راستے کی صفائی کیا کرتے ہتے۔ایک رات شنخ البندر حمۃ الله علیہ نے د کھے لیا۔انہوں نے بلاکر پوچھا: نور محمہ! کیا کر رہے ہو؟ عرض کیا:حضرت آپ اس راستے کے درین کا درس دینے آتے ہیں، میراجی چاہتا ہے کہ میں اس راستے کو

صاف کروں گر جماڑو کے بجائے میں اپنے تماہے سے صاف کرتا ہوں۔ بس بیہ سنتے ہی استاد کے دل میں محبت آئی اور استاد نے دعاد ہے دی۔ ان کی دعا کام آگئی اور الله تغالی نے ان کوشس النجا ق مولانا نور محمد پونٹوی رحمة الله علیہ بنا دیا۔ یوں طلباء اپنے اسا تذہ سے دعا کیں لینتے ہتے۔

# علمي كاموں كىلكن:

جب اخلاص بھی ہواور اختصاص بھی ہوتو پھر بندے کے اندر ایک لگن ہوتی ہے اور وہ اس لگن کے ساتھ اپنے کام میں گن ہوتا ہے۔ پھراس کے سامنے ایک مقصد ہوتا ہے اور وہ اوھراُدھر کی باتوں پر توجہ ہیں ویتا۔ مولا ٹا کینی کے دل کے اندرخواہش پیدا ہوئی کہ میں دھوپ میں بیٹھ کر گنا چوسوں۔ چنا نچے سوچا کہ جب فرصت ملی تو چوسوں گا۔ ان کو بیں سال تک گنا چوسنے کی فرصت ہی نہ ملی ۔ وہ ہر وقت علمی کام میں مشغول ہوتے سے اور وقت فارغ ہی نہیں ہوتا تھا۔ جب اختصاص حاصل کریں گے تو آپ ہر وقت کتب کے مطالعہ میں گئے رہیں گئے رہیں گئے رہیں گئے کہ میں کئے رہیں گئے کہ ہے کہ اور کتابوں کا کاغذ کفن نظر آئے گا اور اور ھنا بچھونا نظر آئے گا۔ پھر مدرسہ وطن نظر آئے گا اور کتابوں کا کاغذ کفن نظر آئے گا۔ اور گیا ور کتابوں کا کاغذ کفن نظر آئے گا۔ گا۔ گھر مدرسہ وطن نظر آئے گا اور کتابوں کا کاغذ کفن نظر آئے گا۔ گا۔ گھر مدرسہ وطن نظر آئے گا اور کتابوں کا کاغذ کفن نظر آئے گا۔ گھونا نظر آئے گا۔ گھر مدرسہ وطن نظر آئے گا۔ گھر مدرسہ وطن نظر آئے گا۔ گھر مدرسہ وطن نظر آئے گا۔ گھونا نظر آئے گا۔ گھر مدرسہ وطن نظر آئے گا۔ گھونا نظر آئے گا۔ گھر مدرسہ وطن نظر آئے گا۔ گھر مدرسہ وقت کھر کے تھر مدرسہ وال

#### خدمتِ اسلام كاجذبه:

ایک مرتبہ انگریزوں نے مولانا رشید احمد گنگوہی رحمۃ اللّه علیہ کو گرفآار کرلیا۔
حضرت نے جیل کے اندرا یک قیدی کوقر آن مجید پڑھانا شروع کردیا۔ پچھ عرصے بعد
آپ کی آزادی کے نوٹس آمکے۔ جب جیلر نے آکر حضرت کو بتایا کہ آپ کی گرفتاری
ختم ہوگئی ہے۔ آپ نے فرمایا: میں تو ابھی گھر نہیں جا تا۔ اس نے پوچھا: کیوں؟
فرمایا: میں فلاں قیدی کوقر آن مجید پڑھار ہا ہوں، جب تک کھل نہیں کروں گا گھر نہیں

جاؤںگا۔ بیہ تھے ہمارے اسلاف۔ اگراس طرح علم کی خدمت کا جذبہ ہوگا اور ساتھ ساتھ اخلاص اور اینے طلب شع کے گرد ساتھ اخلاص اور اینے مضامین کے اندر مہارت ہوگی تو پھر دیکھنا طلب شع کے گرد پر دانے کی طرح آئیں گے۔

# لمحه وفكرييه:

عزیز طلبا! آج کے دور میں جب ہر طرف بے راہ روی ہڑھ رہی ہے، عریانی اور فاشی کا دور دورہ ہے، کیا مشرق اور کیا مغرب! ہر طرف حیاز ندگیوں سے نگی جاری ہے۔ ایسے دور میں دین کی محنت کرنا اور دین کے لیے کام کرنا اللہ کے ہاں ہوی قبولیت کا باعث ہے۔ ایسے دور میں دین کی محنت کرنا اور دین کے لیے کام کرنا اللہ کو آگ میں قرارت کا باعث ہے۔ اس ول میں بیر کھیے کہ جب حضرت ابراہیم مطبع کو آگ میں ڈالا گیا تو ایک چڑیا پی چونچ میں ایک دوقطرے پانی لے کر جاتی اور آگ پرگراتی مقل کی پر ندی کو تی ایس کے کہ جب کی بھی کو آگ میں کہ کئی ہوئے میں ایک دوقطرے پانی سے تو یہ آگ نہیں کھی کی ۔ وہ چڑیا کہنے گی: یہ تو میں بھی بھی ہوں کہ میری چونچ کے اس پانی سے آگ نہیں نہیں بچھی گی۔ وہ چڑیا کہنے گی: یہ تو میں بھی بھی ہوں کہ میری چونچ کے اس پانی سے آگ ناہوں نہیں بچھی گی۔ گر میں نے ابراہیم خلیل اللہ کی دوئی تو نبھانی ہے نا۔ تو بھی اگر میں ہوری کی پوری بچھ پائے گی یانہیں ایکن ہم نے آ قام ناٹی کے اللہ تعالی کی بیآ گی تو بھانی ہے نا۔ جو ہمارے بس میں ہے، بس ہم وہ کر دیں اور باتی کے لیے اللہ تعالی تو نبھانی ہے نا۔ جو ہمارے بس میں ہے، بس ہم وہ کر دیں اور باتی کے لیے اللہ تعالی سے اس کی رحمت ما تکھیں۔ پھر پرودگارا پئی رحمت عطافر مادیں گے۔

عزیز طلبا! آج کے دن اپنے دلوں میں عہد کر لیجے کہ ہم گنا ہوں سے بچیں گے۔

یہ گنا ہوں کی آگ جو ہم اپنے جسموں پر دوز جلاتے ہیں ،عہد کر لیس کہ ہم نہیں جلائیں
گے۔ کیونکہ یہ معصیت اللہ تعالیٰ سے دوری ہے۔ یوں سمجھیں کہ شیطان نے ہمیں سو
رسیوں سے با ندھا ہوا ہے ، اب ہم نے ان میں مے جتنے گناہ چھوڑ دیے اتنی رسیاں
تو ڑ دیں اور جو گناہ نہیں چھوڑ ہے اتنی رسیوں میں ہم ابھی تک جکڑے ہوئے
ہیں۔ ہمارا تجربہ ہے کہ الحمد للہ! مدارس کے اندر رہنے والے طلبا کی زندگی میں بہت

برے برے گناہ بیں ہوتے۔کوئی پچانوے فیصد گناہ جھوڑ چکا ہوتا ہے کوئی چھیانوے فیصداورایک دوفیصدیہ آکر کام اٹکا ہوتا ہے۔

🖈 ....کسی کی تگاہ قابو میں نہیں ،

🖈 .....کسی کا ول قابو مین نہیں ،

☆ .....کسی کی زبان قابومیں نہیں ،

بس چندایک گناہوں میں الجھے ہوئے ہوتے ہیں اور باتی زندگی شریعت وسنت کے مطابق گزار رہے ہوتے ہیں، ان گناہوں کی وجہ سے بھی ان کے دلوں میں شرمندگی کا حساس ہوتا ہے، البتدان کو بھی چھوڑ کراب ﴿ اُدْ حُلُو فِی السِّلْمِ کَا قَلَهُ ﴾ کا مصداق بن جانا چاہے۔ آپ یوں تجھے کہ آپ اٹھانو سے رسیوں کو آڑ چھے ہیں اور صرف دورسیاں باتی ہیں۔ اب ان دورسیوں سے آزادی حاصل کرنا تو بہت آسان ہے۔ یا یوں تجھے کہ اللہ رب العزت تک پہنچنے کے لیے ہم نے سوقد اٹھانے تھے، ان میں ہے ہم نے اٹھانو سے قدم اٹھا لیے، اب صرف دوقدم باتی ہیں، یددوقدم بھی اٹھا لیے، اب صرف دوقدم باتی ہیں، یددوقدم بھی اٹھا لیے تو منزل بر بیٹھ جائے گی۔ اگر کوئی مسافر منزل سے دوقدم پہلے آگر بیٹھ جائے اور منزل برنہ پہنچ یائے تو اس پر کتنا افسوس ہوتا ہے!

حرت ہے اس مسافرِ مضطر کے حال پہ جو تھک کر رہ گیا ہو منزل کے سامنے

ہم بھی منزل کے سامنے ہیں اور ایک دوگنا ہوں کی وجہ سے منزل سے رکے ہوئے ہیں۔اب ان گنا ہوں کو بھی اللہ کی رضا کے لیے چھوڑ دیجیے۔اگر ہمارے لیے عن ہوں کو چھوڑ نامشکل ہے تو ہم اللہ رب العزشت سے دعا تو ما نگ سکتے ہیں روروکر دعا ما نگ سکتے ہیں روروکر دعا ما نگ سکتے ہیں تو اور کا مانگیں کہ اللہ! ہمیں گنا ہوں سے بچا لیجے۔ گنا ہوں کی ذات سے ہمیں تکال لیجے۔ گنا ہوں کی ذات سے ہمیں تکال لیجے۔ عن ہوں کی دلدل سے نکال لیجے۔ جب ہم بیدعا مانگیں کے تو اللہ تعالی رحمت

فرمادیں گے۔

حضرت اقدس تفانوی رحمۃ الله علیہ نے فرمایا کہ قیامت کے دن ایک بندے کو کھڑا کیا جائے گا، اس سے اللہ تعالی فرما کیں گے، میرے بندے! تو نیک کیوں نہ بنا؟ تو وہ کہے گا: اللہ! میں دعا کیں تو ما نگیا تھا کہ تو مجھے نیک کردے، جب نامہ وا ممال میں دعا موجود ہوگی تو اللہ تعالی اسی کو ذریعہ بنا کر اس کی مغفرت فرما دیں گے۔ میں دعا موجود ہوگی تو اللہ تعالی اسی کو ذریعہ بنا کر اس کی مغفرت فرما دیں گے۔ فرما کیں گے نہاں! ہم سے دعا کیں تو ما نگیا تھا کہ اللہ! نیک بنا دے۔ رب کریم ہمارے لیے نیک بنا آسان فرمادے (آمین ثم آمین)

وَ اخِرُ دَعُواْنَا آنِ الْحَمْدُلِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِيْن

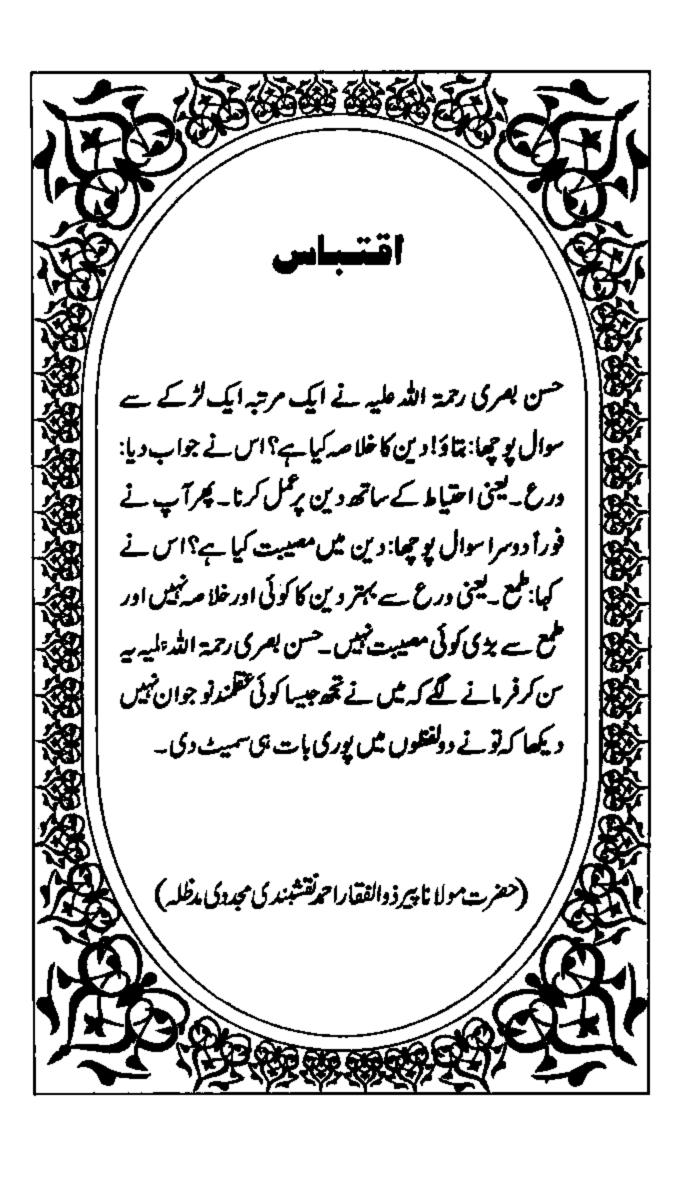




﴿ إِنْ اَوْلِيَانُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونِ ٥ ﴾



بيان: پيرِ طريقت حضرت مولانا حافظ ذوالفقارا حمد نقشبندى مجدى دامت بركاتهم ه بمقام: جامع مسجد زينب معهدالفقير الاسلام جفتگ



# ورع وتقوي

ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ وَكُفِي وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفِيٰ أَمَّا بَعُدُ! فَأَعُونُ أَ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيُظِنِ الرَّجِيْمِ ٥ بسُمِ اللَّهِ الرَّحُمٰنِ الرَّحِيْمِ٥ ﴿ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ٥ ﴾ (المائد: ٣٥) وَقَالَ اللَّهُ تَعَالَىٰ فِي مَقَامِ أَخَرُ

﴿ إِنْ أَوْلِيَانُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونِ ٥ ﴾ (الانعال:٣٣)

سُبْحَانَ رَبُّكَ رَبِّ الْعِزَّتِ عَمَّا يَصِفُونَ ٥ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيُنَ٥ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ٥

ٱللَّهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ سَيِّدِناً مُحَمَّدٍ وَّعَلَىٰ آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكُ وَسَلِّمُ

### ولايت كاحصول كيسے؟

ہر کلمہ کو انسان کے دل میں بیا مجھی ہوئی خواہش ہوتی ہے کہ میں اللہ رب العزت كاولى بن جاؤں ۔اس كے اعمال جيسے بھى ہوں ، حالات جيسے بھى ہوں ، گردل کی تمنا ضرور ہوتی ہے۔ وہ جا ہتا ہے کہ جھے ولایت کا مقام ل جائے۔

ولایت دوطرح کی ہوتی ہے۔ ایک کو ولایت عامہ کہتے ہیں اور دوسری کو ولايت خاصه كہتے ہيں۔ولايت كلمه يره الينے يرآ دى كونصيب موجاتی ہے۔ چنانجداللہ رب العزت قرآن مجيديس ارشا دفر مات بين:

> ﴿ اَللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ امَنُوا ﴾ ''الله تعالیٰ ایمان والوں کا دوست ہے''

یہ ولایت کا پہلا قدم ہے اور یہ نعمت کلمہ پڑھ لینے پر انسان کو حاصل ہو جاتی ہے۔ جبکہ ولایت کا میں ولایت کا نام دیتے ہیں۔ اس ولایت کا نام دیتے ہیں۔ اس ولایت کے حصول کے لیے انسان کو تقوی اختیار کرنا پڑتا ہے۔ چنانچہ قرآن مجید میں اللہ رب العزت ارشاوفر ماتے ہیں:

﴿ إِنْ أَوْلِيَاءُ هُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ ﴾ (الانفال:٣٣)
"الله كولى وبي موتة بين جومتى موتة بين"

آج لوگوں میں بہت سی غلط فہمیاں پیدا ہو چکی ہیں۔ وہ سمجھتے ہیں کہ جو بندہ ملنگ بن جائے ، شاید وہ ولی بن جاتا ہے۔ عوام کالانعام یہ سمجھتے ہیں کہ .....آ وھا نگا آ دھا ولی پورا نزگا پورا ولی ..... ہرگز اییانہیں ہے۔ ولایت شریعت وسنت پڑمل کرنے کا دوسرا نام ہے۔ گرنفس یہ چاہتا ہے کہمن مرضی بھی کروں اور پھر بھی ولی بن جاؤں۔ دوسرا نام ہے۔ گرنفس یہ چاہتا ہے کہمن مرضی بھی کروں اور پھر بھی ولی بن جاؤں۔ ایس خیال است ومحال است وجنوں

ریم مکن نہیں کہ انسان کہائر کا مرتکب بھی ہوا ورپھر اللہ کا ولی بھی ہو۔ دوتی اور شمنی اکٹھی نہیں ہوتی ۔ یا تو انسان ایک وقت میں دوست ہوتا ہے یا دشمن ہوتا ہے۔ اللہ رب العزت کی نافر مانی کرنا، یعنی کبیرہ گناہ کا مرتکب ہونا، یہ اللہ رب العزت کی خرمانی کرنا، یعنی کبیرہ گناہ کا مرتکب ہونا، یہ اللہ رب العزت سے دشمنی ہے۔ اس لیے جو محص یہ جا ہے کہ چھے ولایت کا منصب مل جائے، العزت سے دشمنی ہے۔ اس لیے جو محص یہ جا ہے کہ چھے ولایت کا منصب مل جائے، اسے جائے کہ ذوہ شریعت براحتیاط کے ساتھ مل کرے۔

بیا حتیاط کالفظ کیوں استعال کیا؟ .....اس لیے کہ آ دمی جب کسی کام کے بارے میں فکر مند ہوتا ہے تو پھروہ اس میں رسکتی نہیں لیتا۔ مثال کے طور پر آپ کی جج کی فلائٹ دس ہجے ہو آپ گھر میں کہیں گے کہ ہمیں ساڑ ھے نو ہجے پہنچ جانا جا ہے۔ کلائٹ دس ہجے ہے ، تو آپ گھر میں کہیں گے کہ ہمیں ساڑ ھے نو ہجے پہنچ جانا جا ہے۔ کیوں ، ……آپ رسک نہیں لینا جا ہے کہ ایسانہ ہو کہ فلائٹ چلی جائے اور میں رہ

جاؤں۔انگریزی میں اسے کہتے ہیں:

To be on the safe side.

(مخاطره کرممل کرنا)

گر میں آپ ہوی سے کہتے ہیں کہ میں نے آج علا کو دعوت دی ہے۔ وس بندے آئیں گے، نیکن To be on the safe side آپ پندرہ بندول کا کھانا تیار کر دیں۔ کیونکہ اگر ایک دو بندے اور بھی آ جائیں تو شرمندگی نہ ہو۔ جس طرح دنیا کے کاموں میں آپ مخاطرہ کڑمل کرتے ہیں ، اسی کوشریعت کی زبان میں ورع اور تقویٰ کہتے ہیں۔

ورع كى لغوى شخفيق:

ورع باب حنسر کہتے ہے۔اس کے معنی ہیں کبیرہ کے ڈرسے صغیرہ کوچھوڑ دینا۔جیسے ہم کہتے ہیں کہ جس منزل پہنہ جانا ہواس کا راستہ پوچھنے کی کیا ضروری ہے۔ اس کو درع کہتے ہیں کہ انسان بڑے گناہوں سے بھی بچے۔

نیکی کی پیچان:

دین اسلام ، دین فطرت ہے۔اس دین کاسمجھنا بہت آ سان ہے۔حتی کہان پڑھ بندہ جس کوہم جاہل کہتے ہیں ، وہ بھی دین سمجھسکتا ہے۔اس میں بھی اللہ تعالیٰ نے فطری سمجھ رکھی ہے۔ چاہے اس کے پاس کتا بی علم نہ ہو۔

نواس بن سمعان ﷺ سے روایت ہے کہ نبی علیہ السلام نے نیکی اور بدی کی پیچان بتائی .....اتنی آسان اوراتنی خوبصورت ....سبحان اللہ!

ا یک بات تو بیدارشاد فرمائی که ' نیکی اچھے اخلاق کا دوسرا نام ہے۔'' چنانچہ ہر

بندے کو پتہ ہوتا ہے کہ اچھے اخلاق کیا ہیں۔

- ⊙ ..... ومرول کے ساتھ بھلائی کرنا،
  - ⊙ ....خیرخوای کرنا،
  - ⊙..... ہدردی کرنا،
  - ⊙....مصیبت میں ان کے کام آنا،
    - ⊙....ایثارکرنا\_

ایک عام آ دمی بھی سمجھتا ہے کہ بیہ اچھے کام ہیں۔اس کو بتانے کی ضرورت بھی نہیں ہوتی۔ بیہ پہچان ہر بندے کو فطری طور پر حاصل ہے۔ابی لیے تو اس کو دین فطرت کہا گیا ہے۔ چنانچہ آپ جہاں بھی اچھے اخلاق دیکھیں گے سمجھ لیں گے کہ بیہ نیکی کا کام ہے۔

- ⊙ .....دوسرے ہے مسکرا کر ملنا، خندہ پیشانی ہے ملنا،
  - ⊙....اس کے د کھاورمصیبت کو بانٹ لینا،
    - ⊙....اس کو تکلیف نه پہنیا تا ،
- ⊙ ....اس کی جان ، مال ،عزت ،آبر و کے اویر بری نظر ندر کھنا۔

کون ایبا بندہ ہے جو یہ نہیں جانتا کہ یہ اچھے اخلاق ہیں! چنانچہ جہاں آپ کا دل بتائے کہ میں اچھائی کا کام کرر ہا ہوں ، وہاں تجھے لو کہ میں نیکی کا کام کرر ہا ہوں۔ دوسری بات بیار شادفر مائی کہ'' گناہ وہ ہے جو تیرے دل میں کھٹکے اور تو چاہے کہسی کو پتانہ چلے۔''

کئی مرتبہ ہم ایسا کام کرتے ہیں کہ اسے ہم دوسروں سے چھپاتے ہیں تا کیمکس کو پتانہ چل جائے۔ جب کام کرتے ہوئے دل میں بیہ بات ہو کہ کہیں دوسروں کو پتا نہ چل جائے ،توسمجھ لیس کہ دل میں پچھ کالا ہے۔اس لیے فر مایا کہ اگر آپ کے پاس ر المارية الم

موقع نہیں کہ آپ کسی عالم سے پوچھ لیں ،تو اپنے دل پہ ہاتھ رکھ لیں۔ جب دل کو دھڑ کتا پائیں اور دل چاہے کہ کسی کو پتانہ چلے تو پھر سمجھ لیں کہ بید گناہ کا کام ہے۔ بیس قدر آسان بہچان ہے! بکر یوں کا چرانے والا، جس کی عمر ویرانے میں گزرجاتی ہے، اس کو علما کی صحبت میسر نہیں ہوتی ،لیکن نیکی اور بدی کی بہچان اس کو بھی حاصل ہوتی اس کو علما کی صحبت میسر نہیں ہوتی ،لیکن نیکی اور بدی کی بہچان اس کو بھی حاصل ہوتی

### تين انمول باتيس:

حسن بھری طاق فرماتے تھے کہ ان کونٹین با تیں حاصل ہوں ، وہ سمجھ لے کہ جھے دین کی ہر نعمت نصیب ہوگئی ہے۔

پہلی بات .....اییاورع جواس کوحرام سے روک دے۔ یعنی طبیعت کے اندر ایسی احتیاط آجائے کہ انسان حرام کاموں سے نیج جائے۔ دل کی کیفیت ایسی ہو کہوہ اس بات کا فیصلہ کر دے کہ میں نے اپنے پروردگار کو ناراض نہیں کرنا۔ جب ایسی کیفیت بن جائے گی تو وہ انسان گناہوں سے نیج جائے گا۔

دوسری بات .....اییاوقار جوانیان کو جہالت کے کاموں سے روک دے۔
انیان کے اندرا کیک وقار ہوتا ہے۔ جواچھالوگ ہوتے ہیں وہ باوقار زندگی گزارتے
ہیں۔ وہ گھٹیا کام نہیں کرتے۔ وہ تنگی اور نقصان اٹھا لیتے ہیں، گروہ کوئی ایبا کام نہیں
کرتے جو وقار کے منافی ہو۔ بہت سے دنیا دار لوگوں کو دیکھا کہ ان کی زندگی اتنی
دین دارانہ نہیں ہوتی، گروہ باوقار ہوتے ہیں۔ اس لیے شریعت نے کہا کہ اگر کوئی
حافظ قرآن ہے اور اس کے ساتھ کوئی بندہ جہالت کی با تیں شروع کر دے تو اس کو
رک جانا چا ہے۔ اس لیے کہ سے فی بحوف ہے شکلام اللّٰ اور اس کے سینے میں اللہ کا
قرآن ہے) یہ بھی ارشاد فرمایا:

مَّا يَنْبَغِيُ لِصَاحِبِ القُّرِ آنِ أَنْ يَنْجُهَلَ مَعَ مَنْ جَهِلَ ''حافظِ قرآن کو بیزیب نہیں دیتا کہ وہ جاہلوں کے ساتھ جاہلوں والی باتیں کرتا پھرے''

تیسیری بات .....ایسا ظاق جوانسان کودوسرے کی دل آزاری ہے روک دیں۔ یعنی انسان کے اندر اتنی خوش اخلاق ہو کہ وہ کی دوسرے انسان کا دل نہ دکھائے۔ ہروفت وہ اس بات پرنظرر کھے کہ میری وجہ سے اللہ کے کسی بندے کو تکلیف نہ ہو۔ ہمارے اکا ہرا یسے خوش اخلاق تھے کہ یوں لگاتھا کہ جب وہ زمین پر چلتے تھے تو باوک آ ہستدر کھتے تھے کہ پاوک رکھنے سے زمین کو بھی تکلیف نہ پہنچ۔ ہماری بیرحالت باوک آ ہستدر کھتے تھے کہ پاوک رکھنے سے زمین کو بھی تکلیف نہ پہنچ۔ ہماری بیرحالت ہے کہ ہم دوسروں کا دل دکھاتے ہوئے گھراتے بھی نہیں۔ یا در کھیں! بیماریوں میں سے بری بیماری دل کی بیماری ہے اور دل کی بیماریوں میں سب سے بری بیماری دل کی بیماری ہے اور دل کی بیماریوں میں سب سے بری بیماری دل کی بیماری ہے اور دل کی بیماری ہے۔

مسجد ڈھا دے مندر ڈھا دے ، ڈھادے جو پکھ ڈھیندااے پر کسے دا دل نہ ڈھاویں ، رب دلال وچ رہندا اے مجھوٹی جھوٹی باتوں پردوسروں کادل دکھانا، بیمومن کاشیوہ نہیں ہوتا۔

تدبير، پر هميز اورحسن خلق کی اهميت:

طبرانی نے مجم کبیر میں ابوذ رہ ہے کہ ایک روایت بیان کی ہے کہ ایک مرتبہ نبی علیہ السلام نے تبن باتیں ارشادفر مائیں۔ علیہ السلام نے تبن باتیں ارشادفر مائیں۔

بهلی بات بیارشاوفر مائی: ·

° تەبىرجىسى كوئى عقل نېيىن '

تدبیر کہتے ہیں، پلانگ کرنے کو۔ یعنی ہم جو کام بھی کریں سوچ سمجھ کے

کریں۔ بعض انگریزی پڑھے لکھے لوگ کہتے ہیں کہ دین اسلام میں پلانگ نہیں ہے۔ ۔۔۔۔ کیوں نہیں ہے؟۔۔۔۔۔اللہ رب العزت کے محبوب ملی آئی ہے تو فرماتے ہیں کہ تہ بہرے بہترکوئی عقل نہیں۔ اور ہم کہتے ہیں کہ دین اسلام میں پلانگ نہیں۔ عقمند انسان ہمیشہ تر تیب اور تہ ہیرے کام کرتا ہے۔ سوچ سمجھ کے کام کرتا ہے۔

دوسرى بات ارشادفر مائى:

" پر ہیز ہے بہتر کوئی ورع نہیں۔"

جوبنده پر بیز اوراحتیاط کے ساتھ حقوق اللّٰداور حقوق العباد کی ادائیگی کرتا ہے وہ دنیا میں بھی خوشیوں بھری زندگی بسر کرتا ہے اورا سے آخرت میں بھی اللّٰدرب العزت کی رضا نصیب ہوگی۔

پرتيسري بات ارشادفر مائي:

"الجھاخلاق ہے بہتر کوئی نسب ہیں۔"

جس انسان کواللہ رب العزت نے حسنِ خلق عطا فرما دیا ، وہ سمجھ لے کہ مجھے اللہ تعالیٰ نے بہترین حسب ونسب عطا کر دیا۔

### ً دولفظول میں بات .....

حسن بھری رحمۃ اللہ علیہ نے ایک مرتبہ ایک لڑے سے سوال پوچھا: ہتاؤا وین کا خلا صد کیا ہے؟ اس نے جواب دیا: ورع ۔ یعنی احتیاط کے ساتھ وین پر علی مرتبہ کیا ہے گا صد کیا ہے؟ اس نے کہا: طبع ۔ یعنی آپ نے فوراً دوسرا سوال پوچھا: وین میں مصیبت کیا ہے؟ اس نے کہا: طبع ۔ یعنی ورع سے بہتر دین کا کوئی اور خلا صدنہیں اور طبع سے بڑی کوئی مصیبت نہیں ۔ حسن بھری رحمۃ اللہ علیہ یہ سن کر فرمانے گئے کہ میں نے تھے جیسا کوئی عظمند نوجوان نہیں و کی علم کرنے والفظوں میں پوری ہات ہی سمیٹ دی۔

### دين اسلام كانجوژ:

سعید بن المسیب رحمۃ اللہ علیہ فر ما یا کرتے تھے کہ جار با تبیں دینِ اسلام کا نچوڑ ہیں۔

- اورع تمام معاملات کی اصل ہے۔
- ۔... توامنع مومن کے لیے باعث عزت ہے۔
- ..... جو مخص خوشحالی میں شکرا دا کرتا ہے تو بیشکرا ہے جنت میں لے جاتا ہے۔
  - ..... جُوفِ مَنْ دَى مِن مبركرتا ہے توبیصبرا سے جہنم سے بچالیتا ہے۔

آ دمی کے اندر بیرچاروں صفات ہونی چاہمییں ۔شریعت پر چلنے میں بہت احتیاط کرے، عام حالات میں ایمان والوں کے درمیان تواضع سے زندگی گزارے،خوش حالی میں اللّٰد کاشکرا داکرے اور بھک دسی میں مبرکرے۔

### تنین حیران کن با تنیں:

یونس بن عبید فرمایا کرتے تھے کہ زندگی میں نین باتوں نے مجھے جیران کردیا:

- (۱) .....ان کے ایک دوست محمہ بن سیرین رحمۃ اللہ علیہ تھے۔ جنہوں نے تعبیر الرؤیا کتاب لکھی۔ وہ ایک دن باتوں باتوں میں کہنے لگے کہ' میں نے بھی دنیا کی خاطر کسی سے حسد نہیں کیا۔'' کہتے ہیں کہ یہ بات س کر جھے بڑا تعجب ہوا کہ اچھا! دنیا میں ایسے لوگ بھی ہیں، جود نیا کی خاطر کسی سے حسد نہیں کرتے۔
- (۲) .....حسان بن انی سنان ان کے دوست تھے۔ کہتے ہیں کہ انہوں نے کہا کہ درع بہت آسان ہے۔ پوچھا: وہ کہیے؟ کہنے لگے: اس طرح کہ' جب تیرے دل میں کوئی بات کھکے تو ٹو اس کوچھوڑ وے ، تو ورع پڑمل کرنے والا بن جائے گا۔' انسان اگر سوچے تو واقعی ہے بات سو فیصد تھیک ہے کہ ہر وقت یہ نظر رہے کہ کون ساکام اللہ کو

راضی کرنے کا باعث بن سکتا ہے اور کون ساکام اللہ تعالیٰ کو ناراض کر سکتا ہے۔ بندہ جب ناراض کرنے والا کام کرے گاتو وہ گھبرائے گا اور جاہے گا کہ میں اسے چھیاؤں۔

ہم کی مرتبہ ایسے کام کرتے ہیں کہ دائیں ہاتھ سے کرتے ہیں اور بائیں ہاتھ کو پہتے ہیں۔ شریعت نے تو کہا کہ پہتے ہی نہیں چلنے دیتے۔ اس تم کے سارے گناہ ہی ہوتے ہیں۔ شریعت نے تو کہا کہ صدقہ ایسے دو کہ دائیں ہاتھ سے صدقہ دو تو بائیں ہاتھ کو بھی پہتہ نہ چلے ، اور ہماری حالت بیہ ہم نے اگر کسی کام کے کرنے کا ارادہ کرنا ہوتا ہے تو ارادہ بھی بتا دیتے ہیں۔ ہمارے اکا برئیک کام کواس کے کرنے کے بعد چھپاتے تھے اور ہم نے کام کیا نہیں ہوتا، جب کرنے کا ارادہ کرتے ہیں تو اس ارادے کا بھی اظہار کردیتے ہیں۔

### ورع کے درجات:

ہارے اکابرنے لکھاہے کہ ورع کے جار درجات ہیں:

- (۱)....عوام الناس كاورع \_ وه بيه بحكدانسان حرام كامول سے بيج -
- (۲).....صالحین کاورع۔وہ یہ ہے کہ انسان مشتبہ (شبہوالے) کاموں سے بچے۔
  - (m)....متقین کاورع۔وہ یہ ہے کہ حرام کے خوف سے حلال کو بھی چھوڑ دے۔
- (م).....صدیقین کاورع۔وہ یہ ہے کہ ہراس چیز کوچھوڑ دے جواللہ کے لیے نہ ہو۔

### احتياط ہے مل كرنے كامطلب:

اب احتیاط ہے مل کرنے کا کیا مطلب ہے؟ ..... ذرایہ بھی کن کیجے۔ عام طور پر بازار کے اندر جو کھانے بنتے ہیں ،ان کے بارے میں پنتہ ہیں ہوتا کہ بنانے والے نے چیزیں صحیح ڈالیس یانہیں۔ پاکی اور ٹاپاکی کا خیال رکھا یانہیں

ر کھا اور خاص طور پر جوملٹی نیشنل ریسٹورنٹ بن چکے ہیں ، ان کے بارے میں تو سیجھ بھی

نہیں کہہ سکتے کہ وہ اندر کیا ڈالتے ہوں گے! چنا نچہ اس بات کا خوف ہوتا ہے کہ کوئی
حرام چیز نہ اندر چلی جائے۔ لہذا اگر کوئی بندہ اس نیت سے ایسے ریسٹورنٹ کا کھاتا
چھوڑ دے گا تو یہ درع کہلائے گا .....احتیاط ہے .....ہم اس چیز پرحرام کا فتوئی بھی
نہیں لگا سکتے کیونکہ ہمیں کیا پنا کہ اس میں کیا ڈالا ہوا ہے۔ گراحتیاط اس میں ہیں ہے کہ
ایسی چیز وں کومت کھا کیں۔ سلوک سکھنے والے لوگ اپنے گھروں میں ایمان والی،
نماز پڑھنے والی عورتوں کے بنے ہوئے یا کیزہ کھانوں پر ہی اکتفا کر لیس تو یہی بہتر
ہے۔ ہاں، اگر سفر میں ہوں یا کوئی ایسی وجہ ہوتو شریعت عذر قبول کر لیتی ہے۔ پھر بے
شک بازار کی بنی ہوئی چیز کھالیں۔ گر درع یہی ہے کہ بازار کی چیز نہیں کھائی۔

دوسری مثال: انسان بازار میں سے گزرتا ہے۔ وہاں مرد بھی ہوتے ہیں عورتیں بھی ہوتی ہیں۔ اگر وہ نظر اٹھا کرلوگوں کو دیکھے گا تو دونوں اختال موجود ہیں۔ وہ نظر مرد پر بھی پڑسکتی ہے اورعورت پر بھی ....اب حرام سے بہتے کی نبیت سے جو بندہ اپنی نظر جھکائے ہی رکھے، اوپر نہ اٹھائے، تو یہ ورع پڑمل کرنے والا بندہ ہوگا۔ یعنی عورتوں کے چہروں کو بھی نہ دیکھے۔

## بیداری کی زندگی کیسے؟

یہ چیز ذہن میں رکھ لیں کہ جس شخص کے دل میں دنیا کی محبت ہو، اس کے دل میں ورع داخل نہیں ہوسکتا۔ جب انسان فیصلہ کر لے کہ میں نے اللہ رب العزت کے لیے زندگی گز انی ہے تو بھر اس کے لیے ورع پر عمل کرنا آسان ہوگا۔ کیونکہ اسے خلاف شرع کام چھوڑنا آسان گےگا۔ یہ بندے کی بیداری ہوتی ہے۔ اس لیے کہ اکثر و بیشتر انسان نیند میں وقت گز ارر ہا ہوتا ہے۔ سیمیش میں سسہ آرام میں سند زندگی گزرر ہی ہوتی ہے۔ بیداری کی زندگی اس وقت نصیب ہوتی ہے جب زندگی کی قدرو قیمت کا احساس ہوتا ہے۔ ایک انگریز نے کتاب میں ایک عجیب بات کھی۔ وہ قدرو قیمت کا احساس ہوتا ہے۔ ایک انگریز نے کتاب میں ایک عجیب بات کھی۔ وہ

کہتاہے:

"Suddenly I realised that the days coming and going are my life."

''اچانک مجھے احساس ہوا کہ جودن آرہے ہیں اور جارہے ہیں ، یہی میری زندگی ہے''

چٹانچہ بندہ میسو ہے کہ میں نے اپنے پروردگار کو ناراض نہیں کرنا۔ جبکہ آج ہماری حالت بیہ ہے کہ شادی ہوتی ہے تو کہتے ہیں کہ

..... ماموں کو بھی مناؤ،

..... چيا کو بھی منالو،

..... پھوپھوکو بھی منالو،

....خالە كونجىمى منالو،

.....ہمسائی ٹاراض ہوگئ تھی ، بیوی کہتی ہے کہا ہے بھی منالو،

..... ڈرائیور ناراض ہوگیا تھا، بھئ ! شادی کاموقع ہےا ہے بھی منالو،

.....گھر میں کام کرنے والی خاد مہ، وہ بھی ناراض ہوگئی ہوتو عور تیں پیغام بھیج دیتی ہیں کہاس کوبھی منالو۔

اب آپ سوچیں کہ گھر میں کام کرنے والی عورت کو بھی اس وفت منایا جاتا ہے، گرشادی شرع کے خلاف کر کے اپنے رب کواوراس کے مجبوب کو ناراض کیا جار ہا ہوتا ہے ۔۔۔۔۔کیا گھرکی ماسی اور ڈرائیور کے برابر بھی مقام نہ دیا! ۔۔۔۔۔ بیبھی تو سوچنے کہ کیا اس طرح شادی کرنے سے اللہ رب العزت بھی خوش ہوں سے یانہیں ہوں گے۔

افراط وتفريط ہے بچيں:

ورع برعمل کرتے وقت افراط وتفریط سے بچنا جا ہے۔شیطان احتیاط سے عمل

کرنے والوں کو کئی مرتبہ اتنا سخت بنا ویتا ہے کہ وہ لوگوں کے دل بھی دکھا دیتے ہیں۔امام احمد بن طنبل رحمۃ اللہ عندا لیسے بندے کو'' وَدِع مُصطْلِم '' ( ۱ 'رھامتو رع ) کہتے تھے۔ چنا نچداس بات کا خیال رکھیں۔میاندروی زیادہ بہتر ہے۔

تقوى كى لغوى شخقيق:

ورع اورتقوی ملتے جلتے الفاظ ہیں۔معانی کے اعتبار سے ان میں تداخل ہے۔
تقوی اصل میں اِتّ قلبی سے اسمِ مصدر ہے۔ گرایک قول یہ بھی ہے کہ تقوی اسم مصدر
ہے اور وقابیاس کا مصدر ہے، چنانچہ یہ وقوی سے بنا ہے۔ پھر واؤکوتا سے بدل ویا
توبی تقوی بن گیا۔ جیسے تواٹ میں یا تنجمہ میں واؤکوتا سے بدل دیا۔

تفوي كا مطلب بآ زلينا - قاضى عباس على فرمات بين:

یتقی بخدُوعِ النَّحٰلِ (درخت کے سے کی آڑلیا) یعنی اپنے آپ کو گنا ہوں سے بچالینا ،تقویٰ کہلاتا ہے۔

ہارے اکا برنے تفویٰ کے بارے میں مختلف اقوال ارشاد فرمائے ہیں ،مثلا:

- ⊙ ....سید نا ابنِ عمر ﷺ فر ما یا کرتے تھے کہ کوئی بندہ تفویٰ کی حقیقت کو اس وفت تک نہیں پہنچ سکتا جب تک کہ اس چیز کو نہ چھوڑ دے جو اس کے دل میں کھئے۔
  - ⊙ .....وہ رہ بھی فر ماتے تھے کہ تق وہ ہے جود دسروں کواپنے اسے اعلیٰ سمجھے۔
- التدرب العزت على رحمة التدعلية فرمات تصريح كمتى وه ہے جو ہركام التدرب العزت كى رضا كے ليے كرے۔
- ⊙ .....ابوالحن نوری رحمة الله علیه فر ماتے تھے کہ مقی وہ ہے جو دوسروں کے لیے وہی پند کرتا ہو۔
   پند کرے جوابیۓ لیے پند کرتا ہو۔
- ⊙ ....سید ناعلی ﷺ فرماتے تھے کہ تقی وہ ہے جو گنا ہوں پیداصرار نہ کرے۔ یعنی بار

#### B (187) B (187

بارگناہ نہ کرے۔اگر گناہ سرز وہو جائے تو تو بہ کے ذریعے اپنے پرور دگارے معافی ما تک لے۔

#### معاملات میں تقویٰ کا پہلو:

تقوی کا تعلق فقط کھانے پینے سے نہیں ہے، بلکہ پوری زندگی کے ساتھ ہے۔
کھانے پینے کا تقوی بہت آسان ہوتا ہے۔ تو معاملات ایسے رکھنا کہ دوسرے بندے
کا دل نہ دیکھا وراس کی حق تلفی نہ ہو۔ معاملات کے اندرتقوی کا خیال رکھنا ، بیمشکل
کام ہوتا ہے۔ چنا نچہ امام بیہ قی رحمۃ اللہ علیہ نے حضرت عمر رہ ہے ہے ہے روایت کی ہے
کہ میں بندے کا فقط نماز روز ہمت دیکھو، بلکہ اس کے معاملات کودیکھا کرو۔ ہمارے
اکا برا ہے معاملات میں بہت احتیاط برستے تھے۔ مثال کے طور پر:

.....امام اعظم ابو حنیفہ رحمۃ اللہ علیہ جوانی کی عمر میں کپڑے کی دکان چلاتے ہے۔
ایک دن ظہر کے بعد دکان بند کر کے گھر آ رہے ہیں۔ کسی نے پوچھا: جی آپ نے ابھی
سے دکان بند کر دی ؟ فرمایا: ہاں! آج آسان پر بادل ہیں، روشنی پوری نہیں، اور
جب روشنی پوری نہیں ہوتی تو گا کہ کو کپڑے کی کوالٹی کا صحیح بنانہیں چلنا۔ ہیں نے اس
لیے دکان بند کر دی کہ کوئی گا کہ کم قیمت کپڑے کے وہیش قیمت کپڑ اسمجھ کر دھو کے ہیں نہ
سرخ حائے۔

یہ ان کے پاس کپڑے کا ایک ایسا تھان آیا جس کے اندر بناوٹ جس کوئی کی رہ کی تھی۔ چنا نچہ انہوں نے اپنی دکان پر کام کرنے والے ور کرز سے کہا کہ جب بھی تم نے بیٹی انہوں نے اپنی دکان پر کام کرنے والے ور کرز سے کہا کہ جب بھی تم نے بیٹا ہے تو گا مک کو بتا ویٹا کہ اس کے اندر میر کی ہے۔ اس نے کہا: جی بہت اجھا۔
 اجھا۔

ایک دن جب آپ آئے تو وہ تھان نہ پایا۔ ورکرز سے پوچھا: کیا وہ بک

گیاہ؟ کہنے لگا: تی ہاں۔ پھر پوچھا: کیا گا کہ کواس کا عیب بھی بتا دیا تھا؟ اس نے کہا: جی میں تو بھول ہی گیا۔ فرمانے گیاب میرے لیے اس پیے کا استعبال جائز نہیں، کیونکہ ایک عیب دار چیز کو وہ ہم سے اچھا سمجھ کرلے گیا ۔۔۔۔۔ایک مومن کی تجارت دیکھیے۔۔۔۔۔ پوچھا: کتنے میں بیچا؟ اس نے بتایا: استے میں بیچا۔ فرمایا: پیسے لاؤ۔ پھر پوچھا: کیسا بندہ تھا؟ اس نے کہا: اتنا قد تھا، ایسے کپڑے پہنے ہوئے تھے اور اس طرف کو گیا تھا۔

ا مام اعظم رحمة الله عليه اس كے بيچھے چلے۔اسے ڈھونڈ اتا كہ وہ بندہ مل جائے اور میں اسے چیسے واپس کر دوں یا بتا دوں کہ اس میں بیعیب تھا، اگر منظور ہے تو بے شک خریدلو۔ چنانچہ پوچھتے ہوچھتے شہرکے کنارے پر پہنچ گئے۔ وہاں وہ بندہ مل گیا۔ حفرت اسے جاکر ملے اور اس کو جا کر کہا: آپ نے ہماری دکان سے بیہ کپڑاخریدا، وہاں پرموجودنو جوان بھول گیا ، اس نے آپ کو بتایا ہی نہیں کہ اس کے اندر عیب ہے۔اس نے میہ بات من تو بڑا حیران ہوا۔ چنانچہاس نے کہا: جی آپ میرے پیسے والیس کردیں۔اس نے جو پیسے دیے تھے آپ نے وہ واپس کر دیے۔قریب ہی یانی کا ایک جو ہڑتھا،اس نے وہ پیسے لے کراس جو ہڑ میں پھینک دیے۔اب امام صاحب رحمة الله عليه بيدو مكيم كرحيران ہو گئے كهاس نے يميے ليے اور جو ہڑ ميں پھينك ديے۔ چنانچەحضرت رحمة الله عليه نے يو چھا: بھئ! تم نے ايبا كيوں كيا؟ اس كى آئكھوں ميں آ نسوآ گئے۔وہ کہنے لگا کہ میں بدنیت انسان دھوکہ دینے کے لیے آیا تھااور کھوٹے سکے لے کرآیا تھا،لیکن جب مجھے بیمحسوں ہوا کہ آپ کے اندر تقویٰ اتناہے کہ چھوٹی ی بات بتانے کے لیے آپ نے شہر کے کنارے تک مجھے تلاش کیا،میرے ول نے ملامت کی کہ تو اس کو دھوکہ نہ دے، چنانچہ اب میں آپ کوسیح اور کھرے ہیے دیتا ہوں۔

- ایک آ دمی گدهان رہاتھا۔ خریدار نے پوچھا: بھی! یہ گدها کیسا ہے؟ اس نے جواب دیا: اگریہ مجھے پہند ہوتا تو کیوں بیچا؟ کیے سید ھےلوگ ہوتے تھے۔ سیحان اللہ!

### گناه چور نے کی فضیلت:

ورع اورتقوی کامقصود بیہ ہے کہ انسان شریعت پر احتیاط سے عمل کرے اور عناہوں سے بیچے۔ چنانچہ حدیث مبار کہ میں نبی علیہ السلام نے ارشاد فرمایا: اِتّی الْمَحَادِمَ تَکُنْ اَعْبُدُ النّاسِ

'' تو گناہ کرنا چھوڑ دے،سب سے زیادہ عبادت گزار بندہ بن جائے گا'' ایک ہوتا ہے دوڑ دوڑ کرنفلیں پڑھتا، نبیج پھیرتا، نمازیں پڑھنا، یہ بہت اچھی بات ہے۔اس ہے بھی اچھی بات یہ ہے کہ انسان کے وجود سے اللہ کی کوئی نافر مانی نہ ہو۔اس پرزیادہ محنت کرنی چاہیے۔سیدہ عائشہ صدیقہ ﷺ فرمایا کرتی تھیں:
''بہترین عمل جے لے کرانسان قیامت کے دن اللہ کے سامنے پیش ہوگا وہ
گناہوں کی کمی ہے۔''

اس امت میں ایسے لوگ بھی گزرے ہیں جو گناہ نہیں کرتے تھے۔ عبداللہ بن مبارک رحمۃ اللہ علیہ نے ایک عورت کا تذکرہ کیا ...... اَلْمَهُوءَ ۔ قُالُمُتَ گیلِّهُ فَو بِالْقُورْ آنِ کے الفاظ اور آیات سے گفتگو کا جواب الْمُتَ گیلِّهُ فَا بِالْقُورْ آنِ .....وہ عورت جوقر آن کے الفاظ اور آیات سے گفتگو کا جواب دیتی تھی ۔ وہ کوئی دوسر الفظ زبان سے نکالتی ہی نہھی کہ میری زبان سے جھوٹ ، غیبت یا کوئی خلاف شرع بات نہ نکل جائے۔

امام ربانی مجد دالف ٹانی رحمۃ اللہ علیہ اپنے مکتوبات میں فرماتے ہیں: ''اس امت میں ایسی پاک ہستیاں بھی گزری ہیں کہ ان کے گناہ لکھنے والے فرشتے کوہیں ہیں سال تک کوئی گناہ لکھنے کا موقع نہیں ملا۔''

اس کا کیا مطلب؟ .....کہ وہ فرشتے تھے؟ .....نہیں! وہ انسان ہی تھے۔اول تو وہ گناہ کرتے ہی نہیں تھے اور بتقاضائے بشریت نہیں کوئی گناہ سرز دہوجاتا تو فوراً تو بہ کرتے تھے۔ چونکہ حدیثِ مبار کہ میں ہے کہ جب انسان سے کوئی گناہ سرز دہوجاتا ہے تو نیکی والا فرشتہ گناہ کھنے والے فرشتے کورو کتا ہے کہ ٹھم جاوً! ممکن ہے کہ بیتو بہ کر لے اور لکھنے کی ضرورت ہی پیش نہ آئے۔وہ اسے ایک پہر تک رو کتا ہے۔ چنا نچہا گر بھی کوئی گناہ سرز دہوجائے تو انسان فوراً نا دم اور شرمندہ ہوجائے، گناہ لکھاہی نہیں سال جائے گا۔ کیا خوش نصیب ہوں گے وہ لوگ جن کے نامہء اعمال میں بیس بیس سال جائے گا۔ کیا خوش نصیب ہوں گے وہ لوگ جن کے نامہء اعمال میں بیس بیس سال جائے گا۔ کیا خوش نصیب ہوں گے وہ لوگ جن کے نامہء اعمال میں بیس بیس سال جائے گا۔ کیا خوش نصیب ہوں گے وہ لوگ جن کے نامہء اعمال میں بیس بیس سال جائے گا۔ کیا خوش نصیب ہوں گے وہ لوگ جن کے نامہء اعمال میں بیس بیس سال جائے گا۔ کیا خوش نصیب ہوں گے وہ لوگ جن کے نامہء اعمال میں بیس بیس سال جائے گا۔ کیا خوش نصیب ہوں گے وہ لوگ جن کے نامہء اعمال میں بیس بیس سال جائے گا۔ کیا خوش نصیب ہوں گے وہ لوگ جن کے نامہء اعمال میں بیس بیس سال تک گناہ لکھنے والے فرشتے کو گناہ لکھنے کا موقع ہی نہیں ملا ہوگا۔

حسن بصری فرماتے ہیں:

"مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِّنَ الورَعِ خَيْرٌ مِّنُ الفِ مِثْقَالٍ مِّنَ الصَّوْمِ وَالصَّلُومِ وَالصَّلُومِ

''ایک حصه گناه کا حچھوڑ دینا بہتر ہے اس سے کہانسان ہزار حصے نیکی ،نماز اور روز ہے کے کر ہے'' سے بر

بزرگوں نے کہا:

'' آدمی پانچ سومرتبہ حج کرے،اس سے بیزیادہ بہتر ہے کہ وہ ایک گناہ کو اللہ کی رضائے لیے چھوڑ دے۔''

ہارے اکابرنے فرمایا:

''ایک ذکرتو بہ ہے کہ انسان زبان سے اللہ اللہ کرے۔دل میں اللہ اللہ کا ' دھیان رکھے لیکن بہترین ذکر بہ ہے کہ بندے کو گناہ کرنے کے وقت اللہ یا د آجائے اور وہ گناہ کواللہ کی مضالے لیے چھوڑ دے۔''

یہ بات بھی ذہن میں رکھیں کہ جب بھی بندہ اللّدرب العزت کی رضا کے لیے
کوئی چیز چھوڑتا ہے تو اللّہ تعالیٰ ہمیشہ اس کا بہتر نعم البدل عطا فرماتے ہیں۔مثال کے
طور پرایک بندہ غیرمحرم سے نظر ہٹا تا ہے تو حدیث مبار کہ میں ہے کہ اس نظر ہٹانے پر
اللّہ اس کوعبادت میں لذت اور ایمان کی حلاوت عطا فرما دیتے ہیں۔ تو بہتر چیزمل گئ

علوم ومعارف کی بارش:

9:

جو بندہ تقویٰ اختیار کرتا ہے اللہ تعالیٰ اس کوعلوم ومعارف عطافر ماتے ہیں۔طلبا متوجہ ہوں کہ اگران کا دل جا ہے کہ اللہ رب العزت کی طرف ہے ہمیں اسرار ورموز ملیں ، ہمارے دل میں معارف اتریں ، تو اس کا آسان طریقہ یہ ہے کہ گناہ کو ہمیشہ ولايفاغرات (192<mark>8-38 (192</mark>) (1928-38 (1928) الدراية الم

کے لیے خیر آباد کہد دیں۔اس کی دلیل قرآن عظیم الثان سے ....اللہ تعالیٰ ارشاد فرماتے ہیں:

﴿ وَاتَّقُوْا اللَّهُ وَيُعَلِّمُكُمُ اللَّهُ ﴾ (البقرة:٣٨٣) "اورالله سے ڈرتے رہنا،الله تعالی تهہیں علم عطافر مائے گا'' تو جوانسان ورع اور تقوی اختیار کرتا ہے اللہ تعالی اسے براہ راست علم عطا فرماتے ہیں۔اس کوعلم لدنی کہتے ہیں۔

تقويل كى بدولت اجر ميں اضافه:

ښ:

امام بیہ چی رحمۃ اللہ علیہ نے شعب الایمان میں اور دیلمی رحمۃ اللہ علیہ نے مند الفردوس میں حضرت انس ﷺ سے روایت کی ہے۔ فرماتے ہیں:

رَ كُعَنَانِ مِنْ رَجُلٍ وَرْعِ أَفْضَلُ مِنْ أَلْفِ رَكَعَةٍ مِّنْ مُخْلِطٍ "متقى آدى كى دوركعتيس مخلط بندے كى ہزار ركعتوں پر بھى فضيلت ركھتى بیں۔"

متقی بندے کو دو رکعت پر وہ اجر ملتا ہے جو عام بندے کو ہزار رکعت پر بھی نہیں ملتا۔اورمخلط بندہ وہ ہوتا ہے جو نیک اعمال کے ساتھ گناہوں کو بھی خلط ملط کرنے والا ہو۔

یہ تقویٰ کی برکت ہے کہ اس کا اجر بڑھا دیا جاتا ہے۔اللہ تعالی ارشاد فرماتے

﴿ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجُوا ﴾ (الطلاق: ۵) (اوروہ تمہارے اجرکو بہت زیادہ کردےگا) دیکھیں! ایک من مٹی ایک من ہوتی ہے۔ ایک من لو ہا ایک من ہوتا ہے۔ اور

ایک من سونا ایک من ہوتا ہے۔

ایک من مٹی کی قیمت اور ہوتی ہے اور ایک من لو ہے کی قیمت اور ہوتی ہے اور ایک من لو ہے کی قیمت اور ہوتی ہے اور ایک من سونے کی قیمت اور ہوتی ہے۔ عام آ دمی کے عمل پراگر مٹی اور لو ہے کی قیمت لگا کیس گے تو اللہ تعالیٰ متقی بندے کے اعمال پر سونے کی قیمت لگا دیں گے۔ اور کئی ایسے بھی ہوں گے جن کے عملوں کو مٹی کے جھا وُ بھی قبول نہیں فرما کمیں گے۔

حضرت انس ﷺ فرماتے ہیں کہ:

'' جوشخص اتنی ورع نہیں رکھتا کہ تنہائی میں نا فر مانی سے بیچے ، وہ جو چاہے کرے اللہ تعالیٰ کواس کے مل کی کوئی پر وانہیں۔''

الله رب العزت سے بینعت مانکیے کہ الله رب العزت ہمیں تنہائی میں گنا ہوں سے بیخے کے لیے اپنا خوف عطافر ما دے۔

حاصلِ كلام:

یا در کھیں! اگر ای طرح ملی جلی زندگی رہی کہ ضربیں پھی گئی رہیں اور گناہ بھی و تے رہے تو پھر ہم نفس کے چنگل میں بھینے رہیں گے۔ پھر ولا بت کا نور دل میں آنا ہت مشکل ہوجائے گا۔ اس لیے دل میں بینیت کر لیجے کہ آج کے بعد ہم کوئی ایسا ممل ہیں کریں گے جو ہمارے پر ور دگار کو ناراض کر دے۔ نیت پر ہی ممل کی بنیا دہوتی ہیں کریں گے جو ہمارے پر ور دگار کو ناراض کر دے۔ نیت پر ہی ممل کی بنیا دہوتی ہے۔ دنیا کاسب سے لمباسفرایک قدم اٹھانے سے شروع ہوجا تا ہے۔ آپ بینیت کر بین، ولا بت کا سفر شروع ہوجائے گا۔ آپ کی خدمت میں ولا بت حاصل کرنے کا لمریقہ بتلا دیا ہے۔ امام ربانی مجد دالف ٹائی اپنے مکتوبات میں فاری کا ایک شعر کہتے ہیں۔ اس کا ترجمہ ہیں ہے۔

"اے دوست! میں نے تجھے منزل کا پیت بتا دیا، میں نہیں کا سکا، ہوسکتا ہے

BC 4444 BBBBC 077444 BBBBC 077444 BBBBC

كەللەتغالى ئىچىچە پېنچاد \_\_''

الله تعالیٰ ہمیں موت ہے پہلے والایت کا نور عطا فر مادے اور قیامت کے دن اپنی محبت کرنے والے عشاق کی قطار میں ہمیں بھی کھڑا فر مادے۔ آمین ثم آمین

وَ اخِرُدُعُوانَا أَنِ الْحَمُدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِيْن

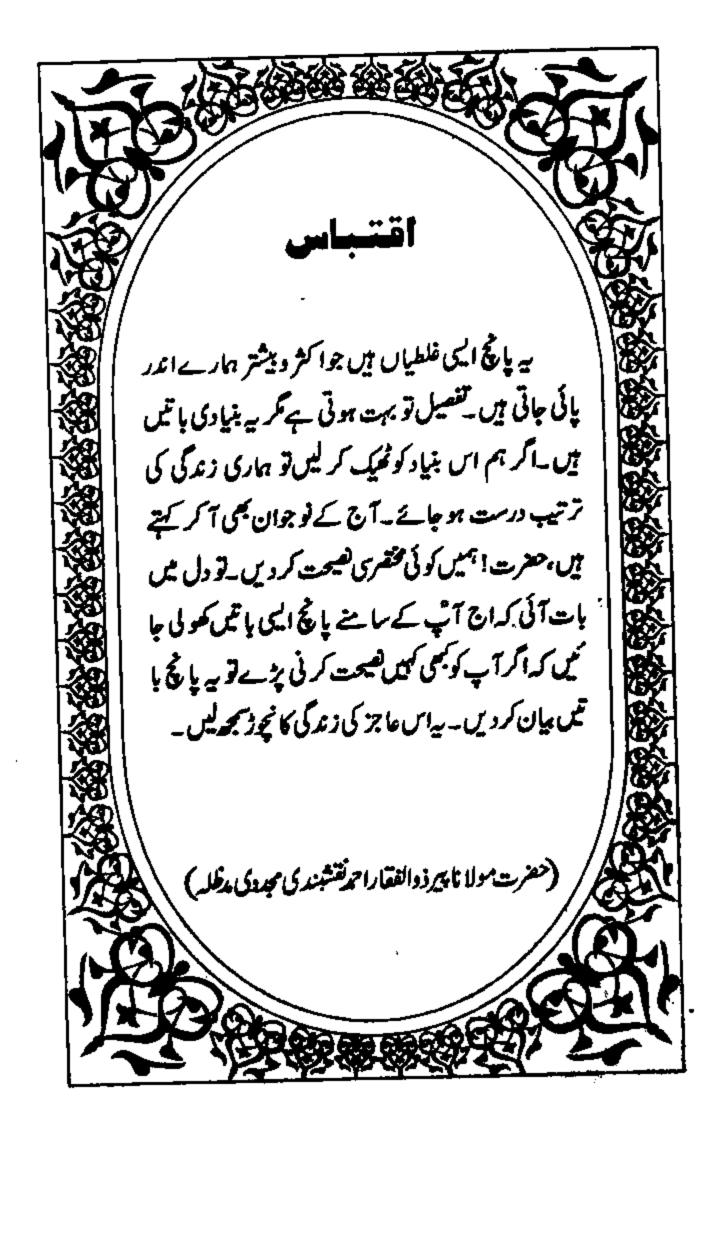




﴿ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ النَّلَى وَ هُوَ مُوْمِنُ فَلَنُحُيِيَنَّهُ حِيلُوةً طَيِّبَةً ٥ ﴾ (الخل: ٩٤)



بیان: پیرِطریقت حضرت مولانا حافظ ذوالفقارا حمد نقشبندی مجدی دامت برکاتهم



### 

# کامیابی کے بانچ اصول

اَلْحَمْدُ لِلَّهِ وَكَفَىٰ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفَىٰ آمَّا بَعُدُ! فَاعُوْذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسُمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ٥ ﴿ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكْرِ آوُ انْفَى وَ هُوَ مُوْمِنْ فَلَنَحْيِيَنَّهُ حِياوةً طَيِّبَةً ٥ ﴾ (الخل: ٩٤)

سُبُحَانَ رَبِّكَ رَبِّ اللِّعِزَّتِ عَمَّا يَصِفُونَ٥وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ٥ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ٥ وَالْحَمُدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ٥

اَللَّهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ سَيِّدِناً مُحَمَّدٍ وَّعَلَىٰ آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكُ وَسَلِّمُ

#### وعدهُ خداوندي:

ارشاد بارى تعالى ہے:

﴿ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكْرٍ أَوْ أَنْثَلَى وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُمُ حِيلُوةً طَيِّبَةً ﴾ (الخل: ٩٤)

' بس نے بھی نیک عمل کیے ، مرد ہویا عورت ہو، ایمان والا ہو ، ہم ضرور بالصرور ایمان والا ہو ، ہم ضرور بالصرور اس کو یا کیز وزندگی عطا کریں گے''

اس آیتِ مبارکہ میں ہمارے لیے بڑے سیتے کی بات ہے۔فطری طور پر ہر انسان کا میاب زندگی کے حصول کے لیے، دن رات محنت اورکوشش میں لگا ہواہے۔ اللہ رب العزت اس بات کو بہت ہی واضح لفظوں میں سمجھار ہے ہیں کہ ایمان والا ہو اور مرد ہو یا عورت ہواگر وہ نیک عمل کرے تو ہم ضرور بالضرور اسکو یا کیزہ زندگی عطا کردیں گے۔اس سے معلوم ہوا کہ ہماری کا میابی کا مدار ہمارے اعمال پر ہے۔اگر اعمال اچھے ہوں گے تو زندگی کا میاب ہوگی اور اگر اعمال بگڑ جائیں گے تو زندگی ٹاکام ہوگی۔

# زندگی کانچوڑ:

# (۱) علم پر عمل کرنا

ان میں سے سب سے پہلی کوتا ہی ہے ہے کہ ہم اپنے علم پڑمل نہیں کرتے۔شاید مارے نو جوانوں نے علم پڑمل کو علما کے ساتھ مخصوص کر لیا ہے ، بیہ بہت بردی غلطی ہے۔ ہرانسان کے پاس کچھ نہ کچھ کم ہوتا ہے اور ہرآ دمی اس بات کا مکلّف ہے کہ وہ اپنے علم بڑمل کرتے ، یہ عذرانگ کی مانند اپنے علم بڑمل نہیں کرتے ، یہ عذرانگ کی مانند ہے۔ قیامت کے دن ہر بندے سے یہ سوال پوچھا جائے گا کہ تو نے اپنے علم برکتنا عمل کیا؟

ہم جوعلم پرعمل نہیں کرتے اس میں فقظ دین ہی کی بات نہیں ، دنیا کے معالمے میں بھی یہی حال ہے چندمثالیں آپ کے سامنے پیش کرتا ہوں:

علم کے ہوتے ہوئے بے صبری:

ایک بندہ جس نے ڈیل ایم اے کیا ہوتا ہے گویا اس نے و تیاوی اعتبار سے اعلیٰ
تعلیم عاصل کی ہوتی ہے۔ وہ اگر گاڑی ڈرائیو کررہا ہے اور سامنے ریلوے چھا تک بند ہے اور کی چھا گار بند ہے اور کا ٹون بیں گھڑی ہوتی ہیں۔ اب اس کو معلوم ہے کہ جب تک ریل گاڑی نہیں گڑر وجائے گی اس وقت تک ٹریفک نہیں کھلے گی ۔ لیکن وہ کھڑی گاڑیوں کی لائن چھوڑ کر آنے والی لائن کے او پر آ کے جاکر گاڑی کھڑی کرویگا اس کی اعلیٰ تعلیم نے اس کو کیا فائدہ و یا؟ …… نہیں کہ اس کو بھے نہیں ہے، اس کو پہتہ ہے، اس کو پہتہ ہے، اس کے بیمی پہتہ ہے کہ جب تک ٹریفک نہیں چلے گی تب تک میری گاڑی بھی آ گئیں جائے گی …… کہ جب بھا ٹک کھلنا ہے تو اوھر بھی دونوں طرف یہ بھی پہتہ ہے کہ جب تک ٹریفک نہیں چلے گی تب تک میری گاڑی بھی آ گئیں جائے گی شان ہوتی ہیں اور اوھر بھی اب ہاران نج رہے ہوتے ہیں اور ایک دوسرے کو غصے کی ٹائی ہوت ہیں۔ ہمارے کی ٹگا ہوں ہے دیکھر ہے ہوتے ہیں۔ ہمارے اندر اتنا صر بھی نہیں ہوتا کہ ہم اس لائن میں ایک جگہ کھڑے ہوجا کیں۔ اور بیسوجی لیس کہ جب بھا تک کھلنے پرٹریفک چلے گی تو ہم بھی چل پڑیں گے۔ اب ویکھے کہ کم پر ایس کہ جب بھا تک کھلنے پرٹریفک چلے گی تو ہم بھی چل پڑیں گے۔ اب ویکھے کہ کم پر ایس کے۔ اب ویکھے کہ کم پر ایس کی تا کر ور ہے کہ جانے کے باوجو دہم مسئلے کو الجمارے ہوتے ہیں!

# علم کے باوجود ڈسپلن میں کمزوری:

فرائیونگ میں تو ہم اتی غلطیاں کرتے ہیں کہ کوئی حد ہی نہیں۔ اچھا بھلا ہجھدار بندہ (جواپ وفتر میں افر کہلاتا ہوہ) بھی ریڈ لائٹ کو کراس کرنا کوئی بری بات نہیں ہجھتا۔ حالانکہ بیاصول اس لیے بنائے جاتے ہیں کہ آدمی خود بھی آسانی میں رہے اور دوسروں کے لیے بھی آسانی کا سبب بنے۔ گرکوشش بیہ ہوتی ہے کہ بس ہم چلتے رہیں۔ سامنے ریڈ لائٹ آجاتی ہا اور اسی طرف کی ٹریفک چل رہی ہوتی ہے اور دوسرے کھڑے رہتے ہیں۔ اس ایے۔ ہی تماشاینا ہوتا ہے ۔۔۔۔۔۔۔ می ایک چیز کواچھا تو سیجھتے ہیں گراس چیز کواپناتے نہیں ہمارے اندر ڈسپلن نہیں ہے۔ ہم ایک چیز کواچھا تو سیجھتے ہیں گراس چیز کواپناتے نہیں ہیں اور یوں ہم اپنے علم سے فائدہ نہیں اٹھاتے۔تو اس علم کو فقط علما اور طلبا کے ساتھ میں اور یوں ہم اپنے علم سے فائدہ نہیں اٹھاتے۔تو اس علم کو فقط علما اور طلبا کے ساتھ میں مور دینا یہ شیطان کا بڑا دھوکا ہے۔ ہر بندہ اس آسینے میں اپنی تصویر دیکھے کہ میں اسے علم پرکتناعمل کرتا ہوں؟

## جانے کے باوجود ہوس بھری نظریں:

کتے نو جوان ہیں جن کو معلوم ہے کہ غیر کی عزت کی طرف نظر اٹھا تا ہری بات ہے اور وہ بھی ہر داشت نہیں کرتے کہ ان کی گھر کی عورتوں کی طرف کوئی بری نظر اٹھائے ۔ لیکن جہاں اپنا معاملہ ہوتا ہے وہاں ٹیلیفون پر با تیں بھی ہورہی ہوتی ہیں، مینج بھی دیے جارہے ہوتے ہیں، گھنٹوں کسی کی خاطر دفت بھی صرف کیا جارہا ہوتا ہے اور پھر اس کو پیتہ بھی ہوتا ہے کہ میں براکام کررہا ہوں ۔ لیکن پھر بھی لگا ہوتا ہے۔ مرد بھی، عورت بھی۔ وہ جانتے بھی ہیں کہ یہ ایک بری بات ہے لیکن نفس کی خواہش کے پیچھے ہم اس برائی کے مرتکب ہورہے ہوتے ہیں۔ وہ کی بات جب اپنے خواہش کے پیچھے ہم اس برائی کے مرتکب ہورہے ہوتے ہیں۔ وہ کی بات جب اپنے اور بھی آتی ہوتی ہیں کہ یہ ایک مرتک کی ہوتا ہے۔ اپنے اپنے ہوتی ہوتے ہیں۔ وہ کی بات جب اپنے خواہش کے پیچھے ہم اس برائی کے مرتکب ہورہے ہوتے ہیں۔ وہ کی ماسکہ ہوتو بری نظر اٹھ

رہی ہوتی ہے،اس کا مطلب میہ ہوا کہ ہم اپنے علم پر عمل نہیں کرتے۔

### مان باپ کی تا قدری:

آج کونسانو جوان ہے کہ جس کو پہتہیں کہ اپنے والدین کی خدمت کرنی چاہیے،
فرما نبرداری کرنی چاہیے اور ان کو دنیا کے اندر سکھ پہنچانا چاہیے۔لیکن کتے نو جوان
ہیں جو ماں باپ کی بات مانتے ہیں؟ ماں باپ اگر کسی بات پررو کتے ٹو کتے ہیں تو وہ
انہی کے فائد ہے کی خاطر ایسا کرتے ہیں، گرآ تکھوں پر ایسی پٹی بندھی ہوتی ہے کہ وہ
کہتے ہیں کہ بس مجھے تو اپنے دوست کے ساتھ بائیک پرجانا ہے۔ حالانکہ باپ منع کر
رہا ہوتا ہے، بیٹا! بیا چھا بچنہیں ہے، یہ پڑھتا بھی نہیں، یہ کام بھی نہیں کرتا اور ساراون
فارغ رہتا ہے لہذا اس کے ساتھ تہاری دوتی اچھی نہیں۔ گر باپ کی بات وہ ایک
کان سے من کردوسرے کان سے نکال دیتے ہیں اور پھرائی کے ساتھ جارہے ہوتے
ہیں، یہ ہماری بہت بڑی غلطی ہے۔ ا

# يانی کی ناقدری:

س کو پہتیں کہ اللہ کی نعمت کو ضائع نہیں کرنا چاہیے گریانی کی ٹونٹی کھول دیتے میں اور برش کرنا شروع کر دیتے ہیں۔اب جویانی گررہا ہوتا ہے وہ کس کھاتے میں جاتا ہے۔ یہ بندہ ویسے انجینئر بھی ہے اور ڈاکٹر بھی ہے گراللہ کی دی ہوئی ایک نعمت کو ضائع بھی کررہا ہوتا ہے۔ یہ ایک نعمت ہے۔اور ہونا تو یہ چاہیے کہ

Use it, Do not abuse it.

(اسے استعال کریں ضائع نہ کریں)

پانی نالی میں جار ہا ہوتا ہے اور ہم اس کی پروا ہی نہیں کرتے۔ ہمیں برش کرتے وفت اتن بھی تو فیق نہیں ہوتی کہ اس کو اس وفت بند کر دیں ۔ بیے کتنی چھوٹی سی بات <u>کی منائے نیم ( ایک اس کی کی کی کوشش کریں کہ میں اپ عالم</u> ہے۔اب آپ اپ آپ کواس کسوٹی پر ہروفت تو لنے کی کوشش کریں کہ میں اپ عالم پر کتناعمل کرر ہا ہوں؟ اگر ہم دنیا میں اس کا جواب نہیں دے سکتے توسم کی لیس کہ ہم قیامت کے دن بھی جواب نہیں دے سکیں گے۔

### جانتے ہوئے بھی جھوٹ:

حمس کو پیترنہیں کہ سیج بولنا احجما ہے اور جھوٹ سے ہمیشہ بچنا جا ہیے؟ ..... آج ن سومیں سے شاید ہی دو جارا یسے بندے ہوں گے جو سیج بولتے ہوں گے ....الا ماشا الله ..... وگرنهاب تو عاد تا حجوث بولتے ہیں۔اوربعض او قات تو حجوث کوجھوٹ ہی نہیں سمجھتے یعنی ان کوجھوٹ بولنے کی اتنی تو عادت پڑپچکی ہے نا۔ شیطان نے آج کے ز مانے میں گمراہ کرنے کے لیے اس کا ایک خوبصورت نام رکھ دیا ہے۔جھوٹ کا نام اس نے بہا نہ رکھ دیا ہے۔ کیوں کہ جھوٹ کے لفظ سے تو بندہ ذرامحسوس کرتا ہے کہ میں جرم کررہا ہوں مگر بہانے کے نام سے بیاحساس بھی نہیں ہوتا۔ بیوی کہتی ہے کہ بس میں نے بہانہ کر دیااور بچہ کہتا ہے کہ میں نے بس ابو کے سامنے بہانہ کر دیا۔ ماتحت کہت ہے کہ میں نے افسر کے سامنے بہانہ کر دیا۔ بھئی! بہانہ کیا ہوتا ہے؟ حقیقت میں تو حجموت ہوتا ہے۔ چنانچہ آج حجموث سے نفرت ختم ہوتی جارہی ہے۔ یہی وجہ ہے کہ آج بندہ کسی پرٹرسٹ (اعتاد ) بھی نہیں کرسکتا کہ کیا بچے ہےاور کیا جھوٹ ہے؟ اس طرح آپس میں ہر چیزمکس اپ ہوئی پڑی ہے۔معاشرہ دیکھوتو مسلمانوں کا ہے گر عمل دیکھونو بیموٹی موٹی باتیں بھی کہیں نظرنہیں آتیں .....الا ماشاءاللہ.....کس کو پیت نہیں کہ دوسروں کی خیرخواہی کرنی جا ہیے؟ .....گریہ تو ہر کوئی کیے گا کہ لوگ میرے ساتھ خیرخوا ہی کریں ،خود کتنی خیرخوا ہی کرتے ہیں؟ ....اس کی طرف دھیان ہی نہیں ہوتا۔ تو آج ہماری سوچ بالکل مختلف ہو پھی ہے۔ آج ہم اپنے علم پڑمل نہیں کرر ہے۔ ا یک وقت تھا جب مسلمانوں کی سوچ سیجھاور ہوا کرتی تھی، جب ہم صیحح معنوں میں مسلمان تنے اس وفت کی بات آپ کو سنا دیتے ہیں۔ کہ ہمارے اندر کتنی خیرخواہی اور احیمائی تقی۔

#### ايك سبق آموز واقعه:

ایک نوجوان کسب طلال کے لیے کسی دوسرے شہر گیا ، ایک دن چھٹی تھی۔ چنانچہاس نے سوچا کہ آج میں شکار کرتا ہوں لہذا وہ پرندوں کا شکار کرنے کے لیے نکلا۔اللّٰہ کی شان کہ جب اس نے ایک پرندے کی طرف تیر پھینکا تو نشانہ خطا ہوا اور وہ تیرا یک تھیلتے ہوئے عیسائی لڑکے کو جاکر لگا۔ جیسے ہی اسے تیرلگا اس کی وہیں ڈیتھ ہوگئی۔

وہ نوجوان بچے کو اٹھانے کے لیے بھا گا۔ اتنے میں بیچے کے والدین بھی آ مجے۔ اس نے بتایا کہ میں نے اراد تا تو ایسانہیں کیا ، میں نے تو اپنی طرف سے
پرندے کو تیر مارا تھا ، مگر نشانہ خطا ہو گیا۔ آ سے یہ کھیل رہا تھا اور تیراسے لگ گیا۔ اس
بچ کے رشتہ داروں نے اس کے والدین سے یہ کہا ہمیں تو نہیں پنہ کہ اس نے اراد تا
تیر مارا ہے یا غلطی سے لگا ہے۔ چنا نچے انہوں نے بچے کے والدین کو مشورہ دیا کہ اس
پرمقدمہ کر دیا۔ قاضی مسلمان ہے لہذا ہمیں تو قع ہے کہ جو حقیقت ہے وہ کھل جائے
پرمقدمہ کر دیا۔ قاضی مسلمان ہے لہذا ہمیں تو قع ہے کہ جو حقیقت ہے وہ کھل جائے
گی۔ ہمیں انصاف ملے گا ، چنا نچے اس نو جو ان پرمقدمہ کر دیا گیا۔

جب نو جوان کو قاضی کے سامنے پیش کیا گیا تو قاضی نے پوچھا: کیا ایبا واقعہ ہوا
ہے؟ اس نے کہا: جی ہاں ہوا ہے۔ قاضی نے کہا: پھر دو میں سے کوئی ایک بات اختیار
کر نو ۔ یا تو اس کے ورثاء کو راضی کر لو اور اگر راضی نہیں ہوتے تو پھر ۔۔۔۔۔﴿ إِنَّ اللّٰهُ فُسِ بِ النَّنَفُسِ ﴾ (جان کے بدلے جان) ۔۔۔۔ کے مصدات تہیں بھائی دی
جائے گی ۔ چنا نچہ اس نو جوان نے اس نے کے والدین کو راضی کرنے کی کوشش کی گر

بھیج دیا جائے اورا گلے جمعہ کو جب نماز جمعہ پڑھ کرسز ائیں دی جائیں گی تو اس کی سز ا کا فیصلہ بھی سنادیا جائے گا۔ چنانچہ اس نو جوان کو جیل بھیج دیا گیا۔

جیل کاسپر نٹنڈ نٹ عیسائی تھا، اس نو جوان نے اس سے رابطہ کیا اور کہنے لگا: میں مسلمان ہوں۔ جھے سے بید معاملہ ہوا ہے اور میرے پیچے میرا خاندان بھی ہے۔ پچے ہیں اور ان کو میرے اس معاطے کا پیتہ نہیں ،اگر آپ مجھے اپنے ذمہ داری پھی ہیں اور ان کو میرے اس معاطے کا پیتہ نہیں ،اگر آپ مجھے اپنے ذمہ داری پھو میں اور ان کو میرے اس معاطے کا پیتہ نہیں واپس آ جاؤں گا ....عیسائیوں کے راوں میں اس زمانے میں مسلمانوں کے ایفائے عہد کی اتنی دھا کے بیٹی ہوئی تھی کہ وہ عیسائی کہنے لگا: ٹھیک ہے تم چلے جاؤ اور جمعہ سے پہلے آ جانا۔ اس نے قبل کے مجرم کہ جیلے سے گھر بھیج دیا۔

جمعہ کے دن نماز جمعہ کے بعد جب قاضی نے پوچھا: فلاں بندہ کہاں ہے؟ جیل سپر نٹنڈنٹ نے کہا کہ میں نے اسے اپنی ذرمہ داری پہ بھیجا تھا مگر ابھی تک وہ آیا نہیں۔ قاضی نے کہا: ٹھیک ہے، باقی مقد مات نمٹنے تک ہم انتظار کریں گے اور اگر اس وفت تک بھی وہ نہ آیا تو اس نوجوان کے بدلے میں ہم آپ کو بھانی دی گے کیونکہ آنے اس کوچھوڑ اتھا۔

اب عیسائی اور زیادہ پریشان ہوئے کہ بندہ بھی ہمار ا مر، ا اب افسر بھی ہمار ا پھانسی پڑھے گا۔اس دوران قاضی دوسروں کے مقد ہے سمیٹنے میں لگ گیا۔ جب آخری بندہ نمٹ گیا تو قاضی نے جیل سپر ٹینڈنٹ کو بلایا اور کہا کہ اب ہم بیر حد آپ پر قائم کریں گے۔ یہ بات سننے کے باوجود جیل سپر نٹنڈنٹ کے چیرے پر پریشانی کے آثار بالکل نہیں تھے۔ چنا نچہوہ آرام سے قاضی کے قریب آگیا، لوگ جیران تھے کہ آج بیکیا ہور ہاہے۔

ائے میں کسی نے کہا جی آپ تھوڑی دیر کے لئے انظار کرلیں کیونکہ دور ہے کوئی

آوی آتا نظر آرہا ہے۔ قاضی نے کہا ٹھیک ہے، چند منٹ انظار کر لیتے ہیں۔ چنانچہ چند منٹ کے اندروہی نوجوان دوڑتا ہوا آیا۔ وہ پینے ہیں شرابوتھا، اس نے آتے ہی سب سے پہلے اس جیل سپر نٹنڈ نٹ سے معافی ما تکی اور کہا کہ میر سے راستے ہیں ایک دریا تھا، مجھے تیرتانہیں آتا تھا اور مجھے کتی کے انظار میں دریہ ہوگئ ۔ جس کی وجہ سے میں اپنے وعد بے پہلے پہنچ جاتا۔ بہر حال اب میں اپنے وعد بے پہلے پہنچ جاتا۔ بہر حال اب میں پہنچ چکا ہوں مجھے قاضی صاحب کے سامنے پیش کردیں۔ جب عیسائیوں نے اس نوجوان کی ایقائے عہد کی یہ بات سنی تو بیچ کے در ثانے قاضی سے کہا: قاضی صاحب! اس نوجوان کی ایقائے عہد کی یہ بات سنی تو بیچ کے در ثانے قاضی سے کہا: قاضی ماحب! اس نوجوان کے ایس فرجوگی ہیں دوبا تیں کردی ہے تو ہم آپ کی موجوگی ہیں دوبا تیں کرتے ہیں۔

....ا يك توني كي تقل كامقدمه والس ليت بي

.....دوسراا پنے مسلمان ہونے کا اعلان کرتے ہیں

ایک وہ وفت تھا کہ فر ہمارے عملوں کود مکھ کرمسلمان ہو جاتے تھے۔وہ ہمجھتے تھے کہ حقیقی معنوں میں مسلمان ہیں۔

## علم پڑمل نہ کرنے کی وجہ:

آج ہاری علت ہے کہ ہم اپنی ضداور ہٹ دھری کی وجہ سے باتوں کا بھنگڑ بتا دستے ہیں جس کی وجہ سے خود بھی تنگ ہوتے ہیں اور دوسروں کے لیے بھی مصیبت بن جاتے ہیں۔ پہنچ بات یہ ہے کہ ہم اللہ سے لیے و بال جان بن جاتے ہیں۔ چنانچہ ہم چیز وں کو بجھتو رہے ہوتے ہیں مگراپنی نفسا نیت ،خودسری اور تکبر کی وجہ سے ہم اس ہم چیز وں کو بجھتو رہے ہوتے ہیں مگراپنی نفسا نیت ،خودسری اور تکبر کی وجہ سے ہم اس پرعمل نہیں کررہے ہوتے ہیں عورتیں ہیں کہ ہم دوسروں کو تکلیف پہنچار ہے ہیں لیکن اس پرخوش بھی ہورہے ہوتے ہیں۔ عورتیں آپس میں بات کرتی ہیں کہ میں نے پھر اس پرخوش بھی ہورہے ہوتے ہیں۔ عورتیں آپس میں بات کرتی ہیں کہ میں نے پھر اس بات کرتی ہیں کہ میں نے پھر اس بات کی کہ بس وہ جاتی رہی ہوگی۔ یعنی دوسری کا دل جلانے کے لیے بات کی۔

یہ کتنی عجیب بات ہے! بجائے اس کے کہ ہم دوسر ہے بندےکوراحت پہنچا کمیں ہم اس کودکھ پہنچار ہے ہوتے ہیں۔

اگر گندگی فائدہ پہنچاسکتی ہےتو .....

المول کے زمانے میں ہم ایک مرتبہ ایک دیہات میں گئے ،اس عاجز کی عمراس وقت سات آٹھ سال تھی ، ہما ہے ایک کلاس فیلو نے دعوت دی کہ آئیں آپ کو دیت سات آٹھ سال تھی ، ہما ہے ایک کلاس فیلو نے دعوت دی کہ آئیں آپ کو دیر پہات دکھاتے ہیں ..... یہ وہ زمانہ تھا جب ہمیں سے پہتے ہیں تھا کہ گندم کسی پود ہے پر گئی ہے یا درخت پر ..... چنانچ ہم نے بھی اس کی دعوت خوشی سے قبول کرلی کہ جاکر دیہات دیکھیں گے۔

''اے انسان! جسے ہم گندگی کہتے ہیں اور اسے بد بودار سجھتے ہیں ،اس گندگی کو اگر کھیت میں ،اس گندگی کو اگر کھیت میں ڈالا گیا تو اس گندگی نے کھیت کو فائدہ پہنچا دیا۔ایک مسلمان ہوکراگر و ایپ ساتھ دالے کو فائدہ نہیں پہنچا تا تو ٹو گندگی اور نجاست سے بھی گیا گزراہے ،،

اگراپنی حقیت معلوم کرنا جا ہیں تو .....

قیامت کے دن سب سے پہلے بہی سوال کیا جائے گا کہتم نے اپنے علم پر کتناعمل
کیا؟ اب اس کے لیے عالم کا ہونا ضروری نہیں ہے کہ علائی سے پوچھیں گے۔ بلکہ ہر
لند سے سے پوچھیں گے اور صرف مردوں ہی ہے نہیں پوچھیں گے بلکہ عورتوں سے بھی
پچھیں گے ۔ تو ہم اپنے آپ سے آج ہی بی سوال کرنا شروع کردیں کہ ایک وقت
آئے گا، جب قیامت کے ون اللہ تعالی مجھ سے بیسوال پوچھیں گے ۔ کیا اس کسوئی
پہم پور سے اتر پائیں گے۔ اگر آج سے بھی اپنا محاسبہ کرنا شروع کردیں تو زندگی آسا
موجائے گی ، آپ کا دل آپ کو ٹھیک ٹھیک بتا د ہے گا۔ اگر آپ اپنی حقیقت معلوم
کرنا جا ہیں تو اپنے ول سے گواہی لیس ، کیوں کہ دل وہ گواہ ہے جو ہمیشہ تچی بات بتا تا
ہے اور بھی رشوت قبول نہیں کرتا ۔ صاف تصویر دکھا دیتا ہے کہ میاں! تم استے پانی میں
ہو ،خواہ ہم لوگوں کے مرامنے جو مرضی چبر سے جائے گھریں۔

﴿ بَلِ الْإِنْسَانُ عَلَى نَفْسِهُ بَصِيْرَةٌ وَ لَوْ اللَّهَى مَعَاذِيْرَه ﴾ (القيامة:١٣١٥)

انسان کواپنے بارے میں پنہ ہوتا ہے۔ دوسروں کے سامنے بے شک عذر پیش
کرتا پھرے ۔ تو آج انفرادی طور پر اوراجتا کی طور پر ہماری تنزلی اور گراوٹ کا سب
سے پہلا سبب ہے کہ ہم اپنے علم پر عمل نہیں کرتے ۔ جا ہے کوئی وین کا پڑھا لکھا
ہو، جا ہے دنیا کا ۔ تو اب یہ بات ہم لیس کہ کا میابی کا پہلا اصول یہ ہے کہ اپنے علم پر
عمل کرنا ہے۔

(۲) بروں کے تجربات سے فائدہ اٹھانا

ہاری دوسری غلطی میہ ہے کہ ہم اپنے بروں کے تجربات سے فائدہ نہیں

J-61 COM BEST COS DE SES O DAGE DE

اٹھاتے۔ہم اپنے بڑوں کی نصیحتوں پڑمل نہیں کرتے۔

تضيحتوں كى حقيقت:

یا در کھیں کہ ماں باپ کی یا پیراستاد کی تقییحتیں بنیادی طور پر ان کی زندگی کے تجربات ہوتے ہیں۔انگریزی میں کہتے ہیں

There is no shortcut to experience.

( تجربے کا کوئی شارٹ کٹ نہیں )

تو بجائے اس کے کہ ہم سب کچھ خود بھگتیں اور پھر آخر میں سمجھ آئے کہ ہمیں ایبا نہیں کرنا چاہیے تھا۔ ہم اپنے بڑوں کی تصیحتوں پڑمل کرلیا کریں۔

تجربہ کار (Experienced) بندے کا کیا مطلب ہوتا ہے؟ ..... اس کا مطلب سے ہوتا ہے؟ اس کا مطلب سے ہوتا ہے کہ وہ بندہ جواپی زندگی میں بہت علطیاں اور کوتا ہیاں کر چکا ہوا ور اسے پتہ ہو کہ اب میں نے بیکوتا ہیاں نہیں کرنی۔ اس لیے جب فیکٹری میں کوئی بندہ رکھنا ہوتو کہتے ہیں: کوئی تجربہ کار بندہ لے آؤ! کیوں؟ اس لیے کہ وہ بہت کوتا ہیاں کر چکا ہوگا اور اب اسے پتا ہوگا کہ میں نے کوئی کوتا ہیاں نہیں کرنی۔

ایک آدمی جب کوئی کام سیکھتا ہے تو اس کے دوپہلو ہوتے ہیں۔ایک پہلویہ ہے

(کیاکرناہے؟) .....(کیاکرناہے؟)

کام کوسیکھنا کہ میں نے کام میں کیا کرنا ہے؟ بیام سیکھنے کا ایک پہلو ہے۔ اور ایک اور پہلوبھی ہے، وہ بیاکہ:

(کیانہیں کرنا؟).....?What not to do

بندہ تھیوری کے ذریعے ہے بہ تو جلدی معلوم کر لیتا ہے کہ کیا کرنا ہے۔لیکن سیکیانہیں کرنا؟ بہ دھکے کھا کے حاصل ہوتا ہے اور تجربہ کاربندے کو پہتہ ہوتا ہے کہ مجھے یہ بیں کرنا، کیوں کہ اس میں نقصان ہے اور فائدہ نہیں ہے۔ اسی طرح ہمارے بوے ہمیں جونفیحت کرتے ہیں وہ ساٹھ ستر سال کی عمر کا نچوڑ بتارہے ہوتے ہیں کہ بچو! بیرنہ کرواس میں تمہارا نقصان ہے۔

### نو جوانوں کی رعونت:

آج کے نوجوانوں کی تو حالت ہی ہے بن چک ہے کہ وہ بات ہی نہیں سنتے۔ نہی المبنی نے قرب قیامت کی ایک نشانی ہے بتائی کہ نوجوان اپنے دوست کوزیادہ محبوب رکھیں اور اپنے ماں باپ سے دور ہوجا کیں۔ اور کئی جگہوں پر تو ایسا ہے کہ نوجوان اپنے باپ سے ایسے نفرت کرتے ہیں جسے پاپ سے نفرت کی جاتی ہے۔ وہ جو کسی زمانے میں باپ سے محبت کا تعلق تھا اور اس سے فائدہ اٹھا یا جاتا تھا آج وہ تصور ہی ختم ہوتا جا رہا ہے ۔ دولڑ کے آپس میں باتیں کر رہے تھے، ایک نے کہا: بھی ! تمہار سے ابو تین چار مرتبہ ہیتال جا چکے ہیں خیر تو ہے؟ اس نے جواب ویا: ہاں، تہیں دو تین مرتبہ ہارٹ افیک ہوا ہے گھر ہارٹ افیک ہوا ہے گھر ہارٹ افیک ہوا ہے۔ اور آج پھر ہاسپول گئے ہیں۔

· I hope he will be able to make it this time.

#### (ميراخيال ہے كه اب وه ٹرك جائے گا)

اپ باپ کے بارے میں رہے کہ رہا تھا، یہی بنیاد ہے جس کی وجہ سے ہمارے نو جوان اپنے ماں باپ کی سونے کے پانی سے کھی جانے کے قابل تھیجئیں، بیٹھ پیچھے ڈال دیتے ہیں۔ صرف رہ بات نہیں ہے کہ ممبر ومحراب سے من کراس پڑمل نہیں کرتے مہیں نہیں نہیں نہیں کرتے ہیں؟ خاوند ہوی کومنع کرتا ہے کہ تمہارے لئے ریٹھیک نہیں، ریٹھیک نہیں ۔۔۔ کیا وہ سنتی ہے؟ بڑا بھائی جھوٹے بھائی کو منع کرتا ہے کہ منع کرتا ہے کہ بھائی کو منع کرتا ہے کہ تمہارے لیے ریٹھیک نہیں، ریٹھیک نہیں، کیا وہ مانتا ہے؟ تو یہ کہی چیز منع کرتا ہے کہ تمہارے لیے ریٹھیک نہیں، ریٹھیک نہیں، کیا وہ مانتا ہے؟ تو یہ کہی چیز

ہے؟ جو بحثیت قوم ہمارے اندر Develop (پروان) ہو پیکی ہے ، اس کوختم کرنے کی ضرورت ہے۔ تا کہ ہماری پرسٹیلٹی (شخصیت) ایسی بن جائے کہ ہم اپنے بڑوں کے تجر بے سے فائدہ اٹھانے والے بن جائیں۔ جب بڑوں کے تجر بے سے فائدہ اٹھانے والے بن جائیں۔ جب بڑوں کے تجر بے سے فائدہ اٹھانے والی صفت ہمارے اندرآئے گئو پھر جمعہ کے دن ہم سب سے پہلے مسجد میں بہتے ہوئے کہ ہم خیر کی باتیں سنیں اور ان پڑل کریں۔

ریے خیر کی باتیں سننے کی صفت ہی ہمارے اندر سے ختم ہوتی جار ہی ہے، ہم سننا ہی انہیں چاہتے ،آج تو ہر بندہ سنانا چاہتا ہے۔ہم نے کئی باردیکھا ہے کہ دو بندے آپس میں بات چیت کررہے ہوتے ہیں تو وہ بھی بول رہا ہوتا ہے اور بیہی بول رہا ہوتا ہے۔ دو اس بہی بول رہا ہوتا ہے۔ نہ وہ سن رہا ہوتا ہے۔ اور نہ بیس کہ ہم کسی کی بات کو تو جہ سے من ہی لیس۔ آج تو نو جوان آپس میں باتیں کررہے ہوتے ہیں اور نئے نئے پلان بنا کران پر عمل کررہے ہوتے ہیں جبکہ حقیقت یہ ہے کہ:

Young leading the young is like a blind leading the blind.

They can both fall into the ditch.

(کسی نو جوان کا دوسر نے نو جوان کورہنمائی دینا ایسا ہی ہے جیسے کسی اندھے کا دوسر نے اندھے کورہنمائی دینا ، و ، دونوں گڑھے میں گرشکتے ہیں )

آج کے نو جوان کی حالت اس قدر ناگفتہ بدین چکی ہے کہ اگر کسی پر نظر پڑ جائے کہ دیکھا کہ ذیرا اچھا شہدہ ہے تو کہتا ہے: بس ، ابو! میں نے ادھر ہی شادی کرنی ہے۔ اس کے ابو بتاتے ہیں کہ اس کی اتی تعلیم ہی نہیں اور تیرے ساتھا اس کا جوڑ ہی نہیں ۔ گروہ سنتا ہی نہیں ، وہ یہی کہتا ہے کہ بس کرنی ہے۔ جب ایسی جگہ پرشادی کر لیتے ہیں تو چھر سازی زندگی روتے بھی ہیں اور بھگتے بھی ہیں ۔ چنا نچے ہمیں اچھے مسلمان ہونے کی حیثیت سے چاہے کہ ہم بڑوں کی با تیں توجہ سے سنا کریں اور پھر مسلمان ہونے کی حیثیت سے چاہے کہ ہم بڑوں کی با تیں توجہ سے سنا کریں اور پھر مسلمان ہونے کی حیثیت سے چاہے کہ ہم بڑوں کی با تیں توجہ سے سنا کریں اور پھر

ان پڑمل کیا کریں۔ بعض اوقات ان تصیحتوں کی حکمت بعد میں سمجھ آتی ہے۔ اس لیے اس وقت سمجھ میں نہیں آرہی ہوتی کہ اس وقت ہم شارٹ سائڈ ڈ ہوتے ہیں۔ ہمارا ویژن ہی اتنانہیں ہوتا کہ ہم اتنا دور دیکھ سکیس کیکن ہمارے ماں باپ کی نظر دور تک ویژن ہی اتنانہیں ہوتا کہ ہم اتنا دور دیکھ سکیس کیکن ہمارے ماں باپ کی نظر دور تک ویکھ رہی ہوتی ہے۔ اگر بعد میں سمجھ میں آیا تو وہ معاملہ ہوگا کہ 'اب پچھتائے کیا ہوت جب چڑیاں چگ گئیں کھیت'۔

نو جوان اول تو نفیحت کی با تیں سنتے ہی نہیں اور اگر سنتے ہیں تو ان پڑمل نہیں کرتے حالانکہ ہمیں تو یوں کہا گیا ہے :

> كَلِمَةُ الْحِكْمَةِ ضَالَّةُ الْمُؤمِنُ (حكمت كى بات مومن كى كمُ شده چيز ہے)

بس تو بہ حکمت کی بات جہاں ہے بھی ملے حاصل کر لینی چاہیے، پہلے وتتوں میں ماں باپ اپنے بچوں کو قیمیت کیا کرتے تھے اور پھر بچے ان سے فائدہ اٹھایا کرتے تھے۔ آج نفیحت کرنے کا سلسلہ نظر ہی نہیں آتا۔ کتنے مرد ہیں جو آج گھروں میں نفیحت کی باتیں سمجھاتے ہیں؟ یا در کھیں کہ جس گھر کے مردا پنے اہل خانہ کو نیکی اور نفیحت کی بات نہیں سمجھاتے اس گھر کے مُر دوں اور مردوں میں کوئی فرق نہیں۔ یہ ماری ذمہ داری ہے کہ ہم اپنے گھروں میں خیر کی باتیں کیا کریں۔ تو یہ بات یا در کھیں کہ کا میانی کا دوسرااصول بڑوں کے تجربات سے فائدہ اٹھانا ہے۔

# (۳) گناهول پراستغفار

ہماری تیسری بڑی کوتا ہی اور غلطی یہ ہے کہ ہم اپنے گنا ہوں پر استغفار نہیں کرتے ۔ یہی وجہ کرتے ۔ یہی وجہ کرتے ۔ یہی وجہ کرتے ۔ یہی وجہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کی بہت ساری رحمتیں رک جاتی ہیں ۔ حدیث پاک میں آیا ہے کہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کی بہت ساری رحمتیں رک جاتی ہیں ۔ حدیث پاک میں آیا ہے کہ

طُوْبلی لِمَنُ وَّجَدَ فِی صَحِیْفَتِهٖ اِسْتِغُفَارَ کَیْنُراً ''مہارک ہواس مخص کوجو (قیامت کے دن) اپنے نامہا عمال میں سے سے زیادہ استغفار کاعمل دیکھےگا''

### استغفارسب مسائل كاحل:

ایک مرتبہ حضرت حسن بھری ہیٹے ہوئے تھے۔ایک آ دمی ان کے پاس آیا،اس
نے کہا: حضرت! میں بہت گنا ہگار ہوں ،کوئی عمل بتا دیں۔فرمایا: استغفار کرو! پھر
ایک اور بندہ آیا اس نے کہا: حضرت بارش نہیں ہور ہی ،کوئی وظیفہ بتا دیں۔جس کی
وجہ سے اللہ تعالیٰ بارش عطا فرما ویں۔فرمایا: استغفار کرو! پھر ایک اور آ دمی آیا، کہا:
حضرت! بہت غریب ہوں ،کوئی عمل بتا دیں جس کی برکت سے اللہ تعالیٰ میرے
عالات الجھے کردے اور مال عطافر مادے۔فرمایا: استغفار کرو! ایک آ دمی اور آیا کہ
جی میری اولا ونرینہیں، آپ کوئی ایساعمل بتا دیں جس کی برکت سے اللہ تعالیٰ بینمت
عطافر دیں۔فرمایا: استغفار کرو!

ایک آدی پاس بینا تھا، وہ من کر بڑا جیران ہوا اور کہنے لگا: حضرت! بیا چھا
فارمولا آپ کے ہاتھ میں آیا ہے کہ ہرایک کوفر مارہے ہیں کہ استغفار کرو، استغفار
کرو۔ حضرت نے جواب ویا کہ میں نے ان کوا پی طرف سے کوئی بات نہیں کی بلکہ
اللہ کے قرآن کی روشنی میں ان کوجواب دیے ہیں۔ قرآن مجید کی آیت ہے:
اللہ کے قرآن کی روشنی میں ان کوجواب دیے ہیں۔ قرآن مجید کی آیت ہے:

(﴿ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُ وُ ا رَبّکُم اِنّهُ کَانَ عَفَارًا ﴾ (النوح:۱۰)
اللہ کے سامنے استغفار کرو، وہ گنا ہوں کو معاف کرنے والا ہے۔ فرمایا کہ پہلے
آدی نے گنا ہوں سے معافی کاعمل ہو چھا تھا اور میں نے اسے استغفار بتایا تھا:
آئی فرمایا:

﴿ يُوسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِّدُرَارًا ﴾ (النوح:١١) "الله كے سامنے استغفار كرو، وہ تنہارے اوپر بارش برسائے گا" دوسرے نے بارش كامسكه يو چھا، للبذا میں نے اسے بھی بہی كہا كہ استغفار كرو۔ اللہ تعالى آ گے فرماتے ہیں:

الدر مال کے ذریعے وہ (اللہ تعالی ) تہماری درکے گا'

''اور مال کے ذریعے وہ (اللہ تعالی ) تہماری درکرے گا'

غریب کے وظیفہ پوچھنے پر میں نے اس لیے استغفار کرنے کے لیے کہا تھا۔

و بینی ''اور بیٹوں کے ذریعے تہماری مدد کرے گا'

اس لیے اولا ونرینہ کے طالب کو میں نے کہا تھا کہ استغفار کیا کرو۔

﴿ و یَجْعَلْ لَکُمْ جَنّٰتٍ ﴾ (النوح: ۱۲)

میں نے اس لئے باغ والے کو بیٹل بتایا کہ استغفار کرو۔

میں نے اس لئے باغ والے کو بیٹل بتایا کہ استغفار کرو۔

﴿ وَ یَجْعَلْ لَکُمْ اَنْھَارًا ﴾ (النوح: ۱۲)

﴿ وَ یَجْعَلْ لَکُمْ اَنْھَارًا ﴾ (النوح: ۱۲)

﴿ وَ یَجْعَلْ لَکُمْ اَنْھَارًا ﴾ (النوح: ۱۲)

''اورتمہارے کیے(زمین سے) چشمے جاری کرو ہےگا۔'' اس لیے میں نے زمین میں چشمے کے طالب کواستغفار کرنے کے لیے کہا۔ اب دیکھیں کہا کیا ستغفار کے کمل پرہمیں کتنے فائد سے کسے ہیں۔''

عاملوں کی گاڑی کیسے چلتی ہے؟

آج جیے دیکھووہ عاملوں کے پیچھے بھا گاجار ہاہے جملیات والوں کے پاس جاجا کرا پناا کیان خراب کر بیٹھے ہیں ۔ کیاضرورت ہےان کے پاس جانے کی؟ استغفار سیجھے اور مرادیں پاہیۓ ۔ یا در کھیں کہ عامل لوگ بندوں کو بہت ہی ڈراتے ہیں اور کہتے ہیں کہ لگتا ہے کسی نے پچھ کیا ہوا ہے، اگلی سٹوری وہ خود بنا لیتے ہیں۔ ہیوی کہتی ہے: ویکھا! آپ کی بہن نے پچھ کیا ہوا ہے۔ خاوند کہتا ہے: مجھے لگتا ہے کہ فلال نے پچھ کیا ہوا ہے۔ خاوند کہتا ہے: مجھے لگتا ہے کہ فلال نے پچھ کیا ہوا ہے۔ بول قریب کی رشتہ داریاں ایک دوسرے کے ساتھ چھیی دشمنیوں میں بدل جاتی ہیں۔ ان عاملوں کے پاس بالکل نہیں جانا چاہے، یہ پروفیشنل (پیشہ ور) قتم کے لوگ اس طرح دوسروں کی پریشانیاں دور کر سکتے تو وہ اپنی پریشانیاں دور مند کہ کہ دے نہ کہ کہا ہے۔ وہ تو اس انظار میں بیٹھے ہوتے ہیں کہ کوئی مرغا آئے اور پھنے، پچھ دے ادر ہمای گاڑی چلے۔ وہ تو اس انظار میں بیٹھے ہوتے ہیں کہ کوئی مرغا آئے اور پھنے، پچھ دے کور ہمای گاڑی چھا کہا ہوں گاڑی آپ کے جانے ہیں۔ پچھلوگ ہو، وہ آپ کی گاڑی کہا جاتے ہیں۔ پچھلوگ تو بندوں کو چھوٹا خدا بنا لیتے ہیں اور کہتے ہیں: حضرت! لگتا ہے کس نے ہمارا کاروبار با ندھ دیا ہے۔ اب ایک بندہ مسلمان ہے اور اس کی زبان سے بیا لفاظ فلا کس ہے ہیں کہی نے کاروبار کو با ندھ دیا ہے۔ اس کا یہ کہنا کتنا عجیب ہے! کیونکہ رز ق تو اللہ توالی دیتا نے کاروبار کو با ندھ دیا ہے۔ اس کا یہ کہنا کتنا عجیب ہے! کیونکہ رز ق تو اللہ توالی دیتا نے کاروبار کو با ندھ دیا ہے۔ اس کا یہ کہنا کتنا عجیب ہے! کیونکہ رز ق تو اللہ توالی دیتا

﴿ وَ مَا مِنْ دَآبَةٍ فِي الْآرُضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ دِزْقُهَا ﴾ (بود: ٢)

''اورز مین میں جوزی روح جاندار ہے اس کارز ق اللہ کے ذہے ہے''
رز ق تو اللہ تعالی دیتا ہے اور ہم کہتے ہیں کہ کسی نے رزق باندھ دیا ہے۔ یوں
گویالوگوں کوچھوٹا خدا بنا لیتے ہیں۔ یہ بھی کہتے ہیں کہ کسی نے میری بٹی کارشتہ باندھا
ہوا ہے۔ یا در کھیں کہ کوئی پچھنیں باندھ سکتا۔ سب کا م اللہ رب العزت کے اذن سے
ہوتے ہیں۔ ہم اللہ رب العزت کوخوش کرلیں تو اس کی طرف سے ہمارے لیے خیر
کے فیصلے ہوجا کیں گے۔ اور ان تمام پریشانیوں کا حل استغفار ہے۔

مصيبتول سے چھٹكارايانے كانسخه:

اس استغفار کی وجہ سے اللہ تعالی بندے کومصیبتوں اور عذابوں سے بچاتے

اوراللہ ان کواس وقت تک بھی عذاب نہیں دے گا جب تک وہ استغفار کرتے رہیں گے۔ بٹی کا رشتہ نہ ہونا کتنا بڑا عذاب ہے! نو جوان کو رزق نہ ملنا یا اس کا کاروبار نہ چلنا کتنا بڑا عذاب ہے! نو جوان کو رزق نہ ملنا یا اس کا کاروبار نہ چلنا کتنا بڑا عذاب ہے!لیکن یا در تھیں کہ جب تک ہم استغفار کرتے رہیں گے اس وقت تک اس عذاب سے بچے رہیں گے۔ انہی کے غم میں مال کو ایسی بیاریاں لگ جا تیں ہیں کہ وہ پریشان ہو جاتی ہے۔ اصل بات یہ ہے کہ ہم ابھی استغفار کے فوائد ہی نہیں سمجھ یائے۔

### هروفت استغفار کریں:

آپ استغفار کی کثرت کریں۔ ایک توبہ ہے کہ صبح وشام یہ پڑھا جائے۔ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّنی مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ وَ ّ اَتُوْبُ اِلَیْهِ

یہ تو پورااستغفار ہے۔ اگر مرد حضرات کیلئے پھرتے بھی ۔۔۔۔۔استغفراللہ، استغفراللہ، استغفراللہ استغفراللہ استغفراللہ استغفراللہ استغفراللہ کے موئے بھی ۔۔۔۔۔ بڑھے رہیں اورعورتیں گھر میں کھانا تیار کرتے وقت اورصفائی وغیرہ کرتے ہوئے بھی استغفراللہ کرتی رہیں گی تو اس کو بھی استغفار میں شامل کرلیا جائے گا۔لوگ کہتے ہیں جی کوئی عمل بتائے ؟ بھی ایاس سے بڑا عمل کیا ہے؟ اس پرتو اللہ کا قرآن گواہی وے رہا ہے کہ یہ سب نعمتیں استغفار کے سیامتی ہیں۔

### بغیر غلطی کے بھی استغفار کریں:

ہمیں چاہیے تو یہ تھا کہ ہم بغیر غلطی کے بھی استغفار کرتے۔اس لیے کہ بغیر غلطی

کے استغفار کرنا رحمت الہی کو تھینچنے کا سبب بنتا ہے۔ آپ کا بیٹا اگر کسی وفت آپ کے پاس آ کر معافی ما نگ رہا ہوا ور کہدر ہا ہو کہ امی ! اگر مجھ ہے کوئی غلطی ہوگئی ہوتو مجھے معافی ما نگ رہا ہے اور اس نے غلطی نہ کی ہوتو کیا ایسی صورت میں اس پر پیار نہیں آتا ؟ ۔ ماں کہتی ہے کہ یہ میراکتنا پیارا بیٹا ہے کہ بغیر غلطی کے مجھ سے معافی ما نگ رہا ہے! استغفار کا معاملہ بھی ایسے ہی ہے۔ جب بندہ بغیر غلطی کے اللہ رب العزت کے بااستغفار کرتا ہے تو اللہ تعالیٰ کو بھی اپ اس بندے پر پیار آتا ہے۔ چنا نچہ یہ مامنے استغفار کرتا ہے تو اللہ تعالیٰ کو بھی اپ اس بندے پر پیار آتا ہے۔ چنا نچہ یہ اصول بنالیس زندگی کا کہ اللہ کے حضور ہر وقت نادم وشر مندہ رہنا ہے اور استغفار کرتے رہنا ہے اور استغفار کرتے رہنا ہے۔

# (۱۲) نعمتوں پراللہ کاشکرادا کرنا)

ہماری چوتھی کوتا ہی ہیہ ہے کہ اللہ رب العزت نے جونعتیں ہمیں عطا کی ہیں ان کا صحیح معنوں میں شکرا وانہیں کرتے۔ ہمیں نعمتوں کاشکرا واکرنا اس دفت یا وآتا ہے۔ جب وہ نعمت چلی جاتی ہے۔ سی نے کہا تھا کہ نعمتوں کاشکرا واکرنے کے لیے نعمتوں کے چھن جانے کا نظار نہ کرنا۔ جب نعمت چھن جائے اس وفت اس کاشکرا واکرنے کا کیا فائدہ ؟ نعمتوں کی موجودگی میں ہی نعمتوں کاشکرا واکیجیے۔

صحت نعمت ہے۔

فراغت کاوفت نعمت ہے۔

مال نعمت ہے۔

جوانی نعمت ہے۔

ماں باپ نعمت ہیں۔

پیراستادنعمت ہیں ۔

ان نعتوں کی ہم تنی قدر کرتے ہیں اور کتنا اللہ کا شکرا داکرتے ہیں؟ بلکہ ہم نے تو یہ دو یکھا کہ جس بندے کو اللہ نے اتنا مال دیا ہوتا ہے کہ وہ اپنے گھر کے ساتھ ساتھ چالیں اور خاندانوں کو بھی سپورٹ کرسکتا ہے، اس بندے ہے بھی پوچھیں کہ سنا کیں کام کان کیسا ہے؟ تو وہ بھی کہتا ہے، جی بس گزارا ہے۔ اب اگر اللہ نے اتنا دیا ہوا ہے اور پھراس بات کے جواب ہیں ہم یوں کہیں کہ بس گزارا ہے تو اس پر اللہ کو خصہ آکے گایا نہیں؟ اس طرح خاوندا پنی یوی پر بے تھا شا دولت خرچ کرتا ہوا ور اس کی بیوی اپنی ماں کو یہ رپورٹ دے کہ ہیں بس گزارا ہی کر رہی ہوں، تو خاوند کو کتنا غصہ آکے گا؟ بہی حال ہمارا ہے، کہ ہم پر اللہ تعالیٰ کی بے شار نعتیں ہیں اور پھر ہم کہتے ہیں بی بی کر ارا ہے۔ پہنیں ہماری زبان کیوں جھوٹی ہو جاتی ہے۔ ہمیں تو یہ چا ہے تھا کہ ہم یوں کہتے : او جی! اللہ نے تو مجھے اتنا دیا کہ ہیں تو ساری زندگی جدے ہیں سر گزال کر اللہ کا شکر ادا کرتا رہوں تو ہیں اپنے مولا کا پھر بھی شکر ادا نہیں کر سکتا ہم کیوں نبیس کہتے کہ جی اللہ تعالیٰ نے تو ہم بے قدروں کو ہماری او تا ت سے بھی ہر ھرکرا پی نعتیں عطافر مائی ہیں۔

### تنین آ دمیوں کی آ ز مائش کا واقعہ:

ترجمان السند میں حضرت مولانا بدر عالم طلانے نے ایک حدیث نقل فرمائی ہے۔ فرماتے ہیں کہ بنی اسرائیل کا ایک آ دمی تھا، وہ برص کا مریض تھا، جلد پر جوسفید دانے بن جاتے وہ برص کے داغ ہوتے ....اس کے چہرے پر برص کے ایسے نشان تھے کہ اس کا چہرہ دیکھنے کولوگوں کا دل نہیں کرتا تھا۔ اتنی کراہت ہوتی تھی۔ اس کا کام کا ج بھی نہیں جانا تھا۔

ایک آ دمی اس کے پاس آیا اور کہنے لگا: سناؤ بھٹی! کیا حال ہے؟ کیسا وفت گزر رہا ہے؟ اس نے کہا: کیا بتاؤں! بیاری بھی ہے، میں لوگوں میں بیٹھنے کے قابل بھی نہیں، میرا کاروبار بھی نہیں، اور بہت تنگی کے دن گزرر ہے ہیں۔اس آ دمی نے اس برص والے کو دعا دی کہ اللہ تیری بیاری کو بھی ٹھیک کر دے اور تجھے رز ق بھی فراغ عطا فرمائے۔اللہ تغالی نے اس بندے کی بیاری بھی ٹھیک کر دی اور اس کو ایک بنٹن، عطا کی مات اور اس کو ایک بنٹن، عطا کی مات اور اس کو ایک بنٹن کیا اور کی مات اور کا مالک بن گیا اور برے ٹھاٹھ کی زندگی گز ارنے لگا۔

وہی آ دمی وہاں ایک اور آ دمی کے پاس گیا، اس کے سرپر بال نہیں ہتھ، گنجا تھا۔
اس کا بھی کاروبار نہیں چاتا تھا۔ اس نے اسے پوچھا: سناؤ بھئی! کیا حال ہے؟ کہنے لگا: جی کیا بتاؤں! بس جہاں جاتا ہوں لوگ میرا نداق اڑاتے ہیں ،میرا کاروبار بھی نھیک نہیں اور میں بڑی پریشانی میں وفت گزار رہا ہوں۔ اس نے اسے بھی وعادی۔
اللہ تعالیٰ نے اس کی وعاکی برکت سے اسے خوبصورت بال عطا کرویے۔ جس سے اللہ تعالیٰ نے اس کی پرسلٹی بہترین بن گئی۔ اس کواللہ تعالیٰ نے ایک گائے دی۔ اس ایک گائے کی نسل اتنی بڑھی کہ وہ سینکڑوں گایوں کا مالک بن گیا، اس کی زندگی میں بھی خوشحالیٰ نسل اتنی بڑھی کہ وہ سینکڑوں گایوں کا مالک بن گیا، اس کی زندگی میں بھی خوشحالیٰ نے۔

پھر وہ تیسرے بندے کے پاس گیا وہ اندھا تھا۔اس سے پوچھا: سناو بھئ!

کیے گزرر ہی ہے؟ کہنے لگا: میں کیا بتا وُں! لوگوں سے ما نگ کے روٹی کھا تا ہوں ، در در کے و ھکے کھا تا ہوں ، لوگوں کے لیے تو فقط رات میں اندھیرا ہوتا ہے اور میر بے لیے تو دن کی روشنی میں بھی اندھیرا ہوتا ہے۔ جس کوا ماں کہتا ہوں میں نے اس کی شکل لیے تو دن کی روشنی میں بھی اندھیرا ہوتا ہے۔ جس کوا ماں کہتا ہوں میں اور میرا کاروبار بھی کوئی ایک مرتبہ بھی نہیں دیکھی ، ابو کی شکل بھی تہمی نہیں دیکھی ۔اور میرا کاروبار بھی کوئی نہیں ۔اس نے اسے بھی دعا دی۔ اللہ تعالیٰ نے اس بند ہے کی بینائی بھی ٹھیک کر دی اور اس کوایک بکری دی ،اس بکری کی اتنی نسل بڑھی کہ وہ بکریوں کے بڑے ریوڑ کا اور اس کوایک بکری دی ،اس بکری کی اتنی نسل بڑھی کہ وہ بکریوں کے بڑے ریوڑ کا الک بن گیا۔

بنی اسرائیل کے بینیزوں آ دمی بڑے بڑے نواب بن گئے۔ جب پیبہ آتا ہے تو پھر انسان سہولت بیند ہو جاتا ہے۔ چنا نچہ ان کے حل بن گئے ، خوبصورت بیویاں آگئیں ، نوکر چاکر آگئے ، لاکف شینڈرڈ او نچا ہو گیا اور خوب ٹھاٹھ کی زندگی گزار نے گئے۔ پھر دوست بھی بہت بن گئے۔ کی سالوں تک وہ اس طرح اللّٰہ کی نعمتوں کے مزے لیتے رہے اور بلتے رہے۔

ایک دن وہی بندہ پہلے آدی کے پاس آیا اور آکرا ہے کہا: بھی! بات ہے کہ میں بہت مختاج ہوں ، میں ضرورت مند ہوں ، اللہ تعالیٰ نے آپ کو بہت کچھ دیا ہے ،
آپ اللہ کے لیے جھے کچھ دے دیں ۔ ایک وفت تھا آپ کے پاس بھی کچھ نہیں تھا:
آج دیکھو! اللہ نے آپ کو کتنا کچھ دیا ہے! جب اس نے بیسنا کہ ایک وفت تھا جب آپ کے پاس بھی ہمنیں تھا جب آپ کے پاس بھی ہمنیں تھا ہوں کہنے لگا: آجاتے ہیں مندا تھا کے ،
آپ کے پاس کچھ نہیں تھا، تو اس کو غصہ آگیا اور کہنے لگا: آجاتے ہیں مندا تھا کے ،
بات کرنے کی بھی تمیز نہیں ۔ خبر دار! میں تمہیں و تھکے دے کریہاں سے نکال دونگا،
میں تو شروع سے ہی امیر تھا ۔ کیا تم سے میں نے پینے مانگے ہوئے ہیں؟ جب وہ میں تو شروع سے ہی امیر تھا ۔ کیا تم سے میں نے پینے مانگے ہوئے ہیں؟ جب وہ ناراض ہونے لگا، تو اس نے کہا: بھی! آپ جھے سے ناراض نہ ہوں ، میں جا رہا ہوں ۔ بس آپ جیسے تھے اللہ تغالی آپ کو ویسا کرد ہے ۔ اس کے بعدا ایس بیاری آئی کہا وہائوں کا سارار بوڑختم ہوگیا اور وہی برص کی بیاری لگ گی۔

اس کے بعد وہ دوسرے آدمی کے پاس گیا۔ جو گنجا تھا اس سے کہا: بی میں مختاج ہوں، فقیر ہوں، آپ کو اللہ نے بہت دیا ہے، آپ اللہ کے نام پہ مجھے بھی کچھ دے دیں، میری مددکریں، ایک وفت تھا کہ آپ کے پاس بھی کچھ نہیں تھا اور آج بہت کچھ ہے۔ جب اس نے بیہ بات کی تو اس کو بھی غصہ آیا اور کہنے لگا: کچھے بات کرتے ہوئے شرم نہیں آتی ، میں نے ورختوں سے جا کے پیسے تو ڑے ہیں؟ میں ایسا برنس مین ہوں۔ سیس نے ورختوں سے جا کے پیسے تو ڑے ہیں؟ میں ایسا برنس مین ہوں۔ سیس میں نے ایسی ڈیل کی سیسے کی کمائی

ہے، تم کیسے میہ بات کہہ رہے ہو؟ جب وہ کچھ زیادہ ہی ناراض ہونے لگا تو اس نے کہا: بھی! ناراض نہ ہو، اچھا میں جاتا ہوں، آپ جیسے تھے اللہ آپ کو ویسا کر دے۔ لو کہا: بھی! ناراض نہ ہو، اچھا میں جاتا ہوں، آپ جیسے تھے اللہ آپ کو ویسا کر دے۔ لو جی اس کی حالت بھی وہی ہوگئی، سب گائیاں بھی ختم ہوگئیں اور سرکے بال بھی غائب ہوگئے۔ جیسا تھا ویسا ہوگیا۔

پھر وہ تیسرے کے باس گیا، اسے بھی جا کریہی کہا کہ میں بڑامختاج ہوں، ضرورت مندہوں ،آپ کے پاس آیا ہوں ، مجھے پچھ دیں۔ایک وقت تھا کہ آپ کے یا س بھی کچھنہیں تھاا ورآج اللہ نے آپ کو بہت کچھودیا ہوا ہے۔ جیسے ہی اس آ ومی نے یہ الفاظ کیے کہ ایک وفت تھا جب آپ کے پاس بھی کچھنہیں تھا تو اس بندے کی آ تکھوں میں ہے آنسوآ گئے۔اس نے یو چھا: کیا ہوا؟ کہنے لگا: بھی !تم نے بالکل کچ کہا ، ایک وفت تھا ، جب میں اندھا تھا ، میں در در کے دھکے کھایا کرتا تھا۔ میں لوگوں ہے مانگ کرنکڑے کھاتا تھااور مجھے کوئی کیجینیں ویتا تھا۔اللّٰد کا کوئی بندہ آیا اس نے دعا دی اورمیرے اللہ نے مجھے بینائی بھی دے دی اور مجھے اتنا مال دے دیا۔میاں! اگر آج تم اس اللہ کے نام پر کہتے ہو کہ پچھ دو، ان دو پہاڑوں کے درمیان جنتی ہزار بمریاں شہیں نظر آ رہی ہیں ، بیسب میرے مولا کی دین ہیں ۔تم ان میں ہے جتنی كرياں جا ہو لے جاؤ ۔ اس آ دمی نے جواب میں كہا ، تہہيں مبارك ہو، میں فرشته ہوں ،اللہ تعالیٰ نے مجھےاپنی نعمتیں وے کرتین بندوں کے پاس بھیجا تھا،ان میں سے دوا پنی او قات کو بھول گئے اورتم نے اپنی او قات کو یا در کھا، اللہ تنہیں اپنی اور بھی زیادہ نعتیں عطا کرے۔اس کے بعداللّٰہ رب العزت نے اس بندے کو باقی زندگی میں اور بھی زیادہ نعتوں سےنوازا۔

نعتیں بےشار ہیں:

ہم اللہ تعالیٰ کی نعمتوں کا اتناشکرا دانہیں کرتے جتنا کرنا چاہیے تھا۔ہمیں ہر کہے

#### Jone 1 Ziger 8 3 3 (22) 8 3 8 3 1 1 1 2 1 1 1 1

الله تعالیٰ کی نعمتوں کا شکر اوا کرنا جا ہیے۔الله کی نعمتوں کی تفصیل تو بے حدو حساب ہے۔تاہم یا در تھیں کہ:

🕁 .....الله نے گھر دیا ..... بیجی نعمت ہے۔

🖈 .....اولا و دی ..... بیمی نعمت ہے۔

🖈 .....ا چھی بیوی دی ..... بیمی نعت ہے۔

🚓 ..... حجت دی ..... پیجی نعمت ہے۔

🖈 .....عزت دی ..... پیمی نعمت ہے۔

🚓 .....انلە نے کوتا ہیوں پہ پر دہ ڈال دیا ..... پیجی الله کی نعمت ہے۔

🖈 .....الله نے جمیس رسوائی سے بچالیا ..... یہ بھی الله کی نعمت ہے۔

بم الله كى كس كس نعمت كاشكرا داكر كيت بين!!؟؟

ایک دوسرے کی قدر کریں:

حقیقت بہی ہے کہ ہم نعت کی موجودگی میں شکرادانہیں کرتے۔آئ تو حالت سے

ہے کہ بیوی ہے پوچھیں تو ایک ہی سانس میں خاوندگی کئی برائیاں گوا دے گی۔اور
خاوند ہے پوچھوتو ایک ہی سانس میں اپنی بیوی کی ناپسند بدگی کی کہانیاں سنائےگا۔
اچھا! اگر یہ خاوند مرجائے تو یہی بیوی بیٹھی رورہی ہوگی۔اس ہے اگر کوئی
پوچھے کہ جی روکیوں رہی ہیں؟ آپ تو کہتی تھی: اس نے مجھے بہت تک کیا ہوا ہے،
مصیبت میں رکھا ہوا ہے، بڑے عذاب میں ہوں،اب تو تمہارا عذاب ختم ہوگیا ہے۔
وہی بیوی کہے گی:نہیں، آخر میرے بچوں کا باپ تھا۔اس نے مجھے کوئی پریشانی نہیں
ہوتی تھی۔اس کی موجودگی میں مجھے کوئی بات تو نہیں کرسکتا تھا اور مجھے کوئی پریشانی نہیں
ہوتی تھی۔اب تو میں بے سایہ ہوگئی ہوں۔اب اس کی قدرآنے لگ گئی کہاس کے
ایررکیا کیا خوبیاں تھی۔اوراگر بیوی مرجائے تو وہی خاوندآنسو بہار ہا ہوتا ہے۔اس

ے اگر پوچھا جائے کہ بھئی! تم تو خود کہتے تھے کہ میں نے یہ کیا عذاب خریدلیا! بہتر نہیں کہ اس سے جان چھوٹ گئی؟ وہی خاوند کہے گا: آخروہ میرے بچوں کی ماں تھی، میں کاروبار پرچلا جاتا تھا اور مجھے بچوں کی فکر نہیں ہوتی تھی۔ اس نے میری عزت رکھی ہوئی تھی۔ اس نے میری عزت رکھی ہوئی تھی اور میرا گھر سنجالا ہوا تھا، اب بیوی کی خوبیاں یا دآنے لگیس۔ یہ خوبیاں ہمیں زندگی میں دوسرے بندے کی قدر کیوں نہیں زندگی میں دوسرے بندے کی قدر کیوں نہیں کرتے؟

## انگریزول کاایک دستور:

انگریزوں میں ایک دستور ہے کہ جب کوئی مرجا تا ہے تواس کے لیے پھولوں کے بڑے بڑے بڑے گلدستے بنا کر لے جاتے ہیں اور منوں ، ٹنوں کے حساب سے اس کی قبر پر پھول لا دریتے ہیں۔اس پر کسی نے ایک نظم کھی ،اس میں سے صرف ایک فقرہ اس وقت ہمارے موضوع سے ریلیٹیڈ ہے۔وہ کہتا ہے:

Why do we wait till a person die? ''یعنی ہم کسی کو پھول پیش کرنے کے لیے اس کے مرنے کا انتظار کیوں کرتے ہیں۔''

کاش! ہم اس کی زندگی میں پھول پیش کرتے اس کو بھی خوشی ہوتی اور ہمیں بھی خوشی ہوتی ۔

# (۵) مرنے والوں سے عبرت حاصل کرنا)

ہماری پانچویں کوتا ہی ہہ ہے کہ ہم اپنے ہاتھوں سے میتوں کو دفن کرتے ہیں مگر عبرت نہیں پکڑتے کہ ہمارے ساتھ بھی ہیہ کچھ ہونے والا ہے۔ہم اپنے کندھوں پر کتنے جنازے لیکر گئے؟ کیا ہماری ہے حالت ہے کہ دل میں پکایفین ہو کہ ہم بھی ایک دن جائیں گے؟ یا دہی نہیں ہوتا۔ قبرستان کے باہر قدم رکھااور پھروہی دنیا۔

### ماں کی موت سے بھی عبرت نہ ملی!!!

ہمارے ایک دوست کہنے گئے کہ میرے سامنے والے ہمسائے کی والدہ کی والدہ کی وفات ہموئی تو میں نے اپنے بچوں کو سمجھایا ، بچو! دیکھو بید کتنا بڑا حادثہ ہوا کہ تمہارے دوست کی والدہ فوت ہوگئ! اب جپالیس دن تک گھر میں یہ کیسل اور ٹی وی وغیرہ نہیں چپلے گا۔ میں نے بچوں کو اس پرراضی کر لیا اور وہ مطمئن ہو گئے۔ کہنے لگے کہ ابھی تیسرا دن نہیں ہوا تھا کہ اس گھر سے کیبل اور ٹی وی کی آ واز آنے لگی ، پھر وہی تماشا شروع ہوگئا۔

## كرے كى مال كب تك خير منائے گى:

جونو جوان اپنے ہاتھوں سے اپنے باپ کو دفن کر کے آئے اور پھر نفیحت نہ کیڑے تو پھراس سے زیادہ بدبخت و نیا میں کون ہوسکتا ہے!!؟ ماں کواپنے ہاتھوں سے دفن کر کے آتے ہیں اوران کی زندگی کی تر تیب نہیں بدلتی نہیں سبجھتے کہ ہمیں بھی ایک دن وہاں جانا ہے۔ بس اپنی زندگیوں میں مست ہوتے ہیں۔ اللہ نے مال دے دیا اور اولا دد ہے دی، اور بس اللہ کی نعمتوں میں مست رہتے ہیں، اپنی شہوتوں کو پورا کرنے کے لیے چوہیں گھٹے گے رہتے ہیں، مزے اڑاتے رہیں گے؟ ایسا نہ ہو کہ '' کمحوکی ماں کب تک خیر منائے گی؟ کب تک مزے اڑاتے رہیں گے؟ ایسا نہ ہو کہ '' کمحول نے خطا کیں کی صدیوں نے سز اپائی'' والا معاملہ نہ بن جائے۔ آج بیتھوڑے دنوں کے موج میلے ہیں۔ اور کل قیا مت کے دن اللہ کے سامنے جوابدہ بھی ہونا پڑے

اگر ہم ان پانچ نضیحتوں کواپنی زندگی میں لا گوکرلیں تو زندگی کی ترتیب سیدھی

ہوسکتی ہے۔ پھر آپ دیکھیں گے کہ ہمیں اپنے اندر جوغلطیاں بھی نظر آتی ہیں وہ خود بخو دا چھائیوں میں بدل جائیں گی۔ توبہ باتیں اس لیے بتائیں کہ ان کو یا دکر لیجے۔ اگر آپ گھر میں بڑے ہیں یا آپ کا کوئی دوست آپ سے کہتا ہے کہ بھئی کوئی نفیحت کر آپ گھر میں بڑے ہیں یا آپ کا کوئی دوست آپ سے کہتا ہے کہ بھئی کوئی نفیحت کر دیں تو یہ باتیں ان کو سمجھائیں تا کہ ان کو بھی ان سے فائدہ اٹھانے کا موقع مل سکے۔

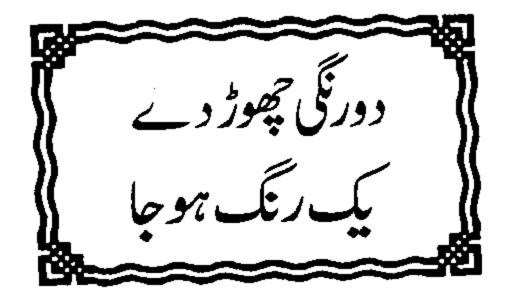
اللہ تعالیٰ ہماری زندگی کی کمی کوتا ہی کو دور کر دے ہمیں اپنی نعتوں کا شکر ادا کرنے کی تو فیق عطا فرمائے اور اللہ تعالیٰ آپ کا یہاں آنا قبول فرما کر اس کو دنیا و آخرت کی کامیا بی کا ذریعہ بنائے۔ (آمین ثم آمین)

وَ الْحِرُ دَعُوانَا آنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِيْن

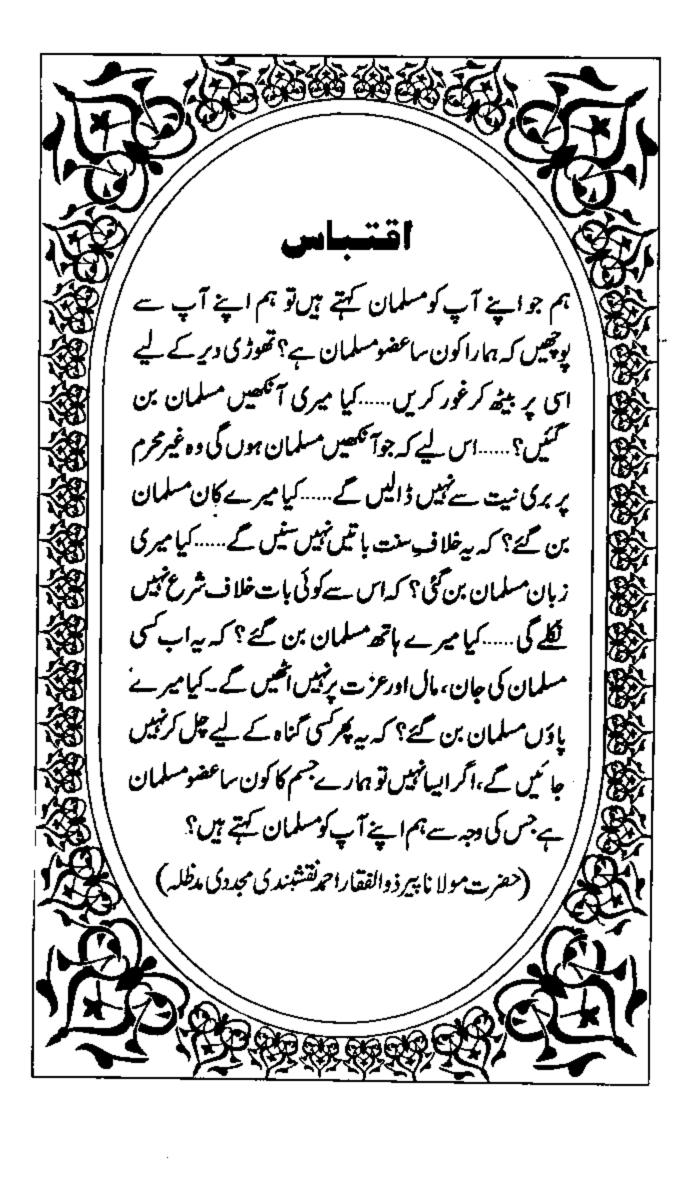




﴿ يَاكَيُّهَا الَّذِينَ امَنُوا امِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ﴾ (الشاء::١٣٦)



بیان به پیرِ طریقت حصرت مولانا حافظ ذوالفقاراحمد نقشبندی مجدی دامت برکاتهم



# دورنگی حیموڑ دیے بیب رنگ ہوجا

اَلْحَمُدُ لِلَّهِ وَكَفَىٰ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفَىٰ آمَّا بَعُدُ! فَاعُوْذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطُنِ الرَّحِيْمِ ٥ بِسَمِ اللَّهِ الرَّحْمُنِ الرَّحِيْمِ٥ ﴿ يَانَّهُ الَّذِينَ امْنُوا امِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ﴾ (الناء::١٣١)

سُبُحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّتِ عَمَّا يَصِفُونَ ٥ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرُسَلِيُنَ٥ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ٥

ٱللَّهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكُ وَسَلِّمُ لفظ' امِنُوا ''اہلِ عَلَم کی نظر میں :

ارشاد بارى تعالى ہے:

يَانَيُّهَا الَّذِينَ الْمَنُوا (السّاء::١٣٦)

(اے ایمان والو!اے ماننے والو!اے وہ لوگو! جواللہ دب العزت اوراس کے بیار ہے مجبوب مٹریکی کے حکموں کو ماننے کا اقر ارکر چکے ہو) امنوا باللّٰه وَرَسُولِهِ

(تم الله تعالى اوراس كے رسول مُثَالِيَةِ بِرا يمان لے آؤ)

قرآن پاک کی بیآیت پڑھنے والوں کوجیران کر دیتی ہے۔اس لیے کہاں آیت میں خطاب بھی ایمان والوں سے ہے۔ قرمایا .....یا یھاالگذین المنوا ..... کافروں سے خطاب نہیں ، کہ بیکہا ہو .....یا یھاالگذین کفور و اسسمنافقوں سے خطاب نہیں کہ بیکہا ہو .....یا یھاالگذین نافقو اسسخطاب کن سے ہے؟ ....ایمان والوں سے ....اور تھم کیا وے رہے ہیں؟ ..... ایمنوا باللّه و رَسُولِه (تم الله اوراس

كرسول مُنْ يَنَهِمْ بِرايمان لِي آوَ) .....ايمان والول كوايمان لان كاحكم!!! ..... إمِنُوا كاكيامطلب ہے؟ اس كے كن مطلب ليے صحتے ہيں۔

٠ .... بعض نے فرمایا: امِنْوْ ا کا مطلب ہے اِتّقُو ا "کہتم اپنے اندرتقو کی پیدا کرو۔

.....بعض نے فرمایا: ''اے زبان سے اقرار کرنے والو! اپنے دل ہے بھی اس کی تصدیق کرلو''۔

● ....بعض نے فرمایا: ''اپنے ظاہراور باطن کے تقنا دکود ورکر دو''

⊙ .....بعض نے فرمایا: ''ایئے قول اور فعل کے فاصلوں کومٹاوو''

⊙ ..... بعض نے فرمایا: '' دور گئی چھوڑ دو، یک رنگ ہوجاؤ''

مشكلات لااله:

دوسری آیت مبارکه پین فرمایا:

﴿ الدُّخُلُوا فِي السِّلمِ كَآفَّةً ﴾

" تم يور ال يور الاسالام بين داخل بوجاؤ"

یعنی سرکے بالول سے لے کر پاؤں کے ناخنوں تک تم مسلمان بن جاؤ۔ یاد رکھیں کہمسلمان بنتا کوئی آ سان کا منہیں ہے ۔

یہ شہادت گہہ الفت میں قدم رکھنا ہے لوگ آسان سمجھتے ہیں مسلماں ہونا

اس کے لیے محنت چاہیے ۔

چوی گویم مسلمانم بہ لرزم کہ دانم مشکلات لا الہ

" جب میں بیرچا ہوں کدمیں مسلمان ہوں تو میں کا نب افحتا ہوں کیونکہ لا اللہ کی الا اللہ کی مشکلات سے میں واقف ہوں''

4.1M(10) 33833 (220) 3883 (1)244

کہنا آسان ہےاور کرنامشکل کام ہے۔اس ونیا میں آنا آسان اور سیح معنوں میں انسان بن جانا ، یہ بڑامشکل کام ، جو بنرآ ہے یا بنا تا ہے وہ بی پہایا تا ہے۔ جب بنے کے لیے محنت کرد مے تو چرسجہ کیے گی کہ بیکام کتنامشکل ہے! ۔ مصحفی ہم تو سمجھے تنے کہ ہو گا کوئی زخم سينے بيٹے تو بہت کام رفو کا لکلا

حقائق کے آئینے میں ہماری کیفیت:

ہم جواپے آپ کومسلمان کہتے ہیں تو ہم اپنے آپ سے پوچھیں کہ جارا کون سا عضومسلمان ہے؟ تھوڑی در کے لیے اس پر بیٹھ کرغور کریں .....کیا میری آنکھیں سلمان بن گئیں؟....اس لیے کہ جوآ تکعیں مسلمان ہوں گی وہ غیرمحرم پر بری نیت سے نبیں ڈالیں گے ..... کیامیرے کان مسلمان بن مجے؟ کہ پیخلاف سنت باتیں نبیں منیں گے ....کیامیری زبان مسلمان بن گئی؟ کہ اس سے کوئی بات خلاف شرع نہیں نکلے گی .....کیا میرے ہاتھ مسلمان بن محے؟ کہ بیاب سی مسلمان کی جان، مال اور زت پرنہیں اٹھیں ہے۔۔۔۔کیا میرے یا وُں مسلمان بن مجئے؟ کہ بیہ پھرکسی گناہ کے لیے چل کرنہیں جائیں ہے .....اگر ایبانہیں تو ہمار ہےجسم کا کوین ساعضومسلمان ہے س کی وجہ ہے ہم اپنے آپ کومسلمان کہتے ہیں؟؟

....دل ہے تو غیر کی محبت سے بھرا ہوا ہے۔

..... ذہن ہے توشہوانی اور شیطانی خیالات ہے بھرا ہوا ہے۔

.....آنکھ میلی ہے۔

....جرام حلال کی تمیزنہیں۔

تو پھرسوچے كرآخرمسلمانى كس چيز كانام ہے؟ \_

**EX** 

زبان ہے کہہ بھی دیا لا اللہ تو کیا حاصل؟ دل د نگاہ مسلما ں نہیں تو سچھ بھی نہیں ہم اپنے عمل سے اس بات کا ثبوت دیں کہ ہم مسلمان ہیں۔علامہ اقبال کا ایک شعر پڑاہی عجیب ہے! شعر پڑاہی عجیب ہے!

تو عرب ہے یا عجم ہے تیرا لااللہ الا لغیب غریب جب تک ترا دل نہ دے گوائی جب تک ترا دل نہ دے گوائی جب تک ترا دل نہ دے گوائی جب کارایدلااللہ الااللہ کہنالغت غریب کی مانند ہے۔ ہماری یہ حالت بن چکی ہے کہ ہماری آئکھیں کھلی رہتی ہیں، گردن تی رہتی ہیں۔ ہوں کے ہمروں کے چروں پرنظر ڈالتے ہیں اور ان کے عیب ٹولتے پھرتے ہیں۔ اے کاش!یہ گردن جمک جاتی، یہ آئکھیں بند ہوتیں اور یہ نگاہیں اپنے سینے پر اے کاش!یہ گردن جمک جاتی، یہ آئکھیں بند ہوتیں اور یہ نگاہیں اپنے سینے پر برتیں کہمیرے اینے اندر کیا عیب جملے ہوئے ہیں؟

منہ و کھے لیا آکینے ہیں ، پر داغ نہ و کھے سینے ہیں جی ایبا لگایا جینے ہیں ، مرنے کو مسلماں بھول گئے کی ایبا لگایا جینے ہیں ، مرنے کو مسلماں بھول گئے کھیر تو اب بھی ہوتی ہے مسجد کی فضا ہیں اے انور! جس ضرب سے دل مل جاتے شے وہ ضرب لگانا بھول گئے

ایک وفت تھا کہ بیمومن، بینوجوان رات کے آخری پہر میں اٹھتا تھا، لا اللہ الا اللہ کی ضربیں لگا تا تھاا وراس کے سینے میں دل کا نیتا تھا۔ ۔

تیری نگاہ سے دل سینوں میں کانیخ تخطے
کھویا عمیا ہے تیرا جذب قلندرانہ
دوسوزاورجذبہم سے چھن چکا ہے۔ ۔
تیر ی محفل ہمی جمنی چاہنے دالے ہمی عملے
شب کی آئیں ہمی حمنی میج سے نالے ہمی عملے

وہ نو جوان جورات کے آخری پہر میں اٹھتے تھے وہ سکیاں لے لے کرروتے تھے۔ تھے۔اپنے رب کومناتے تھے،ان کے آنسوؤں ہے ان کے دامن تر ہوجاتے تھے۔ آج وہ چبر نظر نہیں آتے۔اس کی وجہ یہ ہے کہ ہمارے اندر کی انگیٹھی ٹھنڈی ہو چکی ہے۔

محبت کا جنوں باتی نہیں ہے
وہ دل وہ آرزو باتی نہیں ہے
نماز و روزہ و قربانی و حج
بیہ سب باقی ہیں تو باتی نہیں ہے
ہارےاندرکاانسان کہیں گم ہو چکا ہے۔وہ کہیں کھو گیا ہے۔وہ کہیں سو گیا ہے۔

ہم نو مائل بہ کرم ہیں کوئی سائل ہی نہیں راہ دکھلائیں سے؟ راہ رو منزل ہی نہیں

ہمیں، پنے من کی دنیا کی بنانا ہے، اپنے من کی دنیا کو بسانا ہے اور اپنے اعمال پر محنت کرنی ہے۔ ہمارے اعمال کی حالت تو اتی پلی ہو چکی ہے کہ ایک مجد میں امام صاحب نے سلام پھیر کر یو چھا: بھی! میں نے دور کعتیں پڑھی ہیں یا چار؟ پوری مجد میں کوئی ایک آ دی بھی ایبانہیں تھا جو یقین ہے کہنا کہ ہم نے دو پڑھی ہیں یا چار پڑھی ہیں۔ میں رسب کہدر ہے تھے پیت نہیں کتنی پڑھی ہیں۔ یقرب قیامت کی علامت ہے۔ بنی علیہ السلام نے ارشاد فر ما یا کہ''تم دیکھو گے کہ پوری معجد نماز یوں سے بھری ہوئی ہوئی ہوگی گر ان کے ول اللہ کی یا دسے خالی ہوں گے'۔ آج ولوں میں حضوری نہیں ہوتی۔ حاضری تو نصیب ہو جاتی ہے گرحضوری سے محروم ہیں۔ ہم اللہ رب العزت سے سے حضوری بیں کہم اللہ رب العزت سے سے دعاجی کریں کہ وہ اندر کے سے حضوری بھی مانگیں اور اللہ رب العزت سے سے دعاجی کریں کہ وہ اندر کے سے حضوری بھی مانگیں اور اللہ رب العزت سے سے دعاجی کریں کہ وہ اندر کے

ا نگار ہے پھر سے روشن ہو جا ئیں \_

حقیقت خرافات میں کھو گئی ب امت روایات میں کھو گئی لبھاتا ہے دل کو بیانِ خطیب مگر لذہ شوق سے بے نصیب وہ صوفی کہ تھا خدمتِ حق میں مرد محبت میں بکتا امانت میں فرد عجم کے خیالات میں کھو گیا وه سالک مقامات میں کھو گیا بجھی عشق کی آگ اندھیر ہے مسلمال نہیں، راکھ کا ڈھیر ہے ہمیں عشق الٰہی کی اس آگ کو بھڑ کا نا ہے تا کہ ہمارے اعمال میں جان پیدا ہو

جائے۔ ثاعرنے کیا: ۔

سی نه مصر و فلسطین میں وہ اذاں میں نے دیا تھا جس نے پہاڑوں کو رعشہء سیماب سیماب کہتے ہیں یارے کو۔وہ تھرکتا رہتا ہے۔کہتا ہے کہ میں نے مصراور فلسطین میں بھی وہ اذان نہ تی کہ جس کوس کر پہاڑ بھی پارے کی طرح کا نینتے تھے۔ وہ سجدہ رورح زمیں جس سے کانی جاتی تھی اس کو آج ترستے ہیں منبر و محراب آج الله کی زمین بھی تلاش کرتی ہے کہ کہاں گئے وہ لوگ جواتنے خلوص ہے سجدہ کرتے تھے کہ زمین بھی کانپ اٹھتی تھی۔ ہماری حالت بھی یہی ہے۔

دو رقی چھوڑ دے کیک رنگ ہو جا
سراسر موم ہو جا یا سنگ ہو جا
ہمارےاسلاف سراپامل شے اور آج ہمارے پاس فظ با تیں ہیں۔
ہمارےاسلاف سراپامل شے اور آج ہمارے پاس فظ با تیں ہیں۔
ہمارے اسلاف سراپامل شے اور آج ہمارے پاس فظ با تیں ہیں۔
وہ کیا گردوں تھا تو جس کا ہے اک ٹوٹا ہوا تارا؟
گھے اس قوم نے پالا ہے آغوش محبت میں
کیل ڈالا تھا جس نے پاؤں میں تاج سر دارا
گھے آبا ہے اپنے کوئی نبست ہو نہیں سکتی
کہ تو گفتار ،وہ کردار ،تو ٹابت ، وہ سیارہ

واقعی ، ہماری زندگی عجیب بنتی چلی جا رہی ہے کہ زبان ہے ہم اپنے آپ کو مسلمان کہتے ہیں ، جب کہ اگر کوئی ہمارے عملوں کودیکھے تو ہووہ ہماری من مرضی کے ہوتے ہیں۔ اس فرق کو دور کرنے کے لیے اللہ والوں سے تعلق جوڑنا پڑتا ہے۔ پھر انسان کے اندر کا انسان بیدار ہوتا ہے۔ اور انسان کو دین کی روح نصیب ہوتی ہے۔ آج تو اکثر و بیشتر نو جوان آکر کہتے ہیں: حضرت! دعا کریں، دماغ بہت گرم رہتا ہے۔ بتانہیں آج کل کے نو جوانوں کی کیا پریشانی ہے!؟ وہ ہر وقت فینشن میں رہتا ہے۔ بتانہیں آج کل کے نو جوانوں کی کیا پریشانی ہے!؟ وہ ہر وقت فینشن میں رہتے ہیں۔ ایک صاحب کہنے گئے: حضرت! بس غصے میں طلاق وے بیشا ہوں۔ ہم

نے پوچھا کہ ذرایہ تو بتاؤ! بھی کسی نے خوشی میں بھی بیوی کوطلاق دی ہے؟ اپنے آپ پر قابونہیں ۔اس کی وجہ یہ ہے کہ محنت نہیں گی۔ بلکہ جس کو چار پیسے مل جاتے ہیں وہ سر کاری سانڈ بنا پھر تا ہے۔اس کو بچھ پر وانہیں ہوتی ۔وہ اللہ کے بندوں کو اللہ کا بندہ ہی نہیں سمجھتا۔

#### سب سے بری باری:

یاد رکھنا! بیار یوں میں سب سے بری بیاری دل کی بیاری ہے۔اور ڈل کی
بیار یوں میں سب سے بری بیاری دل آ زاری ہوتی ہے۔ہماری حالت بیہ ہے کہ ہم
دوسر سے بند سے کی معمولی ہی بات پراس کی دل آ زاری کر دیتے ہیں۔الی بات کہہ
دیتے ہیں کہ اس سے دوسر سے کے دل پر چھری چل جاتی ہے۔ہمیں پھر سے کیھنے کی
ضرورت ہے کہ ایک مومن کی زندگی کیسی ہوتی ہے۔اوراس کو کیھنے کے لیے مشاکخ کی
خدمت میں پجھےوفت گزار نا پڑتا ہے۔

نبی علیہ السلام نے فرمایا،

اَکُمُسْلِمٌ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِّسَانِهِ وَیَدِهِ ''مسلمان وہ ہےجس کی زبان اور اس کے ہاتھ سے دوسرے مسلمان سلامتی میں ہوں''

یعنی ان کا مال ،ان کی جان اور ان کی عزت سلامت ہو۔اییا آ دمی صحیح معنول میں مسلمان کہلانے کاحق دار ہے۔ہم ذرا پنے آپ سے پوچھیں کہ کیا اس تعریف پر ہم پورےاتر تے ہیں؟ہم نے تو اللہ کے بندوں کو پریشان کررکھا ہے۔

- ⊙ ..... خاوتد نے بیوی کے ناک میں دم کیا ہوتا ہے،
  - ⊙ ..... بیوی نے خاوند کوستایا ہوا ہوتا ہے،
  - سساس اور بہو کے اندر چپقاش ہوتی ہے،

- ….نداور بھابھی کے درمیان عجیب کہانیاں ہوتی ہیں،
- بین،
   بین،
   بین،
- ..... سنگے دو بھائی ایک دوسر \_ کی شکل دیجینا گوارانہیں کرتے ،

سوچیں کہ اسلام ہمیں کیا سکھا تا ہے اور مملی طور پر ہماری زندگی کیسے گزررہی ہے!؟

## دین سراسرخیرخوای ہے:

نى عليه السلام نے فرمایا:

الدِّيْنُ النَّصِيْحَة "وين سراسر خرخواى م،

کیامطلب؟ کہمومن دوسرےمومن کا خیرخواہ ہوتا ہے۔ یادرکھنا! جہاں آپ کو ایک مسلمان دوسرے مسلمان کا بدخواہ نظرآ ئے توسمجھ لینا کہ دین کی دھجیاں اڑپکی ہیں۔ . سب میں جمعہ جمعہ ہوں ہوں ہوں ہوں ہوں ہے توسمجھ لینا کہ دین کی دھجیاں اڑپکی ہیں۔

#### ایثار کے انمٹ نقوش:

وین اسلام نے ہمیں ایثار کاسبق دیا ہے۔ اس سلسلہ میں صحابہ کرام ہے این زندگیوں میں انوکھی مثالیں قائم کی ہیں۔ ایک مجابد زخی حالت میں کہتے ہیں:
الْعَطَشُ الْعَطَشُ الْعَطَشُ " بیاس بیاس "۔ ان کے کزن کہتے ہیں کہ میں مثلک لے کرآ گے برحا کہ پانی پلاؤں، گر جبوہ پینا چاہتے تھے توایک اور مجابد نے کہا: الْقَطَشُ " بیاس" ۔ چنا نچواس نے ابنا منہ بند کر لیا اور اشارہ کیا کہ اس کو پلا ہے۔ میں ادھر سیا ۔ وہ چینا ہی چاہتا تھا کہ تمیری طرف سے آواز آئی، العطش (بیاس)۔ اس نے ہمی ابنا منہ بند کر لیا اور اس کے پاس جانے کا اشارہ کیا۔ تمیرے کے پاس پہنچا تو میں میرے جانے ہے پہلے وہ شہید ہو چکا تھا۔ جب لوٹ کر دوسرے کے پاس آیا کہ میرے جانے ہے ہیں آیا کہ ہو چکا تھا۔ وہ زندگی کے آخری لیے میں ہمی اپنے بھائی کو اپن آیا تو وہ ہمی شہید ہو چکا تھا، پھر جب لوٹ کر پہلے کے پاس آیا تو وہ ہمی شہید ہو چکا تھا، پھر جب لوٹ کر پہلے کے پاس آیا تو وہ ہمی شہید ہو چکا تھا۔ وہ زندگی کے آخری لیے میں ہمی اپنے بھائی کو اپن آ وہ ہمی شہید ہو چکا تھا۔ وہ زندگی کے آخری لیے میں ہمی اپنے بھائی کو اپن آ وہ ہو کیا تھا۔ وہ زندگی کے آخری لیے میں ہمی اپنے بھائی کو اپن آ وہ ہو کیا تھا۔ وہ زندگی کے آخری لیے میں ہمی اپنے بھائی کو اپن آ وہ ہو کے دیا کرتے وہ یا کہ ایک ہو چکا تھا۔ وہ زندگی کے آخری لیے میں ہمی اپنے بھائی کو اپنے اور تی دیا کہ دور کرتے وہ کا تھا۔ وہ زندگی کے آخری لیے میں ہمی اپنے بھائی کو اپنے اور تی کہ دیا کرتے وہ کیا تھا۔ وہ زندگی کے آخری لیے میں ہمی اپنے بھائی کو اپنے اور تی کیا تھا۔ وہ زندگی کے آخری لیے میں ہمی اپنے بھائی کو اپنے اور تی کیا گھا۔ وہ زندگی کے آخری لیے میں ہمی اپنے بھائی کو اپنے اور تی کیا تھا۔ وہ زندگی کے آخری لیے میں ہمی اپنے بھائی کو اپنے اور تی کھی ہمی ہمی اپنے بھائی کو اپنے اور تی کیا تھا۔

منهدای حقیقت کوقران مجیدنے بول آشکار کیا:

﴿ وَيُورُونَ عَلَى اَنفُسِهِم وَلَوْ كَانَ بِهِم خَصَاصَةٌ ﴾ (الحشره) ابوالحسن نوری سے بادشاہ وفت نے اپنی مرضی کا کوئی فتوی مانگا، تمرانہوں نے ایسا کرنے ہے انکار کر دیا۔ چنانچہ بادشاہ نے تین علا کو گرفتار کروایا۔ وہ جا ہتا تھا کہ ان کوسر اوی جائے۔ لہذا غصے میں آگراس نے ان کے آل کے احکام جاری کردیے۔ جب جلاد قل کرنے لگا تو بادشاہ نے دیکھا کہ ابوالحن نوری علی سب ہے آگے کھڑے ہیں۔اےان کے ساتھ عقیدت بھی تھی۔وہ جا ہتا تھا کہ باقی ووکوتو قتل کر دیا جائے اوران کو میں کمی بہانے سے معاف کر دوں ۔اس لیے وہ کہنے لگا کہ بیہ جگہ ٹھیک نہیں ، ان کو فلاں جگہ پر قل کرو۔اس کا مقصد تھا کہ ان کی ترتیب بدل جائے گی۔ جب دوسری جگہ پران کو دیکھا تو ابوالحن نوری ماللے پھر آ گے کھڑے تھے۔وہ بڑا حیران ہوا اور اس نے ان کوقریب بلایا اور کہا کہ یہاں ان کوتل کرو۔ تیسری جگہ پھر ابوالحن نوری طاق آ کے کھڑے ہوگئے۔ بادشاہ نے جیران ہوکراب ان کواپنے قریب بلالیااورحقیقت بتادی که میں چاہتا تھا کہ پہلے دوسروں کوتل کر دیا جاتا ،مگر ہرد فعہ آپ بی آ کے کھڑے نظرآئے ،آخر کیا دجہ ہے؟ ابوالحن نوری ﷺ نے فرمایا کہ میرے دل میں پیخیال آیا کہ جب میں آگے کھڑا ہوں تو جتنی دیراس جلا دکو مجھے قتل کرنے میں کگے گی میرےان بھائیوں کواتنی دیر کے لیے زیادہ زندہ رہنے کا موقع مل جائے گا۔

جب ہم میج معنوں میں مسلمان تھے....

ایک وفت تھا کہ جب مسلمانوں کے پڑوس کی قیمت زیادہ ہوا کرتی تھی۔عبداللہ بن مبارک کے پڑوس میں ایک یہودی تھا۔وہ مکان بیچنا چاہتا تھا۔ ایک خریدار آیا اور اس نے پوچھا: جی آپ نے بیمکان کتنے میں بیچنا ہے؟اس نے کہا کہ دوہزار دینار میں۔ لینے والے نے کہا: بھی اس علاقے میں تو ایسے مکان کی قیمت ایک ہزار دینار ہوتی ہے اور آپ مجھ سے دوگنا قیمت مانگ رہے ہیں۔ یہودی کہنے لگا: ہاں! ایک ہزار دینار میرے مکان کی قیمت ہے اور دوسرا ہزار وینار عبداللہ بن مبارک کے پڑوس کی قیمت ہے۔

حقیت یہ ہے کہ اس وقت ہمارے اخلاق ایسے ہوتے تھے کہ ہر ایک کا بھلا سوچتے تھے اور پھر ہمارے پڑوس کے مکانوں کی قیمتیں بڑھ جایا کرتی تھیں \_لوگ ہمارےعملوں کود کیچے کرمسلمان ہوتے تھے۔

## ایک نوجوان کی دیا نتداری کاواقعه:

ایک نوجوان مسلمان پردلیس میں تھا۔ چھٹی کے دن شکار کھیل رہا تھا۔ جب اس نے تیر مارا تو اس کا نشانہ خطا ہو گیا اور تیرا یک عیسائی لڑکے کو جالگا۔ لڑکے ہے وہیں جان دے دی۔ لڑکے کے والدین نے اسے پکڑ لیا۔ دوسرے عیسائیوں المجھے والدین نے اسے پکڑ لیا۔ دوسرے عیسائیوں مشورہ دیا کہ مقدمہ چلاؤ، قاضی مسلمان ہے، تہہیں یقینا انصاف ملے گا۔ چنا تمچہ وہ بہت خوش ہوئے۔

جب مقدمہ چلاتو قاضی نے اس تو جوان سے پوچھا: کیا آپ کا تیر لگنے سے وہ لڑکا فوت ہوا؟ نو جوان نے کہا: جی ہاں، گریے تئلِ خطا ہے، تئلِ عرنہیں، میں نے پرندے کو مار نے کے لیے نشانہ با ندھا تھا گر غلطی سے لڑکے و جالگا۔ قاضی نے کہا: جو بھی ہے، تم ان لوگول کو مطمئن کر دو، اگریہ طمئن ہو جا کیں تو ٹھیک، ورنہ جان کے بدلے جان والا معاملہ ہوگا۔ اب اس نے ان کو مطمئن کرنے کی بوی کوشش کی ،گروہ عیسائی و ث مجے اور کہنے گئے کہ ہم آپ کو بھانی پر چڑھتا دیکھیں گے تب ہمارے عیسائی و ث مجے اور کہنے تاخیہ قاضی نے اس کی بھانی کا تھم وے دیا۔ ان دنوں جمعہ نے کا انتظام پورا ہوگا۔ چنا نچہ قاضی نے اس کی بھانی کا تھم وے دیا۔ ان دنوں جمعہ کے دن جمعہ کی نماز پڑھ کر بڑے مجمع میں سب بحرموں کو مزائیں دی جاتی تھیں۔ کے دن جمعہ کی نماز پڑھ کر بڑے مجمع میں سب بحرموں کو مزائیں دی جاتی تھیں۔ چنانچہ قاضی صاحب نے اس کو جیل بھیج دیا۔ رات اس نے و ہیں جیل میں گزاری۔

اس وفت کا جیل سپرنٹنڈنٹ ( جس کوجیلر کہتے ہیں )عیسا کی تھا۔ بینو جوان اگلی صبح اس عیسائی جیلر کے پاس آیا اور کہنے لگا: میں مسلمان ہوں، مجھ سے غلطی ہوئی ہے، بچیل ہو گیا ہے، جمعہ کے دن مجھے سزاملنی ہے، حد قائم ہونی ہے، میں حیا ہتا ہول کہ میں واپس اینے دلیس میں جا کر بیوی بچوں ہے ملا قات بھی کرلوں اور ان کو اطلاع بھی دیے دوں ،اماننتی بھی واپس کر دوں اور قرض بھی لوٹا دوں ،اگر آپ مجھے جانے کی اجازت دے دیں تو میں اگلے جمعہ ہے پہلے پہلے واپس آ جاؤں گا ، اور میں مسلمان ہوں۔ جب اس نے کہا کہ میں مسلمان ہوں تو اس سپر نٹنڈنٹ نے کہا: بہت احچھا! میں اپنی ذ مہ داری پر آپ کو آزاد کرتا دیتا ہوں ، آپ جمعہ کی نماز ہے پہلے پہنچ جانا۔ کا فرکے دل میں بھی ایک مسلمان کا اتنااعتا دتھا! چنانچہ و قبل کا مجرم گھر چلا گیا۔ جب جمعہ کا دن آیا تو لوگ قاضی صاحب کے پاس استھے ہو گئے۔اس نے اس نو جوان کے بارے میں یو حیصا کہ وہ قتل کا مجرم کہاں ہے؟ جیلرنے کہا: جنا ب! میں نے اپنی ذمہ داری پراس کو جھوڑ ویا تھا۔ قاضی نے کہا: باقی حدود قائم ہونے تک وہ آ گیا تو فبہا، نہ آیا تو پھراس کی جگہ آپ کو پھانسی دی جائے گی کیونکہ آپ نے اسے چھوڑا ہے۔اب عیسائی اور پریثان ہو گئے کہ بچہ بھی ہمارا مراہے اوراس کے بدلے بندہ بھی ہارا پیانسی چڑھےگا۔

الله کی شان دیکھیے کہ جب باتی سب کیس نمٹ گئے تو قاضی نے اس نو جوان کو طلب کیا۔ گرابھی تک وہ نہیں پہنچا تھا۔ چنا نچہ قاضی نے کہا کہ جیلرآ گئے آئے۔اس کو پھانسی دی جائے گی۔ جب جیلرآ گئے بڑھا تو عیسائیوں نے پریشان ہو کرادھرادھر دیکھا تو ان کو دور سے ایک سایی سانظر آیا۔لوگوں نے کہا: قاضی صاحب! تھوڑی دیر انظار سیجے، کوئی آر ہا ہے۔ قاضی صاحب نے تھوڑی ویر انظار کیا تو دیکھا کہ ایک نوجوان بھا گئے بھا گئے لیسنے میں شرابور وہاں پہنچا۔وہ وہ ی نوجوان تھا۔

اس نے آتے ہی اس عیسائی جیلر ہے معافی ما گی اور کہا کہ بیں وقت پر ہی چل پڑا تھا، مجھے شتی کے ذریعے دریا عبور کرنا تھا، مبوا مخالف سمت کی تھی، ڈنانچہ بہت کوشش کے باوجود دریا عبور کرنے میں بہت دریگی، جس کی وجہ ہے بخدے کے مطابق پہنچنے میں تاخیر ہوئی ہے لہذا مہر بانی فرما کر مجھے معاف کردیں، اب میں حاضر ہول ۔ جب اس نوجوان کے ایفائے عہد کے اس واقعہ کو عیسائیوں نے دیکھا تو وہ کہنے لگے: قاضی صاحب! آپ نے اس نوجوان کی بات بھی س کی، اب ذرا ہماری بات بھی س کی ہی جان بخشی بات بھی س کی ہی جان بخشی بات بھی س کی ہی جان بخشی بات بھی س کے کہ جب یہ اپنے قول کا اتنا پکا اور سچا ہے تو ہم فقط اس کی ہی جان بخشی بیس کرتے بیں۔

## مسلمان معاشرے میں خیرخواہی کاعالم:

جس زیانے میں بغداد مسلمانوں کا مرکز تھا،اس وقت کا فروں نے ایک نوجوان کو بغداو میں بھیجا کہ ذرامسلمانوں کے ماحول معاشرے کا پہتہ کر کے آؤ کہ ان کے اندروہ کیا چیز ہے جس کی وجہ ہے یہ پوری دنیا میں غالب آتے جارہے ہیں؟

جب وہ بغداد میں پہنچا تو اس وقت وہ تھکا ہوا بھی تھا اور اسے بھوک بھی گئی ہوئی سے کھانا کھا لیتا ہوں۔ وہ ہوئل میں کھانا کھانے کے لیے گیا۔ جب وہ کھانا کھار ہاتھا تو اس نے دیکھا کہ کوئی و سرابندہ اس کھانے کے لیے گیا۔ جب وہ کھانا کھار ہاتھا تو اس نے دیکھا کہ کوئی و سرابندہ اس کو بردی ور سے خور ہے دیکھ رہا ہے۔ یہ سمجھا کہ میں اس کے لیے پرولی اور اجنبی ہوں، شاید اسی وجہ سے جھے بار بار دیکھ رہا ہے۔ جب وہ کھانا کھانے کے بعد پسے اواکرنے کے لیے کا وُنٹر پر آیا تو کا وُنٹر والے نے کہا: جناب! آپ کی پیمنٹ ہوچی ہے۔ اس نے لیے کا وُنٹر پر آیا تو کا وُنٹر والے نے کہا: جناب! آپ کی پیمنٹ ہوچی ہے۔ اس نے بوچھا: جی! میری پیمنٹ کسے ہوچی ہے؟ اس نے کہا: آپ کے سامنے ایک مسلمان بوچھا: جی! میری پیمنٹ کسے ہوچی ہے؟ اس نے کہا: آپ کے سامنے ایک مسلمان بیشا تھا، اس نے دیکھا کہ آپ پردلی ہیں، وہ اپنے پسے بھی و سے گیا اور سے کہہ کر گیا دیے ہوئی ہے۔ جانم کے پسے بھی میں اواکر دیتا ہوں۔ چنانچہ وہ

آپ کی میمنٹ بھی کرکے چلا گیا ،اوراس کوا تنی طمع بھی نہیں تھی کہ وہ آپ کوا طلاع دیتا اور آپ کی زبان سے شکریہ کالفظان لیتا۔ بین کروہ جیران ہوا کہ مسلمان ایسے لوگ ہوتے ہیں۔

اس کے بعدوہ آگے بڑھاایک دکان پراسے کوئی چیزخرید نی تھی۔ چنانچہاس نے دکاندار سے یو چھا: کیا آپ کے یاس فلاں چیزموجود ہے؟

د کا ندارنے کہا: ہاں موجود ہے۔

اس نے پوچھا: اس کی کتنی قیمت ہے؟

د کان دار نے کہا: اتنی

ال نے کہا: احجا! آپ مجھے ایک عدد دے دیجے۔

د کان دارنے کہا: جناب! آپ میری ایک بات مان کیجیے کہ یہی چیز آپ کوسامنے والی د کان سے ای دام میں مل جائے گی ،آپ و ہاں سے خریدلیں ۔

چنانچہ بیروہاں پہنچااورائے وہی چیزائے ہی دام میں وہاں سے ال گئی۔ گراس کے دل میں خلش پیدا ہوئی کہ پہلے د کا ندار نے انکار کیوں کیا؟ لہٰذا وہ لوٹ کر پہلے کے پاس آیا۔

اس نے پوچھا: جناب کیا آپ کے پاس بیہ چیز موجود نہیں تھی ، یا آپ دیتا نہیں جا ہے تھے؟

دکان دار نے کہا: جناب! میرے پاس سے چیز موجود تھی۔ میں نے سوچا کہ آج میرے پاس استے گا کہ آ جا میرے پاس استے گا کہ آ جے بیں کہ میرے بیوی بچوں کا گزاراا چھا ہو جائے گا،
میں نے دیکھا کہ میرے سامنے دالے بھائی کے پاس آج تھوڑ نے گا کہ آئے ہیں،
میں نے سوچا کہ اگر آپ اس سے کوئی چیز خرید لیس گے تو اسے بچت ہوجائے گی اور
میں ان سوچا کہ اگر آپ اس سے کوئی چیز خرید لیس گے تو اسے بچت ہوجائے گی اور
آج رات اس کے بیوی بچوں کا گزارا ہوجائے گا۔

ایک وقت تھا کہ دکا ندارایک دوسرے کے اتنے خیرخواہ ہوتے تھے۔

#### اسلام كابول بالا:

کا ندهلدا تڈیا کا ایک بڑا قصبہ ہے ۔۔۔۔۔اللہ نے مجھے وہاں جانے کا موقع نصیب کیا۔۔۔۔۔۔تقسیم ہند ہے بہت پہلے کی بات ہے، وہاں ایک زبین کا مکڑا تھا جس پر ایک مسلمان اور ہندو کا جھکڑا ہوا۔مسلمان کہنا تھا کہ بیمیرا ہے اور ہندو کہنا تھا کہ بیمیرا ہے۔ دب بات ذرازیاوہ بڑھی تو مسلمان نے کہدویا کدا گریہ کمڑا مجھے مل گیا تو میں مسجد بناؤں گا۔ ہندونے بھی کہدویا کہ اگر مجھے مل گیا تو میں اس پرمندر بناؤں گا۔ لو، بات قو اتی تھی گہدویا کہ اگر مجھے مل گیا تو میں اس پرمندر بناؤں گا۔ لو، بات تو ذاتی تھی گروہ فد ہی معاملہ بن گیا۔

ادھر سے مسلمان آگئے اور کہنے لگے کہ ہم سجد بنا کے رہیں گے اور ادھر سے ہندو
آگئے اور کہنے لگے کہ ہم مندر بنا کے رہیں گے۔ یوں پور سے شہر کے اندر آگ ہی لگ
گئی۔ چنا نچا نگریز پریشان ہوا کہ یہ کیا معالمہ بنا۔ اگر ذرای بے احتیاطی ہوئی تو یہاں
نالیوں میں خون بہنا شروع ہو جائے گا اور مصیبت بن جائے گی۔ چنا نچہاں نے
مسلمانوں اور ہندوؤں کوعدالت میں بلوایا۔ دونوں طرف سے جم غیروہاں پہنچ گیا۔
اگریز جے نے پوچھا: کوئی صلح کی صورت ہو سکتی ہے، تا کہ افہام وتفہیم سے اس
مسلمانوں اور ہندوؤں نے کہا: ہاں! ایک صورت ہو سکتی ہے، تاکہ افہام وتفہیم سے اس
مسلم کوسلجھایا جائے۔ ہندوؤں نے کہا: ہاں! ایک صورت ہو سکتی ہے۔ اور وہ یہ کہہم
مسلم کوسلجھایا جائے۔ ہندوؤں نے کہا: ہاں! ایک صورت ہو سکتی ہے، اگر وہ یہ کہیں کہ یہ مگڑا
مسلمانوں کا ہے تو زمین ان کود ہے دیں اور اگروہ کہیں کہ ہندوؤں کا ہے تو زمین ہمیں
دے دیں۔ جج نے اگلی تاریخ ڈال دی اور کہا کہ ہاں ، ایسا ہی کرلیا جائے گا۔
بالآخراگلی تاریخ آگئی ،

دن گئے جاتے تھے جس دن کے لیے پھرعدالت میںلوگوں کا مجمع بہنچا۔لوگوں نے دیکھا کہاس وقت ایک بڑے شیخ مفتی الہی بخش کا ندھلوی وہاں جج کی کرسی کے قریب بیٹھے ہیں۔انگریز جج نے ان کو ہندوؤں کی نشاندہی پر بلایا تھا۔

جج نے بوچھا:مفتی صاحب! بیز مین کا ٹکڑاکس کا ہے؟

مفتی صاحب نے جواب دیا:اس ہندو کا۔

جج صاحب نے بوچھا:مفتی صاحب! کیا ہندویہاں پرمندر بنا کتے ہیں؟

مفتی صاحب نے فرمایا: جب ملکیت ان کی ہے تو اختیار بھی ان کا ہے۔ وہ چاہیں تو مندر بنا ئیں ، چاہیں تو اپنا گھر بنا ئیں۔

جب انہوں نے بیہ جواب دیا تو مسلمانوں کے دل بہت زیادہ ڈوب گئے۔اس کے بعد انگریز نے اپنا فیصلہ سنایا۔اس تاریخی فیصلے میں اس نے کہا: '' آج مسلمان تو ہار گئے مگر اسلام جیت گیا''

جب ہندؤں نے جج کا فیصلہ سنا تو انہوں نے کہا:

'' بجج صاحب! آپ ہمارا فیصلہ بھی من کیجے کہ جب اسلام جیت گیا، جوابیاا چھا اور کھر اند ہب ہے، تو ہم بھی کلمہ پڑھ کرمسلمان ہوتے ہیں۔اب اس جگہ پر ہم اپنے ہاتھوں ہے، مسجد بنا ئیس گے۔''

تو ایک وقت تھا جب ہمارے قول وفعل کو دیکھ کر کا فربھی مسلمان ہو جاتے تھے۔ آج ہماری زندگی کیسی بنی ہوئی ہے! ہمیں اس مسلمانی کی لاج رکھنے کی ضرورت ہے۔

#### ہم نے تو بہرو پیاا جھا....!!!

ادرنگ زیب عالمگیر کے در بار میں ایک بہر دییا اپنا بھیں بدل کرآیا۔ بادشاہ نے پہچان لیا۔ بہر دیسے نے انعام مانگا کہ میں نے سانگ رچایا ہے۔ بادشاہ نے کہا: بھئی! میں نے تو پہچان لیا ہے، جب نہیں پہچان سکیں گے تو انعام بھی دیں گے۔ بہروپیے نے کہا: بہت اچھا۔ چنانچہ وہ چلا گیا۔ وہ سوچ میں پڑ گیا کہ میں کونسہ روپ اختیار کروں کہان کو پتہ نہ چل سکے؟ بالآخراس کے دل میں بات آئی کہ بادشاہ اللہ والوں کا بڑا قدر دان ہے۔ بیہ خیال آنے کے بعداس نے شہر کے باہر جاکرا یک جگہا پی جھونپڑی لگالی اور اللہ ہو کا ور دکرنا شروع کر دیا۔ جو آدمی بھی پاس جاتا وہ اسے واپس بھیج دیتا۔ جب اسی طرح وہ ذکر میں لگار ہاتو آہتہ آہتہ اس کی شہرت ہوگئی۔ لوگوں نے آکر دعا نمیں کروانا شروع کر دیں۔

اورنگ زیب عالمگیر کوبھی ان کا پیتہ چل گیا۔ ان کی عادت تھی کہ جب ان کو پتا کہ کوئی اللہ والا ہے تو خوداس کے پاس ملنے کے لیے جاتے تھے۔ چنانچہ وہ خود بھی گئے اور اپنے اور وزرا کوبھی لے کر گئے۔ ان سے دعا کروائی اور ہزاروں دیناروں سے بھری ایک تھیلی ان کو ہدیے کے طور پر پیش کی۔ انہوں نے کہا: جی نہیں ، ہمیں ان چیزوں کی کیا ضرورت ہوتی ہے، لے جاؤا پنے پیزوں کی کیا ضرورت ہوتی ہے، لے جاؤا پنے ساتھ ۔ اور نگ زیب عالمگیر رحمۃ اللہ علیہ اور زیادہ معتقد ہوئے کہ یہ بندہ تو بغرض اور بے طبح ہوکر اللہ اللہ کرر ہا ہے۔ چنانچہ تھیلی لے کرواپس چلے گئے۔

ابھی اورنگرزیب عالمگیررحمۃ اللّه علیہ جا کر در بار میں بیٹھے ہی تھے کہاتنے میں وہ بہرو پیا آ کر کہنے لگا: بادشاہ سلامت!السلام علیم

بادشاه نے کہا: وعلیکم السلام

بہروپے نے کہا: باوشاہ سلامت!انعام دیجیے۔

بادشاہ نے پوچھا: مجھی ایس بات کا انعام؟

اس نے کہا: بادشاہ سلامت! آپ مجھے نہیں پہچان سکے۔،

بادشاه نے بوچھا: بھئی! میں کیے ہیں پہان سکا؟

اس نے پوچھا: جی! آپ ابھی جس بندے ہے مل کے آئے ہیں وہ کون تھا؟

بادشاه نے کہا: وہ ایک اللہ والاتھا۔

بہروپ نے کہا: بادشاہ سلامت! وہ میں تھا۔ میں نے اپنے آپ کواییا بنا کر پیش کیا کہآپ نہ پہچان سکے،للذا آپ مجھےانعام دیجیے۔

بادشاہ بڑا جیران ہوااوراس نے اسے انعام دیا۔لیکن انعام تھوڑ اتھا۔

بہروپے نے کہا: باوشاہ سلامت!انعام تو بہت کم ہے۔

باد شاہ نے کہا: میں تو بس یہی دے سکتا ہوں۔ ہاں! جب تم وہاں متھے تو میں نے تو دیناروں سے بھرا ہواتھ بیا پیش کیا تھا،تم اس وقت قبول کر لیتے تو پوراتھ بیلاتمہارا ہوتا۔ اب کیوں انعام کی کی کاشکوہ کررہے ہو؟

بہروپ نے کہا بادشاہ سلامت! جب آپ نے مجھے تھیلادیا تھا تو خیال میرے دل میں بھی آیا تھا کہ اچھا موقع ہے، تھیلائی لے لیتا ہوں، مگر پھردل میں خیال آیا، نہیں ،اگر چہتو بہرو پیا ہے مگر اللہ والول کا بھیس بنا کے بیٹھا ہوا ہے۔اگر تو نے تھیلا تبول کرلیا تو اللہ والول کی مسند بدنام ہوجائے گی کہ اللہ والے بھی اس طرح ہدیے تبول کرلیا تو اللہ والول کی مسند بدنام ہوجائے گی کہ اللہ والے بھی اس طرح ہدیے تبول کرلیا تو اللہ والول کی مسند بدنام ہوجائے گی کہ اللہ والے بھی اس طرح ہدیے تبول کرلیا تو اللہ والول کی مسند بدنام ہوجائے گئی کہ اللہ والے کھی کوٹھو کرلگادی۔

آپ سوچے تو سہی کہ ہم سے تو بہرو پیاا چھا، جس نے اپنے بہروپ کا بھی لحاظ رکھ بیاا دراییا کوئی کام نہ کیا جو اللہ والوں کی شان کے خلاف ہو۔ ہم نے بھی کلمہ پڑھا ہے، ہم بھی مسلمان کہلاتے ہیں، ہم کیوں ایسا کام کرتے ہیں جو ایک مسلمان کے شایان شان نہیں ہوتا۔

## سنسبت محمري منافيليم كالكر:

جائے متحدد ہلی کے سیرھیوں پرفقیر بھیک مانگنے کے لیے بیٹھے ہوتے تھے۔ایک انگریز آیا۔ وہ مسجد میں کوئی ڈیزائن دیکھنا چاہتا تھا۔ جب سیرھیاں چڑھنے نگا توایک مسلمان فقیر**اس** کی طرف بھا گا بھا **گا آیا اور کہنے لگا: مجھے پچھ** دے دیجے۔اس انگریز نے بو ہ نکالا اور اس کو پچھ چیے دے دیے اور بو ہ جیب میں ڈال کر چلا گیا۔

الله کی شان ، که اس کو مجد کا وه و میز ائن پیند آیا اور بیوی کوجا کربتایا - بیوی نے کہا کہ جمھے بھی اگلے ہفتے وہ و بیز ائن دکھا کیں ۔ کہنے لگا: بہت اچھا۔ رات کو اسے محسوس ہوا کہ جو ہوہ اس نے جیب میں والا تھاوہ جیب میں نہیں تھا اور وہ راستے میں ہی کہیں گم ہوگیا تھا۔ اس میں تین چارسور و پے بھی تھے۔ اس زمانے میں مہینے کی تخواہ ہی رو پیدیا ورو پیدہوتی تھی تو تین چارسور و پے تو بروی رقم سمجھی جاتی تھی ۔ خیراس نے کہا کہ اب تو وہ گم ہوگیا ہے ، کیا کریں ۔ چنا نچہ بات آئی گئی ہوگئی۔

اگلے ہفتے وہ اپنی ہوی کو لے کر دوبارہ مبحد کی طرف گیا۔ اب جب وہ سیر هیا ال چڑھ رہا تھا تو اس نے دیکھا کہ وہ ہی فقیر بھا گتا ہوا آیا اور اس نے اپنا تھیلا نیچے رکھا اور اس میں سے اس کا بوہ و نکالا اور کہنے لگا: صاحب! آپ کا یہ بوہ یہاں گرگیا تھا، میں نے آپ کو تلاش کرنے کی کوشش کی گر آپ نکل گئے۔ میں نے اس وقت سے یہ سنجال کر رکھا ہوا ہے۔ آپ میہ لیجے۔ جب اس نے بوہ و یکھا تو اس میں پوری کی پوری رقم موجودتھی۔ وہ بڑا جیران ہوا کہ یہ پہیہ پیسہ ما نگلنے والا ، اسے تمین چارسو رو پیل گئے تھے، اس نے خود کیوں نہ استعال کر لیے: پھر یہا کی ہفتے تک میرا نظار موجود کھی کرتا رہا۔

چنانچاس نے پوچھا: کیا وجہ ہے کہ تم نے میرے پہنے استعال نہ کیئے۔ نقیر نے جواب دیا کہ میر ہے ول میں بھی ہے بات آئی تھی کہ میں ان پیپوں کو استعال کرلوں، لکین مجھے فور آئیک خیال آیا جس کی وجہ ہے میں نے ایسانہ کیا۔ اس نے پوچھا: آپ کو کون سا خیال آیا؟ فقیر کہنے لگا: میں مسلمان ہوں، آپ عیسائی ہیں، میرے دل میں خیال آیا کہ ایسانہ ہو کہ قیا مت کے دن بیمقد مداللہ کے سامنے پیش کیا جائے اور آپ کے نی حضرت عیسیٰ علیہ السلام میرے نی حضرت محمد ما تعلیق کی کھاوہ کریں کہ آپ کے نی حضرت عیسیٰ علیہ السلام میرے نی حضرت محمد ما تعلیق کی کھاوہ کریں کہ آپ کے

امتی نے میرے امتی کے پیسے چرائے تھے۔اس خیال کے آنے کے بعد میں نے پیپوں کواستعال نہ کیااور میں نے آپکاا نظار کیا۔،اب آپ کی امانت آپ کے پاس موجود ہے۔

سچی بات تو بیہ ہے کہ ہم سے تو وہ فقیراح چھاتھا، اسے بھی اس نسبت کالحاظ تھا، ہمیں بھی اس نسبت کالحاظ ہونا جا ہے۔

## معافی مانگئے سے پہلے معاف کردیا:

ایک بزرگ کے بارے میں آتا ہے کہ وہ تج پر گئے ہوئے تھے۔ایک جگہ جا
رہے تھے اور ان کا تھیلا ان کے ہاتھ میں تھا۔ایک نوجوان آیا اور ان سے ان کا تھیلا
چینا اور بھاگ گیا۔ ذرا آگے گیا تو اس کی آنھوں کے سامنے اندھیرا چھا گیا۔ جیسے
بینائی چلی گئی۔اس نے رونا شروع کر دیا۔لوگوں نے پوچھا: کیوں روتے ہو؟ کہنے
لگا: میں نے فلال جگہ پرایک بوڑھے میاں کا تھیلا چھینا ہے اور مجھے لگتا ہے کہ وہ کوئی
مقبول بندے تھے کہ میری بینائی چلی گئی۔ مجھے ان کے پاس لے چلو، میں ان سے
معافی مانگنا جا ہتا ہوں۔

چنانچہلوگ اس کواس جگہ پر لے گئے۔وہاں وہ بڑے میاں نہیں تھے۔قریب ہی ایک حجام تھا۔اس سے پوچھا: تو کہا کہوہ نماز پڑھنے آتے ہیں پھر چلے جاتے ہیں، آپ اگلی نماز تک انتظار کریں، میں نشاند ہی کردوں گا۔

اگلی نمازتک وہ بزرگ آگئے۔اس حجام نے ان کی نشان دہی کر دی۔اب وہ نوجوان ان سے معافی مانگنے لگا اور کہنے لگا: حضرت! آپ مجھے معاف کر دیں، مجھ سے غلطی ہوگئی، میں بڑا شرمندہ ہوں اور تو بہ کرتا ہوں۔وہ فرمانے لگے کہ میں نے تو آپ کوائ وقت معاف کر دیا تھا۔ جب بار باراس نے معافی مانگی اور بار بارانہوں نے کہا کہ میں نے توائی وقت آپ کومعاف کر دیا تھا تو لوگ بڑے جیران ہوئے کی

نے پوچھا: حضرت! اس نے آپ کاتھیلا چھینا اور آپ کہتے ہیں کہ بیل نے اس وقت معاف کردیا تھا! وہ بزرگ کہنے لگے: ہاں مجھے ایک خیال آگیا تھا جس کی وجہ سے میں نے معاف کردیا تھا۔ پوچھا: کیا خیال آگیا تھا؟

اس نے کہا: میں نے علا ہے مسکہ سنا ہے کہ نبی علیہ السلام نے فر مایا کہ 'قیامت کے دن ہیری امت کو حساب کتاب کے لیے پیش کیا جائے گا، جب تک پوری امت کا حساب کتاب پورانہیں ہو جائے گا میں اس وقت تک جنت میں قدم نہیں رکھوں گا' ۔ میر ہو دل میں خیال آیا کہ اس نے میر اتھیلا چھینا، اگر میں نے معاف نہ کیا تو قیامت کے دن میر اییمقد مہ پیش ہوگا، اور جتنی دیر اس مقد مے نے فیلے میں لگے گ، میر محبوب مال تی ہو جائے گی، میں نے معاف کر دیا کہ نہ مقد مہ پیش ہوگا اور ختی میں اتنی دیر ہو جائے گی، میں نے معاف کر دیا کہ نہ مقد مہ پیش ہوگا اور نہ میر مے جوب مال تی دیر ہو جائے گی، میں دیر لگے گی۔ کہ نہ مقد مہ پیش ہوگا اور نہ میر مے جوب مالی ظربوتا اور ہم بھی اپنے جھڑ ہے سے بہ کاش! ہمیں بھی اس نبیت کا لیا ج

ر بسلامت تههاری نسبت:

عزیز طلبا! ہمارے پاس تو نسبت کے سوا ہے ہی کچھ ہیں۔
عمل کی اپنے اساس کیا ہے!
بجز ندامت کے پاس کیا ہے!
رہے سلامت تمہاری نسبت
مرا تو بس آسرا یہی ہے
اللہ تعالی نے ہمیں جویہ چٹائیوں پر بیٹھ کرحدیث اور تفییر کی کتابیں پڑھنے کی
نسبت دی ہے یہ بردی نسبت ہے۔ اس نسبت کی لاج رکھے۔ ایسانہ ہو کہ قیامت کے

دن پوچھلیا جائے کہ دوسر نے توعوام الناس تھے، ان سے کیا گلہ، آپ لوگ تو قرآن و حدیث پڑھنے والے تھے، تم نے ہی پچھنبست کی لاج رکھ لی ہوتی اور اپنی زندگی کوتم نے ہی اسلام کے مطابق ڈھال لیا ہوتا، تو سوچے کہ پھر اللہ کے مطابق ڈھال لیا ہوتا، تو سوچے کہ پھر اللہ کے مجوب منافظیٰ آئے کے سامنے ہم کیا جواب دے کیس گے؟ اس لیے کہنے والے نے کہا:

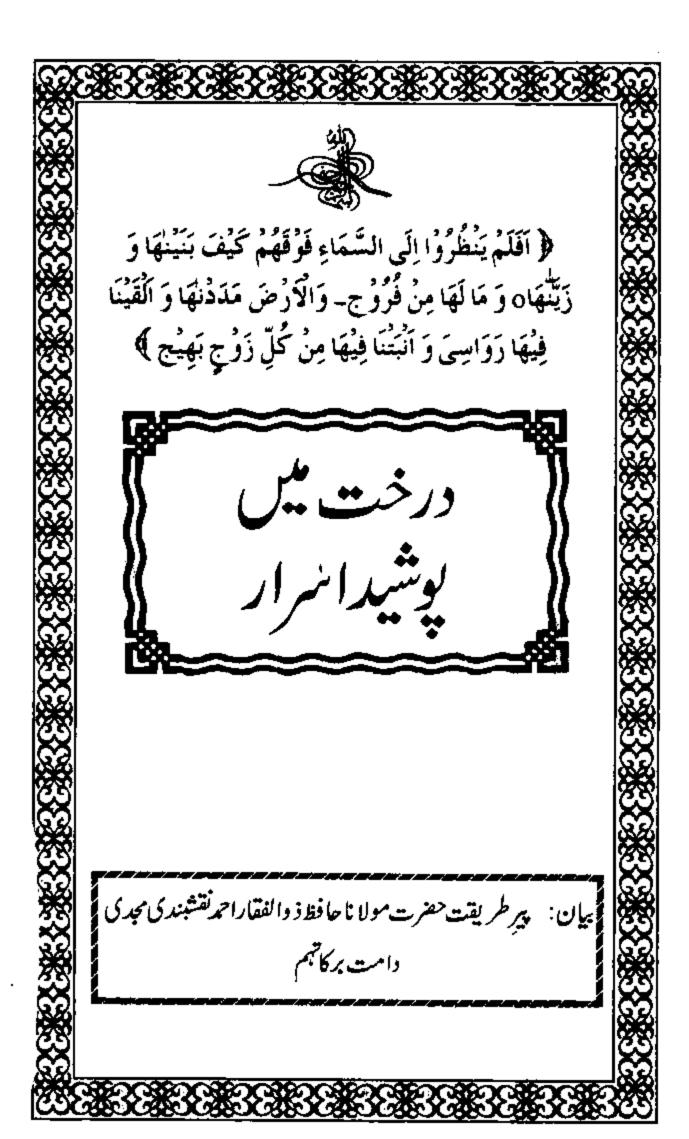
تو غنی از ہر دو عالم من فقیر "
"اے اللہ! تو دوعالم سے غنی ہے، میں فقیر ہوں"
گر تو بنی حسابم ناگزیر

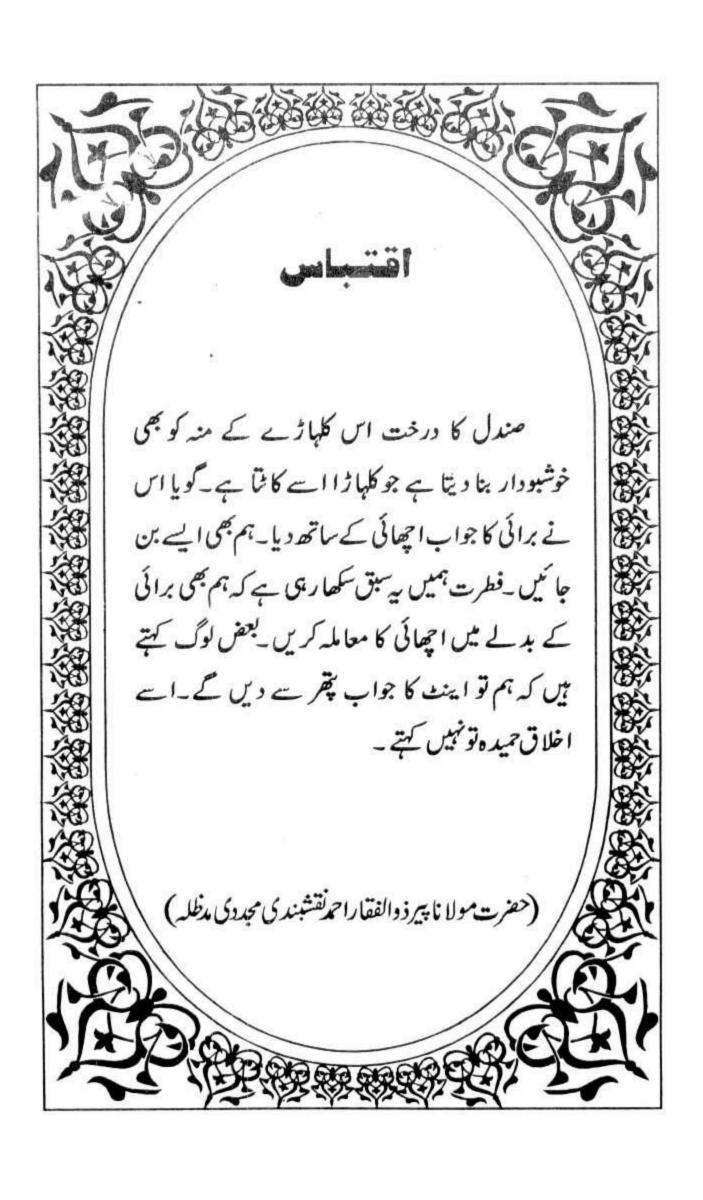
''اےاللہ!اگرتو فیصلہ کرلے کہ میراحساب لیمالازمی ہے'' از نگاہِ مصطفےٰ پنہاں گیر ''اےاللہ!مصطفے کریم کی نگاہوں ہےاوجھل حساب لے لینا''

تا کہ کہیں ان کے سامنے شرمندگی نہ ہو، آقا مٹھ آتے ہے نہ کہہ دیں کہ تو نے میرے آنسوؤں کی قدرنہ کی ، میں تو را توں کورورو کے امت کی مغفرت کی دعا کمیں کرتا تھا، تو میراوارث کیسے بنا کہ تونے پڑھنے کے باوجودا بنی زندگی کونہ بدلا۔

آج ہمیں چاہیے کہ ہم اپنی زندگی کو اسلام کے مطابق ڈھالنے کا عہد کریں، پچھلے گناہوں سے تجی تو بہ کریں اور آئندہ اسلامی، ایمانی اور قرآنی زندگی بسر کرنے کا دل میں ارادہ کریں۔ اللہ تعالیٰ ہمیں اس میں کا میاب اور کا مران فر ماد بے اور قیامت کے دن کی ذلت ورسوائی ہے ہمیں محفوظ فر ماد ہے۔ اللہ تعالیٰ ہمارے اندر کے انسان کو جگا دے اور ہمیں صحیح معنوں میں سچاپیا مومن مسلمان بناد ہے۔ (آمین ٹم آمین)

وَ اخِرُ دَعُوانَا آنِ الْحَمْدُلِلَّهِ رَبِّ الْعَلَمِيْن





## درخت میں پوشیدہ اسرار

اَلْحَمْدُ لِلَّهِ وَكَفَىٰ وَسَلَامٌ عَلَىٰ عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفَىٰ اَمَّا بَعُدُ! فَاعُودُ فُرِ اللَّهِ مِنَ الشَّيُطْنِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسُمِ اللَّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ٥ ﴿ اَفَلَمْ يَنُظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَهَا وَ زَيَّنَهَا٥ وَ مَا لَهَا مِنْ فُرُو جَ وَالْارْضَ مَدَدُنَهَا وَ اَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَ اَنْبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيْج تَبْصِرَةً وَّ ذِكُولِى لِكُلِّ عَبْدٍ مَّنِيْب ﴾ فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيْج تَبْصِرَةً وَّ ذِكُولِى لِكُلِّ عَبْدٍ مَّنِيْب ﴾ فيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيْج تَبْصِرَةً وَ ذِكُولِى لِكُلِّ عَبْدٍ مَّنِيْب ﴾

سُبُحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّتِ عَمَّا يَصِفُونَ٥وَسَلَامٌ عَلَى الْمُوْسَلِيْنَ٥ وَالْحَمْدُ لِللهِ رَبِّ الْعَلَمِيْنَ٥

ٱللُّهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ سَيِّدِناً مُحَمَّدٍ وَّعَلَىٰ آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكُ وَسَلِّمُ

## بندۂ حرکے لیے ہیں ہے فراغ:

انسان درخت نہیں کہ کھڑا رہے ، پھر نہیں کہ پڑا رہے ، یہ تو اشرف المخلوقات ہے، اہے چاہیے کہ یا دالہی میں لگارہے۔مقصد زندگی اللدرب العزت کی بندگی ہے اور مقصدِ حیات اللہ تعالیٰ کی یاد ہے۔انسانی جسم چکی کی ما نند ہے۔ چکی اگر گیہوں پیسے تو اس کا فائدہ ہے اورا گر بندر ہے تو بے فائدہ ہے۔اسی طرح اگرانسانی جسم سے اعمال نیک اعمال صادر ہوتے رہیں تو اس جسم کا فائدہ ہے اورا گرانسان کے جسم سے اعمال صادر نہ ہوں تو یہ بے فائدہ ہے۔ہمیں اجرام فلکی چلتے ہوئے نظر آتے ہیں۔آسان کے لیے کے سیاروں اور ستاروں کو دیکھیں ، یہ تحرک نظر آتے ہیں۔اس میں انسان کے لیے

ایک خاموش پیغام ہے کہ اے انسان! تجھے بھی اپنی زندگی کومتحرک بنانا چاہیے۔ ۔ ۔ ملی ہے فقط غلاموں کو جہاں میں بندہ حرکے لیے نہیں ہے فراغ جہاں میں بندہ حرکے لیے نہیں ہے فراغ جونلام ذہنیت کے لوگ ہوتے ہیں ان کے پاس بردی فرصت ہوتی ہے، بردا

جوغلام ذہنیت کے لوگ ہوتے ہیں ان کے پاس بڑی فرصت ہوتی ہے، بڑا وفت فارغ ہوتا ہے ادر جو بندہ حرہوتا ہے، یعنی جو کام کرنے والے لوگ ہوتے ہیں وہ دنیا میں عدیم الفرصت ہوتے ہیں۔

### درسِ فطرت:

ہم اگر اپنے اردگر دغور کریں تو ہمیں فطرت بیسبق ویتی نظر آتی ہے کہ اے انسان! تو دنیا میں ایک مقصد کے تحت پیدا کیا گیا ہے، اگر تو اس مقصد کے مطابق زندگی گزارےگا تو تو کامیاب ہوگا۔

# (درخت میں پوشیدہ اسرار ورموز)

ہمارے لیے درخت میں بہت ہے سبق موجود ہیں اور اس میں بڑی عجیب و غریب باتنیں پوشیدہ ہیں مثال کےطوریر:

### درخت کاز مین کے اندرا گئے میں راز:

آپ نے غور کیا ہوگا کہ درخت ہمیشہ زمین میں اگتا ہے، سونے اور چاندی کی پلیٹ میں نہیں اگتا ہے، سونے اور چاندی کی پلیٹ میں نہیں اگتا۔ اس سے کیا مراد ہے؟ اس سے مراد یہ ہے کہ اے انسان! اگر تو کامیاب زندگی گزار نا چاہتا ہے تو تحقیے اس ماحول اور معاشرے میں لوگوں کے ساتھ مل جل کرر ہنا پڑے گا، تب توضیح نشو ونما پاسکے گا۔ اگر تو جنگلوں اور غاروں میں جاکر ترقی حاصل کرنا چاہے گا تو وہاں تحقیم نہیں جلگی۔

### بیج زمین کے اندر بونے میں حکمت:

جو نیج زمین میں بویا جاتا ہے وہی درخت بنتا ہے۔ تو درخت کیسے بنا؟ جب نیج
نے اپنے آپ کومٹا دیا۔ جب دانے نے اپنے آپ کو خاک میں ملا دیا تو اللہ رب
العزت نے اس دانے کو درخت بنا دیا۔ پھر اس درخت پر پھل کھتے ہیں اور ایک
دانے سے ہزاروں دانے بن جاتے ہیں۔ ای طرح جب کوئی انسان اپنی 'میں''کو
مٹا دیتا ہے، اپنی انا نیت کوتو ٹریتا ہے تو پھر اللہ رب العزت اس کو وہ مقام عطا فر ماتے
ہیں جس سے وہ ہزاور ل لا کھوں انسانوں کے انسان بنے کا سبب بن جاتا ہے۔

# ایک بیج کی قربانی میں انسانیت کے لیے پیغام:

ایک نئے نے قربانی دی، درخت بنا، اوراس درخت نے انسانوں اورجانوروں کو سایہ دیا۔ اس طرح جوانسان اسپیے نفس کی قربانی دیتا ہے اوراس کوشر بیت کی لگام پہنا پہنا ہے۔ اس طرح جوانسان اسپیے نفس کی قربانی دیتا ہے اوراس کوشر بیت کی لگام پہنا ہیتا ہے، پھراللہ درب العزت اسے قد آ ور درخت کی مانند بنا دیتے ہیں اور وہ دوسرے انسانوں کے لیے سایہ دار درخت بن جاتا ہے۔ وہ اکیلا ہوتا ہے، مگر ہزاروں لوگوں کے لیے سائیاں کی مانند ہوتا ہے۔

ہمیں ایک ملک میں باغ دیکھنے کا موقع ملا۔ وہاں پرہم نے الا پڑی کا درخت دیکھا۔۔۔۔۔ بہی الا پڑی جوہم منہ میں ڈالتے ہیں اور خوش بو آتی ہے۔۔۔۔۔ تو بتانے والے نے کہا اسے شیڈوٹری کہا جاتا ہے۔ہم نے بوچھا شیڈوٹری کا کیا مطلب ہے؟ وہ کہنے لگا کہ یہ پودا دھوپ میں نہیں اگ سکتا۔ یہ ہمیشہ کسی درخت کے سائے میں اگے گا۔ جب وہ آ دمی یہ چیز بتا رہا تھا تو میرے ذہن میں یہ بات آ رہی تھی کہ انسان بھی این ہووں کے سامنے شیڈوٹری بن کررہتا ہے۔ جیسے اس درخت کو اللہ انسان بھی این ورخت کو اللہ انسان بھی این درخت کو اللہ انسان بھی این وردار کھال عطافر ما دیا اسی طرح ایسے بندے کو بھی اللہ تعالیٰ خوش بودارا عمال

عطا فرمادے گا۔ہمیں جاہے کہ ہم ہر کہتے نیکی کا پیج بوتے رہیں۔ پھرایک دن ایسا آئے گاجب ہم نیکیوں کا باغ لگا ہوا دیکھیں گے ۔

گل سادی اے میلہ گھڑی دا اے رتاں آندیاں جاندیاں رہندیاں نیں کرماں والیاں اوہ جیہڑیاں رکھ لا کے مُر چھانویں بیہندیاں نیں

جو بندہ درخت لگا تا ہےاور پھراس کی ٹھنڈی چھاؤں میں بیٹھ کرآ رام کرتا ہےوہ بخت والا ہوتا ہے۔ہم بھی آج نیکیوں کے درخت لگا ئیں اورکل قیامت کے دن کڑ کتی دھوپ میں عرش کی چھاؤں میں آ رام کے ساتھ بیٹھیں۔

### درخت کی ما نند بنیے نہ کہ بیل کی ما نند:

ایک ہوتا ہے درخت اور ایک ہوتی ہے ہیل۔ دونوں میں فرق یہ ہے کہ درخت اگنے میں سالوں لگا تا ہے۔ گراس کے بعد بیسالوں زندہ بھی رہتا ہے۔ کسی درخت کی عمر سوسال اور کسی درخت کی عمر سوسال اور کسی درخت کی عمر سوسال اور کسی درخت کی عمر ایک سوسال ہو چکی تھی اور اس کو دیکھنے کے لیے دوسر سے ملکوں کا موقع ملا جس کی عمر ایک سوسال ہو چکی تھی اور اس کو دیکھنے کے لیے دوسر سے ملکوں سے سیاح آرہے تھے۔ اس کے اوپر پھول بھی گئے ہوئے تھے اور پھل بھی لگا ہوا تھا۔ ایسے درخت بھی ہیں جن کی عمر کئی سوسال ہوتی ہے۔ امر یکا کی ریاست کیلیفور نیا میں ایک ایسا درخت ہوتا ہے جس کی عمر سینکڑوں سال ہوتی ہے اور اس کا تنا اتنا بڑا ہوا تا ہے کہ اس سے کوکا کے کر اس میں سے بس گزر نے کی سڑک بنائی جاتی ہے۔ وہ اگا ہوا درخت ہے گرس کوکا کر اس میں سے بس گزر نے کی سڑک بنا دی گئی کہ اس پر سے بس گزر جاتی ہے۔ وہ درخت اگنے اور بڑھنے میں سالوں لگاتے ہیں اور پھر اس کو زندگی بھی سالوں لگاتے ہیں اور پھر اس کو زندگی بھی سالوں لگاتے ہیں اور پھر اس کو زندگی بھی سالوں لگاتے ہیں اور پھر اس کو زندگی بھی سالوں لگاتے ہیں اور پھر اس کے درخت اگنے اور بڑو ھے میں سالوں لگاتے ہیں اور پھر اس کو زندگی بھی سالوں ملتی ہے۔

بیل کا معاملہ اس سے مختلف ہوتا ہے۔ وہ چند دنوں میں پھیلتی ہے۔ کبھی آپ بیل پرغور کریں کہ بیج گئے تو یوں لگتا ہے کہ وہ دنوں کے اندر ہر چیز کوکور کرلے گی لیکن وہ جتنی جلدی پھیلتی ہے، اتنی ہی جلدی ختم بھی ہو جاتی ہے۔ آج بالکل ہری بھری نظر آئے ہوگی تو کل آپ دیکھیں گے کہ جی بیانتھی بختم ہوگئی۔ بیانتھی بختم ہوگئی۔

و درخت نے اپنے تیار ہونے میں سالوں لگائے اور بہار بھی اس کوسالوں ملی اور بیل نے دنوں میں اپنے آپ کو بنایا اور اسے بہار بھی چند دنوں کی ملی ۔ آج کل انسان بھی بیل بنا چا ہتا ہے۔ محنت نہ کرنی پڑے، مدر سے اور سکول کالج کے طلبا کہتے ہیں کہ پڑھنانہ پڑے ۔ ان کو کام کرنامشکل نظر آتا ہے۔ مشقت اٹھا نامصیبت نظر آتی ہے۔ یہ چا ہتے ہیں کہ بس محنت کے بغیر ہم بن جا کیں ۔ اس سے صاف ظاہر ہے کہ وہ بیل بنا چا ہتے ہیں۔ بھریا در کھیں کہ ختم بھی بیل کی طرح ہوں گے۔

### جڑیں درخت کے بقدر گہری کیوں؟:

درخت کے بارے میں ایک موٹا سااصول یہ ہے کہ جتنا یہ زمین سے او پرنظر آتا ہے۔ اتنا ہی بیز مین سے نیچے ہوتا ہے۔ درخت کی جڑیں زمین میں اتنی گہری ہوتی ہیں جتنا درخت کی اپنی او نچائی ہوتی ہے۔ اور جتنا درخت کا گھیر ہوتا ہے اتنا ہی اس کی جڑوں کا پھیلا وُہوتا ہے۔ اس میں بھی ہمار ہے، لیے سبق ہے کہ جواجھا انسان ہوتا ہے اس کی شخصیت کے اندر گہرائی ہوتی ہے اور جتنا لوگوں کے سامنے وہ اعمال کرتا نظر آتا ہے، جب وہ خلوت میں ہوتا ہے تو اس سے زیادہ اعمال کرتا نظر آتا

دن اوررات میں درخت کی بردهور ی میں سبق:

دن کی روشنی میں درخت کی شاخی*س بردھتی ہیں* اوررات کی تاریکی میں درخت کی

جڑیں بڑھتی ہیں۔انسان کا بھی یہی حال ہے کہ دن کی محنت میں اس کی شاخیس بڑھتی ہیں یعنی لوگوں میں وہ دعوت کا کام کرتا ہے اور جب رات کے آخری پہر میں تہجد کے لیے اٹھتا ہے تو پھراللہ کے سامنے اس کی جڑیں بڑھتی ہیں۔ آج تہجد میں اٹھنے کی تو ہم کوشش ہی نہیں کرتے اور بے جڑ کے در خت ہے پھرتے ہیں۔ جس در خت کی جڑیں ہی نہر میں وہ در خت ہی جڑ ہے اور ہے گا!؟

### فرش تو ژکرا گنے والے درخت کا پیغانم:

ہمارےا یک دوست نے اپنا ایک گھر بنایا تو گھر میں ایک درخت تھا، اس نے اس درخت کواو پر سے کاٹ دیا۔ بیسوچ کر کہ جڑوں کوکھود کر نکالنا تو بہت مشکل ہے۔ اس کے بعداس نے اس کےاویر چیس کا فرش ڈال دیا۔

کی مہینوں کے بعد اس کو محسوس ہوا کہ اس مکان کا فرش ایک جگہ نے انجرنا شروع ہوا۔ پھر چند دنوں کے بعد اس نے دیکھا کہ اندر سے اس درخت کی کوئیلیں تکلیں۔ فرش کوانہوں نے توڑ دیا اور درخت نے پھرا گنا شروع کر دیا۔ تب اسے کسی نظیس۔ فرش کوانہوں نے توڑ دیا اور درخت نے پھرا گنا شروع کر دیا۔ تب اسے کسی نے بتایا کہ بیدورخت کٹنے کے باوجووزندہ تھا۔ اگر بیمردہ لکڑی ہوتی نو دفن رہتی ہم نے اس کے اوپر منوں ہو جھ تو ڈال دیا ، مگرزندہ ورخت نے منوں ہو جھ کو ہٹا کر پھر سے اگنا شروع کر دیا۔

اس میں بھی ہمارے لیے سبق ہے کہ بھی ہمارے اوپر بھی حالات کا منوں ہو جھ آسکتا ہے، حالات مخالف ہو سکتے ہیں۔ حاسدین حسد کر سکتے ہیں، وشمن دشمنی کر سکتے ہیں، خالفین مخالفت کر سکتے ہیں۔ اگر ہم اندر سے زندہ ہوں گے تو یہ حالات ہمیں فنا نہیں کر سکیے ہیں۔ اگر ہم اندر سے زندہ ہوں گے تو یہ حالات ہمیں فنا نہیں کر سکیں گے۔ بلکہ وہ روحانی زندگی انسان کی شخصیت کو بالآخر ان حالات سے نکال دے گی اور اللہ تعالی انسان کو پھر بہار کے دن عطافر مادیں گے۔ اس لیے مومن

کادل زندہ ہوتا جا ہیے۔

### گناه آکاش بیل کی ما نند ہیں:

آپ نے آکاش بیل دیکھی ہوگی۔ بیسبز رنگ کی بیل ہوتی ہے۔اگر بیسی درخت کے اوپر آجائے تو بیہ پورے درخت کا گھیراؤ کر لیتی ہے اور اس درخت کو بالکل ختم کر دیتی ہے۔انسان کے گنا ہوں کا بھی یہی حال ہوتا ہے۔وہ بھی آکاش بیل کی مانند ہیں۔بعض اوقات انسان کو گنا ہوں کی ایسی عادت پڑجاتی ہے کہ بیاناہ انسان کو گنا ہوں کی ایسی عادت پڑجاتی ہے کہ بیاناہ انسان کو گھیر لیتے ہیں اوراس کی شخصیت کو ختم کر کے رکھ دیتے ہیں۔

### جروں کی تہجد کے اعمال کے ساتھ مماثلت:

درخت میں ایک تنا ہوتا ہے جس پر شاخیں ہوتی ہیں اور دوسرااس کی جڑیں بھی ہوتی ہیں۔انسان کے بارے میں بھی قدرت کے ہاں یہی دستور ہے کہ ہرانسان کی ایک وہ زندگی ہوتی ہے جولوگوں کے سامنے ہوتی ہے اورایک وہ زندگی ہوتی ہے جو اللہ کے سامنے ہوتی ہے اورایک وہ زندگی ہوتی ہے جو اللہ کے سامنے ہوتی ہے۔ جتناروٹ سٹاک زیادہ مضبوط ہوگا اتنا ہی درخت بیاریوں سے بچار ہے گا۔اسی طرح جتنا انسان کے خلوت کے اور تہجد کے اعمال زیادہ اچھے ہوں گے اتنا ہی انسان اللہ کے سامنے قد آور ہنے گا۔

# در خت برسانب لنكنے ميں سبق:

درخت کے اوپراگرسانپ بھی لٹکتے رہیں تو اسے کوئی پروائیس ہوتی۔مومن کی زندگی بھی ایسی ہی ہونی چاہیے کہ ناموافق ماحول سے اس کو متاثر نہیں ہونا چاہیے۔بس وہ اپنے کام میں لگارہے۔وہ علم میں بمل میں، دین کی دعوت میں اور اللہ سے تعلق بڑھانے میں اپنے آپ کوآگے بڑھا تارہے۔

### الأستان بيشوه الراد (دُنت مِن بيشوه الراد ) SBE (258) (دُنت مِن بيشوه الراد )

# درخت میں نوجوانوں کے لیے ایک خاص پیغام:

درخت کے اندر بیخو بی ہوتی ہے کہوہ ماحول سے نیوٹریشن (غذا)لیتاہے،مثلاً:

- ⊙ ....زمین ہے اس نے معد نیات لیں ، یانی لیا۔
  - ⊙ ..... ہوا ہے اس نے گیس لی۔
  - ⊙....روشن سے اس نے پاور لی۔
     اوراس کے بعدنشو ونما یا گی۔
- · لیکن درخت فقط لیتا ہی نہیں ۔ اگر لیتا ہے تو پھر دیتا بھی ہے ۔ غور کریں ،
  - ⊙ ....اس کا سامید و مرول کے لیے،
  - ⊙ ....اس کا کھل دوسروں کے لیے،
  - ⊙ ....اس کا پھول دوسروں کے لیے ،حتی کہ
- ⊙ ......اگروہ خشک ہوجائے تواس کی لکڑی بھی دوسروں کے جلانے کے کام آتی ہے۔
  تو درخت نے اگر پچھ لیا تھا تو اس نے دیا بھی ۔ ہمیں یہاں سے سبق سیکھنا
  چاہیے کہ ہم اس دنیا میں زندگی گزار نے کے دوران اپنے گھر میں اپنے بڑوں سے
  لیتے ہیں۔مثلاً
  لیتے ہیں۔مثلاً
  - ⊙..... مال سے محبت ملی ،
  - ⊙..... باپ سے شفقت ملی ،
  - ⊙..... بھائی ہے تعاون ملاء
  - ⊙....بہن سے دعا ئیں ملیں \_

یہ سب چیزیں ہمیں مل رہی ہیں اور ہم نشو ونما پار ہے ہیں۔تو نشو دنما پانے کے بعد ہمیں بھی چاہیے کہ ہم اپنا سب کچھ دوسروں کے لیے وقف کریں۔ہم بھی ایسے بنیں کہ

#### 

- ⊙.....گھر والوں کے لیے باعث رحمت ہوں ،
- ⊙ .....الله والول کے لیے باعث رحمت ہوں ،
- ⊙....ا ہے معاشرے کے لیے باعث رحمت بنیں ،اور
- ⊙.....ا چھےا خلاق کے ذریعے ہم دوسروں کوخوشی پہنچا کیں۔

لیکن آج کا نوجوان کیا جاہتا ہے؟ وہ جاہتا ہے کہ کھانا بھی اچھا ملے،لباس بھی اچھا ملے،لباس بھی اچھا ملے،لباس بھی اچھا ملے اور سواری بھی بہترین ہو۔اور جب ماں باپ کہتے ہیں کہ پڑھو،تو وہ جواب دیتا ہے کہ پڑھنے کے علاوہ کچھاور بتا ئیں۔جوان کا فرض منصبی ہوتا ہے وہ پورا کرنے کے لیےان کا دل نہیں جاہتا۔گویاوہ یہ جانہتا ہے کہ سب کچھتو مجھے دیں، مگر مجھے کی کو کچھوا پی نہیں دینا۔

آج حالت بہ ہے کہ اگر کوئی باپ اپنے بیٹے کو جھڑکی دیے دیتو وہ منہ پھلا لیتا ہے اور غصے میں آجا تا ہے اور کہتا ہے کہ بس میں گھر چھوڑ کر چلا جاؤں گا۔انہوں نے ہی اسے پالا پوسا محبتیں دیں اور پھر بیاس عمر کو پہنچا۔لیکن ذراسی بات پہ ماں سے کہتا ہے کہ میں گھر چھوڑ کے چلا جاؤں گا۔ بیقا نون فطرت کے خلاف ہے۔

اگرکوئی شاخ میسوچے کہ میں تو درخت کے ساتھ مقید ہوگئی ہوں ، آ زاد ہی نہیں ہوں ، اس کے ساتھ بندھی ہوئی ہوں ، اگر میں درخت سے ہٹ جاؤں گی ، کٹ جاؤں گی ، کٹ جاؤں گی ، کٹ جاؤں گی ، کٹ جاؤں گی ، تو یا در تھیں کہ اگر بیشاخ درخت سے کٹے گی تو سرسبز نہیں رہے گی ، نہ اس پر پھل رہے گا نہ پھول رہیں گے اور جب خشک ہوگی پھر آمک میں ڈالنے کے کام آئے گی۔

جس طرح آج کل کا نو جوان بیسو چتاہے کہ میں گھر چھوڑ کر چلا جاؤں گا، میں تو گھر میں بس بندھا ہوا ہوں ، میں الگ ہو جاؤں گا تو آزاد ہو جاؤں گا۔ بیآ زاد کیا ہو گا؟ بیشیطان قتم کے لوگوں کے ہتھے چڑھ جائے گا اورکل کو جہنم کا ایندھن بن جائے گا۔ایک آدمی کا باز واگر میہ کے کہ میں تو خواہ مخواہ جسم کے ساتھ بندھا ہوا ہوں ، میں تو جسم سے الگ ہوکر آزاد ہو جاؤں گا، تو بیاس باز وکی غلط بہی ہے۔ بیاس وقت تک صحت منداور زندہ رہے گا جب تک جسم کے ساتھ رہے گا۔اگر یہ جسم سے کئے گا تو پھر اس میں بو پڑے گی، پھراس میں کیڑے پڑیں گے اور اس کئے ہوئے باز وکو پھر کئے ہی چوسیں گے اور چوڑیں گے۔ای طرح جونو جوان اپنے گھر سے دور چلے جاتے ہیں چوسیں گے اور چوڑیں گے۔ای طرح جونو جوان اپنے گھر سے دور چلے جاتے ہیں ان کا بھی یہی حال ہوتا ہے۔ان کو بھی ماحول معاشرے کے آوارہ لوگ اپنا شکار بیا ان کا بھی یہی حال ہوتا ہے۔ان کو بھی ماحول معاشرے کے آوارہ لوگ اپنا شکار بیا ایک کرتے ہیں۔

اس لیے آئ کل کے نوجوان کو یہ بات سمجھانے کی ضرورت ہے کہ اگر ماں باپ ڈانٹ ڈیٹ کرتے ہیں تو وہ دشمنی کی وجہ سے ایسانہیں کرتے ، بلکہ محبت کی بنا پر کرتے ہیں۔ وہ اپنی اولا دے اندر کمال دیکھنا چاہتے ہیں۔ اس لیے سمجھاتے ہیں کہ بیٹا! ہم نے اسپنے بال دھوپ میں سفید نہیں کیے ، بلکہ زندگی کی اور نجے نئج کو دیکھا اور تجر بات ماصل کیے ہیں۔ جن مشکلات سے ہم گزر کر آئے ، ہم ان تجر بات میں پڑنے کی عاصل کیے ہیں۔ جن مشکلات سے ہم گزر کر آئے ، ہم ان تجر بات میں پڑنے کی عبائے کھری کھری باتیں بتاتے ہیں ، اگر بیاصول اپنالو کے تو تم کامیاب ہوجاؤ سے اس کے اپنے والدین کی ، اپنے اساتذہ کی ڈانٹ ڈیٹ کو اپنے لیے باعث رحمت سمجھنا چاہیے اور اپنے بردوں کے تجر بات سے فائدہ اٹھانا چاہیے۔

### كمترچيز لے كربہتر واپس لوٹا تا:

درخت زمین سے کم تر چیز لیتا ہے اور بہتر چیزیں واپس کرتا ہے۔ کم تر چیزوں سے کیا مراد ہے؟ کہ زمین سے اس نے ٹائٹروجن لی بمیلشیم لی، فاسفورس لی، پانی لیا اور اس تشم کی معد نیات لیس۔ اور جب لوٹایا تو کیالوٹایا؟ پھول لوٹایا، پھل دیے، قیمتی چیزیں واپس ویں۔ اجھے انسان کو بھی چاہیے کہ وہ اپنے ماحول ومعاشرے ہے جتنی چیزیں سے، وہ اپنی زندگی میں اس سے بہتر چیزیں واپس کرنے کی کوشش کرے۔

خزان كموسم مين درختون كابيغام:

سردیوں کے موسم میں برفانی علاقوں کے درختوں کودیکھا کہ ان کے ہے بھی فتم ہو جاتے ہیں۔ ایسے ہو جاتے ہیں، پھل پھول بھی فتم ہو جاتے ہیں۔ بالکل ٹنڈ منڈ ہو جاتے ہیں۔ ایسے کھڑے ہو ۔ ان پرخوب برف گرتی کھڑے ہو۔ ان پرخوب برف گرتی ہو۔ ان پرخوب برف گرتی ہو۔ ان برخوب برف گرتی ہے۔ وہ اس برف کے اندر بھی صبر سے کھڑے رہتے ہیں۔ برفانی ہواؤں کے جھکڑ پیلے ہیں، مگروہ ان میں بھی تھیے کی طرح گڑے ہوئے نظر آئیں گے۔ ان درختوں کو پانے ہیں، مگروہ ان میں بھی تھیے کی طرح گڑے ہوئے نظر آئیں گے۔ ان درختوں کو باتے کہ اب ماحول مخالف ہے، مگریہ وقت بھی ہمیشہ نہیں رہے گا۔ اگر بہار ہمیشہ نہیں رہی تھی تو یہ خزاں کا موسم بھی ہمیشہ نہیں رہے گا۔ اس لیے جھے صبر کے ساتھ دو تین مہیئے گزار نے ہیں۔ چنا نچہ جب وہ دو تین مہیئے کا وقت گزار لیتا ہے تو سر دیاں ختم ہو جاتی ہیں اور پھر بہار کا موسم شروع ہو جاتا ہے۔ پھر اس کھڑی نما درخت کے اندر سے کونیلیں نگلتی ہیں، پے نگلتے ہیں، شاخیں نگلتی ہیں اور پھر اللہ تعالیٰ اس درخت کو پھل اور کونیکی عطافر مادیتے ہیں۔

اس ہے ہمیں سبق سیکھنا چاہیے کہ بسا اوقات ہمیں بھی مخالفت کے ماحول میں ۔ ہنا پڑجا تا ہے۔ گر درخت کی طرح ہم بھی صبر وضبط کے ساتھ وفت گزار دیں۔ اگر مبر ہے وفت گزار دیں گے توغم کی شام بھی ختم ہوجائے گی۔ ع مبر سے وفت گزار دیں گے توغم کی شام بھی ختم ہوجائے گی۔ ع مبر ہیں ہے غم کی شام گر شام ہی تو ہے ۔ بیں۔ مبر آز ماوقت گزرجا تا ہے اور پھراللہ تعالی بہار کا وفت عطا فرما دیتے ہیں۔

ہر پھل کی قیمت میں پوشیدہ اسرار:

درخت کا ہر کھل اپنی ایک قیمت رکھتا ہے۔ای طرح معاشرے کا ہر فرو اپنی قیمت رکھتا ہے۔جس طرح ہرا بینٹ اپنی قیمت رکھتی ہے۔ جب بیسب جڑ جاتی ہیں تو پھرایک دیوار بن جاتی ہے، ای طرح معاشرے کا ہر فردا پی ایک قیمت رکھتا ہے، جب سب آپس میں دلوں کو جوڑ لیتے ہیں تو پھر یہ برائی کے خلاف ایک سیسہ پلائی دیوار بن جاتے ہیں۔

اس لیے ہم کسی کو کم نظر سے نہ دیکھیں۔ کیا معلوم اللہ کے ہاں وہ انسان زیادہ مقام رکھتا ہو؟ ہمیں کسی کے بارے میں کیا معلوم ہے کہ اس کا کونساعمل اللہ کو پہند آجائے؟ یہ فیصلہ قیامت کے دن ہوگا ۔

کون مقبول ہے، کون مردود ہے، بے خبر کیا خبر بچھ کو کیا کون ہے؟ جب تلیں مجمل سب کے میزان پر تب کھلے گا کہ کھوٹا کھراکون ہے اس لیے ہر بندہ مومن کومجبت کی نظر ہے دیکھیں۔ عزت کی نظر ہے دیکھیں۔ نبی علیہ السلام بیت اللہ کا طواف فر مار ہے ہیں۔ پھر بیت اللہ پر نظر پڑی تو فر مایا کہ بیت اللہ، شرف اور تعظیم و تکریم کا مقام ہے، گر

حُرْمَةُ المُؤْمِنِ آرُجَحُ مِنْ حُرْمَةِ الكَعْبَةِ

''(الله کے ہاں) مومن کا احترام بیت اللہ کے احترام سے بھی زیادہ ہے'' اب ہم بیت اللہ شریف کا تو غلاف پکڑ کرروتے ہیں اور دعا کیں ما تکتے ہیں ، اور مومن بندے کا گریبان پکڑنے کے لیے ہاتھ بڑھاتے ہیں۔ کیا بھی ہم نے کسی مومن کا احترام اس لیے کیا ہے کہ

- .....يالله يرايمان لانے والا ہے۔
- ى ..... يالله كى توحيد كومان والا إور
- ..... بيرسالت كى تقمد يق كرنے والا ہے۔

درخت کے جلنے میں خاموش پیغام:

جس طرح آمک کی ایک چنگاری پورے درخت کوجلا کررا کھ کردیتی ہے،ای

#### 

طرح ایک براکلمہ انسان کے منہ سے نکلتا ہے اور جنت کی بجائے جہنم جانے کا ذریعہ بن جاتا ہے۔مثلا

- ⊙ ..... کفریہ بول بول دیتے ہیں۔
- ⊙ .....اسلام کےخلاف بول پڑتے ہیں۔
- ⊙ .....ایمان والوں کےخلاف باتیں کر دیتے ہیں۔
  - ⊙ …سنت كااستخفاف كرليتے ہيں۔

یوں اپنے ایمان سے ہاتھ دھو بیٹھتے ہیں۔ قاضی ثناء اللہ پانی پی طلانے کلماتِ کفر کے بیان میں لکھا ہے کہ اگر دو بندے گفتگو کرر ہے ہوں اور ان میں سے ایک بیہ کہہ دے کہ بھٹی! بیشریعت کی بات ہے، اور آگے سے دوسرا بیہ جواب دے دے کہ ''رکھ پرےشریعت کو' فقد گفر ّ ۔ تو ایسا کلمہ کہنے والا بندہ ایمان سے خارج ہوجا تا ہے۔ بیان بڑی نازک چیز ہے۔ اس کی حفاظت بھی کرنی پڑتی ہے۔ آج کل تو ہم نے دیکھا ہے کہ لوگ بہت کھلے انداز سے اپنے منہ سے ایسے کفریہ کلمے نکا لتے ہیں، اور ان کوا ہے ایمان کی فکر ہی نہیں ہوتی۔

# بارش برسنے سے درخت کی شادا بی میں حکمت:

جس طرح بارش برسی ہے تو درخت کوسر سبزی اور شادا بی مل جاتی ہے۔اسی طرح جب انسان کے او پر علم وعرفان کی بارش برسی ہے تو اس کوروحانی طور پر بہار نصیب ہوتی ہے۔اس کوروحانی طور پر بہار نصیب ہوتی ہے۔اس کے بہیں چاہیے کہ علماصلحا کی محفلوں میں بیٹھنا اپنے او پر لازم کرلیں۔ نبی علیہ السلام نے ارشا دفر مایا:

عَلَيْکُم بِمَجَالِسَةِ العُلَمَاءِ وَاستِمَاعِ كَلَامِ الحُكَمَاءِ ""تمہارے اوپرضروری ہے کہتم علماکی مجالس میں بیٹھوا ور اہل دانش کی باتیں سنو۔" اس لیے کہ جس طرح بارش کے برسنے سے زمین کو زندگی مل جاتی ہے، اس طرح علم و حکمت کی باتوں کو سننے سے مردہ دلوں کو زندگی مل جاتی ہے۔

### کھلوں اور گناہوں کے وزن میں مماثلت:

جس طرح درخت کوا ہے بھل بھاری نظر نہیں آتے ای طرح انسان کو بھی ا ہے گناہ وزنی معلوم نہیں ہوتے۔ دوسرا بندہ چھوٹی سی غلطی کر لے تو بڑی نظر آتی ہے اور خود جنتی بھی بڑی غلطی کرلیں اس کومعمولی سمجھتے ہیں۔

### خودرودرخت کی طرح مت بنیے:

ایک خودرو درخت بھی ہوتا ہے۔ وہ درخت خود بخو داگ آتا ہے اس لیے اسے خودرو درخت کہتے ہیں۔اسے پانی دینے والا بھی کوئی نہیں ہوتا۔اس کی شاخوں کی کاٹ تراش بھی کوئی نہیں کرتا۔لہذا وہ دیکھنے میں بڑا بے ڈھنگا سا ہوتا ہے اور اس کا کاٹ تراش بھی کوئی نہیں کرتا۔لہذا وہ دیکھنے میں بڑا ہے ڈھنگا سا ہوتا ہے اور اس کا کھل بھی پورانہیں ہوتا۔اور ایک درخت وہ ہوتا ہے جس کا مالی بھی ہوتا ہے ، وہ اس کی پرونگ کر کے اس کو بڑے خوب صورت طریقے سے اوپر بڑھا تا ہے۔وہ اس کو پانی بونگ کرکے اس کو بڑٹ خوب صورت طریقے سے اوپر بڑھا تا ہے۔وہ اس کو پانی بھی دیتا ہے ، نیوٹریشن (غذا) کا بھی خیال رکھتا ہے۔ایسا درخت پھل بھی زیادہ دیتا ہے اور و یکھنے میں بھی خوبصورت ہوتا ہے۔

بالکل یہی مثال انسان کی بھی ہے۔ بعض انسان اپنے بروں کی تربیت میں ہوتے ہیں۔ان کی شخصیت دیکھنے میں بھی دیدہ زیب ہوتی ہے اوران کے اعمال سے اللہ کے بندوں کو راحت ملتی ہے۔اور پچھ بند بے خود رو درخت کی مانند ہوتے ہیں۔ان کوکوئی سمجھانے والانہیں ہوتا۔ نہ استاد سمجھا سکتا ہے اور نہ ہی ماں باب سمجھا سکتا ہے اور نہ ہی ماں باب سمجھا سکتا ہے وہ خود ہی بروے ہو جاتے ہیں۔ جیسے کا نے دار درخت ہوتا ہے ویسے ہی اس کے ساتھ الجھ پڑتے ہیں اور بھی اس کے ساتھ الجھ پڑتے ہیں اور بھی اس کے ساتھ

الجھ پڑتے ہیں۔

### درخت كے ساتھ ايك مكالمه:

ہمیں چا ہے کہ ہم نیکی کے اوپر استقامت کے ساتھ جے رہیں۔ حضرت سری سقطی طلا فرماتے ہیں تھک گیا اور ایک مرحبہ میں سفر پر جارہا تھا۔ راستے ہیں تھک گیا اور ایک درخت کے سائے میں آرام کرنے کے لیے لیٹ گیا۔ جب میری آ نکھ کھلی تو میں نے درخت سے آواز آتے سی میں سیہ جو اللہ والے ہوتے ہیں ، ان کو بعض اوقات اللہ تعالی سمعی یا بھری کشف عطا فرما دیتے ہیں۔ وہ عجیب سی آوازیں سنتے ہیں جو ہم نہیں من یاتے سی توفر ماتے ہیں کہ وہ درخت مجھ سے گفتگو کررہا تھا اور کہدرہا تھا:

یّا سِرِّی کُنُ مِثْلِیُ ''اےسری! تو میرےجبیہا ہوجا''

فرماتے ہیں کہ میں بڑا حیران ہوا کہ بیہ درخت مجھے کہہ رہا ہے کہ اےسری! تو میر ہےجیسا ہوجا۔تو میں نے اس درخت سےمخاطب ہوکرکہا:

كَيْفَ أَكُونُ مِثْلُكَ؟

"میں تیرے جبیا کیسے بن سکتا ہوں؟

تو درخت نے جواب میں کہا:

إِنَّ الَّذِينَ يَرُمُو نَنِي بِا لَاحْجَارِ فَأَرُمُو هُمْ بِالْآثُمَارِ
"جولوگ ميري طرف پَقر بَعِينَت بِي مِن ان لوگوں کی طرف اپنے بَھِل لوٹا تا ہوں۔"

تو بھی میرے جیسا ہو جا۔ تخفے بھی لوگ پھر ماریں گے اور تو بھی ان پھروں کے جواب میں اپنا کھل لوٹا وینا۔ان کے ساتھ حسنِ خلق سے پیش آٹا۔فر ماتے ہیں کہ میں درخت کا جواب س کر بڑا جیران ہوا کہ درخت نے کیا عجیب بات کہی!لیکن فور آ میرے ذہن میں ایک خیال آیا کہ اگریہ درخت اتنا اچھا ہے کہ پتھر مارنے والوں کو بھی اپنا پھل کھلاتا ہےتو پھراس درخت کواللہ نے آگ کی غذا کیوں بنایا؟ فرماتے ہیں کہ جب میرے ذہن میں بیخیال آیا تو میں نے درخت سے بیسوال یو بھا.

فَكُيْفَ مَسِيْرَكَ إِلَى النَّارِ

''اے درخت! پھر پیر بتا کہ اللہ نے تھے آگ کی غذا کیوں بنا دیا؟۔''

یعنی اگرتم اینے ہی اچھے تھے تو تم آگ کی غذا کیوں بن گئے؟ کہتے ہیں کہاس سوال کے جواب میں گو یا مھنڈی سانس لے کر کہا کہ سری! میرے اندرخو بی بھی بڑی الحچھی ہے کہلوگ مجھے پتھر مارتے ہیں اور میں انہیں پھل دیتا ہوں ،لیکن میرے اندر ایک خامی بھی بہت بری ہے جس نے میری تمام خوبیوں پریانی پھیرویا۔ پوچھا: کون س خامی ہے؟ ورخت كہنے لگا:

> فَآمُلَيْتُ بالهَوَاءِ هٰكَذَا هٰكَذَا '' جدهر کی ہوا چکتی ہے میں ادھر کوڈ ول جاتا ہوں۔''

سری! میرے اندر استفامت نہیں ہے، اور یہ بات میرے اللہ کو اتنی نا بہند ہے کہ میری خوبیوں کے باوجوداللہ نے مجھے آگ کی غذابتا دیا۔

### شریعت دسنت برکار بندر ہیے:

عزیز طلبا! شریعت وسنت پر قائم ہو جائے۔ اپنے آپ کوسنت کے رنگ میں رنگ کیجیے۔فحاشی ،عریانی ، گناہ اورظلمت والے ماحول سے متاثر ہونے کی ضرورت نہیں۔ہم اگر دین کے احکام برعمل کررہے ہیں تو ہمارے اوپر بیاللہ رب العزت کا بڑا کرم اور احسان ہے۔طلبا مسئلہ پوچھتے ہیں کہ کیا کریں جی؟ نگاہوں کو بچانا بڑا مشکل ہے۔ بھی ! جب مشکل زیاوہ ہے تو اس پر اجر بھی زیاوہ ملے گا۔لہٰذا ہمت سے کام کیجے ۔لوگ جب آج کے دور میں برائی کونہیں چھوڑ رہےتو ہم پھراچھائی کیوں چھوڑیں؟ چنانچہ نیکی ،شرافت اوراعلیٰ پراپنے آپ کو جمادیجیے۔نفس اور شیطان ہمیں بہکا ئیں گے ،ان کے بہکاوے میں نہیں آنا۔ جب اللّدرب العزت کے ہاں عزت والے بن جائیں گے تو اللّہ تعالیٰ دنیامیں بھی عز تیں عطافر مادیں گے۔

# صندل کی خوشبودارلکڑی کا پیغام:

صندل کا درخت اس کلہاڑے کے منہ کو بھی خوشبودار بنا دیتا ہے جو کلہاڑا اسے کا ثنا ہے۔ گویا اس نے برائی کا جواب اچھائی کے ساتھ دیا۔ ہم بھی ایسے بن جائیں ۔ فطرت ہمیں یہ سبق سکھا رہی ہے کہ ہم بھی برائی کے بدلے میں اچھائی کا معاملہ کریں ۔ بعض لوگ کہتے ہیں کہ ہم تو اینٹ کا جواب پھر سے دیں گے۔اسے اخلاق حمیدہ تو نہیں کہتے۔ قرآن کہتا ہے:

### ﴿ اِدْفَعُ مِالَّتِنَى هِنَى آخْسَنُ ﴾ (حمالسجده:٣٣) ''تم برائی کواچھائی کے ساتھ دھکیلو''

اچھا! بتا ہے ! کہ اگر ناپاک کیڑے کو پاک کرنا ہوتو کیا بیشاب کے ساتھ پاک ہوجائے گا؟ جب بھی ناپاک کیڑے کو پاک کرنا چاہیں گے تو ہمیشہ پاک پانی سے پاک ہوگا۔ای طرح جب بھی آپ برائی کوختم کرنا چاہیں گے تو وہ اچھائی سے ختم ہوگی۔وہ بدلے میں برائی ہے بھی ختم نہیں ہو سکتی۔اگر ہم اچھے بن جا کیں تو اللہ تعالی دوسروں کو بھی اچھا بنا دیں گے۔ہم وہ کریں جو ہمارے اختیار میں ہے۔پھر اللہ دب العزت وہ کریں گے جو اس کے اختیار میں ہے۔

# پھول کی پتیوں کے مسل جانے میں پیغام:

پھول کی پیتاں اس تھیلی کو بھی خوشبودار بنادیتی ہیں جو تھیلی ان پتیوں کو مسل دیا کرتی ہے۔ آپ پھول کی پتیوں کو ہاتھ میں لے کرمسل دیں ، وہ آپ کے ہاتھ کوخوشبو دار بنادیں گی۔تو کیا ہم اس سے بھی گئے گزرے ہیں!؟ ہمیں بھی چاہیے کہ ہم برائی کے بدلے میں اچھائی دینے کا اصول اپنا ئیں۔ پھر دیکھیں کہ اللہ رب العزت کی طرف سے ہمیں کتنی رحمتیں ملتی ہیں۔

# ایک دوسرے کی قدر کریں:

انگریزوں کے ہاں ایک عادت ہے کہ جب کوئی بندہ مرجاتا ہے تو اس سے اظہار محبت کے لیے قبر پر پھول لے کرآتے ہیں اور میت کی قبر کے ساتھ منوں کے حساب سے پھول انجھے کر دیتے ہیں۔اس پرکسی انگریز شاعرنے شعر لکھا:

Why we wait till a person die?

ملكسفياتي ١١٥ (269) (269) (دون عن الجنواراء

''ہم پھول پیش کرنے کے لیے کسی بندے کے مرنے کا کیوں انتظار کرتے ہیں؟ زندگی میں ہی اسے پھول پیش کر دیتے تو اس کوبھی خوشیاں نصیب ہوجا تیں اور ہمارابھی دل خوش ہوجا تا۔

### پھول کے ساتھ کا نٹے ہونے کا شکوہ کیوں؟

پچھلے سال پچھ طلباروز گارڈن (گلاب کے باغ) میں شاخیں کاٹ رہے تھے۔ایک صاحب جب کاٹے گئے تو ان کوکا ٹاچھ گیا۔ جب کا ٹاچھا تو وہ بڑے خفا ہوئے ہوئے ہوئے ہوئے ہیں۔ میں کہنے گئے: یہ کیا جی جہاں پھول ہوتے ہیں وہیں کا نے ہوتے ہیں۔ میں نے کہا: یہ تمہاری اپنی سجھ کی بات ہے ، اگر یہ بات ہے کہ جہاں پھول ہوتے ہیں وہیں کا نے ہوتے ہوتے ہیں وہیں کا نے ہوتے ہیں تو یہ کہا نوں کے ساتھ پھول بھی ہوتے ہیں۔ جب میں کا نے ہوتے ہیں تو یہ کہا نوں کے ساتھ پھول بھی ہوتے ہیں۔ جب میں نے اس سے کہا کہ سوچنے کا یہا تماز بھی ہوسکتا ہے تو پھران کو تسلی ہوگئی کہ ہاں، جہاں کا نے ہوتے ہیں وہاں پھول بھی ہوتے ہیں۔اسی طرح اگر ہم گھروں میں رہتے ہوئے اپنے اندر مثبت سوچ پیدا کرلیں تو گھر کے اندر بھی رحتوں اورخوشیوں کا ماحول بن جائے گا۔

### ایک گران قدرملفوظ:

ایک هخص خواجہ نظام الدین اولیا طاق کے پاس آیا اور کہنے لگا: '' حضرت! فلاں بندہ میرا مخالف ہے۔ وہ مجھے بڑا تنگ کرتا ہے اور ہر وفت میر ہے خلاف سازشیں کرتا رہتا ہے'' ۔۔۔۔۔ اصل میں وہ حضرت ہے این اوی (اجازت نامه) مانگنا چاہتا تھا کہ اگر مجھے اجازت ویں تو پھر میں اس کوذرا مزہ چکھاؤں گا ۔۔۔۔ وہ کہنے لگا:'' حضرت! وہ مجھے برا بھلا کہتا رہتا ہے۔ وہ میر ہے راستے میں کا نے بچھا تار ہتا ہے'۔ حضرت بھی اس کا انداز بیاں سمجھ مجھے۔ کیوں کہ اللہ والے بڑے سمجھدار ہوتے ہیں۔ چنانچہ

حضرت علانے اس کو ایک بڑا عجیب جواب دیا۔ اس کوسونے کی روشنائی سے لکھنا جا ہے حضرت نے فرمایا:

''اے دوست! اگر کوئی تیرے راستے میں کا نئے بچھائے تو تو اس کے راستے میں کا نئے بچھائے تو تو اس کے راستے میں کا نئے ہوجا کیں گے۔'' میں کا نئے نہ بچھانا ، ورنہ پوری دنیا میں کا نئے ہی کا نئے ہوجا کیں گے۔'' کاش! ہم اس اصول کو اپنا لیتے۔اگر کوئی ہمارے ساتھ برائی کرر ہا ہوتو ہم اس کے ساتھ اچھائی کا معاملہ کر کے اس کی برائی کوشتم کرنے کا باعث بن جا کیں۔

# درخت کے پھلوں میں خوش اخلاقی کا درس:

یادر کھنا! جس طرح درخت اپنے کھل سے پہچانا جاتا ہے، اس طرح انسان
اپنے اچھے اخلاق سے پہچانا جاتا ہے۔ جس درخت کا کھل اچھا ہو، لوگ اسے پہند
کرتے ہیں، اسے گھروں میں لگاتے ہیں، اس کی خدمت کرتے ہیں، اس کو پانی
دیتے ہیں۔ اس طرح جس انسان کے اخلاق اچھے ہوتے ہیں، اللہ تعالی اس کو پہند
فرما لیتے ہیں۔ اس لیے ایمان لانے کے بعد سب سے بہترین نعمت جو بندے کول سکتی
ہوہ خوش اخلاقی ہے۔ اللہ تعالیٰ ہمیں خوش اخلاقی کی زندگی بسر کرنے کی تو نیق عطا
فرمائے۔ ہم اگر

- ⊙ ..... بيچ بين تو ، بهترين اولا دبن كردكها كيس ،
- 🗗 ..... بھائی ہیں ،تو بہترین بھائی بن کر دکھا کیں ،
- 🗗 .....خاوندېي ،تو بهترين خاوندېن کردکھا کيس ،
- ⊙ ..... باپ ہیں،تو بہترین باپ بن کر دکھا کیں،
- ⊙ .....اگر ملک کےشہری ہیں ،تو بہترین شہری بن کر دکھا کیں ،
- ⊙.....ا گرکلمه پڑھنے والےمومن ہیں ،تو امت کا بہترین فرد بن کر دکھا کیں ،
  - .....الله کی نعتیں کھاتے ہیں ،اللہ کوایک اجھا بندہ بن کر دکھا کیں۔

الكار خلباشي فقيران ١٥ (27) الكاران ال

الله تعالیٰ ہمیں نیکیوں بھری زندگی گزار نے کی تو فیق عطا فر مائے۔اللہ تعالیٰ ان طلباء کو دنیا و آخرت کی عز تیں نصیب فر مائے اور انہیں ماں باپ کی آئکھوں کی ٹھنڈک بنائے۔(آمین ثم آمین)

وَ الْحِرُ دَعُوانَا آنِ الْحَمْدُلِلَّهِ ﴿ رَبِّ الْعَلَمِيْن



# مكتبة الفقير كى كتب ملنے كے مراكز

🗬 معبدالفقير الاسلامي توبدروذ، بأني پاس جھنگ 7625454 047-047

🐠 دارالمطالعه، مزد برانی نینکی، حاصل بور 2442791-062

📾 اداره اسلاميات، 190 ناركلي لا بور 7353255

😸 مكتبه مجددييه الكريم ماركيث اردوبا زارلا مور 7231492-042

🖨 مكتبه سيداحمة شهيد 10 الكريم ماركيث اردوبارز ارلا بور 7228272-042

😁 مكتبه رحمانيه اردوباز ارلام ور 7224228-041

🕳 مكتبه المداديي في بي ميتال رود ملتان 544965-061

😥 مكتبه ببیت العلم بنوری ٹاؤن کراچی 2018342 - 021

🖨 مكتبة الشيخ 3/445 بهادرآباد كرايي 0214935493 🖶

الله المناعب، اردوبازار مراجي 2213768 021-021

👁 مكتبه علميه، دوكان نمبر 2 اسلامي كتب ماركيث بنوري ثاؤن كراجي 4918946-021

PP 09261-350364 كنية حضرت مولانا ويرد والفقارا حديد ظله العالى من بإزار بسرائ نورتك 350364-99261

🖚 معرت مولانا تاسم منعورصا حب ثيج ماركيث بمعجدا سامه بن زيد، اسلام آباد 2288261-051

على جامعة الصالحات مجبوب سرّيث، وْ حوك مستقيم رودْ ، پيرودها كي مورْ ، پيثاوررودْ ، راولينيْرْ ي

03009834893 4 051-5462347

مكتبة الفقير 223سنت بوره فيمل آباد